3.4

कथा भारती

दूसरा भाग

भारती पुस्तक मन्दिर

॥ श्रीः ॥

रमलगुलजार ।

यवनाचार्य निर्मित ।

इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) में द्विजवर्य श्री बीरबल द्वारा अनुवादित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्—प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९९१, शके १८५६.

यवनोंकी रचना है । जो कुछ हो प्रतिपाद्य विषयके उपयोगी होनेसे उसके ग्रहण करनेमें आग्रह ही क्या है ।

संवत् १९५४ में बेरी निवासी पण्डित श्रीरामरक्षपालजीने इस ग्रन्थको कलकत्तेमें छपवाकर रजिष्टरी करनेसे इसका पुनर्मुद्रणाधिकार रक्खा था परन्तु रजिष्टरी हक सहित इस पुस्तकको लेकर इसका पुनर्मुद्रण अपने श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेसमें किया है प्राचीन भाषाकी जो २ अशुद्धियां थीं उनको शुद्धकराकर उत्तम टाइपमें छपवाया है प्रथम संस्करणमें इसका मूल्य ७) थे अब हमने केवल २) मात्र रक्खे हैं कि सर्व साधारण इससे लाभ उठावें ।

प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

प्रोप्राइटर " श्रीवेंकटेश्वर " स्टीम्-प्रेस, बंबई.



श्रीगणेशाय नमः।

अथ रमलगुलजार।

श्रीयवनाचार्य्यने अपने सब रमल ग्रन्थोंका सार निकाल कर रमलगुलजार नामक ग्रन्थ रचा था उसीको श्रीबीरबल साहिबने इष्टदेवता सरस्वतीका ध्यान करके अपनी देश भाषामें अनुवादित किया उसमें नाना प्रकारके १०४१ प्रश्न हैं जिनके देखनेकी विधि कहते हैं। पहले मीनकी संक्रान्तिमें जिसदिन दिनरात्रि बराबर हो उस दिन ७ धातु लेकर पांसे बनवाना उसी दिन ढलावे फिर ८ टुकडे करवाय चौरस करवावे फिर चार २ शून्य ऊपर करै दो २ शून्य नीचे करवावे और बराबरमें तीन २ शून्य करावे फिर सबमें छिद्र कराय दो कीलोंमें पोवे फिर उनसे शुभ दिन प्रथम प्रश्न करे प्रश्न कहनेका प्रकार प्रथम पूछनेवाला चावल पुष्प फल द्रव्य करके पुस्तकका पूजन करै पीछे प्रश्न कहनेवाला उक्त पृच्छकका हाथ पांसोंमें रखवाकर "ॐनमो भगवति कुष्मांडिनि सर्वकार्य्यप्रसाधिनि सर्वनिमित्तप्रकाशिनि एहि २ त्वर २ वरं देहि देहि लिहि २ मातंगिनि सत्यं ब्रूहि २ स्वाहा" इस मंत्रको ७ बार जपै और उसके कह देवे कि तुम अपने प्रश्नको दिलमें विचार लेओ फिर उन पासेंको तखतीमें डालै उससे जाईचा बनावै इस प्रकार चार शकल वाम क्रमसे बनावै इस प्रकारसे शून्यकी शून्य लिखै दो शून्योंकी तिरछी रेखा लिखै फिर पांचवेंसे लेकर चार खंड तिरछे क्रमसे बनावे इस प्रकारसे चार और शकल बनावैं फिर दो रेखा और दो शून्योंकी रेखा बनावै शून्य रेखाओंके योगसे शून्य इस प्रकारसे पहिली दूसरीसे नवमी शकल बनावै औ तीसरी चौथीसे दशवीं शकल बनावै फिर

पांचवी छठीसे ग्यारहवीं शकल बनावै और सातवीं आठवीं शकल से बारहवीं शकल बनावै फिर नवमी दशवीं करके तेरहवीं शकल बनावै और ग्यारहवीं बारहवीं करके चौदहवीं शकल बनाले फिर तेरहवीं चौदहवीं पन्द्रहवीं शकल बनावै और पन्द्रहवीं पहलीसे सोल-हवीं शकल बनावै फिर पृच्छकसे कहै कि किसी पुष्प या फल या नदी या देवताका नाम लो वह जिन अक्षरोंको उच्चारण करे उन अक्षरोंको ठीक २ लिख ले फिर अकचटतपयश वर्ग करके स्वरोंकी अलग संख्या लिखले और हलोंकी अलग संख्या लिखै फिर स्वर संख्यासे हलसंख्याको गुणाकरे फिर इष्टका निश्चय करके लग्नको निश्चय करै फिर उक्त संख्यामें लग्नसंख्याको मिला देवै फिर जाइ-चामें १६ घरमें जो शकल है उसकी विजदहपंक्तिकी जो शेषांक संज्ञा है उस करके उक्त जो लब्धांक है उसको गुणा करै फिर १०४१ का भाग दे जो शेष बचे वह पिण्डका अंक जानना और इसी शेषांकमें १६का भाग देनेसे जो शेष बचे उसको शकुनपंक्तिके क्रमसे उतनी संख्या वाली शकल जाननी उक्त पिंडके आगे वही शकल मिलेगी और पिंडके आगे पृच्छकका वही प्रश्न मिलेगा ।

अथ अष्टवर्गांक संख्या ।

अथ अष्टवगार्क संख्या ।

अ	१	ऊ	६	ए	११	क	२	च	३	ट	४	त	५	प	६	य	७	श	८
आ	२	ऋ	७	ऐ	१२	ख	३	छ	४	ठ	५	थ	६	फ	७	र	८	ष	९
इ	३	ॠ	८	ओ	१३	ग	४	ज	५	ड	६	द	७	ब	८	ल	९	स	१०
ई	४	ऌ	९	औ	१४	घ	५	झ	६	ढ	७	ध	८	भ	९	व	१०	ह	११
उ	५	ॡ	१०	०	०	ङ	६	ञ	७	ण	८	न	९	म	१०	०	००	००	००

लग्नम्	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन				
लग्नसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२				
विजदहपंक्ति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
विजदहशेष संज्ञा	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६
शकुनपंक्ति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शकुनपंक्ति शकल संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

अथ उदाहरणम् । किसीने प्रश्न किया फिर यह जाईचा बनाया पूछनेवालेने फलका नाम आम कहा तब आकारकी संख्या २ अकारकी संख्या १ अष्टवर्गके क्रमसे हुई दोनों संख्या मिलानेसे ३ हुई यह स्वरसंख्या है मकारकी संख्या १० हुई फिर ३ से १० को गुणा किया ३० हुए फिर इष्टको देखके लग्न निश्चय किया कि मकर है इसकी संख्या १० हुई सो उक्त संख्यामें मिलाई सब मिलके ४०

हुये फिर देखा कि जाईचमें १६ है घर शकल लह्यान है सो बिजदह पंक्तिमें दूसरे स्थानपर है जिसकी संख्या १२२ की है सो ४० से गुणा किया तब ४८८० हुए फिर १०४१ जो मूलअंक है उसका ४८८० में भाग दिया बाकी ७१६रहा यह पिण्ड संख्या है फिर इसमें सोलह १६ काभाग दिया १२ बचे सो शकुन पंक्तिमें १२ वें स्थानमें अतबेखारिज है सो इस पिंडके पास यही शकल मिलेगी और इसके आगे पृच्छकका प्रश्न मिलेगा यह उदाहरण है ।

इति उदाहरणम् ।



१·/

॥ श्रीः ॥

अथ रमलगुलजारकी विषयानुक्रमणिका ।



इति तृतीयस्थानम् ।

इति अष्टमस्थानम् ।

इति नवमस्थानम् ।

इति दशमस्थानम् ।

इति एकादशस्थानम् ।

इति त्रयोदशं स्थानम्।

इति रमलगुलजारकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।



श्रीगणेशायनमः ।

रमलगुलजार प्रारम्भ ।

पिण्ड १.

हुक्मी शकल लहियान ⚍ खारिज अग्निकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है" रोजगारकी तर्फ से मनमें तकलीफ पारहा है सो अब कई दिनमें तेरा भाग्योदय होगा परन्तु तेरा दिल बिगड़ा रहता है सो तू १०० दुर्गापाठ संपुट करवा नहीं तो रोजगारमें तेरा चित्त नहीं लगेगा और तुझे स्वप्न भी रात्रिको नाकिश आते हैं सो सन्देह मतकर अल्लाताल्लाने चाहा तो तेरा रोजगार जलदी लगैगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ २ ॥ हुक्मी शकल कब्जुलदाखिल ⚎ सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लडकेके भाग्योदयका है" इस लडकेके सुखकानी देखते बहुत दिन हुए परन्तु इसको अबतक आपा चेता नहीं सो इसके जन्ममें ३ ग्रह माफिक नहीं हैं सो उनका पूजन करवाना । और पूर्वजन्ममें जांगलदेशमें सिंह था सो इसने गोहिंसा बहुत की इस पापसे इसकी प्रीति किसीसे नहीं है जिससे बोलता है उसको धमकाकर बोलता है सो इसके हाथसे सुवर्णकी एक गौ और एक बछडा किसी नेक ब्राह्मणको दानकरके दे और छायापात्र इसके हाथसे व्यतीपातके रोज जितनी तेरी ताकत हो इतना करवा इसका भाग्योदय इसी सालमें होजायगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ३ ॥ हुक्मी शकल कब्जुल खारिज ⚏ राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है" सो वारंवारकी बीमारियोंसे तेरा चित्त निहायत दिक हो रहा है सो यह पहले जन्ममें मरुदेशमें क्षत्री था सो इसने बालक बच्चोंकी माता हिरनी मारी थी सो उन्हींके शापसे इसको बहुत दिल-

गिरी रहती है सो सुवर्णकी हिरनी बनवाकर तीर्थ पर शुद्ध ब्राह्मणको दे अल्लाताला आयु बढावेंगे । इति प्रश्न । पिण्ड ॥ ४ ॥ हुक्मी शकल जमात साबित ☰ बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है" तुझे सब बातोंमें तकलीफ रही परन्तु मनके धीरजसे और अपनी शूर बीरतासे कोई भी नहीं व्यापी परन्तु अब तुझे ज्यादे तकलीफ है दिनोंकी गरदिश करके जो तेरे तलुवे रोलता था उसकी तू जूती भी उठावे तो मुखसे नहीं बोले सो ऐसी २ गरदिशसे तू यह चाहता है कि शरीर पूरा होना बेहतर है परन्तु तेरी आयु ज्यादा है सो तू विष्णु सहस्रनामके पाठ जितनी तेरी ताकत हो उतने करवा तेरा शत्रु और बीमारी सब दूर हो जावेंगी, अल्लाताला तेरी रूह करेगा दिलासा रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा दाखिल शुक्रकी है हुकुम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरके सुखका है" सो तुझे अव्वलदिनसे ही सुख रहा किसी बातकी भी तकलीफ नहीं रही जो तकलीफ रही तो मनमें जानी नहीं शरीरके जोरसे गुजरान किया और व्यतीत दिनोंमें तालेवर शत्रुने भी तुम्हारी जूतियां उठाईं अब तुम्हें यह सन्देह है कि आगे कैसी गुजरैगी सो तुझे शनिश्चर माफिक नहीं है इससे किसी वक्त दिल बिगड जाता है सो तू शनैश्चरका जप १००००० किसी ब्राह्मणसे करवा और डाकौत को दान दे शरीरमें सुख रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६ ॥ हुक्मी शकल उकला ⁘ सुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल अपने शरीरके सुखका है" सो जन्मभरसे तुझे निहायत तकलीफ रही घरका भी मनुष्य दिनोंकी गरदिशकरके आदर देकर न बोला अब तुझे शरीरसे निहायत अबखाई है खानेपर भी रुह नहीं जो तनकभर खा ले तो हजम नहीं होता तू पूर्व जन्ममें गङ्गातटमें वैश्य था तूने ब्राह्मणोंका अन्तःकरण बहुत दुखाया उस पापसे यह तकलीफ है, तू श्रीगङ्गाजीके स्नानसे द्विज हुआ है नहीं

तो चाण्डालके घर जन्म होता सो तू ब्राह्मणोंको जिमा और अच्छी दक्षिणा दे ब्राह्मणोंको प्रसन्न कर विष्णुसहस्त्रनामका पाठ करवा जितनी तेरी ताकत हो उतना सुकृत करनेसे तू बहाल होगा सन्देह मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न॥पिण्ड॥७॥हुक्मी शकल अंकीश ⚍ दाखिल शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जन्मभूमिकी कुशलका है" तुम्हारे देशमें इस साल वर्षा बहुत हुई वर्षाकी अधिकता तथा ईश्वरके कोपसे वहां बीमारी बहुत है इससे तुझे यह सन्देह है कि ऐसी बीमारीमें ईश्वर सब जगह कैसे कुशल रक्खेंगे और तुझे स्वप्न भी माफिक नहीं आते हैं सो जितनी तेरी ताकत हो उतना जप स्वप्नेश्वरीका जितेन्द्रिय ब्राह्मणसे करवा और देशके मनुष्योंसे कहवाकर आदित्यहृदयसे सूर्य्यका आराधन करवा देशमें अभि शान्त होगी और तुम्हारे कुटुम्बमें बीमारी तो ज्यादा हुई परन्तु श्रीभवानीकी सहायतासे सब खुशी रहे हैं इति प्रश्न॥ पिण्ड॥८॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स! तेरा सवाल जन्मभूमिकी कुशलताका है" सो तेरे घरसे कुशलताके समाचार आये बहुत दिन हुए तेरी जन्मभूमिमें कुशल है पहले उन्होंने एक कुशल पत्र तेरे पास भेजा था सो पत्र तेरे पास नहीं पहुँचा अब पत्र आया चाहता है और तेरा रोजगार जैसा तू चाहता है वैसा नहीं लगता जो कुछ लगे तो फिर दिल न लगे सो तेरे पितृ-दोष है सो तू पांच लक्ष ५००००० गायत्रीका संकल्प दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे तेरा रोजगार बढैगा दिल भी लगेगा इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ९॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल शरीरके अंगका है" तेरे शरीरमें चोट लगी हुई है तू यह पूछता है कि यह चोट कब बहाल होगी तू पहले जन्ममें शूद्र था तूने सोते हुए कुत्तेको लकडी मारी वह कुत्ता बहुत चिल्लाया उस पापसे तेरे यह चोट लगी है इससे तुझे तकलीफ देती है तू काले कुत्तेको तिलोंका तेल डालकर चपातियां

खिला अपाहजकुत्तोंकी टहलकर आराम बरजरूर होवेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १० ॥ हुकूमी शकल ⠶ नुस्नुत् खारिज सूर्य्यकी है हुकुम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरके अङ्गका है" तेरे अंगमें निहायत तकलीफ है वात पित्तका जोर है सो तू पहले जन्ममें गंगा यमुनाके बीचमें यवन था तुझे जानवरोंका बहुत शौक था बहुत टहल करता था परन्तु एक पक्षीके उडनेके सबबसे पर बांध रक्खे थे सो उसको बिल्ली लेगई इस पापसे तुम्हारे अंगमें पीडा है और टहलके सबबसे तू द्विज हुआ है अब तू सुवर्णका कबूतर बनवाके नेक ब्राह्मणको दे और शकुन्तलेश्वरीक जप करवाने से आराम जरूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११ ॥ "हुकूमी शकल नुस्नुतदाखिल ⠶ गुरुकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा यह सवाल है कि तुम्हारे कई पुस्तोंसे कोई पैदा चली आती थी सो कम तो पहले से ही थी परन्तु अब राजसे बन्द होगई बहुत तजवीज भी की परन्तु अब तक जारी न हुई" सो राजमें तेरा शत्रु शिकायत कर देता है तू अपनी ताकत माफिक दुर्गापाठ १०० संपुट करवा और ९ कन्या ब्राह्मणोंकी जिमाय ओढनेको वस्त्र दें अल्लाताला तेरी पैदा जारी करेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न । पिंड ॥१२॥ हुकूमी शकल ⠶ अतवेखारिज केतुकी है हुकूम फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि "पुस्तोंकी राजधानी छूट गई सो फिर हाथ लगेगी ? और वहां जाना बनेगा या नहीं फिर भी वह समय आवेगा या नहीं" तुम्हारा विषाद कमती नहीं हुआ है जिसमें कुल वतनकी कत्ल हो गई है सो यह राज्य कुछ कमती नहीं था यह बादशाही थी परन्तु आपसकी फूटमें बिगड गई सो तुम्हारा मुसाहिब उम्र जादेका है उसने तुम्हारी फूट करवा दी दोनूं तरफसे मोठा बना रहा और तुम्हारी जड काट दी और अब भी तुमको दिलासा बहुत लोग देते हैं परन्तु तकदीर विगर राज्य मिलना बहुत कठिन है और जो खरची लेकर भगा था वह भी दिन २ निब-

डती है सो तेरी जन्मकुण्डलीमें दो ग्रह राजघरको बिगाडते हैं सो उनका पूजन कर और हरिद्वारमें चण्डिका पर १००२५ दुर्गापाठ करवा तेरा दुश्मन दूर होगा तुझे राज्य मिलेगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न॥पिण्ड॥१३॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुकुम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने जीवके सुखका है" क्यों कि तेरी औलाद नाकिश है जो तू बैठनेको कहता है तो यह कहते हैं कि हम तो खडेही रहेंगे जो सीखकी कहता है उसे दुशमनी मानते हैं इन कारणोंसे अपने जीनेको निहायत धिक्कार देता है यह तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिमदेशमें शूद्रजाति था ये वैश्य थे इनके पापसे द्रव्य लेकर पीछे नट गया सो इस जन्ममें आकर तेरे पुत्र हुए हैं सो वाक्‌रूपी जूतियां मारके अपने द्रव्यको उगाहते हैं सो जितनी तेरी श्रद्धा हो उतना द्रव्य श्वेत वस्त्रमें लपेटके द्वादशीके दिन ब्राह्मणको दे पूर्वजन्मका अजाब दूर होगा इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥१४॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने जीवके सुखका है" सो तुझे बडी बडी तकलीफ हुई हैं परन्तु अब दिनोंकी गरदिशकरके निहायत जालमें फँस गया है सो तेरे दिन नाकिश हैं, नाकिश दिनोंमें गुजरान कर १ वर्ष बाद तुझे दिन अच्छे आवेंगे सो लाभ अच्छा होगा सब तन्दुरुस्ती रहेगी परन्तु शिवार्चन करवा इससे जल्दी दिन अच्छे हो जावेंगे फिकर मत करै इति प्रश्न ॥पिण्ड॥१५॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरसे लाभके उद्योगका है" सो कई दफे उद्योग किया विशेषलाभ न हुआ जैसा उद्योग किया वैसा लाभ न हुआ अब ऐसा उद्योग चाहता है कि जिसमें पूरा लाभ हो सो यही उद्योग कर जो चित्तमें विचारा है खर्च तो तेरा होगा परन्तु कुछ दिन पीछे लाभ अच्छा होगा श्रीभवानीका

ध्यान रखना जिससे जल्दी लाभ होगा सन्देह मतकर अल्लाताला भला करेंगे इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १६ ॥ हुक्मी शकल ⋮ तरिख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जबर उद्योगका है " कि जिसमें सालभरमें लाखोंके वारे न्यार होवें उसीको लेने वास्ते है और भी कोई उलटा पक्ष कहता है परन्तु अफसरकी निगाह तुझपर ज्यादा है अनेकों बार तुझको समझाता भी है परन्तु वह रुपया ज्यादे लगाता है वह मनुष्य इसी कारमें बना है सो तू हिम्मतकरके द्रव्य खरच कर और अच्छे होश्यार मनुष्य जो अपने निहायत प्यारे हों उनको रख दे और इस कामको जारी कर और यथाशक्ति दुर्गाका पाठ करा तुझे बहुत लाभ होगा जिसको यह काम सभाया है वही मनुष्य धन इज्जतकरके बडा हुआ है निगाह करिकै देख सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७ ॥ हुक्मी शकल लह्यान ⩧ खारिज बृहस्पति की है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरमें बलबढानेके वास्ते है सो अनेक यत्न किये परन्तु शरीरमें पराक्रम विशेष नहीं हुआ अब तू किसी नेक ब्राह्मणसे श्रीहनुमानका आराधन करवा और जो बलि लिखी है सो दे, श्रीहनुमानको प्रसन्न कर कुछ दिन बाद तेरे शरीरमें बहुत पराक्रम होजायगा ॥ हे भाई वृथा चौडी छाती और चौडे हाथ किये और कमर खींचे पराक्रम नहीं होता अब तू हनुमान् या स्वामिकार्तिकका नेक ब्राह्मणसे जो किसीके आगे न कहै पूजन करा और तू भी किसीके आगे मत कह पराक्रम हो जायगा दिलासा रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी सेनाके पराक्रमका है कि वह शत्रुसे हार तो न जायगी " तुझे अब चेत हुआ पहले नहीं जानता था कि फौज तो लडाईके वास्ते रहती है सो तुमको स्त्रियोंका शौक और वृथा हास्य और बेकालका सोना और हाथी या घोडे की सम्भाल न की और रईयत

को कारबारोंने खूब लूटा और बहुत तकलीफ दी और तेरा खजाना भी बहुत बरबाद किया तुझे कुछभी चेत न हुआ अब पैरोंतलेसे जाने लगी है जीव ईश्वरकी बन्दगी करता है सो तू आप चेत और अपने बडोंका यश देख पूर्वकी तपस्यासे यह राज्य मिला है अब पहली गठडी को भी बरबाद करता है सो तू चेतकर एकादश ब्राह्मणोंसे श्रीदुर्गाका संपुट पाठ करा और शत्रुसे झगडाकर तू जीतेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९ ॥ हुक्मी शकल कबजुल ∴ खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने वालेशख्स ! तेरा सवाल राजनीतिका है सो यह पूछता है कि जो राजा गद्दीपर बैठा है सो कैसी राजनीति करेगा, अपने पितासे अच्छी करेगा या बुरी यह पूछता है" सो इसके पिताने इस देशके बिगाडने में कुछ कचाई नहीं रक्खी ईश्वरकी गतिसे यह देश आबाद रह गया प्रथम व्यभिचारी बहुत था दूसरे द्रोही बहुत था तीसरे कुसंगी था चौथे धनका बडा लोभी था, पांचवें रैयतसे कर बहुत लेता था और पैसे के लाभपर भंगीके भी घरमें चलाजाता था और ज्यादे क्या कहें सो यह उससे बहुत अच्छा होगा परन्तु कुछ स्त्रियोंका कुसंग इस को भी रहेगा अब राजाके हाथसे सवालक्ष विष्णुसहस्रनामोंके पाठों का संकल्प हो जाय तो बहुत अच्छा है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०॥ हुक्मी शकल जमात ☰ साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजनीतिका है" इस मुकदमाको अव्वल जीतेगा दोयम तू जानता है कि इस मुकदमेमें बडी रौल डौल हो रही है और इस मामिलेमें बहुतसे लोग अव्वलकी तरफ और बहुतसे दोयम की तरफ हैं और कारदारोंमें भी यही नौबत है सो यह मुकदमा नहीं है यह तो बडी आफत है जो सुनता है उसका भी दिल घबरा जाता है परन्तु अब यह मुकदमा बहुतदिन रहेगा इसमें बहुत उलट पलट होगी और रुपैया बहुत खरच पडेगा परन्तु अब राजनीति अच्छी है सच्चा सच्चा ही रहेगा अंदेशा मतकरो इस नीतिमें कारदा-

रोंको बडी आफत पडैगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१ ॥ हुक्मी शकल फरहा ⁘ मुनकलीव शुक्र की हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीर की शांतिका है" सो तुझे गृहस्थसे उपराम हो जाताहै केवल ईश्वरके आराधनमें चित्त लगता है चित्त बहुत खुशी होता हैं परन्तु जिस वक्त रजोगुण तमोगुण और काम क्रोध लोभ ये चित्तको डिगाते हैं तब जीव खूब भ्रमता है सर्वज्ञान बह जाता है फिर जब तेरेको उपराम होता है तब काम क्रोध लोभके किये कार्य्यको देख देख बहुत पछताता है और चित्तपर यह विचार करता है कि इस गृहस्थको छोडके उत्तरदिशाको चलें सो तू सन्देह मत कर यही कलियुगका धर्म है ईश्वरकी भक्ति कर सब पाप दूर होंगे कलि- युगमें ध्यान और ज्ञान नहीं है केवल भक्ति और दानसे ही मोक्ष होता है सन्देह मत कर ३ वर्ष बाद उपराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२२॥ हुक्मी शकल ⁘ उकलामुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरकी शांतिका है सो तेरे सब चीजकी मौज है परन्तु जो धन था सो खरच हुआ जाता है और धन भी बहुत चाहता है धन मिलता नहीं और रात्रिको बडे २ विचार करता है परन्तु तजवीज कोई न हुई और चित्तको कहीं स्थिरता नहीं होती रात्रिको निद्रा नहीं आती यह प्रश्न है" सो तू पहले जन्ममें औरतका धन लेकर नट गया सो उसने बडे बडे श्वास मारे उस पापसे यह चित्तभ्रान्ति है सो तू बटुकभैरवका अनुष्ठान जितनी तेरी ताकत हो उतना करवा तुझे धन मिलेगा भ्रान्ति जायगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ इति प्रथमस्थानम् । अथ द्वितीयस्थानम् पिण्ड ॥ २३ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अंकीश दाखिल शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल द्रव्यके आगमनका है" सो तू बहुत दिनोंसे इस धनकी आशासे बहुत दिक्क हुआ परन्तु यह धन नहीं मिला सो तू अब यही उद्योग कर शनैश्चरके निमित्त दानदे और शनैश्चरका जप करवा तुझे यह धन मिलेगा सन्देह

मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २४ ॥ हुक्मी शकल $\begin{smallmatrix} — \\ \cdot \\ — \\ — \end{smallmatrix}$ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनके आनेका है" सो तेरी रकम साहूकारने दबाई है रकम ज्यादा है लेकर नटता है पूंजी दबाकर दीवाला करता है बेईमानी छाय रही है उसको बहुत समझाते हैं परन्तु लोभकरिके यह कहता है कि मेरे पास पैसा एक भी नहीं है" सो तू अर्जी पेश कर तेरा खरच तो पड़ेगा और धन भी कुछ कमती मिलेगा परन्तु सुनाई जलदी होगी रकम मिलेगी और भैरवका अनुष्ठान करा तेरे दिन नाकिश हैं खेई हुई नाव चलती है तेरे जैसी पैदा है वैसा पुण्य नहीं सो तू धर्मकी नीयत रख सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ २५ ॥ हुकूमी शकल बयाज $\begin{smallmatrix} — \\ — \\ \cdot \\ — \end{smallmatrix}$ साबित चन्द्रमाकी कहती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल है कि मेरे पास बहुत धन होगा या नहीं " सो तू और लोगों के धनको देखकर चित्त बहुत चलाता है और उद्यमको भी तेरा चित्त करता है और परदेशके उद्योगमें भी बहुत रहता है जो उपाय करता है सो चलता नहीं सो इसमें तेरा उद्योग नहीं चलेगा क्योंकि तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें खत्री था तेरा दोस्त ब्राह्मण था सो तू चतुर था वह गरीब था उसके घरसे धन मँगाके उसके हाथसे तू अपने घर में बरता करता था इससे उस ब्राह्मणको टोटा आया जब तुझसे उसने मांगा तो तू नट गया वह उच्च श्वास मारके अपने घरमें बैठा उस पापसे तेरे इससे ज्यादे धन बढ़ता नहीं कभी फायदा हो तो नुकसान हो जाता है सो तू राधादामोदरकी मूर्ति बनवायके नेक ब्राह्मणको दे और ब्राह्मणोंके पग पूज तेरे धन इज्जत २ वर्ष बाद बढेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २६ ॥ हुकूमी शकल नुस्रुद-खारिज $\begin{smallmatrix} \cdot \\ \cdot \\ — \\ — \end{smallmatrix}$ सूर्य्यकी है हुकूम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीसे लाभका है सो अव्वल दिनसे अपना इल्म छोडके इसने बहुतसी पढनेमें खेचल की और घरका जरखरच पड़ा और पढ़नेकी परीक्षामें अच्छा रहा परन्तु नौकरी किया चाहता है सो

बहुतसी तजवीजकी नौकरी न लगी सो तू अब पछताता है कि अपनी विद्या त्यागी और यावनी विद्या पढ़ी रोजगार न हुआ सो तू संदेह मतकर तेरे भाग्योदयमें १ वर्ष २ मास ३ दिनकी ढील है सो तू मंगलका दान दे और मंगलका जप करा सन्देह मत करे इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ २७ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नुस्रुद दाखिल गुरुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीसे धनके आनेका है" सो तू अपनी विद्या छोडकर यावनी विद्या पढा है सो तू अब यह चाहता है कि मेरी नौकरी कब लगेगी अरे भाई पहले तो पढनेमें ताकतवर हो पीछे नौकरीकी बात करिये जैसे कच्चा फल खानेमें जाइका नहीं देता तैसे थोडा पढे हुएको नौकरी जाइका नहीं देती सो तेरी तकदीर ज्यादा है। परन्तु और पढे बिन तकदीर नहीं खुलेगी सो तू अभी तो खूब पढ ३ वर्ष ४ मास १७ दिन बाद तेरी तकदीर खुलेगी नौकरी बहुत अच्छी होगी पढके परिपक्व हो और जो खरच लगता है उसका सन्देह मत कर अल्लाताला नौकरी अच्छी लगावेगा परन्तु नेक ब्राह्मणसे शिवार्चन करवा जो शत्रु खडा होगा सो रफै हो जायगा फिकर मत करे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८॥ हुक्मी शकल–अतवेखारिज केतु की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीसे ज्यादा लाभका है" तेरी तरक्की हुई परन्तु तेरे मनलायक न हुई सो तू तरक्की विशेष कराया चाहता है सो तू औरोंको देखके सबर रख तुझसे पहलेके जो नौकर हैं तुझसे भी अधिक काम देते हैं उनकी तेरे बराबर तरक्की नहीं है सो तू औरोंको देखके दिलको सबर दे और तेरे चालचलनसे अफसर बहुत खुश हैं सो तू जितनी तेरी ताकत हो उतना दुर्गापाठ करा तेरी तरक्की जलदी होगी हे शख्स ! सन्देह मतकर एक सालमें तुझे ऐसा लाभ होगा कि जिन्दगीभर खुश दिल रहेगा ताकीद मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नकी मुनक लीवं

मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जोरकरके पराये धनको दबानेका है सो तू यह चाहता है कि "मुझे यह धन पच जायगा या नहीं" सो तू इस धनकी कौली मत-भर बेहक्कके धनमें फलेदारी नहीं हुआ करती सो तू इस मामिलामें पैर मत धसा जो लोभकरके धसायेगा तो तेरी इज्जत बिगड जायगी और धन भी न मिलेगा तुझे दिन निहायत नाकिश हैं ऐसे दिन हैं कि इन दिनोंमें कुछजर पाससे लगेगा सो तू तदवीर कर तेरे ही कारमें फायदा होगा १ साल कालीका पूजन कर और नेक-ब्राह्मणसे कालिका कवचका पाठ करवा सो तुझे बरजरूर धन मिलेगा सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३० ॥ हुक्मी शकल–अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं किसी और शख्सका रोजगार जोर करके लिया चाहता हूँ सो मिलेगा या नहीं" वह कार जबर है जिसने यह किया वही साहूकार होगया सो तू इस कारको संगवाले रुपये तो तेरे खरच पडेंगे परन्तु विष्णुसहस्रनामका अनुष्ठान कराना, नहीं कराओगे तो यह काम पूरा पडना बडा मुशकिल है तू यह कर, करने बाद तेरा काम फते होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल समीपके रहनेवाले शख्सके लाभका है" सो तेरा निहायत प्यारा है और तुझसे लोभकरके अपने पाससे तो दिया जाता नहीं इसके लाभके वास्ते उद्योग बहुत करता है परन्तु तेरा उद्योग चलता नहीं सो इसके वास्ते तू बहुत तकलीफ पाता है सो तू सन्देह मतकर और यह पहले जन्ममें दाक्षिण देशमें ब्राह्मणजाति दोनों भाई थे तेरे भीतर दया थी और इसके भीतर दया नहीं थी सो तू किसी भूखेको अन्न या वस्त्र देता था यह उसके पाससे भी ले लेता था और तुझे बहुत धमकाता था

और किसीको भी घरमें घुसने नहीं देता था सो इसको यह पाप का फल है तू सन्देह मतकर मनुष्य अपना किया भोगता है जो तुझे निहायत ही सन्देह है तो इसके हाथसे एक तुलसीके दरख्तमें जल डलवाय और कबूतरोंको दाने गिरवाय इसका अजाब दूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२ ॥ हुक्मी शकल तीरखा ⁝ मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके लाभका है" तू उसका भेजा आया है वह रोजगार लाभके वास्ते करता है परन्तु इन दिनोंमें लाभ तो होता नहीं परन्तु कुछेक नुकसान हो जाता है। उसको दिन अब १ वर्षसे निहायत नाकिश हैं एक वर्ष –१९ दिन और नाकिस हैं सो उन दिनोंमें गुजरान कर और सहस्र चण्डीपाठ करवाय जिससे पाठ करावे उससे दूसरेको भेद मालूम न होने पावे क्योंकि कहनेसे जप तथा दानका फल जाता है सो करवा अल्ला ताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३ ॥ हुक्मी शकल लहियान ⩸ खारिज गुरुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरसे धनके उद्यमका है" सो तेरेपास तेरे बडोंका कमाया हुआ पैसा बहुत है परन्तु अपने हाथसे कमाये विगर तेरे दिलमें सबर नहीं होता तू सन्देह मत कर अब तेरे दिन नाकिश हैं इससे तेरा दिल नहीं लगता है और तू यह कहता है कि जो घरमें अपने हाथसे कमाता है उसका सब आदर करते हैं और उसीको बडा मानते हैं उसीको पूछके सब काम करते हैं यह तुझसे नहीं सहाजाता सो तू रुद्रजाप २ वर्ष ब्राह्मणसे करवा और भूखे दीनोंको अन्न दे तुझे जरूर लाभ होगा जो तू विचारता है तेरा वह काम फते होगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४ ॥ हुक्मी शकल ∸ कब्जुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनकेवास्ते उद्य-

मका है" सो तूं कईदफे उद्यम लाभकेवास्ते करचुका परन्तु तेरे दिल माफक लाभ न हुआ और अब यह चाहता है कि ऐसा उद्यम करूं कि जिसमें सालभरमें लाखोंके वारे न्यारे हों सो तू यह जो विचारता है वही उद्यम कर परंतु पहले तो तेरा रुपया खरच पडेगा पीछे बहुत-पैदा खडी होजायगी और तू किसी के शीरमें मत करना फिर तक-लीफ पावेगा वह मनुष्य बडा कदरज है और शिवार्चन किसी नेक ब्राह्मणसे कराना तुझे देशमें लाभ बहुत अच्छा होगा संदेह मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल इजाराका है"सो इस इजारेपै तेरा दिल बहुत लुभाय रहा है और शख्सभीं इस इजारेको लेनेको तैयार है परंतु हिम्मत उसकी नहीं पडती है और एक शख्स उन्हींमें होश्यार है उसकी हिम्मत पूरी है सो उसपर मालिककी रजाबंदी थोडी है उसको देनेमें नाराज है उस-को जालसाज मानता है और तू भी होश्यार बहुत है परन्तु वह तुझे निहायत गरीब जानता है तुझे दिया चाहता है परन्तु तू श्रीमहाका-लीके मंत्रका जप किसी जितेन्द्रिय ब्राह्मणसे करवा और किसीके लगे मत कह तेरा इजारा बरजरूर हो जायगा और इस इजारेमें तुझ-को फाइदा बहुत रहेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६ ॥ हुक्मी शकल जमात ☰ बुधकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि "मुझे इस इजारेमें कैसा लाभ होगा" सो तुझे लाभ तो होगा परन्तु दशांश पुण्यमें लगाता रहाकर पहले तुझे लाभ रहा परन्तु पैसा एक पुण्यमें न लगाया फिर टोटा पडा सो सहा और दिलको निहायत तकलीफ रही फिर भगवती के ध्यानसे तुझे फायदा रहा फिर पुण्यमें पैसा न लगाया अब फिर दिल कांपता है सो तू सुवर्णकी ४० मासे की दुर्गाकी मूर्ति दानकर और ३६० दुर्गा पाठकी दक्षिणा सामग्री समेत संकल्प दे और उस ब्राह्मणसे यह कह कि किसी दूसरेसे न कहना सो तू यह कर, बराबर मनचाहा लाभ

होगा टोटा कभी न होगा संदेह मतकर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ३७॥ हुक्मी शकल फरहा ∴ मुनकलीव शुक्रकी है हुक्मफरमाती है "कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि इस मकान को मैं लेऊँगा सो मुझे इस मकानसे लाभ है या नहीं" यह मकान बडा है इसमें दाम पूरा लगा है और तुझे बहुत किफायतसे मिलता है और तेरा दिल बहुत खुशी है सो इस मकान की प्रतिष्ठा नहीं हुई है और इसमें यवन भी रहे हैं इस कारणसे इस मकानवालोंको विशेपलाभ नहीं होता तू संदेह मतकर इस मकानमें गायत्रीका जप करवाकर अपनी ताकत माफिक हवनमार्जन ब्रह्मभोज प्रतिष्ठा समेत करवा और भूखे अपाहजोंको कुछ खैरातकर इस मकानमें बहुत फायदा होगा बहुत लागतका थोडेधन लगनेमें आता है संदेह मतकर अल्लाताला अच्छा करेंगे । इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥३८॥ हुक्मी शकल ∴ उकलामुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल मकानसे लाभका है" यह मकान अब जिस दिनसे आबाद किया है उस दिनसे सुखसे जल भी न पिया जो अव्वल लायकवर मनुष्य दीखता है सांई तत्काल बुरा होजाता है और घरपर रुदन किसी वक्त नहीं थंभता सो मुरव्वियोंसे निहायत क्षीण होगये और कुछ बधेवा नहीं होता और जो रोजगार के वास्ते विदेशको जाता है उसका दिल नहीं लगता और जो दिल लगै तो शरीरसे सूख जाता है। यह मकान तुमको शुभदायक नहीं है इस मकानको छोडदो जो यह मकान तुमसे न छोडा जाय तो इस मकानकी एवजी अपनी ताकत माफिक दूसरा बनाके किसी कुटंबीको दो और श्रीगायत्री और श्री दुर्गाका आराधन और श्रीमद्भागवतका श्रवणकर और मकानदे जो मकान देने लायक न हो तो नगदी रोकडी सुफेद वस्त्रमें लपेट अपनी ताकद माफिक सुबहके वक्त सूर्य्योदयके पहले उसके पास जाकर ब्राह्मणको दे और यह कह कि पहले और हमारी इल्लतका ले और आगे यही मकान सुखदायक होगा सन्देह मत करो इति

प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अङ्कीश शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जमीनसे लाभका है" सो जमीनसे तुझे अच्छा लाभ है और यह जमीन मौकेपर है और शुभदायक है और अभी इस जमीनके लेनेमें छिपे हुए बहुत तैयार हो रहे हैं सो तू इस जमीनको तुरत अपनी करले नहीं तो इसके लेनेमें बहुत तकलीफ होगी और फिर होनी भी मुश्किल है सो तू चूके मत और प्रतिपक्षी अब इसमें हल्ला करेंगे और यह कहेंगे कि हमारा हक्क है और जमीनके मालिकको बहकावेंगे सो तू स्कंदेश्वरीके मंत्रका जप करवा जमीन तुझे मिलेगी और लाभ भी होगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४० ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनसे लाभका है" सो तू अपनी जमीनको औरको देकर धन लिया चाहता है सो जिससे तू बतलाता है वह बहुतकम धन लाता है और इस जमीनका मौका देखें धन बहुत ज्यादा है तू दुर्गाका पाठ एकविंशति २१ करवा फिर यह जमीन फाइदे माफिक मिलजायगी संदेह मतकरे इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ४१ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बजाय साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है " कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्याह वस्तुसे लाभका है " सो तू यह पूछता है कि मुझे इस काली जिन्सले लाभ है या नहीं सो यह जिन्स कालिका देवीका रूप है जिस मनुष्यको शौली आजा है तो भिक्षुकको भी लक्षपति कर देती है और जिसको औली आई है उस लक्षपतिको भी धरतीसे मारदेती है धूलिको आदर होता है और उस मनुष्यको आदर नहीं होता सो इस व्यापारको समझ और अपनी ताकत देख कर करना क्योंकि अब तुझे दिन सामान्य आये हैं सो विचारके करना और इन दिनोंमें महाकालीके मन्त्रका आराधन करो फिर इन दिनोंमें भी अच्छालाभ होगा और श्रीकालीजीसे प्रार्थना कर और बलिदान कर लाभ होगा और एक वर्षबाद तेरे धन और इज्जत बढेगी सो धर्ममें नीयत रखना इति प्रश्न ॥

पिण्ड ॥ ४२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल काली वस्तुसे लाभका है " सो यह काली वस्तु कालीदेवीके समान है जैसे श्रीकाली प्रसन्न होजाती है तो फिर भिक्षुकभी लक्षपती हो जाता है और प्रसन्न न होय तो लक्षपतिको भी धूलसमान करदेती है और तेरेको अब सन्देह ज्यादा है और आजदिन इस व्यापारमें कुछफायदा है सो तू श्रीकालीके महामन्त्रका रात्रिमें जप और बलिदान नित्य करवा और उस ब्राह्मणसे हरदफे यह कहदे कि किसीके आगे न कहै क्योंकि जप तप दानका कहनेसे फल जाता रहता है सो तुमको भी किसीके आगे न कहना और अब तेरे ३२ दिन नाकिश रहे हैं सो श्रीमहाकालीकी प्रसन्नतामें तुझे लाभ होगा सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करैगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३ ॥ हुक्मीशकल ⚎ नुस्रुदाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके व्यापारसे लाभका है " सो तू हिचकता है क्योंकि तुमने यह व्यापार अब ही किया है और अब ही कुछ हानि दिखाती है सो तेरे ३ मास ७ दिन नाकिश हैं सो बटुकभैरवके मन्त्रका आराधन करवा और काले कुत्तेको बलिदे कामेश्वरीको अहत रक्त वस्त्र दानदे तुझे इसी व्यापारमें लाभ होगा सन्देहं मत कर ईश्वर अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अतवेखारिज केतुकी है हुक्मफरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके व्यापारमें फायदाका है" सो इस व्यापारमें पहले तुझे फायदा रहा है सो अब कुछ नुकसानभी है और तुझे दिनरात्री फिकर रहता है तुझे यह खबर नहीं रहती कि मैंने भोजन किया है या नहीं और रात्रिमें स्वप्नभी नाकिश आते हैं सो तू सन्देह मतकर ये दिन तेरेको नाकिश ही थे अब दिन २७ और रहे हैं सो तू मंगलादेवीका पाठ करा और बलिदान दे हाथ जोडकर मिन्नत कर तेरेको लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५ ॥ हुक्मी शकल नकी ÷ मुनकलीब मङ्गलकी है

हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजसे ठेकाले-नेका है" सो पहले तैंने ऐसा ठेका नहीं लिया है इससे तेरा दिल कांपता है सन्देह मतकर तू बहुत होश्यार है और तेरे मनमें धीरज बहुत है और तेरा नसीब चढता हुआ है और जिस मनुष्यसे एक दफे तेरी मुलाकात होजाती है वह फिर तुझे बहुत याद रखता है और तू लिहाज करके बडे मनुष्यके पास नहीं जाता और जिसके पास चला जाता है वह तेरा पूरा आदर करे है सो तू श्रीचंडी पाठका किसी ब्राह्मणको संकल्प दे और इस ठेकाको जलदी करले और लोग इस कामको लेनेको बहुत तैयार होरहे हैं सो तू जलदी करले तुझे पूरा लाभ होगा फिकर मतकरे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४६॥ हुक्मी शकल अतवेदाखिल ⁚ शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ठेका लेनेका है" सो तैंने पहले भी ठेका लिया था उसमें कुछ लाभ भी रहा था परन्तु तेरे दिलमाफिक लाभ न रहा सो तू यह पूछता है कि इस ठेकामें रुपया ज्यादा लगता है मुझे फायदा रहेगा या नहीं ? सो तू इस ठेकामें अपनी तंदईके हुश्यार मनुष्य रख जो काम खूबले और काममें हरकत न हो तू भी कामकी संभालरख और लक्ष्मी जीवेश्वरीके मंत्रकर रात्रिमें आराधन करवा और बलिदे सन्देह मत करे तुझे लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जत मासा-वित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल १ घरमें धनबताते हैं उस घरको खोदके काढनेका है" सो तेरे घरमें धन दवा हुआ है परन्तु तू मतखोद क्योंकि धन घना है पर तेरी तकदीरमें रकम नहीं है सो तुझे न मिलेगा जो तेरा दिल नहीं ठहरता हो तो तू चान्द्रायण व्रत कर और पञ्चभीष्मोंमें श्रीपुष्करजी स्नान कर और स्वप्नेश्वरीके मन्त्रका जप करवा स्वप्नमें तुझे बतावेगी और तुझे धन मिलेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके खोदनेसे लाभ-
का है" तूने राजसे खानि ली है अबतक विशेषद्रव्य नहीं निकला
सो तुझे यह सन्देह है कि जैसा सुना जाता था वैसा क्यों
नहीं निकसता कौन ग्रहका दोष है सो हे पूछनेवाले ! जितना तेरा
रुपया लगा है उतना अब तक पैदा नहीं हुआ सो तेरेको यह ग्रह
तो सबही अच्छे हैं परन्तु धनेश्वरीके मन्त्रका जप न कराया
इस कारणसे विशेष माल न निकसा सो तू अब धनेश्वरीका जप
करवा और सन्देह मत करे इसके करनेसे तुझे जमीनमें धन बहुत
मिलेगा फिकर मत करो इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४९ ॥ हुक्मी
शकल लहियान ⚍ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है
कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पिताके धनका है" जिसका-
लमें तेरे पिताका शरीर पूरा हुआ उसकालमें तू अपने पिताको
पूछने न पाया जहां और जिस जिसमें था तहां २ उसी २ में
रहा और जिन मनुष्योंमें था वे मनुष्य बेईमान बदल गये और
कुछेक धन तुझे पीछेसे मिला परन्तु जितना भ्रम था उतना न
मिला यह पूछता है धन पिताका है या नहीं है और मुझे मिलेगा
या नहीं सो अपनी कुलदेवताका ध्यान करो और पितरोंकी आधीन-
ता करो कुछ धन तो तुम्हारे घरमें और कुछ उन्हें मनुष्योंके पास
मिलेगा सन्देह मतकर तेरी तकदीर बडी है तू धन बहुत कमा-
वेगा और यश भी अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५० ॥
हुक्मी शकल ⚎ कबजुलदाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि
"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पिताके धन मिलनेका है" सो
पहले तो तेरे पिताने तुझे बहुत चाहा परन्तु तैने उसका कुछ भी
न माना जब उसने यह कहा कि भोजन करले तो तू यह बोला
कि आज मैं जलभी न पीऊँगा सो जबतक तू बालक रहा तबतक
तेरी सब आल खेई फिर तू सयाना हुआ तब भी न समझा
तो उसका दिल तुझसे निहायत हटगया अब जो

उसको दिखलाई देता है तो उसके नेत्रोंसे खून वरसता है और निहायत शत्रु मालूम देता है सो अब तू उसके धनकी क्या आशा तकता है वह प्रथमतो आप जीवता ही धनको ठिकाने लगा देगा और जो कुछ रहेगा सो उसमेंसे बडी तकलीफसे कुछ धन तेरे पल्ले पडेगा तू सन्देह मतकर तेरी तकदीर बहुत अच्छी है तेरोको धन बहुत होगा परन्तु धनेश्वरीके मन्त्रका जप करानेसे तकदीर खुलेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१ ॥ हुक्मी शकल ⁚̄ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल माताके धन मिलनेका है" जिसकालमें तेरी माता मरी उसकालमें तू विशेष पूछने न पाया और घरका माल विशेष उसीके हाथ था सो अब तू शिर धुन धुन पछताता है सो कुछेक माल तो पिछले दिनोंमें तुझे मिला था परन्तु जैसा भ्रमथा वैसा न पाया सो तू संदेह मतकर पहले तो तेरे मामा को धन मिलगया और जो कुछ रहा था समीप रहनेवाले मनुष्योंने खाया और जो अवशिष्ट था सो तुमको मिला अब तू सन्देह मतकर तेरी कलाम ज्यादा है तू श्रीभवानीका आराधन कर तेरी तकदीर खुलेगी फिक्र मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरी माताके धनके मिलनेका है" सो तेरी माता तुझे पहले तो बहुत ही चाहतीथी पन्रतु तुझसे यह कहती थी कि रे पुत्र तू भोजन करले तू ऐसा सख्त जबाब देता था कि आज मैं पानी भी न पिऊंगा ऐसे ऐसे वचनों करिके दिल बिगड गया जैसे फटादूध फिर नहीं मिलता है वैसे ही तुम्हारा मन नहीं मिलता पहली बातोंको यादकर अब पछताता है और धनको भी तुम्हारी माता बरवाद करती है और तुम्हारा दिल बहुत संदेहमें रहता है सो तू धनेश्वरी दुर्गाके महामन्त्रका आराधन करवा तुझे दौलत मिलेगी शान्ति रख संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३ ॥ हुक्मी शकल ⁚ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि

"पूछनेवालें शख्स ! तेरा सवाल ताऊके धनके लाभका है" सो तू
यह पूछता है कि मेरे ताऊके पास धन बहुत था और विशेष हक भी
मेरा है परन्तु महाखोटे मनुष्य मुझे सताते हैं और राज्यमें भी दावा
किया चाहते हैं और मुझसे यह कहते हैं कि इसमें तुम्हारा क्या दावा
हैं हमको देके मरा है सो मुझसे भी ज्यादे दावा करते हैं और मनु-
ष्योंको बहकाते हैं यह प्रश्न हैं सो तू श्रीकालिका भवानीके मन्त्रका
जप नेक ब्राह्मणसे करा तुझे धन मिलेगा कुछ खरच तो पडेगा
संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ उकला
मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स
तेरा सवाल अपने ताऊके धनके मिलनेका है" सो तुझे पहले उसने
बहुत चाहा परन्तु तूने उसका कहना एक भी न माना और जो
तुझको उसने यह कहा कि भाई बैठजा तो तैंने कहा कि आज खडा
ही रहूंगा जबतक तू बालक रहा तबतक तेरी सब सही फिर तू समर्थ
हुआ तब भी न समझा सो उसका दिल तुझसे हटगया और दिलमें
गुस्सा भी बहुत आरहा है सो इसके जीते हुए तुझे एक पैसा भी
न मिलेगा यह इन पैसोंको बरबाद करेगा और इसके शरीर पूरे हुए
पीछे तेरा ही है सो तू दुर्गाका आराधन कर यह पैसेको बरबाद न
करेगा और उसकी उमर ९ वर्ष की है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९५ ॥
हुक्की शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है
कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चाचाके धन मिलनेका है" जि
कालमें उसका शरीर पूरा हुआ उसकालमें उसका धन तुझे न
मिला जहां था वहांका वहां ही रहा तू चाहता है कि मुझे मिलेगा
नहीं सो तू धनेश्वरी महाकाली के मंत्रका जप करवा और ब
दानदे जितनी तेरी ताकत हो और कुछ संदेह मत क
मास ११ दिन १७ बाद तेरे दिन, अच्छे आवेंगे और ल
होगा सो तू संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९६ ॥ हुक

शकल ⠶ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चाचासे लाभका है " तेरे चाचाके पास धन बहुत है वह पहले तो तुझको चाहता था पर अब मनुष्योंके बहकानेसे तुझसे प्रीतिकरके नहीं बोलता और तुझे एक पैसा भी नहीं देता परन्तु तू संतोष रख तेरे पास धन है और तू बहुत होश्यार है तेरी तकदीर ज्यादा है और अबतक तेरी तकदीर खुली नहीं है सो तू श्रीकुबेरके मन्त्रका जप करवा और भूखे अपाहजोंको अन्न दे धर्मकी नीयत रख तेरे पास धन बहुत बढेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७ ॥ हुक्मी शकल ⠿ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके धनके मिलनेका है तू उसके जीतेजी तो उससे कभी दिल देकर न बतलाया जब वह मरनेलगा उसवक्त तुझे अवकाश नहीं मिला और कुछ धन भी नहीं मिला और जो मिला सो बहुत थोडा मिला अब तू यह पूछता है कि मेरे भाईका धन मुझे मिलेगा या नहीं तू संदेह मत कर तेरा लहना उसमें थोडा था उसके धन पर जो दुष्ट मनुष्यदाव लगाते हैं सो निहायत खराब होंगे और उनका दुष्टपना इस मामिलामें जाहिर हो जायगा और ऐसे होजावेंगे कि बडे मनुष्योंके पास बैठने योग्य न रहेंगे सो तू धनेश्वरी महामायाका जप नेकब्राह्मणसे करवा और सूर्य्यसे हाथ जोडके विनती कर धन मिलेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९८॥ हुक्मी शकल ⠴ नुस्रुतुखारिज सूर्यकी है । हुक्म फरमाती है, कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मेरे भाईके पास धन बहुत है सो मुझे मिलेगा या नहीं तेरे भाईके पास धन तो बहुत है और तुझपर उसका दिल भी है परन्तु उसने पैसा निहायत तकलीफसे कमाया है सो उसका स्वभाव अत्यन्त कृपण है वह जानता है कि प्राण चलेजावें परन्तु पैसा न जावै सो वह तुझको जीता हुआ तो धन मुशकिलसे देगा परन्तु मरे पीछे तुम्हाराही है जो तुझे जलदी ही हो तो भद्रकालीके मन्त्रका आराधन

करवा तुझे धन मिलेगा संदेह मत कर आल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५९॥ हुक्मी शकल = नुस्त्रुदूदाखिल बृहस्पति- की है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल साससे लाभका है " तेरी सासके पास धन बहुत है और तेरी स्त्रीसे उसका स्नेह भी बहुत है तेरी सासके जो समीपी हैं वह तुझे और तेरी औरतको देखकर निहायत दिलमें तकलीफ मानते हैं और तेरी सासकी और उसके समीपियोंकी एक पल भी नहीं बनती है और इतनी ईर्षा रखते हैं कि मौका लग जायतो चोरी करवा दें परन्तु राजासे डरते हैं सो तू भगवतीका आराधन और बलिदान रात्रिमें करवा किसी प्रकारकी जोखिम नहीं होगी और धन तुझे ही मिलेगा और जो तू यह नहीं करेगा तो तुझे निहायत तकलीफ होगी और झगडेमें तेरा धन भी खरच पडेगा सो संदेह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥६०॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी सासके धनके मिलनेका हैं कि मुझे मिलेगा या नहीं " सो तेरी औरतका स्वभाव नाशिक है और विचार भी थोडा हैं सो पहले तेरी सासका तेरी औरतपर निहायत दिल था सो अब इसके स्वभावको देखकर वैसा दिल नहीं रहा यह तू जानता हैं अब शनैश्चरके रोज काले कुत्तेको मोठ या चनाकी चपातियां गेर और शनिश्चरका दान दे और तेरे जन्मपत्रमें मङ्गल माफिक हैं सो मंगल- की मूर्ति तांबेकी बनाकर किसीनेक ब्राह्मणको दे और उसी ब्राह्मण- को १ वर्ष तकका मंगलका पूजनदे और उस ब्राह्मणसे यह कहदे कि किसीसे न कहैं क्योंकि कहनेसे फल जाता है ऐसा करनेसे तुझे धन मिलेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६१॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलकी हैं हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाली स्त्री तेरा सवाल है कि मेरी सासका धन मुझे मिलेगा या नहीं" और मुझसे खुसी रहेगी या नहीं यह पूछती है सो तेरा स्वभाव निहायत खराब हैं क्योंकि जो तुझसे कोई कहै कि तू जल पीले तो तू कहती है कि मैं

आज रोटी ही न खाऊंगी और उसकाभी स्वभाव निहायत खराब है पहले तो तेरे ऊपर उसका निहायत दिल था और अब तैने सामने बोल २ शत्रु करली। तू उससे धनकी अभिलाषा रखती है वह तुझे खाकभी नहीं देगी क्योंकि तेरे स्वभावकी तासीरसे तेरा बोलना खराब है सो तू किसी नेक ब्राह्मणसे वाग्वादिनी देवीके मन्त्रका जप करवा जितनी तेरी ताकत हो और दिलमें शान्ति रख सो तुझको धन मिलेगा और तेरी साससे प्रीति भी होजावेगी फिक्र मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सुसरके धनके मिलनेका है " और तेरे सुसरके पास धन खूब है और वह तेरे लिये निहायत हित है परन्तु कृपण पूरा है अब तू संकट निवारण कवचका पाठ करवा और उसके समीप रह और उसके कहनेमें मनरख तुझे धन मिलेगा और तू ऐसा न करेगा तो इस धनके आनेमें तेरे गलेमें बडा झगडा पडेगा इससे तू उक्त उपाय कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी हैं हुक्म फरमातीं है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्र लाभ तथा मित्रसे धनके लाभका है " तू यह पूछता है कि मेरा मित्र मुझे कुछ धन देगा या नहीं तू जैसी बडी प्रीति उससे मान रहा है बोलने बतलानेमें तो वैसा ही है परन्तु जो तू उससे लाभके वास्ते कहेगा तो वह उसी वक्त तोतेकीसी आंख बदल जायगा फिर प्रीतिसे बोलेगा भी नहीं क्योंकि वह मित्र ऊपरका है अब तू उस मित्रको मत जाँच तू अपनी तकदीर देख श्रीगणेशमन्त्रका आराधन अपनी ताकत माफिक करा मित्र तो सम्पत्ति समय रहते हैं और यह धनका लेन देन मित्रताके बाधक होते हैं सो तू आपत्तिके दिनोंमें गुजरान कर अब तेरे नाकिश दिन, ३ वर्ष ९ मास और २७ दिन रहे हैं सन्देह मतकर और तू निहायत तकलीफ पाता है तो पितरोंके तीर्थ श्राद्ध करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब

चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवा
मित्रसे लाभका है " सो तेरा मित्र बहुत सरदार है और तेरे ऊप
निहायत निगाह रखता है और तुझे दिलपै हरदफे लाता है परन्तु
अब तक जैसी दोस्ती है ऐसा लाभ तुझे न हुआ क्योंकि ते
अबतक दिन नाकिशथे सो अब ७ मास १३ दिन और नाकि
हैं सो तू सूर्य्यकी चांदीकी मूर्तिमें किसी नेक ब्राह्मणसे सूर्य्यका पूजन
और जप करवा और हाथ जोडके सूर्य्यकी भिनती कर जो तू मित्रसे
लाभ चाहता है उससे अधिक लाभ तुझे होगा सन्देह मत कर
इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ लहियान खारिज
बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा
सवाल शत्रुसे लाभका है " सो यह शत्रु बडा जबर है और
तेरा दिल इनसे पहिले दिनसे बडा नाराज रखा है जिस वस्तुमें
रोजगारके वास्ते तू दिल लगाता है उसी वस्तुको यह तुझसे
दूर किया चाहता और आप लिया चाहता है तुझसे मुखपर
किसी वक्त नाराज नहीं दिखाई देता और तुझसे जबर है और
तुमने कोई काम किया और इसको मालूम न हुआ वह ते
हाथ आया है सो अब शत्रुविनाशिनीका जप किसी नेक ब्राह्म-
णसे करा और भी कोई शत्रु तेरा हरवक्त बना रहता है सो सब
दूर होवेगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६६ ॥ हुक्मी
शकल ⚎ कबजुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछ-
नेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रु से लाभका है " सो यह तुझसे
पहले उदासीन था अब शत्रु हो रहा सो अब निहायत तकलीफ
देरहा है और निहायत जुल्म करता है जो तुम जरा भी कोई
काम करते हो तो उसीको वह जानलेता है क्योंकि एक मनुष्य
दुभाषिया तुम्हारे पास है सो तुम्हारी सब बातें उससे कह देता है
और तुमको हरदफे दिक रखता है सो तू सन्देह मत कर शत्रुंजय
मन्त्रसे ज्योतिदुर्गाका जप करवा तेरा शत्रु तेरे पैरोंमें आपडेगा।

उसपर ऐसा निहायत पचडा पडेगा सो तदवीर कर सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६७॥ हुक्मी शकल कब्जुलखारिज ⚍ राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धातुके व्यापारका है" सो तेरे अव्वल दिनसे धातुका व्यापार है केवल व्याजकी पैदा है और इसी पैदामें तू बना है परन्तु अब इससे कुछ पैदा विशेष न रही और पहले तुझको लक्षोंका फायदा रहा और अब भी है परन्तु वैसा नहीं सो तू यह पूछता है कि यही रोजगार करूँ या दूसरे रोजगारमें भी फायदा है तेरा दिलमालके लेनदेनेमें करता है क्योंकि इस व्यापारमें इस वर्ष रकमें भी बहुत मारी गई हैं सो रकम पूरी तो नहीं मिली परन्तु कुछ इमारत और जेवर बहुतसी तकलीफसे मिला सो अब तू यह चाहता है कि कौनसे व्यापार में फायदा है सो तू यह जान कि केवल व्याजके व्यापारवालेको संतानमें तो हरजा ही रहे है अव्वल तो होता ही नहीं जो बडा पुण्य हो तो होजावे परन्तु सन्तान जीना मुशकिल है जो जीवे सो लडकी जीवे यह सूतका पैसा माफिक है सो तू नगदीका बडा पुण्य कर सूतदोष दूर होगा और १ वर्ष २ मास ७ दिन बाद तू माल खरीद बेच तुझे बडा लाभ होगा और तेरे पास धन अब भी बहुत है सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६८ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धातुके व्यापारका है" सो तेरा दिल तो बहुत करता है परन्तु हिम्मत थोडी पडती है सो श्वेतधातुके व्यापारमें सामान्य लाभ है और पीत धातुके व्यापारमें ज्यादे लाभ है क्योंकि तेरे जन्म पत्रमें बृहस्पति अच्छा पडा है और पहले दिन तुझसे विशेष व्यापार न हुआ क्योंकि तेरे दिलको सचावट न पडी और अब भी तेरे २ वर्ष ३ मास ७ दिन और अच्छे हैं सो तू व्यापारकर लाभ होगा परन्तु धनेश्वरी महामायाके मन्त्रका जप करा क्योंकि दिलको

तसल्ली रहेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६९ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल काष्ठके व्यापारसे लाभका है" सो तेरेकूं काष्ठके व्यापारमें विशेष लाभ न रहा और लाभके वास्ते तैंने जितना उद्योग किया था उसका तीसरा भी हिस्सा लाभ न हुआ कारण यह कि तेरा बहुत अच्छा जो काम था वह तेरे निज नौकरोंने गायब किया और तू उनके भरोसे छोडकर गफलतमें रहा और तू यह नहीं जानता है कि यह काठका व्यापार है यह पापका मूल है सो विष्णु सहस्रनामका नित्य-प्रति आराधन करवा तुझे इसी काष्ठमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७० ॥ हुक्मी शकल ⁘ उलका मुनकलीव शनैश्चरकी हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल काष्ठके व्यापारका है" सो तेरा दिल बहुत दिनोंसे है परन्तु तेरी हिम्मत नहीं पडती सो तू इस व्यापारको कर तेरे काम माफिक बहुत लाभ होगा इस व्यापारमें तुझको लाखोंका फायदा है काष्ठसे तुझको लहना है परन्तु सत्यदेवका आराधन कर और पूर्णिमाके दिन कथा श्रवण कर विष्णु सहस्रनामका जप करवा लाभ बहुत होगा बरजरूर सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ इति द्वितीयस्थान फल ॥ पिण्ड ॥७१॥ हुक्मी शकल ⁘ अंकीश दाखिल शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल समीप गमनका है सो तू यह पूछता है कि मेरा गमन कब होगा और होगा तो मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तेरे दिलमें तो बहुत ही दिनसे लग रही है परन्तु तेरा जाना अबतक नहीं हुआ सो अब तेरे जानेमें कुछ ढील नहीं है और तुझे लाभ भी कुछ सामान्य होगा परन्तु तेरा दिल खुशी होजायगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२ ॥ हुक्मी शकल ⁘ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल समीप गमनका है " सो तू गमन करके मित्रसे मिलाप चाहता है तेरी और उस मनुष्यकी बहुत मित्रता है और

उसं मित्रसे मिले भी दिन अधिक हुए सो तू यह पूछता है कि मेरा जाना बनेगा या नहीं और जाना बनेगा तो मिलाप होगा या नहीं सो गमन करते बहुत दिन हुए और नजदीककी जगह है सो अब गमन तेरा होगा और मित्रसे मिलाप होगा परन्तु एक तेरा शत्रु है तुझको देखकर उसके नेत्रोंसे ख़ून बरसता है शत्रु भी बहुत हैं और उसे (तेरे शत्रुको) लोग बहकाते भी हैं परन्तु तेरा मित्र तुझसे निहायत खुश है और तेरे मिलापकी बहुत अभिलाषा रखता है और तुझको देखके ऐसा ख़ुश होता है कि जैसा चन्द्रमाको देखकर कुमुदिनी खुश होती है तेरे जन्मपत्रमें षष्ठेश नाकिश है सो उसका जप नेक ब्राह्मणसे करवा शत्रु नष्ट होगा और तेरे दोस्तसे तेरा मिलाप होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७३ ॥ हुकमी शकल ☰ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मित्रके सुखका है" अब वह (तेरा मित्र) घरमें है सो तैने किसीसे अपने मित्रकी तकलीफ़ सुनी थी इससे तुझे निहायत ही संदेह है क्योंकि तेरा प्यारा संदेह करने योग्य है और उसको तकलीफ जियादा ही हैं परन्तु उसके हाथसे सूर्य्यका आराधना होजाय तो ईश्वरकी कृपासे कोई दिनमें सुखी होजायगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४ ॥ हुकमी शकल ⠿ नुस्नुत खारिज सूर्य्यका है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके सुखका है"सो वह मित्र देशमें है और उसके पत्रमें कुछ बीमारी लिखी थी फिर कुछ ब्योरा न आया कि वह खुशी है या कुछ तकलीफमें । सो उसको तकलीफ तो जियादा ही थी परन्तु ग्रहोंके जपसे अब शान्ति है अभी उसके ग्रह कुछ दिन और नाकिस हैं महामृत्युंजयके जप करानेसे आराम होगा वह कालके मुखमें आ रहा है सो इसके घरमें यह कह दे कि पीपलके दरख्तका रविवारको छोडकर नित्य पूजन करे और पितरोंसे प्रार्थना करे इतना करनेसे ईश्वरने चाहा तो बरजरूर आराम होजायगा

इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७५॥ हुक्मी शकल ⁚ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके मिलापका है" सो तुझको बडा उत्साह है कि मेरा मित्रसे मिलाप कब होवेगा सो तेरा मित्रसे मिलाप होवेगा, तेरे मित्रने कईदफे आनेका मनोरथ किया परन्तु आना न हुआ और जैसी उससे मिलनेकी अभिलाषा तू रखता है उससे अधिक तेरे मेलकी अभिलाषा वह रखता है और अब वह आया चाहता है और तेरे वास्ते भी कोई वस्तु लावेगा जिसको देखकर तू खुश होजावेगा और उसको लाभ अब बहुत अच्छा हुआ है सन्देह मतकर तेरा मित्र मिला चाहता है तंदुरुस्ती है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७६॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके मिलापका है" सो तू उस मित्रकी बहुत बाट जोहता है परन्तु उसका गृहस्थसे निकसना नहीं बनता और वह कई दफे मुहूर्त्त कढाचुका परन्तु मुहुर्त्तपर कोई न कोई विघ्न होजाता है और मुहूर्त्त तो महीनेमें दो कढवाता है परन्तु आना नहीं बनता सो अब बरजरूर आवेगा क्योंकि अब उसके खरच अधिक है और आजीविका थोडी है सो अब तेरा मिलाप होनेवाला है परन्तु तेरे घरसे तेरे बुलानेका खत ३ मालभीतर आनेवाला है क्योंकि तेरे दिन नाकिश हैं और शनिश्चर भी नाकिश है सो तू शनिके मन्त्रका जप करवा शनिश्चरका दान दे और कुत्तोंको चपातियां गेर तेरे नाकिश दिन दफः होवेंगे सुख होगा मित्रमिलाप होवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७॥ हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मित्रके आगमनका है " सो वह तेरा मित्र रोजगारमें गाफिल हो रहा है और आज दिन उसका रोजगार अच्छा चलता है पहले तो उसका रोजगार कोई दिन थोडा रहा और उसका दिल भी थोडा

लगा परन्तु वह होशियार बहुत है सब लोगोंसे मुलाकात कर ली और अब जो बडे मनुष्य हैं सो उसे निहायत चाहते हैं और रोजगार अब विशेष बना है और उसके दिलमें देशको आनेकी है अबतक उन मनुष्योंमेंसे दिल नहीं टूटता था पर अब उसके भी चित्तका उच्चाट हो रहा है सो वह आनेवाला है सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने मित्रके आगमनका है" उसको गये बहुत दिन हो गये एकबार खबर लगी थी फिर कहीं भी खबर नहीं लगी सो तू यह पूछता है कि वह मनुष्य आवेगा या नहीं यह प्रश्न है, सो उसको गये दिन अधिक हुए हैं और वह मनुष्य तुमसे कुछ खफा है इस कारणसे वह खत नहीं डालता और वह शख्स पूर्वमें है बडे चैनसे है अपने धर्म ईमानसे साबित है और उसके पास धन बहुत है सो अब तुम चर्षणी मन्त्रका आराधन अपनी ताकत माफिक करवाना उसके पाससे खत या खबर जरूर आवेगी सो तुम जाकर ले आना आपसे तो नहीं आवेगा फिक्र मतकर यही कर वरजरूर आवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७९॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतभा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके शुभ अशुभका है तू यह पूछता है कि मेरी नौकरी दो जगह होनेवाली है सो एक जगह तो तनख्वाह जियादह और फायदा कम है और एक जगह नौकरी तो कम है और फायदा जियादह है सो मुझे कौनसी नौकरी शुभ और कौनसी अशुभ है सो तुझे कम नौकरी और जियादह फायदा यही नौकरी वफेदार है इसीमें तेरा रोजगार बहुत बढेगा इज्जत बढेगी परन्तु तेरे जन्मपत्रमें राजभ्रंशक योग है सो तू नेक ब्राह्मणसे शमदात्री मन्त्र करके १ वर्ष केलाका पूजन करवा तेरा भाग्योदय पूर्ण होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनक लीव चन्द्र-

मार्की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके शुभाशुभका है कि तुझे नौकरीसे फायदा है या घरके राजगारसे" सो तुझे फायदा तो नौकरीसे है परन्तु तेरे जन्मपत्रमें राजयोग शनिने बिगाड रक्खा है सो तेरी नौकरीकी तजवीज होती है फिर नहीं होती और तुमको इल्म तो कम है परन्तु तेरी अकल बहादुरीकी है तेरा नाम होश्यारोंमें ज्यादा है सो तू शनिके रोज पीपलके दरख्तका पूजन कर और शनिदेवताका दान दे और शनिका अपनी ताकत माफिक जप करवा सो पहले तो तुझको एवजी मिलेगी फिर तेरी पक्की नौकरी होजायगी सन्देह मत कर तेरे भाग्योदय में८मास २१ दिन और बाकी हैं पीछे भाग्योदय होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८१ ॥ हुक्मी शकल लहियान ≡ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके सुखका है सो तू यह पूछता है कि मुझको नौकरीसे सुख है या अपने घरके रोजगारमें " सो तू विशेष ऐसा इल्म तो पढा नहीं कि कोई बडेकारपै होजाय और पढा है तो तेरी हिम्मत कम है और अकल तुझे ज्यादा है परन्तु तू अपने घरका पेशा कर इसमें तुझको लाभ होगा और ८ मास पीछे तेरी तकदीर खुलेगी तेरी तभी नौकरी लगेगी सन्देह मतकर तुझको और नौकरी शुभदायक अच्छी है परन्तु तू सूर्य्य देवता का जप करवा और व्रत कर और सूर्य्यदेवताको हाथ जोडकर आधीनता कर तेरी नौकरी लगेगी और तुझको नौकरी शुभदायक है फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८२ ॥ हुक्मी शकल ∸ कब जुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीके शुभाशुभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको नौकरी शुभदायक है या घरका व्यवहार" सो पूछनेवाले शख्स तेरा इल्म अच्छा है और निहायत मिहनत करके पढा है और तेरा कलाम भी जबर है और

जिसके पास एक दफे चला जाता है वह हरदम तुझको दिलमें रखता है और तेरी नौकरीके वास्ते हरदम अफसर इन्तजाममें लग रहे हैं सो तुझको दोनों शुभ हैं परन्तु तुझको नौकरीमें कुछ ज्यादे लाभ है सो तू मंगलका जप दान और बलिदान करवा तुझको नौकरी बहुत शुभदायक होगी फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८३ ॥ हुकमी शकल ⚏ कबजुलखारिज राहुकी है हुकम फरमाती है कि " पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरके मिलापका है तू यह पूछता हैं कि एक मित्रको नौकरी पर गये बहुत दिन हुए और यह कहता है कि अब आऊंगा पर आता नहीं सो आवेगा या नहीं और आवेगा तो कब आवेगा" सो तुम्हारे सामने यह लिखता है कि मैं अब आऊंगा सो तुम्हारे दिल ठहरानेके वास्ते लिखा है क्योंकि वह छुट्टी बिगर नहीं आसकता और जो वह छुट्टी मांगे तो उसके समीप रहने-वाले यह कह देते हैं कि तू बार बार छुट्टी मत मांग सो संदेह मतकर वह इस सालमें बरजरूर आवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८४ ॥ हुकमी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुकम फरमाती है कि " पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरके आनेका है" सो वह न तो आनेको कहता और न खरच भेजता सो वह आवेगा या खरच भेजेगा या मैं जाऊं सो वह नहीं आवेगा न खरच भेजेगा क्योंकि उसके दिलमें कुछ तुम्हारे कहे हुएका ख्याल है सो तू जा और उसको गुफ्तगूक-रिके समझा फिर तुझको खरच भी देवेगा और पीछे वह भी आजा-यगा और उसके जन्मपत्रमें लग्नेश्वर बिगड रहा है उस कारण घरवा-लोंसे उसका दिल बिगडा रहता है सो उसको लिख भेजो कि राहु-का दान और जप करवादे इसके करनेसे उसका दिल खुश रहेगा और हरदफे तुमसे मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८५ ॥ हुकमी शकल ⚍ फरहा मुनकलीब शुक्रकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले

शख्श ! तेरा सवाल नौकरसे फायदाका है तू पूछता है कि यह नौकर है सो इससे मुझको कुछ लाभ होगा या नहीं" सो यह नौकर बडा दलगीर है और बहुत अक्लवाला है और नेकनामीवाला है सो जो इसके पास गया है किसीको इसने नाराज न आने दिया और यह तुझको तो निहायत चाहता है सो तू संदेह मत कर तुझको उससे लाभ होगा परन्तु तुझको पापग्रह नामांकिक है उसका जप और दान बरजरूर करो उसके करनेसे तुझको फायदा होगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८६ ॥ हुक्मीशकल ⚍ उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरोंसे फायदे का है" सो पहले दिन से नौकरोंसे बहुत फायदा तुझको रहा है परन्तु अब कुछ तेरा दिल डिगरहा है कि कुछ तेरे धनका नुकसान भी है सो तू संदेह मतकर तुझको बहुत लाभ होगा इसी कारसे फयदा है परन्तु जैसा तुझको लाभ पहले रहा वैसा पुण्य न किया पुण्यके नहीं करनेसे तुझको नुकसान रहा है और अब तेरा दिल भी ठीक नहीं रहता है और कुछ मनुष्योंमें भी एकता न रही सो तू गौका दान दे और ब्राह्मणको जिमाय जितनी तेरी ताकत हो और हवन तर्पण मार्जन सहित श्रीगायत्रीका जप करवा निस्सन्देह लाभ अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ अकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुनीमसे फायदेका है तू यह पूछता है कि इस मुनीमसे मुझको फायदा होगा या कुफायदा" सो तू इस मुनीम को रखले इसके रखनेमें तुझको बहुत लाभ होगा यह मुनीम बडा भला मानस है और दिलका दिलगीर है खुशदिल है और कुलीन है और अकलबहादुर हो सो तू मत चूक इसके जन्मपत्रसे और तेरे जन्मपत्रसे नाम राशि मिलती है। सो तू इसको रखले तुझको व्यापारसे बहुत लाभ होगा तू अब अपना संदेह दूरकर

और जन्मपत्र दिखला तुमको दिन अब कुछ नाकिश हैं सो तू शिवा-
र्चन करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८८ ॥ हुक्मी शकल ≡ हुमरा
साबित मंगल की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा
सवाल मुनीमका है तू यह पूछता है कि इस मुनीमसे मुझको फायदा
है या नहीं" क्योंकि इससे तुझको कुफायदा रहा है इस कारणसे
पूछता है सो तू संदेह मतकर और इस मुनीमको दोष मत दे तुझको
ये दिन नाकिश ही थे सो अब ७२ दिन और नाकिश रहे हैं ये दिन
व्यतीत हुए तुझको पूरा लाभ इसी मुनीमसे होगा संदेह मत कर और
नाकिश दिनोंमें धनेश्वरीका आराधन कर इस मुनीमसे तुझको बहुत
लहना है और मनुष्योंकी शिकायत मत मान फिकर मतकर अल्ला-
ताला अच्छा करैगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८९ ॥ हुक्मी शकल ⁝
बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स !
तेरा सवाल यह है कि मुनीम धन खागया या नहीं" सो तेरा मुनीम
बहुत हरीफ है अकलके घोडे तो बहुत दिनोंसे चलाता था परन्तु इसका
मौका न लगा और अब इसका मौका लगा तो बहुत धन खागया
जो तेरी जाहरीमें है उससे और भी ज्यादे खागया और होश्यार ऐसा
है कि जब पूछते हैं तब वह यह कहता है कि मैंने तो एक भी पैसा
नहीं खाया और सब मनुष्योंसे बहुतसी करुणा करके बोलता है सो
तू इससे सख्ती कर और श्रीमहाकालीके मंत्रका जप तथा अर्द्धरात्रिके
समयमें बलिदान करा और ५ वर्षकी ९ ब्राह्मणकी कन्या
जिमा कर वस्त्र दे और सुवर्णकी दक्षिणा दे तेरा धन मिलेगा इसने
अबतक बरबाद नहीं किया है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९० ॥ हुक्मी
शकल ≟ नुस्रत खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-
वाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं सेठका मुनीम था सो उस
की दूकानमें इस साल हरजा ही रहा मैंने बहुत ही उद्योग किया
परन्तु मुझको यश नहीं मिला सो साहूकार यह कहता है कि मेरा सब

धन यह खागया और मनुष्य भी उसको बहकाते हैं और जिसके अ
मैं सच कहता हूं उसकी भी झूठ मानते हैं और सब मनुष्योंको
जच रही है कि इसने अवश्य रुपया खाया है" सो हे पूछनेवाले
मनुष्य सच्ची कहते हैं क्योंकि तैंने रुपया खाया ही है परन्तु प
नहीं है सो तू श्रीक्लेशनिवारणी दुर्गाके मन्त्रका जप करा अर्द्धरा
बलिदान दे कुछेक धन लगके तेरा फंदा कट जायगा फिकर मत
इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९१॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत् दाखिल बृह
तिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मु
मसे सुलझनेका है" तेरा मुनीम निहायत कपट और छलकी ख
है तेरे आगे पहले दिनसे निहायत गरीब बना रहा और जो तैंने उ
वास्ते नन्हासे भी नन्हा काम और पै फरमाया सो भी आप करने
उठा और सबसे बहुत हलीमीसे बोला और आपने जैसा २ इस
कायदा बढाया तैसे २ यह निहायत अभिमान और सख्त बोलना अ
अपना कहा ऊपर रखना करता है बहुत दिनोंसे इसका यही हाल
इनके पास रहनेवाले सब जानते हैं सो तुमने गर्दभ हस्तीपर बैठा
था सो तुमको फल आया और तुम भी अब जाने हो सो अब
हो रहा है रकम मिलनेसे तुमसे बराबरीका इरादा रखता है सो
निहायत खोटा मनुष्य है तुम्हारे वलम न आवेगा और धन
उलटा न देगा और जो तेरा लेनेका इरादा हो तो तू श्रीदुष्टभं
महामायाके मन्त्रका अनुष्ठान और बलिदान करवा कुछ क
तेरा धन मिलेगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९२ ॥ हु
शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने
शख्स ! तेरा सवाल मुनीमसे सुलझनेका है" इस मुनीमने पहले तो
धन कमाकर तुझको दिया है यह निहायत गरीब था और तुझको इ
विश्वास भी निहायत था परन्तु अब और मनुष्योंके बहकानेसे इ
अकल छलीगई सो इसने बेईमानी की तेरा धन उडाया परन्तु छिपा न

क्योंकि पाप छिपा नहीं रहता सो अब तू इससे धन मांगता है तो नटता है और तेरा सामना करता है सो यह तुझको धन नहीं देगा क्योंकि तेरे अब १ वर्षसे दिन निहायत नाकिश है सो तू श्रीपिंगलाक्षी दुर्गाका आराधन और बलिदान दे कुछ दिनों पीछे तेरा धन आ जायगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३ ॥ हुकमी शकल ⁘ नकी मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल अपने भाईकी कुशलका है" सो वह विदेशमें है और बडा हिम्मतवाला है और तेरा उसका दिल भी मिलता है सो तू यह पूछता है कि उसका पत्र जानेके पीछे जल्दी ही आया करता था अबके हम भी पत्र दे चुके परन्तु उसका पत्र न आया सो तू तो दिलमें बडी ढाढस रखता है परन्तु औरत तुझको खाना नहीं खाने देती सो तू यह पूछता है कि वह प्रसन्न है या बेदिल है सो तू सन्देह मतकर वह खुशी है उसकी कुशलका समाचार तेरेपास आया चाहता है परन्तु तेरे दिन सामान्य हैं सो तुझको कुछेक सन्देह बना रहता है सो तू काली दुर्गाके मन्त्रका जप करवा कुशलका समाचार जल्दी ही आवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९४ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईकी कुशलताका है" सो तेरा भाई देशमें है और उसका निहायत दिल लगा है सो वह तेरे दास पत्र जलदी ही दिया करता था परन्तु अब दिन बहुत जियादा हुए सो तू यह पूछता है किं मेरा भाई खुशी है या बेदिल सो तू सन्देह मतकर वह कार्य्यावश्यकतासे तुझको कुशलपत्र नहीं देने पाया और अब जल्दी ही खत तेरे पास आवेगा परन्तु अब ६ मास २१ दिन तुझको नाकिश हैं सो पहले ही महामृत्युंजयका जप करवा तेरा सब सन्देह दूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ तू इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईको मिला-

पका है" और वह विदेशमें है और तेरा दिल निहायत चाहता है
कब मिलाप होवेगा और रातको तुझे इसी विचारमें नींद भी नहीं आ
है सो तू यह पूछता है कि कब मिलाप होगा सो वह धनके लोभ
लग रहा है और मिलनेको उसकी भी बहुत अभिलाषा है तेरे प
खतमें भी कई दफे लिख चुका है कि अब मैं आऊंगा परन्तु अ
तक आना न बना सो तू ऊद्र्ध्वजटेश्वरीके मन्त्रका आराधन कर
जितनी तेरी ताकत हो उतना और बलिदान दे मिलाप जल्दी हो
सन्देह मतकर अल्लाताला जल्दी ही करेगा इति॥ प्रश्न ॥ पिण्ड॥९
हुक्मी शकल तरीख ⁝ मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है
"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरे भाईके मिलापका है" सो
अपने देशमें है सो तू यह पूछता है कि हरवक्त यह खतमें लिखता
कि अब मैं आया चाहता हूँ परन्तु आता नहीं सो उसके आने
तेरा भी दिल उठ रहा है और रात्रि दिन यही दिलमें रहती है रात
इसी विचारसे नींद भी नहीं आती तुमको निहायत सन्देह हो
है सो वह गृहस्थके धँधेमें फस रहा है और उसके दिन नाकिश
इससे उसका आना नहीं होता सो तू उसके नामसे सूर्य्यदेवता
व्रत करवा और अपनी ताकत माफिक जप भी करवा सो नाकि
दिन दफे होवेंगे बरजरूर आवेगा इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ९७ ॥ हुक
शकल ⩨ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है
"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईकी बीमारीका है" सो वह वि
शमें है तेरे पास खतमें लिखा आया है जिस वक्त खत आया
वक्तसे निहायत सन्देह है और कुटुम्बमें जो सुनता है सो ही नि
यत सन्देह करता है सो उसको अब आराम है या नहीं जो आर
नहीं है तो कब होगा यह पूछता है सो हे पूछनेवाले ! उसकी बीम
निहायत सख्त है और वह कालके मुखमें आरहा है दिनोंकी गरदि
उसको उस देशका खाना दाना न पचा क्योंकि वह परहेजसे नहीं

सो तू कालभेदक भैरूँके मन्त्रका संकल्प १०२९०० इसी वक्त दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे उसको आराम बरजरूर होगा और अर्द्धरात्रिको बलिदान दे सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८ ॥ हुक्मीं शकल ⚍ कब्जुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरे भाईकी बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईकी बीमारी अच्छी होगी या न होगी" सो तेरे भाईकी बीमारी निहायत सख्त है कालके मुखमें आरहा है और सब कुटम्बको निहायत सन्देह है सो तू कालभैरवके मन्त्रके जपका संकल्प सवालक्ष दक्षिणासमेत इसी वक्त नेक ब्राह्मणको दे और बलिदान दे रात्रिमें इसके करनेसे इसको आराम बरजरूर होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ अबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईकी सन्तानका है तेरे भाईको अबतक सुन्दर सन्तानका सुख नहीं हुआ सो तू यह पूछता है कि इसको औरस पुत्रका सुख है या नहीं" सो तेरे भाईकी स्त्रीको अजाब है यह पहले जन्ममें भवपार नामक दक्षिणकी नदीके तीर कोलजातिकी थी सो एक पुरुके दो स्त्री थीं इसने धनके लोभकरके बडी बहनके तीन लडके मार दिये और पीछे पापका भय करके दानपुण्य इसने बहुत किया सो दानके करनेसे द्विजन्मा जाति और यह धन मिला परन्तु इसने प्रायश्चित्त नहीं किया उस पापसे सन्तानका दुःख है सो तू ३ बालकोंकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर प्रायश्चित्त विधानसे नेक ब्राह्मणको दे सन्देह मत कर सन्तान होगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमातसाबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तेरे भाईकी सन्तानका है" सो तेरे भाईकी स्त्रीके हमल है सो तू यह पूछता है कि क्या सन्तान होगी सो इस स्त्रीके शरीरमें रज ज्यादा है और तेरे भाईके शरीरमें वीर्य्य कम है और यह पहले

जन्ममें किसी कन्याका तिरस्कार करती भई उस पापसे इसके कन्याक
योग है परन्तु श्रीबालेश्वरीके मन्त्रका जप करा और ब्राह्मणकी
कन्याको जिमाना लडका बरजरूर होगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ।
पिण्ड ॥ १०१ ॥ हुकमी शकल ⫶ फरहा मुनकली शुक्रकी है
हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईसे धन
लेनेका है सो तू यह पूछता है कि मेरे भाईके पास हमारा शीरक
धन है सो मुझको देगा या नहीं " सो धन सब तरहका है रोकडी भी
और जेवर भी बहुत हैं और उसमें बहुत धन ऐसा भी है कि तुझको
सन्देह है निश्चय मालूम नहीं है सो अब तेरा और उसका कई
दिनोंसे तनाजा है दिल नहीं मिलता सो जो जाहिरमें धन है सो
तुझको देगा और जो छिपा हुआ है उसको छिपाया चाहता है सो
तू धनकालिकेश्वरीकी मूर्ति ११ पलकी बनवाके किसी नेक ब्राह्म-
णकोदे और धनकालिकेश्वरीके महामन्त्रका जप रात्रिमें २१ दिन
करवा और मूर्तिका षोडशोपचार पूजन करवा २२ दिन वह मूर्ति
दक्षिणा समेत उसी ब्राह्मणको दे और दशांश हवनादि और ब्राह्मण
भोजन करवा सब धन तुझको आपसे आप बांट देगा इति प्रश्न ।
पिण्ड ॥ १०२ ॥ हुकमी शकल ⩦ उकला मुनकलीव शनिदेव
ताकी है हुकम फरमाती है कि, पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल
भाईसे धनके लाभका है सो तू यह पूछता है कि " मुझको लाभ
होगा या नहीं क्योंकि अब यह कमानेको दुरुस्त है " सो तेरा भाई
तुझको दिलसे बहुत चाहता है और तेरे दुःखमें अपने दिलमें निहा-
यत तकलीफ मानता है सो तुझको बहुत धन कमाकर देगा
परन्तु तुझको दिन नाकिश हैं सो तू यथाशक्ति विष्णुसहस्रनामका
आराधन करवा उससे लाभ होगा फिक्र मतकर इति प्रश्न ।
पिंड ॥ १०३ ॥ हुकमी शकल ⩸ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी
है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

बहनके सुखका है सो तू यह पूछता है कि मेरी बहनको सुख रहेगा या नहीं" सो तू संदेह मतकर तेरी बहनका कलाम बहुत अच्छा है और उसको धर्मका भी खयाल है परन्तु कुटुंबके मनुष्योंसे प्रीति नहीं है इसका कारण यह है कि इसके जबानमें लगाम नहीं है सो इसके हाथसे तू वागीश्वरीके मन्त्रका संकल्प करवा इसकी वाणीं शुद्ध होगी फिर सबसे नेकीसे बोलेगी और दिल भी इसका साफ होगा संदेह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा ॥ इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनके सुख का है सो तू यह पूछता है कि "मेरी बहनको सुख होगा या नहीं" सो तेरी बहनका और तेरी बहनके पतिका जन्मपत्रसे वर्ग वैर है और वह इनको नहीं चाहता इसमें कारण यह है कि बडे मनुष्योंके वचनको नहीं मानता है वह उसको त्याग देते हैं इसको यह आग्रह है कि अपना ही कहना करना और का कहना न मानना सो यह सबसे द्वेष करता है तू समझा दे कि अभिमान मतकर और इसके हाथसे शान्तिपाठका संकल्प दक्षिणा समेत सवालक्ष करवा और संगमेश्वरी कालीकी सुवर्णकी मूर्ति उसी ब्राह्मणसे पूजन करवा और ३१ दिन पीछे उसका पतिसे मिलाप होगा संदेह मतकर इति प्रश्न पिण्ड ॥ १०५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनकी बीमारीका है तू यह पूछता है कि मेरी बहनको बीमारी है सो अच्छी होगी या नहीं" उसको बीमारी माफिक नहीं है और कालके मुखमें आरही है सो तू पुण्य कर इसको दिन निहायत नामाफिक हैं ऐसा करनेसे इसको बजरूर आराम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०६ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुतुल खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरी बहनके पतिको बीमारी है सो तू यह

पूछता है कि बीमारी कब अच्छी होगी" सो बीमारी नाकिश है दिन इसको निहायत माफिक हैं कालके मुखमें आरहा है तू तो यह पूछता है कि बीमारी कब अच्छी होगी और इसकी बीमारी बढने-वाली है सो तू कालदेवकी सुवर्णकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणको दे और सवालक्ष महामृत्युञ्जयके जपका इसी वक्त इसके हाथसे संकल्प करा और ब्राह्मणोंसे जप कराय तद्दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण, तद्दशांश मार्जन, तद्दशांश ब्राह्मणभोजन करवा भूखे अपाहि-जोंको अन्न दे दिलमें दया रख ऐसा करनेसे इसको आराम होजा-यगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०७ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नुस्नुदाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भानजेकी सगाईका है इसके संबन्धमें क्या आंट है कब होगा और कैसे घरमें होगा" सो इसके जन्म पत्रमें ७ वां घर बिगड रहा है सो सम्बन्ध नहीं होने देता है परन्तु सप्तम गृहके वास्ते दान दे और जप करा इसका सम्बन्ध बहुत अच्छे घर होगा इज्जत बढेगी इस लडकेकी तकदीर बडी होगी इसने पहले जन्ममें बडे दान दिये हैं परन्तु एक ब्राह्मणकी रकम इसीमें पहले जन्ममें रही थी वह सेधती है सो इसके हाथसे नगदी सुफेद कपडेमें लपेटके सबेरे ब्राह्मणके स्थानमें जाकर दे। यह अजाब दूर होगा सम्बन्ध होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०८ ॥ हुक्मी-शकल ⁚ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने भानजेके सम्बन्धका है।" वह फिर संबन्ध कराया चाहता है। संबंधकरनेको बहुत मनुष्य कहते हैं परन्तु योग नहीं लगता। यह पहले जन्ममें उत्तर देशमें कोल जाति था और इसकी स्त्री बहुत पतिव्रता थी, उसने किसी मनुष्यसे झूंठा पाप जानकर बिगरदोष इसका त्याग किया और वह फिर ग्रहण नहीं की सो उसने शाप दे दिया कि तुझको दूसरे जन्ममें स्त्रीका सुख नहीं होगा सो

उसके शापसे उसको स्त्रीका सुख नहीं होता। इससे सुवर्णकी स्त्री बनवाके उसका पूजन करवा और उसके पास जैसे पहिननेमें आवें वैसे स्त्रीके सब कपडे और सब जेवर भी किसी नेक ब्राह्मणको दे और उससे यह कहो कि मेरे शापकी विमुक्ति हो ऐसा करनेसे इसका शाप दूर होगा और इसको बहुत रूपवती, बडी आयुवाली स्त्री मिलेगी फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०९ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भानजाकी बीमारीका है" पूछता है कि उसको आराम कब होगा सो हे पूछनेवाले शख्स! उसको निहायत बीमारी हो रही है तू तो यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा उसको दिनरात करिके बीमारी बढती है वह कालके मुखमें आरहा है आजकल उसके दिन निहायत नाकिश हैं सो यथाशक्ति उसका तुलादान दे और कालक्षयके मंत्रका जप करवा बरजरूर आराम होगा सन्देह मतकर । इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भानजेकी बीमारीका है तेरे पास उसकी खबर आई है जिस वक्तसे बीमारीकी सुनी है उसवक्तसे दिल कहीं भी नहीं लगता और दिलको निहायत सन्देह है" सो उसको बीमारी ज्यादा है निहायत तकलीफ हो रही है और अन्नमें रुचि नहीं होती और जो कुछ खाले तो हजम नहीं होता और हकीमोंने भी बहुत इलाज किये परन्तु कुछ फायदा हो फिर वैसा ही हो जावै सो इसके पितृदोष है इसको रात्रिमें निहायत खोटे स्वप्न भी आते हैं सो इसके हाथसे जितनी इसकी ताकत हो उतनी रोकडी ब्राह्मणोंको दिला और पितरोंके निमित्त गउवोंका दान करवा इसको आराम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १११ ॥ हुक्मीशकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्वप्नके शुभाशुभका है तू यह पूछता है कि मुझको रात्रिमें

नामाफिक स्वप्न आया सो स्वप्नका क्या फल होगा" सो तुझको स्वप्न तो इन दिनोंमें नाकिश बहुत आते हैं जिनको दिनमें याद करके दिल घबराता है और दिनमें भी दिल बिगडा रहता है अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू कुक्कुटेश्वर महादेवका प्रातःकाल अराधन कर और ताकतभर इसके मंत्रका जप करवा और हवनादि ब्राह्मणभोजन करवा इसके करनेसे अशुभ स्वप्न शुभदायक होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीखसुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्वप्नका है कि यह स्वप्न शुभदायक है या अशुभदायक" सो यह स्वप्न तो शुभदायक है परन्तु तुझको शुभ फल नहीं देता क्योंकि तैने पहले जन्ममें यावनी विद्या पढ़ी थी सो इस जन्ममें उसका संस्कार होनेसे स्वप्नको तू मिथ्या मानता है सो शुभदायक स्वप्न तुझको फल नहीं देता और अशुभदायक फल देता है क्योंकि अशुभ स्वप्नका तेरे दिलमें ख्याल रहता है और यह विचारता है कि कभी सच्चा न होजाय सो तू कुक्कुटेश्वर महादेवका आराधन करवा और छायापात्र व्यतिपातके रोज दे शुभ स्वप्न फल देवेगा और अशुभ स्वप्न भी शुभफल देवेंगे सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ इति तृतीय ॥ पिंड ॥ ११३ ॥ हुक्मी शकल ⩸ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीके शुभाशुभका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ है या नहीं " क्योंकि मैं तो इस खेतीके भरोसे बरबाद हो गया जो एक सालमें निपजता है उसमें खरच भी नहीं चलता और जो एक सालमें ज्यादे हो जाता है तो फिर दो या तीन सालतक नहीं होता सो तुझको खेतीसे लाभ तो है परन्तु तेरे पुण्य नहीं हैं और जो तुझको पूजनीय हैं उनकी पूजा नहीं और शास्त्रका श्रवण नहीं और जो कुछ सुने तो प्रीति न हो सो इन पापोंसे तुझको तकलीफ है और बरकत नहीं

होती है सो तू पूज्यजनोंके पैर पूज और दिलमें सत्यता रख तुझको खेतीसे फायदा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ११४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कवजुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीसे लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझ-को खेतीसे लाभ है या नहीं" सो तू खेती बहुत बोता है परन्तु तुझको खेती फायदा नहीं देती सो तेरे दो पाप हैं एक तो तेरे गऊ आदि पशु बहुत तकलीफ पाते हैं और भूखे रहते हैं और दूसरा तुम्हारे पितृदोष है सो अब तक गया नहीं कराई और तू तो धनकी अभिलाषा रखता है परन्तु तेरे अन्नका भी संदेह दीखता है तू पितरों-का श्रीगयाश्राद्ध करवा और पूज्योंमें पूज्य भाव रख अल्लाताला तुझ-को बहुत देगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल लेनेका है तू कहता है कि बैलमें मुझको कैसा फायदा होगा सो पहले बैलोंने तुझको निहायत तकलीफ करी और तुझको कुफायदा रहा यद्यपि कुछ फाइदा भी रहा पर-न्तु ज्यादे नहीं सो अब सुफेद बैल लेना उससे फाइदाभी रहेगा परन्तु तू अपने पूज्योंका पूजन कर और अपने धर्ममें सावधान रह अब तुझको बैल खरीदनेमें लाभ होगा और खेतीमें भी अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११६ ॥ हुक्मीशकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल लेनेका है" तुझको बैलोंमें खूब फायदा रहा है और खरच भी रहा परन्तु अब तुझको बैलोंमें फायदा न रहेगा क्योंकि तैंने कुछ भी पुण्य नहीं किया सो अब तुमको फायदा न होगा तेरे दिन नाकिश हैं सो तू मत खरीद तुझको बडी तकलीफ रहेगी और जो तुझसे नहीं रहाजाता तो तू शनि देवताका दान दे और अपनी ताकत माफिक जप करवा फिर तुझको लाभ होगा।

इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११७ ॥ हुक्मीशकल ⁝ फरहा मुनकीलाव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल बेचनेका है सो तू यह पूछता है कि यह बैल बिकेगा या नहीं और इस बैलमें फायदा रहेगा या टोटा" सो यह बैल छातीका सिला है और इसके आनेसे तेरा दिल निहायत उदास रहता है इसकी जैसी रकम लगी वैसा नहीं मिला और अब इसको बेचा चाहते हो तो बिकता नहीं जो गाहक आता है वही उलटा चला जाता है सो तेरे दिन नाकिश हैं और इस बैलमें फायदा नहीं रहेगा और ढीलसे विकेगा सो तू मंगलका व्रत कर जल्दी ही बिक जायगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११८ ॥ हुक्मीशकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बैल बेचनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझको बैलोंमें फायदा होगा या नहीं" सो तू संदेह मत कर तेरे बैलोंमें फायदा है और अब जल्दीही बैल बिके चाहते हैं संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ११९ ॥ हुक्माशिकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल माता और पिताके गडे धनके निकालनेका है सो तू यह पूछता है कि मेरे माता पिताके पास धन बहुत था परन्तु सब धन मुझको नहीं मिला सो मेरे घरमें है या नहीं और है तो मुझको मिलेगा या नहीं" सो तेरे घरमें धन बहुत है परन्तु तुझको नहीं मिलेगा क्योंकि वैरी तकनपीर सामान्य है और जो तेरे पास धन था उसमेंसे भी खर्च हुआ है कुछ लाभ नहीं हुआ है सो तेरी तकदीर नहीं है और जो निकासा चाहै तो वटुकभैरवी कालीकीमूर्ति बना किसी नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और वटुकभैरवीके मन्त्रका जप करवा कुछ धन तुझको मिलेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२० ॥ हुक्मीशकल ⁝ हमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

माता पिताका गाडा धन निकालनेका है सो तू यह पूछता है कि "मेरे पिताके पास बहुत धन था परन्तु मुझको सब धन नहीं मिला सो मेरे मकानमें धन है या नहीं" सो तेरे मकानमें धन बहुत है और तुझको मिलेगा भी परन्तु जगदीश्वरीके आराधनसे ढीलसे मिलेगा क्योंकि तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें मत छेड और जो तेरे दिलको सबर न होवेगा तो तू मंगलामूर्ति सुवर्णकी बनवाकर ९१ दिन पूजन रात्रिमें करवा और रात्रिहीमें बलिदान दे और तिसके मंत्रका जप करवा और तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण और तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन करवा और वह मूर्ति उसी ब्राह्मणको दे और यह कह कि महाराज इसका पूजन होता रहै और अपनी ताकत माफिक दक्षिणा दे शंकरका ध्यान रख धन तुझको सब मिलेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२१ ॥ हुक्मीशकल ⚍ बयाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी जागीरकी सीमाका है सो तू पूछता है कि "मेरी सींमा दूसरेने दबाली सो वह नाटता है कि मैंने नहीं दबाई तुझे झूठाही वहम है तू मपवाले" सो वह बडा फरेबदार है और जो तू मपावेगा तो मापदारको कुछ देकर तेरी जमीनको बँधावेगा और यह बडा होश्यार है तू तो गफलतमें रहा और उसने अपना मतलब किया सो अब फिर उससे कहेगा तो वह करेगा और तुझको दबा लेगा और जो तू उसको दबाया चाहे तो शत्रुनिवारण मन्त्रका संपुट देकर ब्राह्मणोंसे सहस्र चंडीका पाठ करवा पंच फैसलासे तू जीतेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२२ ॥ हुक्मीशकल ⚌ नुस्रुत खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपनी जायदादकी सीमाका है" सो तुझे यह सन्देह है कि पहले मेरी सींमा परे तक थी परन्तु अब मुझको कुछ उरे सरकी मालूम होती है सो तू सन्देह मतकर तेरी जमीनकी

सरहद यही है तुझको पितृदोष है जिसकरके तेरा दिल बिगडा रहता है और विना कारण क्रोध मनमें आता है और किसी वक्त विनाबात सन्देह होजाता है सो तू पितरोंके लिये ११ पुरश्चरण करवा तैंने पितरोंके वास्ते श्राद्धादि कभी नहीं किये सो कर फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२३ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किस खेतीमें फायदा है यह पूछनेका है" सो तुझको सामणुसे फायदा है तुझको खेतीमें खरच ज्यादे हैं आमदनी कम है सो तेरे दिन ज्यादा नाकिश हैं अब तू सूर्य्य देवताका आराधन कर और व्रतकर हाथ जोडके बिनतीकर सामणूमें लाभ है फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२४ ॥ हुक्मीशकल ⁝ अतवेखारिज केतु ग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवालेशख्स ! तेरा सवाल खेतीसे लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझे किस खेतीसे लाभ है सामणुमें या साढूमें या कोईसीमें" सो तुझको खेतीसे लाभ है परन्तु साढूकी खेतीसे है परन्तु जैसे तेरे साढूकी खेती होती है उससे ज्यादे खरच रहता है सो तेरे मनमें ईश्वरका निश्चय नहीं है दी हुई चीजका पछतावा रहता है सो तू इस परितापको त्याग तुझको बरकत होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२५ ॥ हुक्मी सकल ⁘ नकी मुनकलीब मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें खेतीका है" सो तू यह पूछता है कि अकेला खेती करूं या शीरमें फायदा है। सो तुझको शीरमें फायदा है क्योंकि तेरे पास बहुधा मनुष्योंकी बहुतायत नहीं है और खेतीका काम कैसा है कि जितने मनुष्य होवें उतनेही थोडे सो तू शीरमें कर और दो मनुष्योंका भाग्य भी ज्यादे हुआ करता है सो तुझे शीरमें बहुत फायदा है संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥१२६॥ हुक्मीशकल ⁘ अतवेदाखिलशुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें खेतीका

है" तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें शीरमें फायदा है या अकेला करनेमें सो तुझको खेतीसे जैसा लाभ है वैसा और नौकरीमें नहीं है और जैसा अकेलेको खेतीके करनेमें लाभ है वैसा शीरमें नहीं है सो तू अकेला खेती कर और शनिदेवताका दान दे और अपनी ताकत माफिक जप करवा तेरेको बहुत लाभ होगा संदेह मतकर नाकिश दिन गये अच्छे दिन आये हैं अब तुझको लाभ अच्छा रहेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२७ ॥ हुक्मीशकल ⠿ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि खेतको मैं बोऊं या बटाईको देऊं या किरा-वेको" सो तुझको बटाईके देनेमें फायदा है परन्तु तेरे जन्ममें मंगल सामान्य है सो कोई न कोई तकलीफ तुझको बनी रहती है सो तू मंगलका दान दे तुझको बटाईसे लाभ है फिकर मतकर तुझको लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १२८ ॥ हुक्मीशकल तारीख मुनकलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाता है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि मुझको बटाईमें फायदा है या किरावामें" सो तू जमीनका पति है तेरा राज्य बहुत अच्छा है और तुझको गफलत ज्यादा है तेरी गफलतमें कारदारोंको खूब आनन्द होरहा है प्रजाको लूटते हैं और तेरे बडोंने तो जमा किया और तेरे आगे सब धनको बरबाद करते हैं और तुझको भेद भी नहीं है और जो तू पूछता है मुझको बटाईमें फायदा है या किरावामें सो तू बटाईकर या किरावाले तेरे मालको तो अमात्यलोग खाते हैं सो चेतकर ब्राह्मणोंसे गायत्रीका आराधन करवा और नेक ब्राह्मणसे मन्त्रदीक्षा स्वकुलोचिता ले और उस ब्राह्मणके कुटुम्बके वास्ते जमान दे और उसको गुरु करके मान तेरा भाग्य उदय होगा और तू बटाई करेगा तो बटाईमें और किरावा लेगा तो किरावामें फायदा होगा और जितने तेरे अमात्य हैं तेरे दूर बैठनेसे भी भय मानेंगे और तेरे धनको

नहीं खावेंगे सो तेरे धर्मसे खजाना बढेगा यह कर तुझको लाभ होगा संदेह मतकर आल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ १२९ ॥ हुक्मीशकल ⚍ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल बगीचा बनवानेका है" सो तेरा दिल बहुत दिनोंसे है परन्तु यह मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ अब तेरा मौका बगीचा बनवानेका लगा है सो तेरा बगीचा बहुत अच्छा लगेगा परन्तु खरच तो धनका पटेगा तेरा एक दुशमन है सो उसकी निगाह रखनी चाहिये और इस बगीचेमें विष्णुसहस्रनामका जप कराना न करावोगे तो शोभायमान न होगा सो ऐसा करनेसे जो दरख्त लगावेगा वोही जल्दी परवस्त होगा और इसमें तेरा दिल भी बना रहेगा और पूछनेवाले शख्स ! अब तेरे दिन नियाहत अच्छे हैं और ४ मास १९ दिन पीछे नाकिश आवेंगे सो तुझको जन्मपत्र दिखाकर तजवीज करना चाहिये इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ १३० ॥ हुक्मीशकलः ⚎ कबजुलदाखिल सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जंगलकी जमीन मोल लेनेका है सो तू यह पूछता है कि मैं यह जमीन लूं तो इसमें मुझको फायदा है या नहीं" सो यह जमीन नाकिश है जिसकी यह रही है सो बरबाद हुआ है सो इस जमीनमें तू हाथ मत डाल और जो तुझसे न रहा जाय तो एक सहस्र विष्णुसहस्रनामका पाठ कराके लेना फलदाई होगी संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १३१ ॥ हुक्मीशकल ⚍ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जंगलकी जमीन लेनेका है" सो इस जमीनमें अब तो तुझको दाम लगते बहुत दीखते हैं परन्तु यह जमीन बहुत अच्छी है इसको लेनेकेलिये और भी मनुष्य तैयार हैं सो तू मत चूक जल्दीकर इसके लेनेमें तुझको निहायत फायदा होगा और तेरे दिन अच्छे है ७ मास और २ दिन बाद कुछेक दिन तेरे नाकिश आवेंगे सो तूने दुर्गाका

आराधन करवा और दुर्गाको बलिदान देना तुझको बहुत लाभ होगा संदेह मतकर इति प्रश्न पिण्ड ॥ १३२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कूंवा बनवानेका है सो तू पूछता है कि इस जगह कूवा बनवाऊं तो जल अच्छा निकसेगा या खारी सो प्रथम तो इस जमीन-में यह विश्वास भया कि खारी है और पूर्वजन्मका तेरा कोई ऐसा पुण्य भी नहीं है सो तू जितनी तेरी ताकत हो उतना गौ दान और ब्राह्मणभोजन करवाकर खोदनेका नंबर लगा अच्छा निकसेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १३३ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा ! मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तालाव बनानेका है सो तू यह पूछता कि मैं तालाव बनाया चाहता हूं सो सो मुझको शुभदायक होगा या नहीं" और मुझसे पार पडेगा या नहीं सो तू सन्देह मतकर तेरा तालाव बहुत अच्छा बनेगा परन्तु ये जबर पुण्य हैं सो छोटे पुण्योंके आधीन होते हैं सो तू श्रीगायत्रीका अनु-ष्ठान इसकी पूर्तिके वास्ते बैठा और धर्मनीयत धर्मका जाननेवाला जिसने शास्त्र श्रवण किया हो जिसके दिलमें दया हो उसको यह काम सौंप दे तेरा यश बहुत होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १३४ ॥ हुक्मी शकल ⁘ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बावडी बनवानेका है सो तू यह पूछता है कि यह बावडी पारपडेगी या नहीं और इसमें किसी प्रकारका विघ्न तो न होगा" सो तू सन्देह मत कर तेरी बावडी निर्विघ्नतासे पूर्ण होगी और कोई साधारण विघ्न आवेगा तो दुर्गाके आराधनसे दूर होगा फिकर मतकर तेरा यश बहुत होगा इति प्रश्न ॥ इति चतुर्थस्थानफलं समाप्तम् ॥ इति रमलगुलजारपूर्वार्धे स्थान-चतुष्टयस्य प्रथमपरिच्छेदः समाप्तः ॥ अथ द्वितीयपरिच्छेदः प्रारभ्यते ॥ पिण्ड ॥ १३५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी

है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके शुभाशुभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको विद्या शुभदायक है या नहीं" सो तेरी तकदीर अच्छी है हे पूछनेवाले ! दरखत लगते ही जो फल देखा चाहे तो फल कहांसे आवेगा फल तो समयपर लगता है सो तुझको इस विद्यामें बहुत लाभ है और तू बडा अक्लबहादुर है परन्तु जैसी तेरी अक्ल है वैसी विद्या नहीं है सो तू विद्यामें श्रमकर तेरा मुरातबा बढेगा और इस विद्यासे तुझको बहुत लाभ होगा और किसी वक्त इस विद्यासे तेरा दिल उलटता है उस वक्त तेरे दिलपर यह आजाता है कि अब तो इसको नहीं पढूंगा और फिर किसी कालमें दिल लग जाता है सो तेरा पञ्चम भवन बिगड रहा है सो जन्मपत्र दिखलाकर उस ग्रहकी शांति कर सन्देह मतकर इस विद्यासे तुझको बहुत लाभ होगा और तेरे पितासे तेरी इज्जत बढेगी फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १३६ ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके शुभाशुभका है सो तू यह पूछता है कि अब कोई दिनमें मेरी परीक्षा होनेवाली है सो मैं परीक्षामें कैसा रहूंगा" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारी परीक्षामें अभी देर है और तुम्हारी परीक्षा बहुत अच्छी उतरेगी परन्तु अब तुझको कुछेक दिन नाकिश हैं सो तू जन्मपत्र दिखलाकर शांति करा और फिकर मतकर इस परीक्षामें तुझको कुछ नेकनामी मिलेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १३७ ॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके आनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझको विद्या आवेगी या नहीं" सो तेरी बुद्धि कुछ मन्द है जो तू परिश्रम करता है सो तो याद रहता है और देखी बात दिलमें नहीं रहती सो तेरे पूर्वजन्मका अजाब है पंहले तू पूर्वदेशमें यवन था तैने बालकपनमें एक बकरीके बच्चेकी जिह्वा काट ली थी सो उस पापसे तेरी

बुद्धि मन्द है सो तू वाग्वादिनी कालीका आराधन रख और प्यासे जनोंको जल पिला तुझको विद्या आवेगी सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १३८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् खारिज सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके आनेका है सो तू यह पूछता है कि इस शख्सको विद्या कैसी आवेगी" सो यह बहुत होशियार है और पढनेमें इसका दिल बहुत है औ बडा खुशदिल है और किसी वक्त इसको क्रोध आता है जब इसके लग्नको क्रूरग्रह देखता है तब बहुत आता है सो उसकी शान्ति करनी और यह बडा प्रारब्धी होगा और इसको यह विद्या बहुत अच्छी तरहसे आवेगी क्योंकि इसकी कमाल ज्यादे है परन्तु अब इसको दिन नाकिस है सो इसके हाथसे जितनी तेरी ताकत हो उतना शिवार्चन करवा और त्र्यम्बक मन्त्रका जप करवा सन्देह मत कर इसको विद्या अच्छी आवेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १३९ ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रुत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वेदान्तविद्याका है सो तू यह पूछता है कि मैं वेदान्तविद्या पढा चाहताहूं क्योंकि इस विद्याकी पूछ ज्यादे है इसके पढनेसे रोजगार भी होगा सो यह वेदान्तविद्या मुझको आवेगी या नहीं" सो वेदान्त सब शास्त्रोंमें मुख्य है कठिन भी बहुत है इसके पदार्थ न्याय और व्याकरणसे सूक्ष्म हैं और काल भी ज्यादे चाहता है सो तू पढ तुझको बरजरूर आवेगा और तेरा दिल साबित नहीं है तू दिलकी सचावट रख तुझको यह विद्या (वेदान्त) बहुत अच्छी आवेगी परन्तु तेरे जन्मपत्रमें पञ्चम भवन बिगड रहा है उसकी शान्ति करते रहना फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १४० ॥ हुक्मी शकल ⚏ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वेदान्त विद्याके आनेका है तेरी वेदान्तमें श्रद्धा बहुत

है और जो वेदान्तका पढा हुआ है उसमें तेरी वहुत प्रीति है और यह चाहता है कि किसी प्रकारसे कर्मबंधन छूट जावे और मोक्ष हो जावे और तू जीव ब्रह्मका निर्णय वहुत किया चाहता है परन्तु अवतक तुझको निश्चय नहीं हुआ है सो वेदान्त तो जीव और ब्रह्मको एक प्रतिपादन करता है और न्याय ब्रह्मजीवमें भेद कहता है और मीमांसा कर्मको ईश्वर कहती है सो इन बचनोंको श्रवण-करके तेरे दिलका सन्देह नहीं मिटता है सो तू सन्देह मत कर सब ही सत्य है जीवब्रह्मके भेद विगर कर्म नहीं होसकते और कर्म विना ज्ञान नहीं होता और ज्ञान विना मोक्ष नहीं होता है सो तू पहले ऊपरकी पैडीमें पग मत धर और विष्णुयज्ञ कर कर्म कर वेदांत आवेगा ज्ञान होगा, और ऐसा करनेसे मोक्ष भी होवेगा फिकर मत कर कर्म कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १४१ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याकरण विद्याका है सो तू यह पूछता है कि मुझको व्याकरण विद्या कैसे आवेगी और आवेगी तो इस विद्यासे मुझे लाभ होगा या नहीं " सो तेरी बुद्धि जरा मन्द है क्योंकि तेरा पञ्चम भवन जन्मपत्रमें विगड रहा है सो ग्रहका आराधन रख और पढनम पार-श्रम कर तुझको व्याकरण विद्या आवेगी और अभी तेरे भाग्योदयम देर है सो तेरा भाग्योदय हुए पीछे तुझे व्याकरणविद्यासे बहुत लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ १४२ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतबेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याकरणविद्याके आनेका है सो तुझे पढते २ बहुत दिन हुए औ तू बुद्धिमान भी है परन्तु तैंने जैसा परिश्रम किया है वैसा बोध नहीं हुआ सो तू यह पूछता है कि इस व्याकरण विद्यामें मैं और परिश्रम करूं तो मुझको इसमें लाभ है या नहीं सो तू परिश्र-मकर तुझको लाभ होगा अब तेरे भाग्योदयमें २ वर्ष २ मास ११ दिन

और बाकी हैं पीछे तुझको बहुत लाभ होगा। जहां जावेगा वहांहीं लक्ष्मी तेरे पैरोंमें रहेगी फिक्र मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १४३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ज्योतिषविद्याका है सो तू पूछता हैं कि मैंने और विद्या तो जैसी मेरी बुद्धि थी वैसी पढी परन्तु अबतक लाभ विशेष नहीं हुआ अब ज्योतिष विद्या मुझको आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तू संदेह मतकर तैने पढनेमें परिश्रम नहीं किया तू चतुराईसे बुद्धिमान् बना चाहता है सो विना परिश्रम कोई कार्य्य फल नहीं देता जैसे दरख्तके ऊपर अच्छे फलको देखके मनुष्य मुखको फैलावे तो वह फल मुखमें नहीं आवेगा और जो उसमें चढके तोडेगा तो मुखमें आजायगा सो तू विना पुरुषार्थ फल चाहता है सो ज्योतिष शास्त्रमें परिश्रम करेगा तो तुझको बरजरूर आवेगा और इस शास्त्रसे तुझको लाभ भी होगा संदेह मत कर ॥ इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १४४ ॥ हुक्मी शकल तरीख ⁝ मुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ज्योतिष-विद्याका है सो तू यह पूछता है कि ज्योतिष विद्यासे मुझको कैसा फायदा है यह क्या कारण है कि मैं बहुत तकलीफ करके पढाहूं परन्तु मुझको अबतक लाभ नहीं हुआ सो हे पूछनेवाले ! तू पहले जन्ममें भी ब्राह्मण था सो पश्चिमदेशमें पांच वर्षका हुआ पीछे तेरे मातापिताने गुरुजीके पास पढानेवास्ते भेज दिया फिर गुरुजीने बहुत दिल लगाकर और अपना काम छोडकर तुझको पढाया सो तू बुद्धिमान् होगया फिर किसी कारणसे एक दिन तुझसे गुरु कुपित होगये सो तू उनके सामने गया गुरुजीने निहायत तकलीफ मानी तू उनसे नहीं बोला सो उन्होंने तुझको शाप दे दिया कि जा तुझको विद्या फलीभूत नहीं होगी तुझको वही शाप है सो तू अब जिसके पास पढा है उनको प्रसन्न कर तुझ-

को बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १४५ ॥ हुक्मी शकल ⚏ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल न्यायविद्याका है सो तू यह पूछता है कि और विद्या तो अपनी बुद्ध्यनुसार मैंने पढी हैं परन्तु मेरा दिल यह चाहता है कि मैं न्यायविद्या पढूं सो मुझको आवेगी या नहीं यदि आवेगी तो मुझको लाभ होगा या नहीं । " सो न्याय विद्या बहुत अच्छी है और काव्य कोष पुराणोंसे बहुत सूक्ष्म पदार्थ हैं परन्तु तेरी बुद्धि अच्छी है सो तू न्याय पढ तुझको न्यायशास्त्र बहुत अच्छा आवेगा और तुझको लाभ भी होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १४६ ॥ हुक्मी शकल कब्जुलदाखिल ⚏ सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं न्यायविद्या पढूं परन्तु इस विद्यासे मुझको लाभ होगा या नहीं " सो तुझको न्यायविद्या अच्छी आती है परन्तु तुझको अकल नहीं है व्यवहार बिगडता है तेरे लग्नमें दुष्ट ग्रह है उसका पूजन कर अब तुझको ८ मास ३ दिन पीछे अच्छा लाभ होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १४७ ॥ हुक्मी शकल ⚏ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मीमांसा विद्याका है सो यह पूछता है कि मीमांसा विद्या मुझको आवेगी या नहीं कुछ मैं पढाभी हूं इस शास्त्रसे मुझको फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! मीमांसा विद्यामें कर्मको ईश्वर माना है और यही सत्य है कर्म ही ईश्वर है और यह शास्त्र बहुत ही अच्छा है तू पढ तुझको बरजरूर आवेगा परन्तु तेरे जन्मपत्रमें पंचमभवन कुछ बिगड रहा है सो उसकी शान्ति करवा यह शास्त्र तुझको बहुत आवेगा और इस शास्त्रसे तुझको लाभ भी बहुत होगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ १४८ ॥ हुक्मी शकल ⚏ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले

शख्स! तेरा सवाल पुराण विद्यासे लाभका है तू पूछता है कि मैंने एक जगह कोई पुराण बाचनेकी तजवीज लगाई है वह (तजवीज) लगेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले! उस जगह तेरा विश्वास पूरा है परन्तु एक मनुष्य उस जगह ऐसा दुष्ट है कि चलता हुआ पाप लेता है सो वह मनुष्य तेरे बलमें नहीं आवेगा और जो तू उससे कहेगा तो वह ऐसा सख्त जवाब तुझको देगा कि सुने पीछें तेरा दिल कभी बाचनेको नहीं करेगा सो तू दुष्टनिवारणी दुर्गाका आराधन कर पीछे तुझसे वह कुछ प्रीतिसे बतलायेगा और जब तेरा पुराण बैठेगा तुझको लाभ बहुत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥१४९॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि मेरी कथा बैठ रही है कब बिदा होगी सो अब तेरे २ मास ७ दिन और सख्त हैं इन दिनोंमें तू मत बोल और जो तू बिदा करेगा तो तुझको लाभ कम होगा क्योंकि तुझको इन दिनोंमें लाभका विशेष योग नहीं है और इन दिनों पीछे बिदा करिये फिर तुझको अच्छा लाभ होगा सो सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥ १५०॥ हुक्मी शकल ⩨ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल सांख्य विद्याका है सो तू यह पूछता है कि सांख्य विद्याके पढनेसे मुझको कैसा लाभ है" सो सांख्यविद्या तुझको अच्छी आती है और इस विद्यासे तुझको लाभ भी बहुत है परन्तु अब तक तुझको लाभ विशेष नहीं हुआ क्योंकि तेरा भाग्योदय अबतक नहीं हुआ है सन्देह मत कर अब १ वर्ष २ मास और ३ दिन पश्चात् तेरा भाग्योदय होगा और इसी विद्यासे तुझको बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५१ ॥ हुक्मी शकल ⩶ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल वेदाविद्याका है यह तू पूछता है कि "वेदाविद्या मुझको कैसी आती है और इस विद्यामें मुझको

कैसा लाभ होगा" सो तुझको इसीमें बरजरूर लाभ होगा परन्तु अब-तक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है सो १ वर्ष ११ मास १३ दिनमें ईश्वरके आराधनसें भाग्योदय होगा संन्देह होगा तो दूर होजायगा तू फिकर मत कर इसी विद्यासे तुझको लाभ बरजरूर होगा तेरी इज्जत बढेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५२ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वैद्य विद्या पढनेका है तू यह पूछता है कि मैं वैद्य विद्या पढूंगा तो मुझको आवेगी या नहीं और जो आजायगी तो मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तेरे घरमें पहले तो वैद्य विद्या कोई भी नहीं पढा है और हाथ सख्त होनेसे और लोगोंकी पैदाको देखकर अब तेरा दिल निहायत चलता है सो तू वैद्यविद्यामें लघुत्रयी और वृद्धत्रयी परिश्रम खूबकरके पढ यह विद्या भाग्य विना फलीभूत नहीं होती इस जन्म या पूर्वजन्मके तपको भाग्य कहते हैं सो ईश्वरका भजन कर यह विद्या रत्नोंकी खान है कुछ बादशाहीसे कम नहीं है सो तू पढ तुझको विद्या आवेगी और इस विद्यासे तुझको बहुत लाभ भी होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वैद्यविद्याका है तू पूछता है कि यह वैद्यविद्या मुझको आवेगी या नहीं और जो आवेगी तो इससे मुझको लाभ कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तैंने और भी शास्त्र पढा है और वैद्यविद्या भी तुझको कुछ थोडीसी आती है क्योंकि यह विद्या तेरे कुलकी है जो कुलकी विद्या होती है सो आधी तो विना पढी आती है सो तेरा भाग्य जबर है परन्तु अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है और अब तेरे १ वर्ष २ मास ३ दिन नाकिश और रहे हैं पीछे तेरा भाग्योदय होगा इस विद्याको पढ तुझको आवेगी और लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५४ ॥ हुक्मी

शकल ⠸ तुहुत् खारिज सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल यावनीविद्याका है सो तू यह पूछता है कि यह विद्या मुझको आवेगी या नहीं और जो आवेगी तो मुझको इस विद्यामें लाभ होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तू परिश्रम कर और सबसे नेकीसे रह तुझको यह विद्या आवेगी परन्तु तेरी जन्मपत्रीमें पञ्चम भवन बिगड रहा है सो तू उसकी शांति कर तुझको लाभ होगा और विद्या भी खूब आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिंड ॥ १९९ ॥ हुक्मी शकल ⠸ तुहुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यावनीविद्याका है सो तू बालकपनसे यावनी विद्या पढा है और यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब लगेगा " सो हे पूछनेवाले ! तैने पढनेमें बहुत तकलीफ की है अब रोजगार नहीं होता है और जो रोजगार उठता भी है तो समान्य उठता है जैसी तेरी पढाई है वैसा रोजगार नहीं मिलता सो तू संदेह मत कर अभी तुझको कुछ दिन नाकिश है ४ मास ९ दिन पीछे तुझको एवजी मिलेगी नाकिश दिनोंमें एवजी ही रहेगी और नाकिश दिनोंके बाद तुझको पक्का रोजगार मिलेगा फिकर मत कर अब ही तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है तेरा भाग्य बहुत अच्छा है परन्तु तू शनिदेवताका दान दे और जप भी करा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५६ ॥ हुक्मी शकल ⠸ अतवखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजविद्याका है तू राजविद्या पढा चाहता है और यह पूछता है कि मुझको यह विद्या कैसी आवेगी और मुझको लाभ कैसा है " सो राजविद्या पढता है और तुझको हरेक मनुष्यसे अच्छी आती है परन्तु जैसा तेरा श्रम है वैसी विद्या नहीं है क्योंकि तेरे जन्मपत्रमें पञ्चमेश बिगड रहा है सो उसका आराधन रखना किसी नेक ब्राह्मणसे अपनी ताकत माफिक जप करवा तुझको विद्या बहुत अच्छी

आवेगी और इस विद्यासे तुझको लाभ बहुत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५७ ॥ हुक्मी शकल ∴ नकी मुनकलीव मङ्गलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तू राजविद्या पढा है सो यह पूछता है कि रोजगार कब हो " सो पूछनेवाले तैंने बालकपनसे इस राजविद्यामें बहुत श्रम किया और पाससे जरभी लगा और अब पढ चुका कोई रोजगार नहीं मिलता और कोई रोजगार उठता भी है तो पढाई माफिक नहीं मिलता और मनको सत्यता भी नहीं होती सो तू फिकर मत कर अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ है और दिन भी तेरे नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब २ वर्ष ९ मास पीछे तेरा भाग्योदय होगा और नाकिश दिनोंमें तुझको एवजी मिलेगी सो एवजीमें काम कर और शिवार्चन करवा तुझको लाभ बहुत होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५८ ॥ हुक्मी शकल ⋮ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मैं राजविद्या पढाहूँ और मेरी नौकरी भी लग गई थी परन्तु अब छूट गई सो फिर मैंने बहुत उद्योग किया परन्तु कहीं भी तजवीज नहीं लगती और लगती है तो ऐसी लगती है कि जिसमें मेरा खर्च भी न चले सो अब रोजगार विना मैं निहायत दिक हो रहा हूं मेरा रोजगार होगा या नहीं " सो तेरे शरीर में एक तो क्रोध बहुत है और तुझमें अकल नहीं और तू अपनेको बडा अक्कलदार जानता है सो तू अपने अफसरसे बोलनेकी भी राहदारी नहीं रखता और तुझे लोभ भी बहुत ज्यादे है सो तैंने बे अकल पनामें रोजगार खोये हैं सो अब पछताता है सो अब तो तेरे दिन नाकिश हैं और जन्मपत्रीमें तेरा छठाभवन बिगड रहा है सो उसकी शान्ति कर तेरा रोजगार जलदी ही लगेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १५९ ॥ हुक्मी शकल ⋮ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

मन्त्रविद्याका है सो तू यह पूछता है कि इस मन्त्रका मैं आराधन करूं यह मंत्र सिद्ध होगा या नहीं" सो मंत्र तो सब ही सिद्ध हैं करनेवाला चाहिये सो तू सच्चे गुरुसे उपदेश लेकर पहले एक पुरश्चरण गायत्रीका कर और श्रीगङ्गाजीके जलका सेवन कर और गऊको जवोंको चरा फिर गऊके गोबरमें निकसे उनको धोय और सुखाय उनको भोजन कर और फिर इस मन्त्रका विधान पूर्वक जप कर और बलिदान दे मन्त्रसिद्ध होगा फिकर मत कर मन्त्र सब ही सच्चे हैं इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ १६० ॥ हुकमी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मंत्र विद्याका है" सो तू यह पूछता है कि मैं इस मंत्रको सिद्ध किया चाहता हूं सो यह मंत्र सिद्ध होगा या नहीं और मंत्र कलिमें सिद्ध हैं या नहीं। सो मंत्र तो सबही युगोंमें सिद्ध हैं परन्तु करनेवाला चाहिये जिस मनुष्यमें पाप होवेंगे वह मंत्रादिको कैसे सिद्ध कर सकता है जैसे जिस जलमें मल होगा वह जल वस्त्रको कैसे सफेद करेगा ? इस कारणसे पहले अपने शरीरके पापोंको दूरकर तू इस मंत्रसे लक्ष्मी-प्राप्ति शत्रुनाश और स्त्रीप्राप्ति यह कार्य्य चाहता है सो तू पहले तो चान्द्रायण व्रतों करके शरीरके प्रच्छन्न पापोंका प्रायश्चित्त कर और पीछे सावित्रीका एक पुरश्चरण कर और उससे पीछे फल आहार कर फिर इस मंत्रका आराधन कर जो मनसा करके करेगा वही सिद्ध होगा मंत्र तो सब ही सिद्ध हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ॥ १६१ ॥ हुकमी शकल ⚏ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है सो तेरे उज्वल सन्तानका सुख नहीं है तू यह पूछता है कि मुझको सन्तानका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मका अजाब है सो वह दूर हुए विना तुझको संतानका सुख नहीं होगा सो तू पहले जन्ममें नटजाति था विशेष जंगलमें रहा करता था

और मृगोंको मारके उनका मांस भक्षण किया करता था । एक समय हिरनीपै बाण चलाया वह बाण हिरनीके तो नहीं लगा और उसी हिरनीके बच्चेको लग गया तैंने मांसके लोभकरके बाण मारा सो उस की माता अपने बच्चेकी तकलीफ देखकर बहुत दिक हुई परन्तु तू उस बच्चेको मारके ले चला अब उसकी माता यह कहने लगी कि रे दुष्ट ! जैसे मुझको अपुत्र करके चला है ऐसे तू भी जन्मजन्मोंमें पुत्रका सुखी न होगा और उस जन्ममें तेरे यही दो स्त्री थीं सो उस पापका फल हो रहा है। और उसी उजाडमें तैंने और तेरी स्त्रीने अपने पीनेके वास्ते एक छोटी पलावडी खोदी जिसमें वर्षातका जल टिक जाय उसमें और भी जीव बहुत पीया करते थे सो उस पुण्यसे यह द्विज जाति और यह लक्ष्मी पाई है सो तू औरस सन्तानका सुख चाहे तो तीर्थमें जाके २१ पल सुवर्णकी एक मृगी और एक मृगीका बच्चा ३ पलका बनवाकर नेक ब्राह्मणको दे और महागोपाल सन्तानका आराधन करवा रात्रिमें बलिदान दे और उसी नेक ब्राह्मणसे यह कह दे कि औरके आगे मत कह और तू भी मत कह क्योंकि कहनेसे जपदानका फल जाता है और धर्मकी नीयत रख ब्राह्मणभोजन करवा पहले किया अब पाता है और अबका किया आगे पावेगा यह धंन संग नहीं चलेगा धर्मकी नीयत रख तेरे फरजंद बरजरूर होवेगा और जिंदा रहेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १६२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कब्जुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है सो तू यह पूछता है कि मेरी उज्वल औलाद हुई परन्तु जीयी नहीं सो मेरी औलाद जीवेगी या नहीं और किस दोषसे नहीं जीती है"। सो तेरे संतान जीनी बहुत मुशकिल है क्योंकि तेरे पहले जन्मका अजाब है उसके दूर हुए विना न जीएगी तू पहले जन्ममें पूर्वदेशमें धींवरजाति था जंगलमें कूंवाके पास रहा करता था और लकडी बेचकर अपना उदर पूरण किया

करता था। एक ब्राह्मणका लडका जेवर पहिने हुए भूलके रातमें तेरे पास चला आया सो तेरी औरत तो सोती थी और तैने धनके लोभ करके वह मार दिया और फिर पीछे उसका पिता आया उसको वह मरा हुआ मिला और जेवर नहीं मिला सो उसको देख तुम्हारे पास बैठकर रुदन किया सो पीछे क्रोधमें आकर यह कहने लगा कि जिसने मेरा लडका मारा है उसके जन्मजन्मान्तरमें सन्तान नहीं जीवेगी यह कहकर अपने लडकेकी और्द्धदैहिक क्रिया करता भया। तुम्हारे उस जन्ममें लडके थे सो कुछ दिनमें मर गये तू बहुत पछताया और लडकेके मारनेका हाल औरतसे कहा सो सुन कर उसने बहुत रुदन किया और तुझसे यह कहा कि जो यह जेवर है इसको तो उस ब्राह्मणके घरमें छिपकर गेरआ और जो तेरे घरमें धन है उसका अन्न लेकर भूखे जनोंको दे कुछ तो पाप दूर होगा तू इस प्रकारसे करता भया सो उस अन्नदानके प्रभावसे तुझे लक्ष्मी तो बहुत मिली परन्तु संततिका दुःख ही रहा और तेरी औरतको स्वप्नमें अब भी बालक दिखाई देता है सो तू एक सुवर्णका ब्राह्मण ११ पलका और लडका सुवर्णका ९ पलका और जेवर वस्त्रसमेत कि जिसे ब्राह्मण पहिन सके ऐसे दोनों सुवर्णकी मूर्तियोंका पूजन करवा दान दे रात्रिमें नेक ब्राह्मणसे सन्तान गोपालका ३१ दिन पाठ करवा और पीछे उसको दक्षिणा दे और उससे यह प्रार्थना कर कि हमारा पाप दूर हो और उस ब्राह्मणसे यह कह कि और किसीके आगे न कहना और औरतको भी कह दे कि किसीके आगे न कहै क्योंकि कहनेसे जप दानका फल जाता रहता है सो मत कह यह कर तेरे फरजंद होगा और जिंदा रहेगा और तैने पहले भी किया परन्तु इस तजवीज बिगर पाप नहीं कटा सो तू यह कर २ वर्ष भीतर तेरे लडका होगा और जिंदा रहेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥१६३॥ हुक्मी शकल ⁘ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि

"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है तू पूछता है कि मेरे लडकी होती है और लडका नहीं होता सो मेरे लडका होगा या नहीं और किस दोषसे नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! पूर्वजन्मके शापसे तेरा फरजंद नहीं होगा, क्योंकि तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें यमुनाजीके तीरपर क्षत्रियजाति था तू गौका पालक रहा करता था सो गर्भवती गऊके पेटमें तैने क्रोधमें आकर लकडी मारी सो मारनेसे उसके गर्भमें जो बछडा था सो निकल पडा और भूमिमें पडते ही मर गया और उस गायने निहायत तकलीफ पाई सो तैने उसका कुछ भी प्रायश्चित्त नहीं किया तेरे पहले जन्मका अजाव है सो तू सुवर्णकी गऊ और चांदीके पात्र श्रद्धानुसार दे और भ्रूण दोषहा दुर्गाका सवालक्ष पाठ तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन और ब्राह्मणभोजन करवा और एक सुवर्णकी भ्रूण दोषहा दुर्गाकी मूर्ति करवा षोडशोपचार करवा पूजन कर सो ये दोनों मूर्ति नेक ब्राह्मणको दे और दक्षिणा दे और उससे यह प्रार्थना कर कि मेरा शाप दूर हो और मेरे सन्तान हो सो तू ऐसा कर तेरो सन्तान बरजरूर होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥

पिण्ड ॥ १६४ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है सो तू यह पूछता है कि मेरे एकबार सन्तान हुई फिर नहीं हुई सो मेरे सन्तान और होगी या नहीं और किस दोषसे नहीं होती है" सो तेरे पहले जन्मकी स्त्रीका दोष है तेरे सन्तान नहीं होगी पहले जन्ममें तेरी औरत दक्षिण दिशामें क्षत्रिय जातिमें जन्मी थी सो तू भी क्षत्रिय था तेरे सकाशसे इसको ५ कन्या और एक फरजंद हुआ सो इसने फरजंद तो बहुत प्रीतिसे रक्खा कन्याको कभी आदर नहीं दिया उन कन्याओंने शाप दिया कि जन्मजन्मान्तरमें तेरा एकसे ज्यादा बालक न हो सो उनके

शापसे सन्तान नहीं होती सो तू ५ सुवर्णकी मूर्ति २ पलकी करवाकर और उनका पूजन अपना औरतके हाथसे करवा और सन्तानेश्वरी दुर्गाका पाठ सवालक्ष करा और पांचो मूर्ति दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे और एक वर्ष तक शुक्ल पक्षकी ८ को ब्राह्मणकी नव कन्या जिमा और उनको ओढनेको वस्त्र दे तेरा सब जन्मोंका अजाब दूर होगा तेरे पास धन बहुत है पुण्य कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १६५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है तू पूछता है कि मेरे एक लडका और लडकी हुई परन्तु लडका और लडकी नहीं जीये अब कोई बालक जीएगा या नहीं और क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे कुटुम्बमें पितरोंका शाप है कि औरस पुत्रका सुख न हो अव्वल तो संतान होती नहीं और होती है तो जीती नहीं और जो जीवे तो कन्या जीवे फरजंद न जीवे सो तेरे कुटुम्बमें धन होता है तो सन्तानका सुख नहीं और जो संतानका सुख होवे तो धन नहीं होता सो तेरे पास धन बहुत है और पैदा बहुत है परंतु तू लोभी बहुत है धर्मके नाम तुझको संदेह होता है सो तुझसे बनआवे तो तू किसी कुटुम्बी ब्राह्मणको बहुत अच्छी हवेलीमें बसवा दे और एक सुवर्णकी औरतकी मूर्ति २ पलकी बनवाकर पूजन कर उसीमें पितरोंका ध्यान कर उसी ब्राह्मणको मूर्तिदान दे और उस ब्राह्मणसे यह कह कि हेपितृरूप ! मेरा शाप दूरकर, संतान दे और उस ब्राह्मणसे यह कह दे कि और किसीसे मत कहो क्योंकि कहनेसे दान और जप का फल जाता रहता है ऐसा कर सन्तान फरजन्दकी होगी और जिन्दी रहेगी और तू यह संदेह न करना कि कौन पितृ है सो तुम्हारे कुलमें एक बेऔलादी स्त्रीने धन और घरमें सीर नहीं लिया सो उसके वास्ते मकान देने से सन्तानका सुख होवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १६६ ॥ हुक्मी

शकल ⩦ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है सो तू यह पूछता है कि औरतके गर्भ है फरजंद होगा या कन्या" तुझको फरजंदकी बहुत अभिलाषा है और दिनरात्रि यही फिक्र है सो इस औरतके कलाममें ज्यादा कन्या हैं क्योंकि इसको पहले जन्मका शाप है यह पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें तरला नदीके तीरपर वैश्यजाति थी और व्रतदानमें तत्पर थी परन्तु इसकी हवलीके समीप एक ब्राह्मण था उसके एक साथ ७ कन्या हुई सो उसकी औरतसे जब यह लडती थी तब कहती थी कि तू ऐसा है तभीतो कन्या होती हैं इस प्रकार सदा उसका अंतःकरण बहुत दुखाया करती थी सो एकदिन उसने यह कहा कि तू भी मेरी सरीखी हो यह शाप दिया सो व्रतदानसे तो यह धन पाया है और उस शापसे इसके कन्या होवेगी सो तू जिस ब्राह्मणका बडा कुटुम्ब हो और नेक हो उसको एक विष्णु और एक लक्ष्मीकी ११ पल सुवर्ण की दो मूर्ति बनवाय और पूजन करवाय औरतके हाथसे शक्त्यनुसार दक्षिणा दे और यह प्रार्थना करवा कि मेरा शाप दूर हो यह फरजंद होवेगा जिन्दा रहेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १६७॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है सो तू यह पूछता है कि पत्र आये बहुत दिन हुए कुशलपत्र कब आवेगा" सो तुझको बहुत ही अभिलाषा है तेरा कुशलपत्र आया ही चाहता है संदेह मत कर वे सब प्रसन्न हैं और तेरा मनोरथ पूर्ण हुआ चाहता है परन्तु अब तेरे दिन कुछ नाकिश हैं तेरे दिलको बिगाड रखते है सो तू श्रीकालीके मन्त्रका आराधन करवा और रात्रीमें बलिदान दे पत्र आवेगा और अब कार्य्य सिद्ध होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १६८॥ हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है

कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है सो तू पूछता है कि यह पत्र आवेगा या नहीं" सो तेरे पत्रके आनेमें ढील है जैसी तेरे दिलपर ताकीद है वैसी भेजनेवालेके दिलपर नहीं है सो तू दिलमें धीरज रख पत्र तो तेरा आवेगा परन्तु अभी देर है फिकर मत कर अभी तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर और तेरा भाग्य बहुत अच्छा है परन्तु छठा भवन जन्मपत्रमें बिगड़ रहा है सो उसकी शान्ति करवा ऐसा करनेसे तुझको लाभ अच्छा होगा और जो शत्रु उठेगा वही नाश होजावेगा और तेरा खत बरजरूर आवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १६९ ॥ हुकमी शकल बजाज साबित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फरजंद गोद लेने का है सो तू यह पूछता है कि गोदके फरजंदसे मुझको लाभ है या नहीं" सो तुझको गोदके फरजंदसे लाभ है तेरे औरस पुत्र नहीं होगा और तेरी औरतका दिल निहायत नाराज है यह विचारती है कि मैंने कौन ऐसा पाप किया कि मैं गोद लेती हूं यह बारंबार कहती है तू औरतको समझा दे कि संदेह न कर तेरे गोदके पुत्रका भी जीना मुशकिल है क्योंकि तेरी औरतके पहले जन्मका अजाब ज्यादा है यह पहले जन्ममें शूद्रजातिकी थी और अपने धर्ममें तत्पर थी क्रोध इसमें बहुत ज्यादा था इसके एक बालक लडका था उसपर विना कसूर कोप कर कोठेमें रोक दिया और वह डरता हुआ बहुत ही पुकारा परन्तु इसने कपाट न खोला सो वह लडका दहशत पाकर मर गया सो उस पापसे गोद का भी रहना मुशकिल है और अपने धर्ममें सावधान थी इससे यह धन मिला है सो तू सुवर्णका ३ पलका बालक बनवाय, और औरतसे पूजन कराय दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे और जितनी तेरी ताकत हो उतना संतान गोपालका पाठ करवा फिर गोद ले तुझको दीर्घायु और उत्तम ग्रहोंवाला पुत्र मिलेगा और तेरा पूर्वजन्मका

अजाब दूर होगा यद्यपि तैने पहले भी उपाय (पूजनादि) किया है परन्तु संतान होनेके वास्ते किया गोदके वास्ते नहीं किया है सो कर फिकर मतकर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ १७० ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतखारिज सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गोद लेनेका है सो तू यह पूछता है कि जिस बालकको निगहमें करते हैं उसीके ग्रह सामान्य पाते हैं सो तजवीज नहीं लगती अब कब लगेगी और कैसा आवेगा यह पूछता है" सो तू संदेह मत कर तेरी औरतने बालकके होनेमें बहुत बोल कबूल रक्खा है सो करवा और एक शत चण्डीपाठका संकल्प किसी नेक ब्राह्मणको दे तेरे बरजरूर जल्दी पुत्र आवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी बडे मनुष्यके पाससे दूतके आनेका है तू पूछता है कि मैंने दूत भेजा है सो कब आवेगा और जिस कामके वास्ते भेजा है वह काम करके लावेगा या नहीं" सो तेरा दूत बहुत होशयार है दश मनुष्योंकी अक्लको अकेला बहा देता है सो दूत तेरा आनेवाला है कामकी भी सलाह मिलावेगा तू कुछ फिकर मतकर तेरा काम होनेवाला है॥ इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ १७२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ अतबे खारिज केतु ग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा यह सवाल है कि तैने एक मनुष्यके पास दूत भेजा है तू पूछता है कि कब आवेगा" सो तेरा दूत आनेवाला है कुछ देर नहीं है परन्तु तेरा काम तो फते नहीं हुआ और होना भी मुशकिल है क्योंकि तेरे दिन नाकिश हैं और तुझको अकल भी कम है तू काम करके पीछे पछताता है सो तू दुर्गाका आराधन कर तेरा काम फते होगा और दूत जलदी आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नकी सुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल दूत भेजनेका है तू पूछता है कि मैं दूतको भेजा चाहता हूं सो दूतको भेजूं या नहीं, मेरा काम बननेवाला है या नहीं " तुम दूतको बरजरूर भेजो तुम्हारा दूत वहुत होशयार है क्योंकि जिसके पास भेजता है वह भी तुझको निहायत चाहता है सो तेरा कार्य्य फते होगा तुम दूतको भेजो परन्तु श्रीभगवतीकी आराधना रखनेसे जल्दी होगा फ़िकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७४ ॥ हुक्मी शकल ⋮ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूत भेजनेका है तू यह पूछता है कि मैं दूत भेजूं तो मेरा काम बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं तू दूतको मत भेज क्योंकि नाकिश दिनोंके कारण तेरा काम होना मुशकिल है और जो तू भेजो तो कामेश्वरी दुर्गाका आराधनं करवा और बलिदान कर इससे तेरा कार्य्य होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ इति रमलगुलजारे पंचमस्थानफलं समाप्तम् ॥ पिण्ड ॥ ॥ १७५ ॥ हुक्मी शकल ⋮ इज्जतमा बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके शुभाशुभका है " सो तेरा शत्रु तुझसे निहायत जबर है और ज्यादे द्वेष अभी हुआ है परन्तु तेरा ग्रह उससे जबर है उसके जन्मपत्रमें छठाभवन बिगड रहा है और तेरे जन्मपत्रमें छठाभवन बलवान् है जो उसका कार्य्य दामोंसे होगा वह तेरा बातोंसे हो सकता है परन्तु तू शत्रुनिवारण मन्त्रका आराधान करा तेरा शत्रु दूर होगा सन्देह मत कर तू आनंदसे रहेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७६ ॥ हुक्मी शकल ⋮ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके शुभाशुभका है तू पूछता है कि यह शत्रु मुझको ले रहेगा या मैं उसको " हे पूछनेवाले ! तेरा शत्रु वहुत काफर है अच्छी बुरी करता परलोकको नहीं देखता है अब तेरे दिन नाकिश हैं सो अब नाकिश दिनोंमें तेरेपर ज्यादे हाथ पडेगा सो तू सावधान रह और तू होश्यार

बहुत है परन्तु नाकिश दिनोंमें होश्यारी नहीं चलेगी सो तू शत्रु निवा
रण मन्त्रका संपुट दिवाकर श्रीदुर्गापाठ १०० करवा तेरा शत्रु तुमसे
पराजय होगा और तेरी बात सही रहेगी ऐसा कर फिकर मत कर
अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७७॥ हुकमी शकल ⚏
लहियान खारिज बृहस्पतिकी हैं हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले
शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे जीतनेका है " सो तेरा और तेरे शत्रुका
झगडा राज्यमें दाखिल है और जबर है उसकी भी राजमें पहुंच पूरी है
परन्तु अब मुकद्दमा तुल रहा है और तेरे शत्रुने दुर्गाका अनुष्ठान करवा
रक्खा है सो अब तो तेरी ही जीत दिखाई पडती है परन्तु तू अब
नीचा देखेगा क्योंकि जिस दिनसे यह मुकद्दमा जारी हुआ है उस दिन-
से तेरा शत्रु निहायत पुण्य करता है और दुर्गाका अनुष्ठान गुप्त कर-
वाता है सो तू जबर पुण्य और दुर्गाका अनुष्ठान बलिदान समेत कर-
वा तब तेरा मुकद्दमा बहाल होगा और तू जीत जावेगा फिकर मत
कर धन लगे धन आता है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७८ ॥ हुकमी शकल
⚏ कबजुलदाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने-
वाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे जीतनेका है " तेरा झगडा बहुत
दिनोंका है कईदफे उलट पलट हो लिया और निहायत दिक हो रहा
है और तेरा शत्रु निहायत जोर लगा रहा है और इस झगडापर बहुत
ज्यादे कमर बांध रहा है और जिसको तू दिनमें अफसर अपना करता
है उसीको वह रिश्वत देकर रातमें अपना कर लेता है सो झगडा नहीं
है यह गलेका झाड है सो तू शत्रुनिवारण मन्त्रका सवालक्ष जप और
तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन
करवा फिर इसी झगडेको जीतेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा
करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १७९॥ हुकमी शकल ⚏ कबजुलखारिज
राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल
संबन्धके झगडेका है तू पूछता है कि इस संबन्धके झगडेको मैं जी-

तूंगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह संबन्ध पहले तेरे लिये करा रक्खा था परन्तु करनेवाले और उसके कुटुंबका दिल खुशी नहीं हुआ अब और जगह विवाही चाहते हैं सो तू यह पूछता है कि " यह संबन्धका झगडा मैं जीतूंगा या शत्रु" सो हे पूछनेवाले शख्स ! अब तेरे दिन नाकिश हैं तू जो तजवीज करता है उसमें नुकसान रहता है सो दिनोंकी गरदिशकरके इस मुकद्दमामें तू ही फेल होता दीखता है और जो तू यह कहै कि यह झगडा नहीं कि जानकी बाजी लग रही है तो शंकरेश्वरी कालीके महामन्त्रका आराधन करा और बलिदान दे संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८० ॥ हुक्मीं शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबन्धके झगडेका है सो यह पूछता है कि इस झगडेको मैं फते करूंगा या शत्रु करेगा" सो यह संबन्ध पहले औरके कर रखा है फिर तेरे करदिया है कि जितने जिन्दगीं रहेंगी इस संबन्धको न छोडूंगा सो बहुत जोर करता है उसको क्रोध ज्यादा आरहा है सो तू बहुत होश्यार है और बहुत अकलदार है उससे दूर रहना और शत्रुनिवारणीका जप जितनी तेरी ताकत हो उतना कराना झगडेमें तू बरी होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८१ ॥ हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके झगडेका है सो तू यह पूछता है कि इस झगडेको फते मैं करूंगा या शत्रु"सो इस जमीनपर तैने बहुत गला घाला परन्तु अबतक सही नहीं हुई और शत्रु यह कहता है कि इसको मैं लेऊंगा और इस मुकदमामें बहुत दिन लगे हैं सो अब तेरे दिन नाकिश हैं और तेरा शत्रु जोर खा रहा है और इस मुकदमा मैं धन भी दोनोंका बहुत लगा है और अब इस मुकदमामें अफसर भी दिक्क हो रहा है सो तू मंगलदेवताका आराधन कर और धर्मकी

नीयत रख इस मुकद्मामें तेरा शत्रु फैल होवेगा और तू फते करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८२ ॥ हुक्मी शकल उकला ⁝ मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके झगडेका है तू यह पूछता है कि इस छगडेको मैं फते करूंगा या शत्रु फते करेगा" सो तेरा दिल साक्षी नहीं देता है और यह झगडा कुछ कम नहीं है इसमें दावा इलाही जाती आती है परंतु तेरे मालिकको आजकलमें जन्मपत्रसे दशा माफिक है परन्तु तेरे दिन नाकिश हैं अभी ७ वर्ष ४ मास और २७ दिन तेरे नाकिश और रहे हैं और जो नाकिश दिनोंमें शत्रु तुझको दबावे ही तो तू जगदीश्वरी कालिकाकी ११ पल सुवर्ण-की मूर्ति बनवाकर ८ अष्टमीके रोज पूजन कर और वह मूर्ति दक्षिणा समेत कुटुंबी विदेशी नेक ब्राह्मणको संकल्प करके दे और उसी ब्राह्मणसे जगदीश्वरीके महामंत्रका सवालक्ष जप तथा १०० दुर्गापाठ करवा और विपुल दक्षिणा दे तुझको जमीन बरजरूर मिलेगी शत्रु दफ होवेगा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८३ ॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनके झगडेका है वह धन दोनोंका है परन्तु तू यह चाहता है कि मैं दबा लूं और वह चाहता है मैं दबा लूं" परन्तु सीरका धन है तुम बिरादर हो इस धनके सबब निहायत शत्रु हो गये सो तुम समझते नहीं तुम्हारा ही धन है वृथा झगडेमें बरबाद होता है सो समझना चाहिये और तुम्हारे झगडेको देखके जो तुम्हारे पहले निहायत शत्रुथे मुखसे भी नहीं बोलते थे वे अब बहुत खुशी होते हैं और तुम्हारे मकानमें आकर तुमको बहकाते हैं परन्तु तुम नहीं समझते सो दोनोंहीको दिन निहायत नाकिश हैं तुम जन्मपत्र दिखाना नहीं तो तुम दोनों बरबाद हो जाओगे समझो और जितनी तुम्हारी ताकत हो उतना शान्तिपाठ करा झगडा

शान्त होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यमें धनके झगडेका है तू पूछता है कि राज्यकी दी हुई इनामका झगडा है भाई ही शत्रु होगया है मुझको कुछ भी नहीं देता यही झगडा है सो मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे प्रश्नकर्ता ! तू जगती भैरवके मन्त्रका जप सवालक्ष करवाकर झगडा कर और भैरवको रात्रिमें बलिदान दे और हवनादिक करवा तू झगडा जीतेगा परन्तु तेरे रुपये तो लगेंगे फिकर मत कर तुझको धन मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८५ ॥ हुक्मी शकल ⚌ बयाज मुनकलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजके झगडेका है सो तू पूछता है कि यह झगडा मैं जीतूंगा या नहीं " सो पहले तो तेरे पाससे इसने बहुत धन लिया और मनुष्योंका भी लिया और अब कुछ टोटा रहा सो दिलमें यह विचारी है कि टोटा देओगे तो भी इज्जत न रहेगी और न देओगे तब भी इससे सबको नट जाओ जर तो रहेगा यह बेईमानी मनमें छागई है जो मांगनेवाला आता है उससे यह कहता है कि मेरे पास नहीं सो तू यह पूछता है कि मुझको कुछ धन वह देवेगा या नहीं सो हे पूछनेवाले ! वह मनुष्य पहिलेसे ही बहुत सख्त है और जब तो वह यह कह चुका है कि मेरे पास नहीं है सो बहुत मुशकिलसे देगा और अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू शक्तिके अनुसार किसी नेक ब्राह्मणको शिवार्चनका दक्षिणा समेत संकल्प दे कुछेक कम तेरा धन आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८६ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्तुत्खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल करजके झगडेका है तू पूछता है कि मुझसे एक मनुष्य करजा मांगता था उसका करजा मेरे मांथे ज्यादा ही था सो मुझसे नहीं दिया गया बहुत ही उद्योग किया परन्तु तक-

दीरके आगे तदवीर नहीं चली सो अब उसने निहायत तकलीफ दे रक्खी है और यह कहता है कि सब धन अब लेऊंगा और इज्जतको बिगाडा चाहता है " सो हे पूछनेवाले ! तू गणेशचतुर्थीका व्रत कर और इतवारको छोडकर सब दिन पीपलके दरख्तमें पानी डाल तेरे दिन बाहडेंगे फिकर मत कर तेरा करजा ३ वर्ष भीतर सब दिया जायगा और तीनवर्ष बाद तेरेपास धन होजावेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८७ ॥ हुक्मीं शकल ⁝ नुक्षद् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी स्त्रीके झगडे का है वह स्त्री पहले तुम्हारे यहां रहती थी अब औरने रखली पहले दिनसे तूने बहुत कहा कि तू इस औरतको मत रख सो उसने कहना न माना और तुझको यह जवाब दिया कि तेरा कुछ जोरलगे तो ले ले सो तैंने क्रोधमें आकर विना समझे यह झगडा कर दिया और अब फेल होता दीखता है अब तू पछताता है सो तेरी दशा इन दिनोंमें नाकिश है और जबतक वह औरत अपने मुखसें न कहेगी तबतक तु मुकदमे में बरी न होगा सो तू नेक ब्राह्मणसे मनोहारणी भगवतीका आराधन करा वह स्त्री अपने मुखसे तेरा अच्छा कह देगी तू झगडा जीत जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ १८८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्त्रीके झगडेका है तू पूछता है कि इस स्त्रीके झगडेको मैं जीतूंगा या शत्रु जीतेगा" सो यह स्त्री पहले उसके थी सो उसके दिलकी असन्तुष्टि होनेसे और तेरे ऊपर दिलकी तुष्टि होनेसे यह तेरे यहां चली आई सो उसने एक या दो दफे तुझको कहा कि यह बात तेरे लायक नहीं है तू इस औरत को अपने मकानमें मत रहने दे सो तैंने न माना तब इसको क्रोध आया यह झगडा उठा दिया अब तू निहायत दिक होता है परन्तु पकडी पैज नहीं छुटती सो तेरे दिन अब निहायत

नाकिश हैं सो तेरे दिलमें कोई न कोई फिकर बना रहता है इससे तू विश्वेश्वरीका आराधन करवा तेरे दिलका संदेह मिटेगा और यह झगडा तू जीतेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १८९ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके झगडेका है तू पूछता है कि हमारे सीरके मकान है सो एक मकान ज्यादे मौकेपर है सो उसके वास्ते उसका और हमारा भी दिल बहुत चलता है सो वह मकान मुझको मिलेगा या उसको" सो वह मकान उसको मिला चाहता है क्योंकि तेरे दिन नाकिश है और उसके दिन अब अच्छे हैं और जो तेरे दिलमें यही जचती है कि मैं ही लूं तो तू वास्तु देवताकी ७ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर उसका किसी नेक ब्राह्मणसे २१ दिन पूजन करवा और वह मूर्ति दक्षिणा समेत २२ वें दिन उस ब्राह्मणको दे तुझको यही मकान मिलेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९० ॥ हुक्मी शकल ⁘ अंतवदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके झगडेका है तू पूछता है कि इस मकानके झगडेको मैं जीतूंगा या दूसरा जीतेगा" इससे तेरा दिल बहुत कांपता है सो अब तेरे दिन नाकिश हैं इन नाकिश दिनोंमें गुजरान कर तेरा मकानका झगडा फेल होवेगा और जो तेरे दिलमें यही है कि मैं फेल न होऊं तो तू सूर्य्य देवताकी ५ तोलाकी चांदीकी मूर्ति बनवाकर नेक ब्राह्मणसे पूजन और सूर्य्यकी गायत्रीका जप ताकतभर करवा और सूर्य्यदेवताकी विनती कर हाथ जोड तुझको मकान मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९१ ॥ हुक्मी शकल इज्जतमा साबि ⁘ बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यका है तू यह पूछता है कि मेरे दादा इलाहीका राज्य शत्रुओंने दवा लिया सो कई दफे आनेकी भी तजवीज हुई परन्तु मिला नहीं

और जितने जागीदार हैं वे भी भीतरसे मुझको चाहते हैं परन्तु अब मुझको भी आशा नहीं रही सो यह पूछता कि मुझको यह राज्य मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स! तुम्हारा पहले जन्मका तप इतना ही थोडा था कि राजकुलमें जन्म हो और अब दिन भी तेरे नाकिश हैं जिस दिनसे राज्यसे निकले थे उसी दिनसे तुम्हारे ९ वर्ष नाकिश थे और अबतक उससे भी ज्यादे चले जाते हैं सो तू भाग्येश्वरी कालिकाका आराधन करवा और बलिदान दे १ वर्ष ११ मास और १६ दिन पश्चात् तुझको अच्छे दिन आवेंगे सो यह आराधन अपनी ताकत माफिक करेगा तो अच्छे दिनोंमें राज्य मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख सुनकलीव चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स। तेरा सवाल राज्यके मिलनेका है" सो तू यह पूछता है कि मेरा राज्य जबर शत्रुने दबाया मेरे ही मनुष्योंको बिगाडा तब शत्रुका हाथ पडा और बडी इज्जत हतक की मेरा शत्रु बहुत जोरावर है और दूसरेके राज्यलेनेमें बहुत होश्यार है और उसने अबतक कोई युद्धकरके राज्य नहीं लिया है अव्वल तो जिसका राज्य लिया चाहते हैं उसके घरमें तोड फोड करते हैं पीछे छलकरके अपनी हद बढाते हैं और पीछे कुछेक ज्यादा ऐसे करके राज्यको लेते हैं इनके धर्म आर नीति एक ही हैं कि जैसे तैसे पैसा इकट्ठा करना सो अबतक तेरे दिन नाकिश थे अब एक वर्ष ३ मास ११ दिन बाद अच्छे आवेंगे सो तू जगदीश्वरीकालीकी सुवर्णकी मूर्ति २९ पलकी बनवा रत्नोंके नेत्र और नख बनवाके ब्राह्मणसे पूजन करवा उसी ब्राह्मणको मूर्ति दक्षिणा समेत दे तुझको बरजरूर राज्य मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १९३ ॥ हुक्मी शकल ⚌ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राज्यके झगडेका है" सो भाई ही शत्रु हो रहा है सो तेरा झगडा बहुत जबर है और तेरा शत्रु यह

चाहता है कि मैं राज्यको दबा लूं और उस मनुष्यमें अकल तो नहीं है और उसके कोई सलाही भी ऐसा नहीं है कि किसी बातकी छान वीन करे परन्तु धनका खर्च बहुत करता है और यह कहता है कि इस मुकदमेको मैं फते करूं सो तू फिकर मत कर तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें यह जोर पकड रहा है अब २ मास १७ दिन और नाकिश हैं सो तू जीतेगा परन्तु सुवर्णके कलशमें सप्तरत्न गेरके और रेशमी या पसमीनेके वस्त्रमें लपेटके नेक ब्राह्मणको दे और सहस्र चण्डीपाठ करवा तू जल्दी फते करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥१९४॥ हुक्मी शकल ⁘ कबजुलदाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यके झगडेका है तू पूछता है " कि मेरे राज्यमें पहले दिनसे हमारे बडोंहीका हुक्म चला आता था परन्तु अब हमपर बादशाह बारंबार जोर देता है कभी तो अपना हुक्म करता है और कभी यह कहता है कि तुम्हारे ऊपर अफसर एक मेरा मनुष्य रहेगा सो जो हुक्म करो वह उससे पूछकर करो सो मैं नटता हूं यह कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तू फिकर मत कर तुम्हारे बडोंने तो पूरा तप किया था और इस जन्ममें भी उन्होंने तप किया सो तपके तेजसे उनके ऊपर कोई भी अफसर नहीं हुआ सो तुम्हारा एक तो विशेष पहले जन्मका तप नहीं और अब भी तुम्हारे धन और स्त्री व्यसनके सिवाय और पुण्य जप नहीं है सो तू शास्त्रकी पाठशाला करा विद्याका दान दिवा और कुछ पुण्य भजन कर तेरे ऊपर अफसर नहीं होगा तेरा तेज बढेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥१९५॥ हुक्मी शकल ⁘ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमांती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लडकेके झगडेका है तू पूछता है कि मेरा लडका इसने बुलाके देखा उसका जन्मपत्र भी दिखाया और निश्चय भी किया परन्तु अब नाटता है सो यह मेरे लडकेको गोद लेगा या नहीं यह पूछता है"

सो हे पूछने वाले ! उसके पास धन बहुत है और तेरे लडकेके जन्मपत्र में धन भवन बिगड रहा है सो उस जगह जानेकी इसकी तकदीर नहीं और जो तू यही चाहे कि मैं उस जगह दिया ही चाहताहूं तो जितनी तेरी ताकत हो उतना इस लडकेके हाथसे धनेश्वरी दुर्गाके मन्त्रका जप करवा इसको बरजरूर ले लेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९६ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फरजंदके झगडेका है" तू यह पूछता है कि हमने एक लडका गोद लेनेके वास्ते देखनेको मंगवाया था सो घरमें और जन्मपत्रदेखके पण्डितोंकी पसंद नहीं आया सो अब हमने वह उसके घर भेज दिया हे पूछनेवाले ! इसका नतीजा क्या होगा उसके घरके तुमसे झगडा किया चाहते हैं कि कुछ तैंने देखनेके वास्ते नहीं बुलाया था किन्तु गोदके वास्ते पक्का करके बुलाया था सो तेरे घरमें पसंद नहीं हुआ अब तू ईमान बदलता है सो इसके माता पिता को कुछ धन दे दफे होवेगा और अब तेरे दिन नाकिश आये हैं सो तू सहस्र चण्डीका संकल्प नेक ब्राह्मणको दे तेरा दिल खुश रहेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥१९७॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वृथा झगडेका है तू पूछता है कि बातोंमें ही झगडा हो गया पहले तो कुछ बात नहीं थी और अब बढगई सो इस झगडेमें मेरी फते होगी या शत्रुकी" सो अब तेरे दिन नाकिश है इससे तूही हारता दीखता है परन्तु तू अब शिवार्चन किसी नेक ब्राह्मणसे करवा और सूर्य्यदेवताका आराधन रख फिकर मतकर तेरा शत्रु दफे होवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९८॥ हुक्मी शकल ≑ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वृथा झगडेका है पूछता है कि एक वृथा झगडा हो गया था सो कुछ भी नहीं था और

अब उसका विस्तार फैल गया सो कब दफे होवेगा और उस मुक-दमाको मैं जीतूँगा या शत्रु" सो तेरे दिन दुरुस्त हैं जो कंकरमें हाथ डालता है तो पैसा हाथ लगता है सो इस मुकदमाको तो तू ही जीतेगा परन्तु अब ३ मास और २१ दिन पीछे तेरे नाकिश दिन आवेंगे सो विजयेश्वरी कालिकाका आराधन करवा दिन अच्छे रहेंगे और जो तू न करवावेगा तो तुझको बडी तकलीफ होगी और तेरे दिलका फिकर कभी न मिटेगा सो अवश्य उक्त आराधन कर फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १९९ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाओंके व्यापारकी वस्तु विशेषके झगडेका है" सो इस कामको तू लिया चाहता है सो यह काम बहुत अच्छा है एक दफे तो दाम खरच पडते हैं परन्तु फिर पैदा पूरी हो जाती है और जिसने यह काम किया है वही पूरा भग्यवान् हो गया सो यह काम पहले तो औरके पास था अब तू लिया चाहता है सो तुझको मिलना मुश्किल है जो दूसरा इसको लेनेको कहता है उसका तो दिल खुल रहा है और तेरी अबतक पैसा लगाकर पैसा कमानेकी हिम्मत पडती नहीं सो तू ९ तोलाकी शाकंभरी दुर्गाकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर किसी नेक ब्राह्मणद्वारा एकादशाक्षर मन्त्रसे ११ दिन पूजन करवा और बलिदान करवा और वह मूर्ति उसी ब्राह्मणको दे यह काम बरजरूर तेरे हाथ आवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२००॥ हुक्म शकल ⚏ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कोई राज्यका किया ऐसा काम है कि जिसमें एक दफे तो रुपैये लग जाते हैं और पीछे बहुत पैदा होती है सो यह काम पहले तेरे ही पास था परन्तु तेरा रोजगार व्या-पार देखके और मनुष्य निहायत दिल चलाता है उसने दिलमें यह करली है कि रुपये चाहे इससे ज्यादे लग जावें परन्तु यह कार छोडना

नहीं सो तू शत दुर्गाका अनुष्ठान करा तेरा शत्रु दफे होगा और यह काम तेरे हाथ आवेगा रुपैया भी ज्यादे न लगेगा सन्देह मतकर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मालके बदलेका है तू पूछता है कि तेरा माल भूलमें बदला गया सो तेरा माल तो खरा था और उसका माल नाकिश था सो उसका माल तेरे पास आगया और तेरा माल उसके पास चला गया सो तेरे पास नाकिश आया और उसके पास अच्छा आया अब तैने राज्यमें अर्ज किया है कि मेरा अच्छा माल तो औरके पास चला गया और मेरे पास किसीका नाकिश हाथ लगा है सो तू पूछता है कि अच्छा माल मेरे हाथ आवेगा या नहीं" सो तू सन्देह मत कर श्रीदुर्गाका आराधन करवा तेरे मालकी रकम आजायगी और उसके मालकी उसको तेरे पाससे दिलाई जायगी सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०२ ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रत् खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल माल बदले जानेके झगडेका है तू पूछता है कि मेरा माल तो नाकिश था और अब मेरे पास किसीका अच्छा माल आया है सो यह माल मुझे पचेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मालकी टोह निहायत हो रही है और तू इसको छिपा मत छिपानेसे तू अब चोर हो जावेगा सो तू इसको जाहिर कर जाहिर करनेमें तेरी इज्जत बढेगी और राज्यमें मुरातवा बढेगा और जो तेरा दिल डूब ही चुका है तो गुप्तेश्वरी दुर्गाकी सुवर्णकी मूर्ति जितना फायदा इसमें हुआ है उसको १० वें हिस्सेकी बनवा और नेक ब्राह्मणको दे उससे कह दे कि ११ दिन इसका पूजन कर और उसको दक्षिणा भी दे सन्देह मतकर इसके करनेसे तू बरी हो जायगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नुस्रत् दाखिल बृहस्पातकी है हुक्म

फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जहाजके झगडेका है" तू कहता है कि जहाज मेरी है मेरा धन बहुत लगा है और वे नटते हैं सो विष्णुसहस्रनामके पाठोंका अनुष्ठान करवा इस झगडेको तू ही जीतेगा और तेरा कुछ रुपया तो लगेगा परन्तु तेरा शत्रु दफे होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ २०४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिजकेतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जहाजके झगडेका है तू पूछता है कि पहले तो डूबते मालके दाम भरे फिर किसीके पुण्यसे न डूबा तो अब बेईमानगी करता है कि मैंने तो माल बेचा नहीं है और राज्यमें झगडा करता है " सो तू श्रीजलेश्वरीका अनुष्ठान नेक ब्राह्मणसे करवा और हाथ जोडकर विनती कर इस प्रकारसे सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गोदके लडकेका है सो पूछता है कि पहले तो मेरे लडके को हमारे कुलमें गोद लिया चाहते थे परन्तु कुछ वर्गप्रीति नहीं मिली अब हमारे लडकेको गोद रक्खेगा या नहीं " सो अव्वल तो तेरा लडका ही नालायक है और कुसंगी भी है और दूसरे जो गोद लेता है उसका स्वभाव जल्लाद है सो इसकी और तेरे लडकेकी नामराशी मिलती नहीं दीखती सो तू अपने लडकेके हाथसे सङ्गमेश्वर महादेवके मन्त्रका जप करवा और तू नम्र होकर कह कि हे भाई ! यह लडका तेरा ही है सो बरजरूर लडकेको रखलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्व ! तेरा सवाल बीमारीका है कि एक मनुष्यको बीमारी है सो इसका क्या दोष है और कब अच्छा होगा " सो इसके बीमारी ज्यादा है कालके मुखमें आ रहा है इसको अव्वल तो क्षुधा ही नहीं लगती और कुछ दिल करै तो खाया नहीं जाता है और कुछ खा ले

तो हजम नहीं होता और अब कई दिनोंसे निहायत तकलीफ है सो
अब बीत लिया है जब पूछता है सो तुम्हारे पितृकोप है सो तुम
जानते हो सो तुम पितरोंका ध्यान करो और पितरोंकी देई गौ
छोडो और पितृसंहिताका पाठ कराओ और पितरोंके वास्ते गाय-
त्रीका जप कराओ और पितरोंके वास्ते विष्णुसहस्रनामका पाठ
कराओ पितृ देवता प्रसन्न होयँगे,नहीं तो पुण्य तो परलोकमें भी सहा-
यक है फिकर मत कर पितरोंका आराधन रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड
॥ २०७ ॥ हुक्मी शकल ⠿ इज्जतमा सावित चन्द्रमाकी है हुक्म
फरमाती है "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तापकी बीमारीका है सो
उस वक्त शख्सके ताप चढता है उस वक्त सबको घबरा देता है शरी-
रमें फूटनी ज्यादा होती है और उसके शरीरमें इतना बोझा मालूम
देता है कि कभी कपडा सुहाता है कभी नहीं सुहाता और भूख नहीं
लगती और जो कुछ खाले तो उदरमें धरा रहे और छर्दि कभी र
कर देता है और निहायत तकलीफ रहती है सो यह पहले जन्ममें
हजाम जाति था और बालकोंको बहुत डराया करता था सो उस
पापसे इसको यह तकलीफ है सो जितनी इसकी ताकत हो उतना
नगदी रुपया नेक ब्राह्मणोंको दे और ब्राह्मणोंके लडकोंको जिमाये
इसने पहले जन्ममें ब्राह्मणोंकी टहल बहुत की थी उसके फलमें इसके
पास धन है और द्विज जाति पाई है सो यह कर इसका बुखार दूर
होवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०८ ॥ हुक्मी शकल ⋮ तरीख मुन-
कलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स !
तेरा सवाल किसीके बीमारीका है सो तापकी बीमारी है इसको विष-
मज्वर आवते बहुत दिन हुए ताप इसके हाडोंमें फँस गया और मन्द
ज्वर रहता है और शरीरसे निहायत हार रहा है सो इसको कोई ग्रह
माफिक है या कोई दोष है " सो हे पूछनेवाले शख्स ! उसके पहले
जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें उत्तर देशमें कायस्थ था क्रोधी

ज्यादा था और राजाका अमात्य था सो इसने बेइन्साफ किया यवनोंकी कुसंगत करके ब्राह्मणोंपर बहुत जुल्म करता था और उनके दिलोंको बहुत दिक किया करता था सो उनके शापसे यह विषमज्वर आता है और इसने तीन गोदान किये थे उनके फलसे यह द्विज और धनवान् हुआ है सो ताप निवारणेश्वरीके मन्त्रके जपका सवा लक्षका संकल्प कर और नेक ब्राह्मणोंको नगदी दे और उनके पग पकड तेरा विषमज्वर दूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २०९ ॥ हुकमी शकल ☷ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो बीमारी वायुकी है सो शरीर जकडा रहता है और किसी अङ्गमें पीडा ज्यादा होती है अन्न भावता नहीं रूह कम है सो तू यह पूछता है कि इसको ग्रह माफिक है या कोई दोष है" सो इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें ब्राह्मण था सो इसने वेदशास्त्र अच्छा पढा परन्तु यह लडकोंको पढाया करता था जो लडका इसके घरका कार्य नहीं करता था उसको विना गुनाह किसी वक्त पीछेको हाथ बांधके गेर देता था सो उस पापसे उसको यह बीमारी है और वेदके पढनेसे इसने द्विजजाति और धन पाया है सो नगदी नेक ब्राह्मणोंको दे और ब्राह्मणोंके लडकोंको भोजन करवा अच्छा होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१० ॥ हुक्मीशकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो तेरे वायुकी बीमारी है और तेरे शरीरमें आतश भी है तेरे शिरमें दर्द होता है और पैरोंमें फूटनी रहती और कमरमें दर्द रहता है और सदैव तुझको कोई न कोई तकलीफ रहती है सो तेरे पहले जन्मका अजाव है पहले जन्ममें तैंने बहुत पाप किये हैं एक तो कुत्तेका बच्चा मारा था जिससे तेरे शिरमें दर्द है और एक मच्छी मारी थी जिससे कटी दर्द है और तैंने ब्राह्मणोंका मन दुखाया था इससे तेरा मन दुःखित होता

हैं परन्तु कुछ तैने तीर्थमें प्रायश्चित्त करवाया और पुण्य भी करता है जिससे तुझको फायदा रहता है कुत्ते और मच्छीकी सुवर्णको मूर्ति १२ पलकी दोनों बनवा तीर्थमें दान विधान करके नेक ब्राह्मणको दे और गायत्रीके पुरश्चरण करवा और दक्षिणा उत्तम दे और तैने एक ब्राह्मणके वास्ते टट्टी बंधवाय दी थी उस पुण्यके फलसे यह धन मिला है यह तजवीज कर तुझको आराम होवेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २११ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पित्तकी बीमारीका है तेरे शरीरकी तासीर पित्तकी है ग्रीष्म ऋतुमें क्षुधा नहीं लगती जलमें निहायत दिल रहता है और किसी वक्त खून भी आता है और मुखमें छाले पड जाते हैं" सो तेरे पित्तका जोर ज्यादा है तू पूछता है कि मुझको किस दोषसे बीमारी है और कब अच्छी होगी सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिममें शूद्र था और तेरे गोधन बहुत था सो उसकी भूख या प्यासकी खबर न लेने पाया धूपमें तेरा गोधन बहुत तकलीफ पाया करता था सो उसके शापसे तेरे शरीरमें आतश ज्यादा है सो तू गौवोंके वास्ते ग्रीष्मऋतुमें जहां जलका तोडा हो तहां जलकी प्रपा दे अच्छा होवेगा और उसी जन्ममें तैने अतिथियोंको टुकडा दिया था सो उसके फलसे तुझको यह धन मिला है सो तू उक्त प्रपा आदिका प्रबन्ध यह कर तेरी बीमारी दूर होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" जलकी बीमारी है पहले तो इसको भूख मन्द हो गई फिर दस्त होगये और जब संग्रहणी हो गई तब शरीरमें निहायत नाताकत है सो तू इसके शरीरमें व्याधि दूर किया चाहता है तो एक तुलादान व्यतीपातके दिन करा और ब्राह्मणको सुवर्ण दिलवा

और इसको मङ्गल नाकिश है सो मंगलका दान करवा और मंगल गायत्रीका सवालक्ष जप करवा फिर दवा दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१३ ॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा हुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है " सो कफकी बीमारी है कफ बहुत आता है कुछ रक्त भी संग आता है और ताप है और पसलियोंमें दर्द है निहायत तकलीफ है सो यह पूछता है कि कई इलाज किये माफकत कोई भी न आया और भूख लगी नहीं इसको कब आराम होगा और किस दोषकी बीमारी है सो पूछनेवाले ! यह मनुष्य कालके मुखमें आ रहा है इस बीमारीमें कुछ चूक नहीं है परन्तु पहले जन्ममें यह मनुष्य जातिका धीवर था सो इसने लोभ करके एक बनियेका लडका मार दिया था आभूषण काढ लिये थे उस पापके फलसे इसको यह बीमारी हुई है और इसने भूखोंको टुकडा दिया था उस पुण्य फलसे इसके पास यह धन है सो इसके हाथसे एक सुवर्णकी मूर्ति ७ पलकी और पहरने माफिक कपडे जेवर मूर्ति समेत नेक ब्राह्मणको दे ईश्वरने चाहा तो अच्छा हो जायगा पाप ज्यादे है और महामृत्युञ्जयका जप सवालक्ष करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि कफकी बीमारी है सो कफने निहायत दिक कर रखा है, रात्रिमें चारपाईपर पडने नहीं देता सो तू यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा " हे पूछनेवाले इसको भूख भी नहीं लगती और यह घने दिनोंसे कालके मुखमें आ रहा है परन्तु इसके हाथसे रोकडी धन और अच्छे कपडे दान करा और महामृत्युञ्जयका जप करवा इसको आराम बरजरूर होवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१५ ॥ हुक्मी शकल ⚌ अङ्कीश दाखिल शनिग्रहकी है हुक्म फरमाती है

कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है
कि श्वास बहुत दिनोंका है परन्तु अब निहायत सता लिया दिन
और रात किसी वक्त भी सुख नहीं होता सो हे पूछनेवाले यह
बीमारी कुछ छोटी नहीं है यह इसके पहले जन्मका आजार है
पहले जन्ममें यह पश्चिमदेशमें क्षत्रिय था सो इसके हाथसे एक
ब्राह्मण मर गया था सो उस पापसे इसको श्वासकी बीमारी है और यह
बहुत ब्राह्मणोंकी आजीविका करवाता था उस पुण्यसे यह फिर द्विजन्मा
हुआ है सो तू तदबीर करके किसी तीर्थमें जाकर एक पुरश्चरण
गायत्रीका करवा और अब नेक ब्राह्मणोंको सुवर्ण दान दे अच्छा
होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २१६ ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा
सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स !
तेरा सवाल बीमारीका है " श्वासकी बीमारी है सो इसके पूर्वजन्मका
अजाब है यह पहले जन्ममें वैश्य था इसका लेना देना चांडालोंसे
था सो एक चांडालसे करजा नहीं दिया गया तब वह कहनेलगा कि
मैं चोरी करके धन लाऊंगा जो मुझसे ले लेवे यह कह कर उसने
एक डोकरीका धन चोरा लिया और वह धन लाकर इसको दे दिया
फिर उस डोकरीने लहुत ऊंचे ऊंचे श्वास मारे सो वह चांडाल तो
अब पूर्व देशमें कुष्ठी है और इसको यह श्वास है और इसने कुसम-
यमें गौओंके वास्ते फूस बहुत गिरवाया उससे द्विजन्मा हुआ है और
यह धन भी हुआ है सो तू अब किसी नेक ब्राह्मणको धन रोकड़ी दे
जिससे ब्राह्मणकी खूब तुष्टि हो जाय तब आराम होगा इति प्रश्न ॥
पिण्ड ॥ २१७ ॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज सावित चन्द्रमाकी है
हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल सूखनेकी बीमा-
रीका है दिनपर दिन सूखता जाता है सो तू यह पूछता है कि इसको
क्या बीमारी है " इसके पितृदोष है सुपने बहुत माफिक आते हैं
अग्नि लगी हुई दीखती है सो पितृपद्धतिसे शान्ति करावो और

पितृश्राद्ध करो आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥२१८॥ हुक्मी शकल ⠿ नुस्रतुलखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो सूखनेकी बीमारी है तू पूछता है कि इसको क्या बीमारी है और कितने दिन रहेगी सो इसके नाकिश दिन हैं नाकिश दिनोंमें आराम नहीं होगा और ईश्वरने तुझको धन बहुत दिया है सो गायत्रीका पुरश्चरण करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ २१९॥ हुकमी शकल ⠿ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फोडेकी बीमारीका है सो फोडे बहुत होते हैं सब दई देवताकी आराधना करी परन्तु कुछ आराम नहीं होता इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें दक्षिणमें शूद्र था खेती किया करता था इसके बैल शीले थे यह उनके आर लगाया करता था उस पापसे यह तकलीफमें है सो दोनों बैलोंकी सुवर्णकी मूर्ति बनवा कर और जितनी ताकत हो उतनी दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे तुझको बर-जरूर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२० ॥ हुकमी शकल ⠿ अतबेखारिज केतुकी हैं हुकम फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरे शरीरमें फोडे होते हैं और शान्त हो जाते हैं फिर होजाते हैं सो कब अच्छे होंगे और क्या दोष है यह पूछता है " और दई देवताकी आराधना सब करली परन्तु आराम नहीं हुआ इसको दिन नाकिश हैं और पित्तका जोर है सो अब संदेह मतकर सूर्य्यका आराधन करवा सन्देह मत कर आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ २२१ ॥ हुकमी शकल ⠿ नकी मुनकलीव मंगल देवताकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आतिशकी बीमारीका है तू पूछता है कि आतश अच्छी कब होगी और किस दोषसे है " तेरी इंद्रियपर दाग है सो बहुत तक-लीफ देता है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें

पश्चिम दिशामें यवन था धर्ममें तेरी ज्यादे नियत थी परन्तु एक समय तू कामदेवके वश हुआ कुँवारी वैश्यकन्यासे संग किया फिर उसने तुझको शाप दिया उसी शापका यह फल है। तू पुण्यके प्रभावसे द्विज हुआ है सो तू सुवर्णकी कन्या बनवाकर नेक ब्राह्मणसे २१ दिन उसका पूजन करवा और शापविमोचनीके मन्त्रका आराधन कराय पीछे इलाज कर आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आतिशकी बीमारीका है " लिङ्ग इंद्रियपर दाग है और शरीरमें भी दिखलाई देती है निहायत तकलीफ पा रहा है तैंने इलाज बहुत किया परन्तु दिनोंकी गरदिश करके आराम नहीं हुआ और ज्यादे हो जाती है तेरे पहले जन्मका अजाब है और इस जन्मका भी दोष है पहले जन्ममें वैश्य था तैंने सन्तानके वास्ते दो औरत विवाही थीं एक रूपवती और एक कुरूपा थी जो कुरुपा थी वह बहुत नेक थी और जो रूपवती थी वह चालाक थी सो उस कुरूपासे संग कभी भी नहीं किया अन्य स्त्रीसे संग किया इस पापसे यह फल पाया है सो तू ५ पल सुवर्णकी औरतकी मूर्ति कपडे पहिनने योग्य बनवा कर नेक ब्राह्मणको जेवर समेत दे और पश्चात् इलाज कर तेरी बीमारी दूर होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२३ ॥ हुक्मी शकल इज्जतमा ⁝ साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिरदर्दकी बीमारीका है " सो दर्द जब कभी होता है तब शिरको उकसने भी नहीं देता और मनमें निहायत तकलीफ रहती है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें उत्तरके पहाडमें श्रीगंगाजीके तीरपर ब्राह्मण जाति था अपने धर्ममें सावधान था और तैंने एक सोए कुत्तेके शिरमें लकडी मारी वह कुत्ता बहुत चिल्लाया और मर गया तुझको यह पाप ७ जन्म तक सतावेगा सो तू

५ तोला सुवर्णका कुत्ता बनवाय श्रीगङ्गाजीके तीरके ब्राह्मणको दे और कुत्तियोंको चपातियां खिला तेरे पास धन बहुत है पहलेका किया अब पाया अबका किया आगे पावेगा शिरदर्द जायगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" तेरे शिरमें दर्द रहता है तू यह पूछता है कि "यह बीमारी कब जायगी और किस दोषसे है" सो तेरे माथेमें घुकवा चलता है जब घुकवा चलता है उस वक्त तू यह जानता है कि यह जिंदगी कुछ नहीं है इससे तो मरना ही भला है सो तेरे पितृपीडा है तुम्हारे कुलमें कोई बे औलाद मरा है उसका धन तैंने लिया है वह धन जहां जायगा वहां ही सुखी नहीं रहने देगा और पितरोंके वास्ते तुम्हारे कुलके जनने तीर्थश्राद्ध किया भी परन्तु उसका श्राद्ध ठीक नहीं हुआ एक तो वह कृपण ज्यादे था और उसको कोई निंदित बीमारी थी सो अब धन लगाके तीर्थ श्राद्ध कर बीमारी दूर होवेगी इति प्रश्न ॥२२५॥ हुक्मी शकल ⚌ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है" तेरे पेटमें दर्दकी बीमारी है सो दर्द निहायत है किसी वक्त चैन नहीं होता दिन राति नींद नहीं आती और बीमारी निहायत है सो इसने गरिष्ठ और बादी भोजन किया है जो दवाई दी कोई भी काम नहीं आई सो इसके दिन निहायत नाकिश हैं जन्मपत्रकी प्रत्यन्तरदशासे और गोचरग्रह भी माफिक है सो ग्रहोंका दान और ग्रहोंका जप इसी वक्त ताकत माफिक करवा और सवालक्ष महामृत्युंजयका जपका संकल्प ले आराम बरजरूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२६ ॥ हुक्मीशकल कबजुलदाखिल ⚍ सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" पेटकी बीमारी है तुझको यह बीमारी ज्यादे दिनोंसे है कभी तो कम होजाती है और कभी ज्यादे ज्यादे

और कुटुंबमें भी किसीके कुछ किसीके कुछ दुःख रहता ही है सुख नहीं रहता सो तुम्हारे कुलमें पितृदोष है सो एक तो कुलमें अब मेल नहीं दूसरे मनुष्योंके मन फटे रहते हैं और विना मतलब कलह हो जाता है सो तुम पित्रीश्वरीकी आराधना रखो पितरोंकी गायत्रीका सवालक्ष जप कराओ और हाथ जोडके विनती करो तुमको सुख बरजरूर होगा सन्देह मत करो इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२७ ॥ हुकमी शकल ⚏ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरे चोट लग गई है सो तू यह पूछता है कि यह चोट कब अच्छी होगी और किस दोषसे लगी है" सो तेरे जन्मपत्रमें ग्रह माफिक हैं ग्रहोंके दान करवा तेरे दिन नाकिश हैं और ग्रहोंका जप करवा यह चोट अच्छी होनेवाली है सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२८ ॥ हुकमीशकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोटकी बीमारीका है तू पूछता है कि यह चोट बहुत दिनोंकी है कब अच्छी होगी और किस दोषसे लगी है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! पहले जन्ममें तू शूद्र था पूर्व देशमें एक गऊ इसके घरमें भूखी आपडी इसने क्रोधमें आकर उसको लकडी मारी और वह गऊ चक्कर खाकर गिर पडी फिर पीछे उठके चली गई सो उस पापसे इसके यह चोट लगी है इससे निहायत भूखी गायको अनारदाना खिला और टहल कर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २२९ ॥ हुकमी शकल ⚏ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा फूलेकी बीमारीका प्रश्न है तेरे नेत्र दूखने आये थे सो उनमें परछाई पडी है तैंने बहुत इलाज किये परन्तु यह फूला गया नहीं सो तेरे दिन नाकिश हैं तेरे जन्मपत्रमें सूर्य्यदेवता बिगड रहे हैं तू सूर्य्यका आराधन करा तेरे फूला अच्छा होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३० ॥ हुकमी शकल ⚏ उकला मुनकलीब

शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है। तेरे नेत्रोंमें फूला पड रहा है सो बहुत तजबीज की परन्तु यह फूला दूर न हुआ सो पूछता है कि यह कटेगा या नहीं और कटेगा सो किससे कटेगा और किसके दोषका है" सो हे पूछने वाले शख्स ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिम देशमें क्षत्रिय था और बालकोंके नेत्रोंमें अंजन किया करता था और ईश्वरका भजन बहुत किया करता था सो एक ब्राह्मणके लडकेके नेत्रमें तेरे हाथसे नख लग गया था उससे उसको नाखूना होगया उस पापसे तेरी आंखमें यह फूला है सो तू ३ पल सुवर्णका एक ब्राह्मणका लडका बनवा कर उसके चांदीके नेत्र बनवा फिर किसी नेक ब्राह्मणसे मासभर पूजन करवाके फिर वह मूर्ति दक्षिणा और वस्त्र आभूषण समेत उसी ब्राह्मणको दे तुझको बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३१ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है सो उसको दस्तोंकी बीमारी है पेटमें गाढ है और आंव भी आता है परन्तु खुलके नहीं आता कई दवा की परंतु अबतक आराम नहीं हुआ सो कब होगा और क्या दोष है हे पूछ-नेवाले ! तुझको मंगल नाकिश है सो जन्मपत्र दिखा लेना यथा-शक्ति मंगलका दान और जप करवा तुझको आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३२ ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है दस्तोंकी बीमारी ज्यादा हैं कई इलाज किये परन्तु आराम नहीं हुआ अब आराम कब होगा यह पूछता है" सो इनके दिन नाकिश हैं यह कालके मुखमें आरहा है इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें पापमोक्ष नदीके तीरमें शूद्र था नित्य नदीपर जाकर भजन किया करता था औ अपने

माता पिताकी टहल थोडी किया करता था सो इसके पिताको दस्तोंकी बीमारी हो गई शरीरमें ताकत नहीं रही तब भी भजनको मुख्य धर्म मान कर नित्य भजन करने चला जाता था वहांसे आकर पीछे अपने पिताको नहलाता धुलाता था फिर उसका शरीर पूरा हो गया वही पाप है उस पापसे इसके दस्त हुए हैं सो पितरोंके वास्ते एक गायत्री पुरश्चरणका संकल्प कर नेक ब्राह्मणोंसे करवा और नगदी दान दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३३ ॥ हुकमी शकल बयाज साबित ⚍ चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मूत्रकृच्छ्रकी बीमारीका है कि यह बीमारी कब अच्छी होगी और किस दोषसे है" सो इसको दिल नाकिश हैं ३ ग्रह माफिक हैं उन ग्रहोंका दान कर और ताकत भर जप पाठ करवा पीछे औषधि ले आराम बरजरूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३४ ॥ हुकमी शकल ⚍ नुस्नुत्खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है " तुझे मूत्रकृच्छ्र ज्यादा दिनोंसे है उससे निहायत तकलीफ पा रहा है सो इसके पूर्वजन्मका अजाब है यह पूर्वजन्ममें पश्चिम दिशामें कोलजातिका था सो इसने बैल बाधिया किये हैं परन्तु अपने घर आये हुएको भूखा नहीं जाने देता था सो अन्नदानसे इसके यह धन है और गोवीर्य्य हननके पापसे यह बीमार है सो इसके हाथसे इसी वक्त बैलोंका संकल्प और गोवीर्य्यदा भगवतीके मन्त्रके सवालक्ष जपका संकल्प दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे तथा रात्रीमें बलिदानकर और चिकित्सा करवा इसको बरजरूर आराम होगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३५॥ हुकमी शकल ⚍ नुस्नुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है " कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है मन्दाग्निकी बीमारी है किसी भोजनकी रुचि नहीं होती और

कभी हुई भी तो कंठके नीचे नहीं उतरता और जो किसी तरह भोजन कर भी ले तो हजम नहीं होता और जो शरीरमें ताकत न हुई तो यह बीमारी कैसे जावेगी और क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन नाकिश हैं और इसके ग्रह भी सामान्य हैं जल भी इसको तकलीफ देता है सो ग्रहोंका दान और सूर्य्यगायत्रीका अनुष्ठान करवा पीछे औषधि ले आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३६ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तुझको मंदाग्नि है भूख नहीं लगती और जो कुछ थोडा भी घना खाया तो हजम नहीं होता शरीरकी भी ताकत घटती जाती है" हे पूछने वाले ! तुझको किसी वस्तुकी रुहत (रुचि) भी कम है सो तेरे पहेले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें गंगा यमुनाके बीचमें वैश्यजाति था ईश्वरका भजन खूब करता था परन्तु तेरे माता पिता वृद्ध थे सो अच्छा भोजन तो तू आप करता और बिगडा रूखा सूखा माता पिताको देता था सो उस पापसे तुझको मंदाग्नि है भूख नहीं लगती और भजनके प्रतापसे यह धन तुझको मिला है सो तू ब्रह्मभोज यथेच्छ नित्य करवा और ब्राह्मणोंके पैर धोकर आचमन ले उनके जीमने पीछे जीम सो ब्राह्मण नित्य १०० या ५० या २५ जिमा और अग्नीश्वरीके मन्त्रका एक पुरश्चरण करवा तुझको भूख बहुत लगेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३७ ॥ हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीब मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारी का है धातुक्षीणकी बीमारी है तेरा वीर्य्य पतला पड रहा है जब तू पेसाब या पाखाने जाता है तब वीर्य्य स्खलित हो जाता है बहुत इलाज किये कुछ फायदा नहीं हुआ जब औषधि हो तब तो बन्द हो जाय और फिर वैसा ही हो जाता है तू पूछता है कि मेरी बीमारी जायगी या नहीं" सो तेरे

जन्मपत्रमें पराक्रम भवन बिगड रहा हैं उसका दान और जप ताकत भर करवाके औषधि ले आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि धातुक्षीणकी बीमारी ज्यादे दिनोंसे है बहुत इलाज किये परन्तु एक वेर तो कुछ फायदा दीखा कि फिर वैसी ही हो जाती हैं धातु निहायत पतली हो गई" सो हे पूछने वाले ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें रहने वाला क्षत्रिय था तेरी औरत पातिव्रत धर्ममें तत्पर थी किसी कालमें तेरी और तेरी औरतकी बिगड गई थी फिर उसने तेरी निहायत खातिर की परन्तु तू फिर उससे नहीं बोला और तैने इसके द्वेषसे वेश्या रख ली सो उस पापके फलसे तू निर्वीर्य्य है और तेरे यहां सदावर्त था उस पुण्यसे तेरे पास यह धन है सो तू ११ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवा और उसको सब जेवर वस्त्र पहरा कर उसका पूजन कर और पीछे अपने हृदयसे लगा कर नेक ब्राह्मणको दे और इलाज कर बरजरूर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३९॥ हुकुमी शकल ⁝ इज्जतमा सावित शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है कानकी बीमारी है निहायत तकलीफ देती है और सोजा भी नहीं है फकत सूखी चीस चलती है और कुछ औषधि डाली तब तो आराम हो जाता है कुछ देर पीछे फिर होजाती है सो निहायत क्लेश हो रहा है यह कब आराम होगा और किस दोषसे है" सो हे पूछने वाले! तेरे जन्म पत्रमें दशा नाकिश है सो अपनी शक्तिके अनुसार तू गरीब भूखे ब्राह्मणसे शिवार्चन करा तुझको बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २४० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख सुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका

है सो बीमारी कानके दर्दकी है तू पूछता है कि आराम कब होगा" सो इसके कानमें सोजा भी है और पीडा निहायत है और दिन राति चैन नहीं होता सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें चाण्डाल था तैने एक गौके बछडेके कानमें बबूलका कांटा चुभा दिया फिर निकाला नहीं इससे उस बछडेको बहुत तकलीफ हुई उसी पापसे तेरे कानमें यह दर्द है सो तू ११ पल चांदीका गौका बच्छा बनवा कर उसका षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मणको दे तुझको आराम होगा और तैने पहले जन्ममें माता पिताकी टहल बहुत की थी उससे यह धन मिला है फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २४१॥ हुक्मी शकल लहियान ☰ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल बीमारीका है तुझको सुजा-ककी बीमारी है सो पेशाब करते समय दर्द होता है और कुछ राधि भी आती है सो तेरे दिन नाकिश हैं अनेक इलाज किये परन्तु आराम नहीं हुआ अब पूछता है कि आराम होगा या नहीं सो तू ४१ दिन नेक ब्राह्मणसे शिवलिङ्गका पूजन करा और शिवाभिषेक करवा पीछे दवा ले आराम बरजरूर होजावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २४२ ॥ हुक्मी शकल ☱ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सुजाककी बीमारी है पेशाब करनेमें निहायत तक-लीफ पाता है और राधि (पीव) भी बहुत पडती है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पश्चिम दिशामें ब्राह्मण था जप दानादि बहुत करता था परन्तु तुझको एक कामका बहुत व्यसन था किसी जाति की स्त्री मिले तू उसीसे संग करता था उसी पापसे तुझको यह सुजाककी बीमारी हुई है और जप दानके फलसे तुझको यह धन इमारत (जायदात) मिली है सो तू प्रायश्चित्त कर नहीं

तो जन्म जन्मान्तरतक यह बीमारी होगी सो तू ब्राह्मणकी १०० कन्याओंका विवाह करा और ९ कन्या सुवर्णकी दो २ पलकी बनवाकर वस्त्र जेवर समेत षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मणोंको दे सब तकलीफ दूर होगी अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२४३॥ हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो उसके भगंदरकी बीमारी है सो इसको निहायत तकलीफ देती है इसके गुदाके समीप छिद्र है उसमें मल मूत्र भी आता है इससे बहुत ज्यादे तकलीफ है इसके पहले जन्म का अजाब है सो यह उत्तरदेशमें शूद्र था इसने अन्नका दान और द्विजपूजन बहुत किया था परन्तु इसको एक व्यसन था कि लडकोंसे संग (मैथुन) किया करता था उस पापके फलसे यह बीमारी है सो ब्राह्मणोंके लडकोंका पूजन कर और एक वर्षतक ११ लडके जिमाय और २ पल सुवर्णके ९ लडके बनवा कर और पूजन करके नेक ब्राह्मणोंको दे और एक गायत्रीका पुरश्चरण करवा बीमारी दूर होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२४४॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो बवासीरकी बीमारी है जिससे तुझको निहायत तकलीफ है तुझे इस बवासीरने निहायत थका दिया है और भूख भी तुझको नहीं लगती है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें ईश्वरका भक्त था परन्तु एक व्यसन था कि लडकोंसे संग किया करता था सो ईश्वर भक्तिसे तेरे धन है और दुर्व्यसनसे तेरे यह बवासीरकी बीमारी है सो तू ५ लडके नित्य पूजन करके १ वर्ष तक जिमा और दक्षिणासमेत एक गायत्रीका पुरश्चरण नेक ब्राह्मणको संकल्प दे बरजरूर तुझको आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २४५ ॥ हुक्मी शकल ⚎ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि

"पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तुझको कुष्ठकी बीमारी है उससे इतनी तकलीफ नहीं कि जितनी तू मान रहा है और अपने को धिक्कारता है और इलाज भी बहुत किया परन्तु माफिक कोई भी नहीं आया सो तेरे पहले जन्मका अजाव है तू पहले जन्ममें उत्तर दिशाके पहाडमें ब्राह्मण था तेरी दो औरत थीं सो एक औरतविषे झूठा परसंग जान कर तैने उसको मार डाला वही पाप है अब २१तोला सुवर्णकी मूर्त्ति बनवाके पूजन कर और ५१ ब्राह्मणोंको नित्य २९ दिन तक भोजन करवा और गायत्रीका एक पुरश्चरण तीर्थमें करवा तुझको आराम होगा सन्देह मत कर यह करे विना श्वित्रकुष्ठ न जायगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ २४६ ॥ हुक्मी शकल ⸪ उकला मुनकलीव शनिकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि बीमारी कुष्ठकी है निहायत तकलीफ है सूरत विगड गई है अनेक इलाज किये परन्तु एक भी काम न आया सो यह बीमारी जावेगी या नहीं और कौन दोषसे है" सो हे पूछनेवाले! इसके पहले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें दक्षिणमें धनवान् वैश्य था और शुष्क वेदान्ती था। रंगे कपडेवालोंको खूब मानता था और ब्राह्मणोंका बहुत अनादर किया करता था उस पापसे यह बीमारी है जबतक इसका प्रायश्चित्त न किया जायगा तब तक (जन्मजन्मान्तरतक) यही बीमारी होगी सो तू १०० ब्राह्मणोंको नित्य भोजन दे और उनके चरण धोकर पी तथा श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको पुरश्चरणका संकल्प दक्षिणा समेत दे और नगदी दे आराम हो जायगा फिकर मत कर तैने पहले जन्ममें तीर्थमें एक ब्राह्मणको दान दिया था उसका फल यह धन है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २४७ ॥ हुक्मी शकल ⸪ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है कि उसको पहले बुखार रहा था अब हाथपैरोंमें शोजा है उसको आराम कब होगा" हे

पूछने वाले! यह मनुष्य कालके मुखमें आरहा है इसके दिन निहायत नाकिश हैं सो इसके हाथसे ११ मासे सुवर्ण छायापात्रमें रखके योग्य ब्राह्मणको दे और महामृत्युंजयका जप करवा आराम होगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ २४८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो दस्तोंमें शोफ आरहा है यह कालके मुखमें आरहा है तू इसके हाथसे जितनी तेरी ताकत हो उतनी गौओंको दक्षिणा समेत ब्राह्मणको दे इसको आराम होगा इस लोकमें और परलोकमें पुण्य सहाय है इति प्रश्न ॥ इति षष्ठस्थानं समाप्तम् ॥ अथ पिण्ड ॥ २४९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि इसके विवाहकी तजवीज नहीं लगी मनुष्य आता है और देख जाता है फिर नहीं आता इसकी सगाईमें क्या ढील है" पूछनेवाले ! इसके जन्मपत्रमें सप्तम भवनमें ग्रह अच्छे नहीं हैं उनकी शान्ति करवा इसकी सगाई बरजरूर होगी फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२५०॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबन्धका है तू पूछता है कि एक बडी जगह कोई मनुष्य इसकी सगाईके वास्ते कह गया था सो आया नहीं तेरे दिलपर यह हैं कि इस जगह सगाई होजावे तो बहुत अच्छी हो परन्तु इसका सप्तम भवन जन्मपत्रमें बिगड रहा है उसकी शान्ति करवा धनवानसे इसका सम्बन्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तेरी औरत मर गई है तू फिर विवाहकी बात पूछता है" सो तेरा फिर विवाह होगा तेरी औरत कबूल सूरत और बहुत होशियार अच्छे घरकी आवेगी कु-

तेरी दौलत भी न लगेगी परन्तु तेरी औरत जीनी मुशकिल है क्यों कि तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें क्षत्रिय था धर्म बहुत करता था परन्तु तुझको विवेक नहीं था तेरी तीन औरत थीं तैने दोनों को वियोग दे रखा था सो उन्होंने बहुत विनती की परन्तु तैने वे ग्रहण न कीं सो उनका शाप है तू दो सुवर्णकी मूर्ति बनवा और उनका पूजन करवाकर नेक ब्राह्मणको दे और जन्मपत्रमें जो सप्तम भवन बिगड रहा है उसकी शान्ति करा स्त्रीका सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतु की है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि औरत जिन्दी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी कई औरत मर चुकीं तेरी औरत जीती ही नहीं तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें ब्राह्मण था और तू ईश्वर के आराधनमें बहुत तत्पर रहता था सो तैने विवाह तो करवा लिया पर औरतको ऋतुदान नहीं दिया तब उस औरतने तुझको शाप दे दिया इस शापसे औरत का सुख नहीं है ईश्वरके आराधनसे तुझको यह दौलत मिली है सो तू प्रायश्चित्त कर सुवर्णकी एक सावित्रीकी मूर्ति २१ पल की किसी नेक ब्राह्मणको दे और सावित्रीका एक पुरश्चरण कर सन्तानका भी सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५३ ॥ हुक्मी शकल ⁞ नकी मुनकलीव मंगल देवता की है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तेरी औरत मर गई है तू पूछता है कि कई जगहोंसे संबन्ध की बात है कौनसी जगह होगा" सो तू संदेह मत कर जिस जगहका सम्बन्ध चाहता है उसी जगहका संबन्ध होगा सो यहां से दक्षिण पूर्वके बीचमें दो योजनपर कन्या बडी कबूल सूरत और बहुत होश्यार है उससे तेरा संबन्ध होगा फिकर मत कर जन्मपत्रमें तेरा सप्तम भवन बिगड रहा है सो उसकी शांति करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥

॥ २५४ ॥ हुक्मी शकल ⠇ अतबेदाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाह का है तू पूछता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं" सो तेरा विवाह नहीं होगा क्योंकि कोई बातकी तकलीफ भी नहीं है और अवस्था अभी थोडी है और धन बहुत है परन्तु तुझको पहले जन्मका अजाब है पहले जन्ममें तू दक्षिण में ब्राह्मण था और सुग्रीवका परम भक्त था पर निर्धन था सो धनके वास्ते सुग्रीवकी बहुत भक्ति की परन्तु अपनी औरत को तैंने ऋतुदान नहीं दिया उसने तुझको शाप दे दिया कि तू भक्तिहीमें रहेगा तुझको औरत का सुख नहीं होगा सो अब तुझको स्वप्न अवस्थामें सुग्रीवके दर्शन होते हैं और जो तू औरत का सुख चाहता है तो ११ पल सोनेकी सावित्रीकी मूर्ति बनवाकर शुक्लाष्टमीके दिन पूजन करके नेक ब्राह्मणको दे और गायत्री का एक पुरश्चरण करवा तेरे शापकी विमुक्ति होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५५ ॥ हुक्मी शकल ⠇ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू अपने चाचाका विवाह किया चाहता है और पूछता है कि इसका संबंध कब होगा" सो तू संदेह मत कर इसका सम्बंध होनेवाला है परन्तु इसके जन्मपत्रमें सप्तम भवन बिगड रहा है सो तू सप्तम भवनके दुष्टग्रहोंकी शांति कर इसका विवाह बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५६ ॥ हुक्मी शकल ⠇ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सम्बन्धीके सम्बन्धका है तू पूछता है कि संबन्धीका विवाह कब होगा" सो तू फिकर मत कर उसका विवाह होने वाला है अब उसके दिन बहुत दुरुस्त हैं विवाह अब होने वाला है सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५७ ॥ हुक्मी शकल ⠇ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा

सवाल लडके के विवाहका है सो तू पूछता है कि लडकेका विवाह कब होगा" सो इस लडके का विवाहका उद्योग होते बहुत दिन हुए परन्तु अबतक हुआ नहीं क्योंकि अबतक लडके का ग्रह संबंध नहीं आया था सो अब अच्छे दिन हैं और ग्रह संबंध भी आया है सो अब इसका विवाह हुआ चाहता है कुछ संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २५८ ॥ हुक्मी शकल ∴ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लडकाके विवाहका है तू पूछता है कि बहुत दिनोंमें संबंध हुआ था और अब विवाहमें बहुत दिन लग गये अब विवाह कब होगा" हे भाई पूछने वाले ! अब तक इसका भार्य्याग्रह योग नहीं आया है अब २ मास और १२ दिन पश्चात् भार्य्याग्रह योग आवेगा और विवाह जल्दी ही होगा फिकर मत कर अल्लाताला जलदी ही करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२५९॥ हुक्मी शकल ∴ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहनके विवाहका है तू पूछता है कि इसका संबंध कब होगा और कब विवाह होगा" सो हे पूछने वाले ! तेरी बहनके विकृत अंग हैं शरीर में कुछ विकार है सो तू अच्छा घर और वर देखता है और अच्छा घर वर वाला व्यंग वालीको नहीं विवाहेगा सो तू मंगलेश्वरी के मन्त्रका आराधन करवा और अबतक इसके पतिग्रह योग नहीं था अब आरहा है सो अब इसका संबंध भी होगा और विवाह भी होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२६०॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि मेरी बहनका विवाह कब होगा मुझको रात दिन नींद नहीं आती है बहुत फिकर रहता है कि हमारे पिता आदिकोंने तो अच्छे ही विवाह किये हैं सो यह विवाह कब होगा" सो तू संदेह मत कर तुझको निहायत नाकिश दिन हैं नाकिश

दिनोंमें गुजरान कर अब ५ मास२१दिन और नामाफिक रहे हैं इन दिनों बाद अच्छे दिन आवेंगे और अच्छे दिनोंमें तुझको लाभ होगा और जैसी तेरी मुराद है वैसा ही तेरी बहनका विवाह होजावेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२६१॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीव शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल लडकीके विवाह का है सो तू पूछता है कि लडकीका संबंध कब होगा और विवाह कब होगा" सो हे पूछने वाले ! तेरी लडकीके शरीरमें कोई विकार है सो तजवीज अब तक नहीं लगी तेरी लडकीको अबतक पतिग्रह योग नहीं आया है अभी कुछ दिन और बाकी रहे हैं सो७मास५दिन बाद संबंध तथा विवाह जैसा घर और वर चाहता है वैसी ही जगह होजायगा फिकर मत कर कन्या किसीके घर पर नहीं रहती ईश्वरका आराधन कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २६२ ॥ हुक्मी शकल उकला ⁚ मुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लडकीके विवाहका हैं तू पूछता है कि लडकी समर्थ होगई है और बहुत ही तजबीज करता हूं किसी तजबीजसे विवाह हो हाथ निहायत सख्त है सो बडोंने तो विवाह बहुत अच्छे किये और अब मैं ऐसा मंद प्रारब्ध हुआ कि कुछ भी नहीं हो सकता" सो हे पूछने वाले ! तू संदेह मत कर बहुत नाकिश दिन गये और अब तुझको ११ मास २ दिन और नाकिश रहे हैं और तेरी कन्याको भी पतिग्रह योग नहीं आया था सो योग अब आया है फिकर मत कर विवाह अब होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके विवाहका हैं तू पूछता है कि इसके सम्बन्धके वास्ते मैंने बहुत तकलीफ उठाई परन्तु मेरा पुरुषार्थ कुछ भी न चला सो इसका संबन्ध होगा या नहीं और इसकी तकदीरमें

है या नहीं " हे पूछनेवाले ! इसकी तकदीरमें संबन्ध है परन्तु अब-तक भार्य्या ग्रह योग इसका आया नहीं अब ८ मास १५ दिन और बाकी हैं पीछे इसका संबन्ध जरूर होजावेगा और इसके जन्मपत्रमें सप्तम भवन बिगड रहा है उसकी शान्ति करवा और दुर्गाका संपुट पाठ अपनी ताकत माफिक करवा फिर इसका संबन्ध और विवाह होनेमें देर नहीं है अल्लाताला जल्दी ही करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ २६४ ॥ हुकमी शकल [— · — —] हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके विवाहका है तू पूछता है कि मेरे भाईका विवाह होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसका विवाह न होगा इसको औरतका सुख नहीं है इसी कारण इसकी बाल अवस्थामें औरत मरी है सो इसके पहिले जन्मका अजाब है यह पहले जन्ममें दक्षिणदिशामें किष्किंधा पुरीमें निर्धन ब्राह्मण था सो इसने धनके वास्ते सुग्रीवकी बहुत भक्तिकी सो इसने भक्ति और धनके लोभ करिके अपनी औरतको ऋतुदान नहीं दिया था उसने शाप दे दिया कि तू भक्ति और धनसे ही बडा हो स्त्रीका सुख न होगा सो इसको उस भक्तिके प्रतापसे धन तो बहुत मिला परन्तु औरतका सुख नहीं है और जो तू सुख किया चाहे तो २१ पलकी सावित्रीकी मूर्ति बनवाकर और अष्टमीके दिन षोडशोपचार पूजन करके नेक ब्राह्मण-को दे सावित्रीके पुरश्चरण करवा यह अजाब दूर होकर स्त्री सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २६५ ॥ हुक्मी शकल [— — · —] बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि पहले तो मेरा धन ले गया और अब नाटता है सो यह विवाह होगा या नाटेगा " यह मनुष्य तो साफ नट रहा है परन्तु इसके घरमें एक शख्स है वह नटने नहीं देता है परन्तु वह कबतक सहारा करेगा दो दिन पीछें नटैहीगा बेईमानको सबर भी नहीं होता सो यह परले सिरेका बेईमान है इसको जो

समझाता है उससे भी लडनेको तैयार होता है और अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू नाकिश दिनोंमें गुजरान कर पीछे वह काम बनेगा अब ७ मास ११ दिन और नाकिश रहे हैं सो पीछे अच्छे दिन आवेंगे सो तू पीपलमें इतवारके विना काले तिलोंसे युक्त पानी नित्य डाल और कुत्तोंको शनिके रोज तेल चुपडके चपातियां डाल तेरा काम बरजरूर होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २६६ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्नुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू पूछता है कि पहले तो उसने जेवर अपनी कन्याके चढवाया था कह कर अब नटता है अब विवाह होगा या नहीं " सो यह मनुष्य तुझसे दगा करता है क्योंकि एक मनुष्य तेरा है उसने तेरी शिकायत की है सो उसकी शिकायत सुननेसे दिल हट गया अब ठीक होना मुशकिल है सो तू शनिदेवताका आराधन कर और संगमेश्वरी काली- का मन्त्र सवालक्ष जपवा और रात्रिमें बलिदान दे संबन्ध होगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २६७ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्नुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्त्रीके सुखका है तू पूछता है कि मुझको स्त्रीका सुख होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तुझको स्त्रीका सुख कम है तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें दक्षिणमें धनवान वैश्य था तुझको आमदनी बहुत थी और दान भी वित्तसमान करता था परन्तु तेरी औरत पतिव्रता थी तू धनके लोभमें उसको ऋतुदान भी नहीं देता था सो ऋतुसे पीछे वह जिस दिन वस्त्र प्रक्षालन करके स्नानसे शुद्ध हो तेरी आशा करती थी तू लोभमें लगा रहता था ऋतुदान नहीं देता था सो वह उच्छ्वास मारके शय्यापर सो जाती थी सो कुछ दिन पीछे उसका शरीर बे औलाद पूरा हो गया जिस समयमें शरीर पूरा हुआ

उस समयमें भी तू उसके समीप नहीं गया सो उसने मरती समय यह शाप दिया कि तुझको जन्म जन्मान्तर तक औरतका सुख न होवे सो तुझको सुख होना मुशकिल है अब तू सुख चाहै तो इसका प्रायश्चित्त कर एक सुवर्णकी मूर्ति सावित्रीकी ५ पल की बन-वाके तांबेके कलशमें पंचरत्न और गंगाजल दूध सर्वौषधिसे पूर्ण कर रेशमी वस्त्रसे आसन बनवायके पूजन कर और ब्राह्मणोंसे करवा तथा अनुष्ठानकी रीतिसे गायत्रीका जप करवाकर उनको दक्षिणा दे तुझको सुख होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२६८॥ हुकमी शकल सावित ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके सुखका है तू पूछता है कि औरतका सुख है या नहीं मैं विवाह करवा चुका परन्तु औरत जीती नहीं और यदि औरत जीवे तब मेरे शरी-रमें बीमारी बनी रहती है यह क्या कारण है और मुझको औरतका सुख होगा या नहीं " हे पूछनेवाले ! तेरा सप्तमेश अष्टमभवनमें पडा है इससे स्त्री मरती है तेरी पहली औरत जिन्द (भूत) हो रही है उसके पास धन जेवर और कपडा बहुत था परन्तु उसने भोगा नहीं और तुमने उसका और्द्धदैहिक कर्म बहुत किया परन्तु उसका दिल अपनी चीज में रहा पीछे वस्त्र या जेवर जो उसको दिये वह भी उसको सुखदायक नहीं हुए क्योंकि जिस जिस ब्राह्मणको जो दिया उससे ब्राह्मण सन्तुष्ट नहीं हुआ इसीसे कुछ फल नहीं देता जैसा थोडा दिया हुआ भी संतोषी ब्राह्मणको फल देता है इसीसे तुम्हारी स्त्रीके मनकी संतुष्टि नहीं हुई सो तू किसी नेक ब्राह्मणके कि जिसको थोडेमें संतोष हो उसको अपनी औरतके वस्त्र जेवर और श्रद्धानुसार नगदी दे और उसके अंतःकरणसे यह कहा कि मैं तुष्ट हुआ और अपनी औरतके वास्ते गायत्री का आराधन करवा फिकर मत कर तुझको औरतका सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड

॥ २६९ ॥ हुक्मी शकल ∴ नकी मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्त्रीके कुलक्षणका है तू पूछता है कि मुझको अपनी स्त्रीके विषयमें कुछ संदेह है कि वह दूसरे मनुष्यसे बात करती है यह बात सच्च है या झूठ" हे पूछनेवाले ! तेरी औरत निहायत चालाक है और जिस मनुष्यका तुझको भ्रम है वह मनुष्य इससे अबतक खराब नहीं हुआ है क्यों कि अवसर नहीं लगा परन्तु दिल खुल गया है सो अब होनेवाला है और तू अपनी औरतको बरजेगा तो तेरी इज्जतकी गाहक होजायगी सो तू शत्रुविनाशिनीके मंत्रका जप जितनी तेरी ताकत हो करवा और अपने दहने पैरतलेकी मिट्टी और अपनी औरतके बाऐं पैरतलेकी मिट्टी शनिवारके रोज सुबेके वक्त लेकर जो कुआं छटता नहीं हो अर्थात् जिसकी मिट्टी नहीं निकलती हो ऐसे कुएमें गेर दे और अपने शत्रुके बाऐं पैरतलेकी मिट्टी लेकर भडभूजाके भाडमें गेर सो उससे दिल फटजायगा और तुझसे निहायत दिल मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७० ॥ हुक्मी शकल ∷ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछेनवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके विश्वासका है" सो तुझे औरतका यह विश्वास है कि मेरी औरत खराब है सो तेरी औरत चालाक है परन्तु खराब नहीं है चित्त तो चञ्चल है पर दूसरे पुरुषसे दिल नहीं लगाती है परन्तु तेरे दिलमें निहायत शक है सो तुझको पितृदोष है उसीसे तेरे दिलमें जच रही है सो तेरे कुटुंबमें एक मनुष्य बे औलाद मरा है उसका धन तुम्हारे कुटुंबमें ही रहा है सो वह तकलीफ देता है तुम्हारे कुटुंबमें सुख नहीं होने देता और जो किसीको कुछ सुख हो तो उसके मनमें उच्चाटन रहता है सो तेरी औरत खराब नहीं है यह पितृदोषसे तुझको इसमें शक जचती है सो पितरोंके वास्ते सकुटुंब श्रीमद्भागवत श्रवण करके सवालक्ष गायत्री का जप करवा और गयाजी जाकर पिण्ड दे तीर्थश्राद्ध करवा सब

कुटुंबकी समता रहेगी और तेरा और तेरी औरतका दिल साफ रहेगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ २७१ ॥ हुक्मी शकल ⠇ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके फिकर का है (गुप्तचिन्ता का है) सो पहले अपनी औरतमें तुझको कुछ अविश्वास था तेरे दिलमें यह निश्चित था कि यह औरत खराब है उसी संदेहसे तू यह पूछता है कि यह सन्तान मेरे वीर्य्यसे पैदा हुई है या नहीं" सो हे पूछने वाले ! तुझको अपनी औरतका वृथा अविश्वास था वह बहुत कुलीन है परन्तु जवान अवस्थामें उसको कुछ प्रमाद था परन्तु इतना प्रमाद नहीं था कि गर्भ औरका रहजावे सो तू फिकर मत कर यह तेरे वीर्य्यसे औरस पुत्र उत्पन्न हुआ है इसको संपूर्ण श्राद्धादिकों का अधिकार है तू कुछ फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकली चन्द्रमा देवता की है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तान का है सो गुप्त चिन्तवन करता है कि यह सन्तान मेरे शुक्र-से हुई है या और के" सो हे पूछनेवाले ! तू क्या नहीं जानता है कि जिस वक्त यह आशा तेरी औरत के रही उस वक्त तू अपनी औरत के पास भी नहीं था और हमलके रहनेमें तुम्हारा बडा कुयश हुआ था परन्तु यह सन्तान उज्ज्वल जातिसे हुई है और देव पितृ कार्य के योग्य नहीं है औरतका प्रायश्चित्त करवानेसे यह शुद्ध होजायगी सो तू इस औरतके हाथसे नेक ब्राह्मणको गायत्रीका एक पुरश्चरण का दक्षिणा समेत संकल्प दे और गंगाजलमें स्नान करवा और यव और गोमूत्र ३ दिन खिला शुद्ध होजायगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७३ ॥ हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पति की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कोई औरत घरबसानेके वास्ते लानेका है कि मेरे यहां कोई औरत आवेगी

या नहीं यह चिन्ता तेरे दिलमें बहुत आती है तुझको रात्रिमें नींद नहीं आती है तू यह विचारता है कि देखो कैसा घर बरबाद हुआ जाता है और जो कोई मिली भी तो ठिकानेकी नहीं मिली सो अब यह पूछता है कि ठिकानेकी कोई मिलेगी या नहीं" सो हे पूछने वाले ! अब तक तेरे दिन नाक़िश थे परन्तु अब भी ७ मास ११ दिन और नाक़िश हैं पीछे तेरे अच्छे दिन आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७४ ॥ हुक्मीशकल ⚍ कबजुलदाखिल सूर्य्य-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी औरतसे घर बसानेका है तू पूछता है कि यह औरत मेरे घर में रहेगी या नहीं" सो तू इस औरतके लानेमें उद्योग कर तेरे घर में आना तो मुशकिल है परन्तु जो तेरे घरमें यह आजाय तो भाग्य-वान् बहुत है सो तू इसके लाने में उद्यम कर अब तेरे जरा दिन नाक़िश हैं सो नाक़िश दिनोंमें यह काम होना मुशकिल है तू पुष्यनक्षत्रसे लेकर पुष्यनक्षत्रतक जांटके दरख्तमें पानी डाल और कीडनाल को २ मास जिमाय वह औरत तेरे यहां बरजरूर आवेगी संदेह मत कर अब नाक़िश दिन पीछे गये अब तुझको सब सुख हो जावेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल किसी औरतके मिलापका है तू पूछता है कि उस औरतसे मेरा मिलाप होगा या नहीं" सो हे पूछने वाले ! उस औरतसे तेरा मिलाप बरजरूर होगा परन्तु जो बात तू चाहता है वह न होगी क्यों कि उसका वर्ण देवता है । जो तू उससे संग किया ही चाहता है तो ५ तोला की सुवर्ण की मोहनी दुर्गाकी मूर्ति बनवा कर और ११ दिन नेक ब्राह्मणसे पूजन कराके दक्षिणा सभेत उसी ब्राह्मणको दे पीछे उससे संग बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७६ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरम

ती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतसे मिलापका है तू पूछता है कि मेरी औरतका मिलाप मुझको कब होगा सो तेरी औरत नेत्रोंसे दूर है परन्तु तू दिलसे दूर कभी भी नहीं करता है तेरी औरतका पहले जन्मका अजाब है सो उससे तेरा और तेरी औरतका समीप रहना नहीं बनता है तू और तेरी औरत पहले जन्ममें वैश्य जातिमें जन्मे थे तू विदेशमें धन कमानेके वास्ते रहा करता था एक दफे तेरी औरतको निहायत बीमारी हुई तू लोभके कारण उसको बीमार छोडके चला गया पीछे तेरी औरतका शरीर पूरा हो गया तब उसने यह शाप दिया कि तैने धनके लोभ से मैं छोड दी ईश्वर करै तुझको धन न मिले सो उस शापसे ऐसा लाभ नहीं होता है कि तू घरमें बैठजाय और तेरी औरतका विशेष मिलाप हो सो तू प्रायश्चित्त कर तुझको लाभ भी पूरा होगा तू और तेरी औरत समीप रहांगे अब तू एक तोलेकी सुवर्णकी दुर्गाकी मूर्ति तांबेके कलशके ऊपर वस्त्रमें रखकर नेक ब्राह्मणसे उस दुर्गासंमेलिनीका ११ दिन आराधन और पूजन करवा पीछे दक्षिणा समेत उसी ब्राह्मणको दे तेरा औरतसे मिलाप होगा और तुझको बहुत जल्दी लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७७ ॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है पूछता है कि मेरा माल मिलेगा या नहीं " सो तेरा माल हाथ न आवेगा क्योंकि अव्वल तो तेरे दिन नाकिश है और दूसरे जिसने तेरा माल लिया है वह दिलका बहुत पक्का है अपने दिलकी बात औरोंके आगे नहीं कहता है औरोंके दिलकी पूछ लेता है उसने अबतक ऐसे ही काम किये हैं अबतक पाडके मौके नहीं पकडा गया था परन्तु अबके उसने ४ शीरी और मिलाये हैं उनमें एक दिलका कच्चा है सो कई दिन पीछे मालका जाहरात होगा तो हो जायगा मिलना कुछ है नहीं तू सबर

कर नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अल्लाताला तुझको और धन देगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७८ ॥ हुकमी शकल ÷ उसका मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरा बहुत माल चोरी गया है इससे मुझको दिन रात निद्रा नहीं आती सो माल मिलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अब सब देवताओंको हाथ जोडता है और खुशवक्तीमें कभी शिर भी नहीं नवाया सो तेरे मालके ले जानेमें ९ चोर शीरी हैं एक तो वैश्य है और समजाति हैं परन्तु चोर बडे पक्के हैं वैश्यने तेरा माल बताया है और तेरा माल तेरे मकानसे पूर्व दिशाकी ओर लेकर चले हैं हे पूछने वाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं २ मास १ दिन और नाकिश रहे हैं जन्म पत्रमें भी देख लेना सो तू श्रीकालिकाके मन्त्रका जप करवा नाकिश दिन व्यतीत हुए कुछ कम तेरा माल भी मिलेगा और तू यह भी जान जायगा कि घरके बंदर हैं ऐसे भी चोर चांडाल होते हैं फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २७९ ॥ हुकमी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनकी चोरीका है तेरा धन बहुत गया है और तैंने इन्त-जाम भी बहुत किया परन्तु पक्का पता अबतक कुछ नहीं लगा तू पूछता है कि मेरा धन आवेगा या नहीं " सो पूछनेवाले ! तुझको ३ वर्षसे दिन निहायत नाकिश आरहे हैं सो दिनोंकी गरदिश करकेतेरा धन चोरोंने लिया है चोर ६ हैं एक उनमें भेदी है नाकिश दिनोंमें तेरा धन गया है सो यह धन आना मुशकिल है परन्तु श्रीदुर्गाकी दो तोला सुवर्णकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणसे प्राण प्रतिष्ठा कराके ११ दिन पूजन करवा और ११ वें दिन वह मूर्ति दक्षिणा समेत उसी नेक ब्राह्मणको दे श्रीदुर्गाकी प्रसन्नतासे कुछ कम तेरा धन मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८० ॥ हुकमी शकल ⁝ हुमरा साबित मंग-

लकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तेरे धनकी चोरी हुई है धन बहुत ज्यादा गया और सब थाना तहसील दाखिल हो लिये परन्तु पता न लगा सो तू यह पूछता है कि धन मिलैगा या नहीं जो न मिले तो सबर करूं" सो हे पूछनेवाले ! चोर चार हैं इन्हींमें घरका भेदू भी है सो तू श्रीमंगलाके मन्त्रका आराधन करवा कुछ धन लगाके धन आवेगा फिकर मत कर जिसने यह दिया था वह और भी देगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥२८१॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पशुकी चोरीका है तेरा पशु घरसे गया है तू पूछता है कि मेरा पशु आवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पशुकी चोरनें चोरी नहीं की परन्तु तेरे शत्रुने करवाई है सो तेरा शत्रु निहायत नालायक है उससे कुछ करतूत तो हो नहीं सकती इससे तेरा पशु ही उसने कढवाया है सो तू चोर पिशाचिनीके मन्त्रको चरखंसे बांध कर माल काढ कर उलटा फिरा तेरा पशु आजावेगा परन्तु दिन नाकिश हैं सो कुछ धन लगेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८२ ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पशुकी चोरीका है सो तेरा पशु घरसे नहीं गया जंगलसे गया है सो तेरे पशुपर कुछ चोरकी साज नहीं थी तेरे दुशमननें चपरके साज लगाई है सो वह पशु एक पहर तो जंगलमें बांध रक्खा और पीछे उत्तरको चलता कर दिया और अब भी चला जाता है सो तेरा दुशमन बहुत खोटा मनुष्य है उसने अपना परलोक बहुत बिगाड़ लिया है उसके दिलमें कुछ दया नहीं है परन्तु तू देख सुख वह भी नहीं पाता है तेरे देखते ही इन पापोंका फल भोगेगा और तेरा पशु नहीं आवेगा तू सबर कर और जो तुझसे सबर न किया जाय तो तू यथाशक्ति पिशाचघातिनीके मन्त्रका जप करवा और झुंडके दरख्तमें ११ दिन चाव-

लोंके दोनों सहित पानी डाल कुछ धन लगेगा तेरा पशु मिल जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८३ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्रुत दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल चोरीका है वस्त्रकी चोरी हुई वस्त्र बहुत गया जो घरमें अच्छे वस्त्र थे सो सब चले गये और जो तजवीज की उससे कुछ पता नहीं लगा सो तेरा दिल घबराता है हौलदिली हुई जाती है रात्रिमें निद्रा नहीं आती यह संदेह रहता है कि मेरा वस्त्र आवेगा या नहीं और जो न आवे तो सबर करूं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! इस चोरीमें ५ चोर शीरी हैं एक मनुष्य इनमें घरका भेदू है उसने भेद दिया था कीमती माल उसीके हाथ लगा दूसरे चार चोरोंने तेरे वस्त्र कुछ तो दक्षिण दिशाको भेज दिये और बांट लिये हैं सो तू सबरकर तेरे दिन नाकिश हैं तेरा माल नहीं मिलेगा ईश्वरसे विनती कर वह और देगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२८४ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तेरे कपडोंकी चोरी हुई है कपडे बहुत अच्छे और बहुत ज्यादे गये हैं और बहुत तजवीज की परन्तु कहीं भी खबर नहीं लगी सो निहायत तकलीफ पाया अब पूछता है कि मेरा माल आता दीखता हो तो मैं उद्योग करूं और जो न आता दीखे तो मैं सबर करूं" सो हे पूछने वाले ! गया धन आना बहुत मुशकिल है और जो मनुष्य तुझसे कहता है कि कुछ धन लगेगा तेरा माल मैं लादूंगा वह मनुष्य निहायत कपटी हैं ऊपरके बोलनेमें निहायत सफाई है उससे बचा रहना और तुम मंगलेश्वरीके मन्त्रका जप करवाना और रात्रिमें पीपलके तले उडद गेरके उनमें तेलका दीपक रख कुछ धन लगनेपर तेरा धन आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८५॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीब मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतकी चोरीका है तू पूछता है कि मेरी

औरत एक मनुष्यके संग चली गई कुछ माल भीले गई है सो वह औरत और माल हमको मिलेगा या नहीं" हे पूछनेवाले शक्स ! उस औरत-के दिलमें तो बहुत दिनोंसे जानेकी थी परन्तु उसका अबतक मौका नहीं लगा अब उसका मौका लगा है सो पूछनेवाले ! वह औरत अव्वल ही तुम्हारे कामकी नहीं थी परन्तु अब तो चली ही गई सो वह औरत तुम्हारे मतलबकी नहीं है और उस औरतने तुम निहायत दिक किये हो और उसने तुम्हारा दिल बहुत सताया है इससे कुछ फलतो उसने पालि-या अब आगे भी उसकी निहायत दुर्गति होगी पर यहां नहीं आवेगी न जेवर मिलेगा सबर कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८६ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! सवाल चोरीका है तू पूछता है कि औरत चोरी गई है सो आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरी औरत चोरी नहीं गई वह औरत अब अपने पिताके घर गई है तू सन्देह मत कर और हे पुत्र ! तेरे पितृदोष है सो एक तो मनुष्योंका दिल नहीं मिलने देता और विना बात कलह हो जाता है और जहां ज्यादे पैदा दीखे वह नष्ट होजाती है जो नष्ट नहीं होय तो कमती होजाता है सो तेरे पितृदोष है दिलको स्थिर नहीं रहने देता और उसको विगाडता है सो सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥२८७॥ हुक्मी शकल ⚏ इज्ज-तमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बालककी चोरीका है तू पूछता है कि बालक किसीने चोर लिया बहुत ढूंढा परन्तु मिला नहीं सो तू पूछता है कि लडका कहां मिलेगा" हे पूछनेवाले ! तेरा लडका नहीं मिलेगा क्योंकि तुझको दिन निहायत नाकिश हैं तेरा लडका दुशमनने पकडवाया है सो तेरी औरतकी कलाम माफिक है अब तू श्रीगणेशके बीजमन्त्रका जप जितनी तेरी ताकत हो करवा कुछ सन्देह मत कर ईश्वर जैसे रखे वैसे ही रहिये इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८८ ॥ हुक्मी शकल

तरीख ⁝ मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मनुष्यके खोये हुएका है सो तेरा लडका खोया गया है तू पूछता है कि लडका मिलेगा या नहीं" तू कुछ फिकर मत कर तेरा लडका बहुत खुशी है और उसको इस वक्त बहुत मनुष्य समझा रहे हैं सो तेरा लडका आया ही चाहता है तू फिकर मत कर और तेरे लडके को जन्मपत्रमें शनिग्रह माफिक है सो शनि देवताका दान और जितनी तेरी ताकत हो उतना जप शनिके बीजमंत्रका करवा फिर तेरे लडकेको संदेह कुछ भी न होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २८९ ॥

हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन और वस्त्रोंकी चोरीका है" तेरे पास कुछ बाकी नहीं रहा है इधर ३ वर्षसे तेरे दिन निहायत नाकिश हैं पैदा तो कुछ होती नहीं और जो कुछ होती भी है उससे दिलको संतोष नहीं होता और मन तो पहले ही बहुत बिगडा रहता था परन्तु अब चोरी हुए पीछे दिल धीरज नहीं धरता आज कल तेरे नाकिश दिन हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर और यथाशक्ति श्रीगणेशजीके बीजमन्त्रका जप करवा और सुबेके वक्त जांटके दरख्तमें पानी डाल और शामके वक्त उसी जांटके तले काले उरद गेरके उनपर तेलका दिया बाल और हाथ जोडकर यह विनती कर कि हे देव ! मेरे मालको दिलां सो कुछ धन लगे तेरा माल आवेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥२९०॥

हुक्मीशकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन वस्त्रकी चोरीका है ऐसी चोरी हुई है कि घरमें कुछ भी नहीं रहा सो अब यह पूछता है कि मेरा माल मिलेगा या नहीं जो मुझको नहीं मिलेगा तो मेरा जीना मुशकिल है और जो जीता रहा तो मेरे दिलके उठावकी बीमारी होगी सो मेरा माल मिलेगा या नहीं" (यह पूछता है) सो

हे पूछनेवाले ! तेरा माल तो चोरोंने हजम कर लिया तुझको नहीं मिलेगा सबर कर यह माल तैने निहायत अन्यायसे इकट्ठा किया था और तैने पुण्य भी एक पैसा का नहीं किया सो जैसीं और मनुष्योंके ऊपर कटारी तैने फेरी थी वैसी ही तेरे फिरी सो तू सबर कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९१॥ हुक्मी शकल ∴ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स!तेरा सवाल जेवरकी चोरीका है तू पूछता है कि चोर घरका है या बाहरका और मेरा जेवर मिलेगा या नहीं जेवर जो घरमें था सो सब जाता रहा और तेरे दिलको सबर नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! इसमें ३ सीरी हैं सो इनमें एक घरका भेदी है उसने तेरे जेवरका पहले सब भेद बतादिया तब औरोंने निकाला है और जो घरभेदी मनुष्य है सो होश्यार है किसीसे बतलाता नहीं तुम्हारी बात जान लेता है अपने दिलकी नहीं कहता बडा कुटिल है सो तेरे २ मास २३ दिन खोटे हैं। नाकिश दिनों पीछे इन चोरोंकी आपसमें फूट होकर कुछ जेवर तेरा मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल जेवरकी चोरीका है तू पूछता है कि मेरा जेवर चोरा गया है चोर घरका है या बाहरका अथवा मेरे घरमें ही कहीं रक्खा हुआ है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे घरमें चोर नहीं लगा बल्कि तेरे घरमें पितृदोष है तेरे घरमें विना बात कलह होजाता है और कुटुंबके मनुष्योंका परस्परमें मेल नहीं है और दिल सबका विगडा रहता है विना बातका दिलमें संदेह रहता है अचानक कोई न कोई विघ्न होजाता है कुटुम्बमें बंधेज भी नहीं होता सो तुझको पितृदोष है तू पितरोंके वास्ते श्रीमद्भागवत श्रवण कर और सवालक्ष गायत्रीका जप करवा गयाजी या पिण्डारेंमे तीर्थश्राद्ध करवा तुम्हारा जेवर तुम्हारे घरमें ही है पितरोंने तुम्हारे घरवालोंकी

बुद्धि विगाड रक्खी है यह करनेसे सब सुख होगा तेरा जेवर घरमें मिल- जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड॥२९३॥हुकमीशकल ÷ फरहा शुक्रदेवताकी है मुनकलीव है हुक्म फरमाती हैकि"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि मेरे बहुत बर्तन चोर गये हैं जो बर्तन अच्छे थे सो सब चले गये तू पूछता है कि मेरे बर्तन मिलेंगे या नहीं " सो हेपूछने- वाले ! तेरे दिन निहायत सख्त हैं इससे आवते नहीं दीखते और जो तू यह कहै कि मुझको सबर नहीं होता तो तू जिस शिवलिंगकी प्राणप्रतिष्ठा हो रहीहो उसमें चिताकी भस्मका लेप सायंकालके वक्त कर और यह प्रार्थना कर कि हे त्र्यंबक!'मे भोजनं देहि' इस मन्त्रकी एकादश माला जप करवा या तू कर २१ दिन भीतर तेरे बरतन आजावेंगे फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९४ ॥ हुकमी शक- ल ÷ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे चो- री हुई और बरतन गये "सो तेरे घरमें एक मनुष्य नाकिश बदनजर आता है उसने तो चोरोंके आगे कुछ और माल दी थी परन्तु तक- दीर विगर धन नहीं मिलता है सो उसमें तो उनका हाथ पडा नहीं परन्तु बर्तन लेगये सौ वे बर्त्तन कई दिनों पीछे आवेंगे तेरा यह संताप जायगा और नाकिश दिन तेरे गये अब बहुत अच्छे दिन आवेंगे सो अब तुझको बहुत लाभ होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९५ ॥ हुकमी शकल ⩶ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुकम फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तेरा माल दिनमें ठगोंने उठाया है तू पूछता है कि माल ज्यादे था और वह माल गये-पीछे दिलमें सबर नहीं होता सो वह माल कहांहै और मुझको मिलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! वह माल तुम्हारे पाससे बालकबच्चोंने उठाया था और उसको उठा कर बडे मनुष्यको देदिया सो वह मनुष्य उत्तर दिशाको दूर लेगया फिर एकां

तमें उसको खोलके देखा सो बहुत खुश होगया सो वह तो पश्चिमदिशा अपने घरको उसी वक्त चलागया सो तू सबर कर वह माल तुझको नहीं मिलेगा और अब तेरी तकदीर ४ मास २२ दिनमें खुलेगी बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९६ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है " तेरी वस्तु दिनमें ठगने उठाई है तेरा और जिस ठगका थोडा ही फासिला रहा था सो उस ठगने नहीं उठाई थी जो तेरे पास छोटासा लडका खडा था उसने उठाई थी सो उस लडकेने उठा कर बडे मनुष्यको दे दी वह लेगया सो दिन तो तुझको नाकिश ही हैं परन्तु तू अपनी ताकत माफिक दुर्गाका चढावा कबूल तेरी वस्तु कुछ दाम लगके ११ दिन भीतर आजायगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥ इति सप्तमस्थानं समाप्तम् । अथ पिण्ड ॥ २९७ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कर्जके शुभाशुभका है तू पूछता है कि एक मनुष्यके पास मैं करजा लेने जाता हूं वह मनुष्य देगा या नहीं" सो वह मनुष्य जरा नजर चोर है और ऐसा भी है कि जिसके धन देखता है उसको देता है सो हे पूछनेवाले अव्वल तो तुझको नाटेगा और पीछे यह कहेगा कि घर या बाहरकी जमीन लिखवादे और पीछे जाभिन मांगेगा सो इसवक्त तो तेरा काम बनता नहीं दीखता है और ३१ दिन बाद तुझको करजा मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥ २९८ ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है, हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके शुभाशुभका है तू पूछता है कि मैं हुंडी करके करजा लेना चाहता हूं मुझे रकमकी बहुत चाह है एक दो मास पीछे तो मेरे ही रकम बहुत आजायगी पर इस समय मैं हुंडी करूं तो वह सिकारेगा

या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब जो तू विचारता है उतनी हुंडी मत कर अपना वजन देख वह तेरा निहायत प्यारा है परन्तु सबसे प्यारा यह धन है अपना वजन देखकर हुंडी कर वह सिकार देगा परन्तु अब दिन जरा तेरे नाकिश हैं सो श्रीमहाजयीके बीज मन्त्रका जप करवा हुंडी तेरी सिकरेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २९९ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नुस्रत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू पूछता है कि मैं एक मनुष्यसे बहुत ज्यादे रुपये मांगता हूं वे रुपये मुझको मिलेंगे या नहीं और मिलेंगे तो किस तजवीजसे मिलेंगे" सो यह करजा गला जाता है और यह करजा तुझको इन आंखोंसे नहीं मिलेगा अब यह तुझको बहुत मीठा बोलता है परन्तु जिस वक्त तू दो या तीन दफे मांगेगा उस वक्त उसके नेत्रोंको देखिये परन्तु जमीनसे पूरे पूरे करेगा फिकर मत कर तुझको सबर हो जावेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजका है सो तू यह पूछता है कि मुझको करजा ज्यादे है अब कब उतरेगा " इस करजाने तेरी इज्जत बनाई है और बिगाडी भी है पहले यह करजा तुझको ऐसा नहीं दीखता था परन्तु अब बढ गया और पहले तो तेरे साहूकारकी नियत अच्छी थी अब सबकी बदनीयत हो रही है सो हे पूछनेवाले ! तेरे सालभरकी जितनी पैदा है उतना ब्याज बढता है सो कुछ ज्यादे पैदा होवे तो कोई न कोई खरच पावे सो तेरा करजा कैसे पार पडेगा सो तू गणेशचतुर्थीके व्रत कर और काले तिलोंसे इतवारको छोडकर सब दिन पीपलके दरख्तमें पानी डाल सो २ वर्ष १ मास ३ दिन बाद तेरा करजा सब दूर होजावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०१ ॥ हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है

कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू पूछता है कि मेरा करजा बहुत दिनका होगया पहले तो मुझको कुछ निगाह नहीं रही और उसके पास भी देनेको कुछ नहीं था परन्तु अब उसके पास धन पूरा है उसने कमाया है परन्तु देनेकी इच्छा कम है मुझको देगा कि नहीं जो नहीं देवे तो वृथा झगडा क्यों उठाऊं" सो हे पूछनेवाले ! ये तेरे रुपये कमाये खाये गिन रक्खे हैं परन्तु पहले जितना तेरा करजा मूल है उसका २० वां हिस्सा श्रीभगवती धनदात्री मन्त्रके आराधनमें खर्च कर पीछे उससे करजा लेनेकी तजवीज कर तेरा करजा मिलैगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३०२॥ हुक्मी शकल ⁝ अत अतबेदाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू पूछता है कि मेरा करजा बहुत दिनका है और जो नगदी इससे ली थी उससे ज्याद् नगदी तो मैं दे चुका परन्तु अब भी रुपये बहुत हैं सो व्याजका पडव्याज जुडकर रुपैये हो रहे हैं सो मुझको दिनरात नींद नहीं आती" सो हे पूछनेवाले ! अब समय बहुत माफिक है पहले तो साहूकारको सवाईमें सबर था परन्तु अब सबर नहीं है सो तू श्रीभगवतीका ध्यान कर और अर्कके पुष्पोंकरके शिवार्चन कर और शिवजीसे यह प्रार्थना कर कि हे त्र्यंबक ! मेरा करजा दूर करो सो शिवजी तेरा करजा दूर करेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विदेशीके अंदेका है तू पूछता है कि विदेशीने गये पीछे कुछ खबर या खरची नहीं भेजी सो क्या कारण है उसको कुछ लाभ हुआ है या नहीं और वह शरीरसे खुश है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! उसका जबर रोजगार अबतक नहीं लगा है क्यों कि उसको अब तक दिन नाकिश थे परन्तु अब उसका रोजगार एक

मास सात दिन बाद अच्छा लगेगा परन्तु अबतक उसका दिल नहीं लगा है दिलमें उच्चाट रहता है और विशेष रोजगार नहीं लगा इस कारण उसने खबर और खर्च नहीं भेजा तू कुछ संदेह मत कर तेरे लिये खबर और खर्च भेजनेवाला है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३०४॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विदेशीके अंदेशाका है" सो उसके पाससे तुम्हारे पास एक खत आया था उस खतमें कुछ बीमारीकी बात लिखी थी उस खतको देखनेके पीछे तुझको खबर नहीं पडता इससे यह पूछता है कि उसको आराम होगया है कि नहीं सो उसको अब आराम है परन्तु उसको एक तो वहांका जल नहीं रुचा और दूसरे उसके दिन अब निहायत नाकिश हैं इससे उसकी बीमारी दुरुस्त होना बहुत मुशकिल है सो तू महामृत्युंजय मन्त्रके जपका संकल्प इसी वक्त योग्य ब्राह्मणको दे और जितनी तेरी ताकत हो उतना विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०५ ॥ हुक्मी शकल ⩶ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दान करनेका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे था परन्तु मेरा मनोरथ पूर्ण नहीं होता था कोई विघ्न हो जाता है अब यह दान होगा या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें स्थिरता अब तक नहीं हुई है क्योंकि तेरे पाप दूर नहीं हुए हैं क्योंकि तू अपने आधीन नहीं है तेरे पाप तेरे दिलको डिगा देते हैं सो अब तू श्रीगङ्गाजीमें स्नान करके उसी जगह संकल्प ले तेरा दान पूर्ण होगा और बहुत फल होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०६ ॥ हुक्मी शकल ⩫ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि दानका क्या फल है सो तू

यह पूछता है कि मैंने दान किया और करनेकी मनमें रहती है " सो हे पूछनेवाले ! अब तक तुझको निश्चय नहीं हुआ है पहले जन्ममें तू दक्षिण दिशामें वैश्यजाति में उत्पन्न हुआ था और ब्राह्मणोंको भोजन और कपडे और दान रोकडा बहुत दिया करता था परन्तु तू ब्रह्मभोजके समय अधिक भोजन करनेवाले को कहा करता कि यह कितना ज्यादे भोजन करता है सो पीछे उसकी निंदा कराकरता था पूर्व जन्ममें जो जो पुण्य किया था उसीके फलसे तुझको लक्ष्मीका सुख है परन्तु भोजनका फल नहीं हुआ, निन्दा करनेसे तुझको भूंख कम लगती है और किसी भोजनमें रुचि नहीं होतीं सो तू पुण्य दान कर फल प्रत्यक्ष है संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०७ ॥ हुकमी शकल ⁚ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्पके भयका है तू पूछता है कि कई दफे सर्प ऐसे वक्त दिखाई देता है कि कुछेक फरक रहजाता है इससे कुटुम्बको ऐसा भय होरहा है कि चारपाईसे नीचे पग कोई भी नहीं रखता सो यह पूछता है कि सर्प इस घरसे जावेगा या नहीं और किसीपर चोट तो नहीं करेगा और किस दोषसे दीखता है " सो हे पूछनेवाले ! यह सर्प नहीं है यह किसीका काल है क्योंकि यह तुम्हारा पितररूप हैं जो पितरोंके वास्ते श्राद्धादिक किया करते हैं और गया अथवा पिण्डारा करवा दिया करते हैं उनके पितरोंका मोक्ष हुआ करता है और जिनके श्राद्धादिक नहीं होते वे प्रेत पिशाच सर्पादिक हुआ करते हैं सो पितरोंकी गतिकर फिकर मत कर फिर न दीखेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३०८ ॥ हुकमी शकल ☰ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्पके भयका है तुझको सर्प दिखाई देता है और भय बहुत रहता है तू पूछता है कि मुझको सर्प न दीखै और उसका भय न रहे और यह किस दोषसे है " सो तू गूंगापीरकी

यात्रा कबूल पहले जन्ममें तू शूद्र था सो तैंने सर्प बहुत मारे थे अब वे सर्प तेरा बदला लिया चाहते हैं सो तू सर्प दमन यज्ञकी ऋचाका जप करवा सर्प नहीं दिखलाई देंगे इति प्रश्न॥पिण्ड॥३०९॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुहेराके भयका है तेरे मकानमें गुहेरा रहता है तू पूछता है कि गुहेरा चोट तो न करेगा" सो हे पूछनेवाले ! उस गुहेरेको काल लिये फिरता है सो आज या कल यहांसे विदा होगा तू फिकर मत कर निःसन्देहसो रह इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३१० ॥ हुक्मी शकल ∴ उकला मुनकलीव शनिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुहेरके भयका है वह गुहेरा कई दफे तेरे सामने भगा है परन्तु उसका हाथ नहीं पडा तेरी तकदीरने जोर किया है उसने तो चोट करनेमें कोई कचाई नहीं रखी सो वह पहले जन्ममें सर्प था और तू न्यौलिया था तैंने इसको मारा था सो अब बदला लिया चाहता है सो तू सुवर्णका सर्प बनाकर नेक ब्राह्मणको दे यह दूर होजावेगा और तुझको भय नहीं होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३११ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सिंहके भयका है तेरे ग्राममें दूसरे या तीसरे दिन सिंह आता है इससे ग्राममें निहायत तकलीफ होजाती है सो तू पूछता है कि इस सिंहका पाप कब कटेगा" सो हे पूछनेवाले ! सब ग्रामके मनुष्य सम्मति करके २१ दिन सिंहारूढा श्रीकालिकाका आराधन नेक ब्राह्मणसे करवावो यह सिंह कभी नहीं आवेगा जो आवेगा तो तुरत मारा जावेगा इति प्रश्न ॥पिण्ड॥३१२॥हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सिंहके भयका है तू पूछता है कि मेरा जंगलमें बहुत काम पडता है परंतु उस जगह सिंहका बहुत भय है सो रोजगार तो ठहरा यह

सिंहका निहायत भय है सो कभी चोट तो न करदेगा " सो तू सन्देह मत कर श्रीसिंहासना कालिकाका आराधन करवा फिकर मत कर तेरा सन्देह दूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३१३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल व्याघ्रके भयका है तुम्हारे ग्राममें रात्रिको व्याघ्र आता है और बालक बच्चोंको उठा ले जाता है इससे ग्राममें निहायत तकलीफ होरही है सो तू पूछता है कि दिनमें तो गृहस्थीके धंधेमें रहते हैं और रात्रिमें व्याघ्रका भय है सब ग्राम निहायत तकलीफ पारहा है सो यह व्याघ्रका भय कब दूर होगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! सब ग्रामके मनुष्योंको यह कहदे कि मंगलेश्वरी कालिकाका जप करवावो और इन व्याघ्रोंको मरवावो और व्याघ्रोंका भय न होगा फिकर मत करो इति प्रश्न पिण्ड ॥ ३१४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्याघ्रके भयका है तू पूछता है कि मेरा काम जंगलमें बहुत पडता है उस जंगलमें व्याघ्रोंका बहुत भय है कई दफे वे व्याघ्र सामने होगये हैं सो मेरे दिलमें भय रहता है कि कभी चोट तो न करदें" सो हे पूछनेवाले ! तू जगदीश्वरी कालीका आराधन अपनी ताकत माफिक करवा फिर तेरे समीप नहीं आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३१५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है तू पूछता है कि एक शत्रु है वह बडा जालसाज है सो तुझको यह डर लगता है कि कोई जालसाजी करके मुझको राज दर्बारमें न फसा देवे" सो हे पूछनेवाले ! यह फिकर तू मत कर वह मनुष्य तुझसे आप ही भय मानता है कि कोई जालसाजी तो न करे परन्तु तेरे रोजगार में अवश्य भाजी मार देता है सो तू शत्रु विनाशिनी कालीकी सुवर्णकी मूर्ति

बनाकर ताकत भर शत्रु विनाशिनीका पाठ करवा तेरा शत्रु दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ३१६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है" तुझसे शत्रुने बडी जालसाजी की है और तुझको बहुत दिक किया सो तू शत्रु विनाशिनीके मन्त्रका सवालक्ष जप करवा और दो तोले सुवर्ण की मूर्ति बनवाकर पूजन करवा संदेह मत कर तेरा शत्रु दफे होगा फिकर किसी बातकी मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३१७ ॥ हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बिच्छू के भयका है" सो तेरे घरमें बिच्छू बहुत निकसते हैं इससे तुझको बहुत भय है और रात्रि समयमें तुम्हारे घरके सभी मनुष्य नीचे पग धरते भय मानते हैं और तू पहले तो ऐसा नहीं डरता था और अब तुझको निहायत भय होगया दिनमें तो गृहस्थ के कृत्यमें रहता है और रात्रिमें कोई भी जीव तेरे ऊपर आपडे तो तू उठ भागता है और जबतक उसको देख नहीं लेता तबतक तुझको नींद नहीं आती सो तू शिवजी के लिङ्गका अर्कपुष्पोंसे पूजन कर तेरे घरसे विच्छू चले जावेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ ॥ पिण्ड ॥ ३१८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बिच्छू के भयका है" सो प्रथम तो इस देशमें ज्यादे बिच्छू हैं और इस ग्राममें निहायत ही बिच्छू हैं सो दिनमें तो जहां तहां छिपजाते हैं और रात्रिमें दीपक शान्त होनेके बाद प्रकट होते हैं सो सोए हुए मनुष्य पर पडते हैं सो जिस मनुष्य को काटते हैं वह सारी रात्रि पुकारता है और बहुत तकलीफ होती है सो तू दंशनिवारणी भगवती का आराधन करवा बिच्छू का भय दूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३१९ ॥ हुक्मीशकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है

हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल प्रेतके भय का है" सो हे पूछने वाले ! तुझको कुछ रात्रिमें भय लगता है और सोया हुआ रात्रिमें दब जाता है और कभी रात्रिमें चमककर उठ खडा होजाता है और तेरे दिलमें भय रहता है और दिल कुछ ठीक नहीं रहता है सो तेरे पितृदोष है सो तू प्रेतसे बहुत भय मानता है सो तू श्रीविष्णुसहस्रनामका पाठ नेकब्राह्मणसे श्रवण कर और तुलसीका और गङ्गाजलका सेवन रख तेरा प्रेतभय दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल प्रेतका है तेरे मकान में प्रेत है किसी मनुष्य को सोने नहीं देता और जब तू किसी मनुष्यको मकानमें रखता है या तू रहता है तो रहने नहीं देता और मकान सब बरबाद होगया और अनेक तजवीज की परन्तु शान्ति नहीं हुई यह प्रेत नहीं गया सो इसके जानेकी यह तजवीज करो कि, नेक ब्राह्मणसे श्री गायत्रीका अनुष्ठान करवा और तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्दशांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण-भोजन उसी मकानमें करवा यह प्रेत दूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ३२१ ॥ हुक्मी शकल ⩸ लहि यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुरुषकी बीमारीका है तू पूछता है कि यह ओपरी बीमारी है या और कोई बीमारी है" सो हे पूछने वाले ! इसके ओपरी बीमारी है जो इसको निहा-यत तकलीफ देती है सो इसके हाथसे एकसहस्र विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा बीमारी अच्छी होजावेगी फिकर मत कर और पितरोंकी हाथ जोडके आराधना कर तुझको बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२२ ॥ हुक्मी शकल ⩴ कबजुल दाखिल सूर्य्य-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उस पुरुषके ओपरी बीमारी है उसको जिंद लग रहा है

और दिनरात निहायत तकलीफ देता है और रात्रिमें भय बहुत लगता है और ऐसा करता है कि, अच्छे मनुष्य से कह भी न सके और दिल तो सदैव बिगडा रहता है परन्तु किसी वक्त हरेक होशयार मनुष्यको भी इससे भय लगता है सो तू यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा और किस दोषकी बीमारी है" सो हे पूछनेनेवाले ! यह ज्यादे दिनोंकी बीमारी है और आसेब है तू श्रीपिशाचनाशिनी महामायाका सवालक्ष जप और तद्दशांश हवनादि करा और इसके नित्य तुलसीजीके पत्रके साथ कालीमिरच नयनोंमें डाल आराम बरजरूर होगा पिशाच जबर है फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३२३॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल औरतकी बीमारी का है सो उस औरतके ओपरी बीमारी है उससे उसको निहायत तकलीफ हैं और यह बीमारी ज्यादा है कभी नाचना और कभी रोना करती है इसको औरत और बच्चे दिखलाई देते हैं सो तू पूछता है कि, उसको आराम कब होगा और क्या दोष है "हे पूछनेवाले इसमें जिंदोंका हाथ पडगया है सो तू श्रीमद्भागवतका श्रवण कर और इसके हाथसे सवालक्ष गायत्रीका जप करवा इसको आराम बरजरूर होगा फ़िकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३२४॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स !तेरा सवाल बीमारीका है सो इस औरतके ओपरी बीमारी है इससे निहायत तकलीफ है और इसके इलाज और यत्न (जतन) बहुत किये परन्तु कुछ भी कार न आये और तुमको बहुत संदेह है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है सो पितरोंके वास्ते तजबीज कर ज्यादे मैल ज्यादे जलसे कटता है सो तू पितरोंके वास्ते श्रीमद्भागवतका श्रवण कुटुंब समेत कर और सवालक्ष गायत्रीका जप करा और पितृसंहिता का पाठ

करा बरजरूर इसको आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२५ ॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुटुंबके क्लेशका है" कुटुंबमें प्रथम तो मृत्यु बहुत हुई बधेवा नहीं औरतोंके कन्या होतीं हैं और जो लडका होजावे तो कुछ न कुछ बीमारी रहै और जिसके पास जर है उसके सन्तान नहीं और जिसके सन्तान है उसके पास जर नहीं और दिलमें फिकर रहता है सो तुम पितरोंके वास्ते हरिवंशका श्रवण सब कुटुंब समेत करो और अपनी ताकत माफिक उसमें दक्षिणा चढाओ और एक हरिभगवान्की मूर्ति ७ पल सोनेकी बनवाके चांदीके सिंहासनमें बैठाके हरिवंश पुराणका श्रवण करो तबतक नित्य षोडशोपचार करके पूजन करो और कथा विदा करके उसी नेक ब्राह्मणको यह मूर्ति सिंहासनसमेत देओ तुम्हारे सब दुःख दूर होवेंगे फिकर मत कर दानसे सुख होता है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२६ ॥ हुक्मी शकल ∵ उकला मुनकलीब शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल कुटुंबके सुख-दुःखका है" सो प्रथम तो कुटुंबमें बधेवा नहीं औरतोंके लडकी होतीं हैं और जो लडका होवे तो उसके कुछ न कुछ बीमारी होती है अच्छा किसी वक्त भी नहीं होता है और कुटुंबमें जो किसीके सन्तानका सुख है तो जरका सुख नहीं और जरका सुख है तो सन्तानका सुख नहीं कदाचित् जर और सन्तानका सुख हो भी जाय तो दिलको निहायत तकलीफ रहती है कुटुंबको सुख नहीं रहता सो पितरोंके वास्ते गयाश्राद्ध अथवा पिण्डारा करवा तेरे कुटुंबमें सब बातका सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३२७॥ हुक्मी शकल ⁝ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सुपनेका है" तू पूछता है कि, मुझको स्वप्न बहुत नाकिश आते हैं निषिद्ध सवारी मनुष्योंकी मृत्यु,

विवाह, जलमें तैरना, ऊँट, बंदर और पक्षियोंकी तरह उडना और अपने पितरोंके संग बतलाना ऐसे सुपने आते हैं निहायत तकलीफ होती है सो तू स्वप्नेश्वरीके मन्त्रका आराधन करवा और कालें तिलोंसे पीपलके दरख्तमें पानी डाल तुझको फिर कभी दुःस्वप्न नहीं आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! सवाल दुःस्वप्नका है पूछता है कि मुझको सुपने निहायत नाकिश आते हैं और रात्रिमें ऐसा मालूम पडता है कि, मुझको कोई दबा लेता है सो मैं बहुत तकलीफ पाता हूं यह उपद्रव किस प्रकारसे दूर होगा " हे पूछनेवाले ! तेरे पास जर बहुत मनुष्योंके पापसे आया है सो उन मनुष्योंका दिल बहुत तकलीफ पाया और जैसा धन तेरे पास है वैसा तैंने पुण्यभी नहीं किया सो तू ९ पल सोनेकी स्वप्नेश्वरीकी मूर्ति बनवाकर दिव्यपद्धतिसे संकल्प कर नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और श्रद्धा माफिक दक्षिणासमेत नेकब्राह्मणको दे और ९ दरख्त पीपलके लगा तुझको दुःस्वप्न न आवेंगे और तेरा दिल किसी कालमें न बिगडेगा संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३२९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बनके कटानेका है तू पूछता है कि इस बनको कटानेमें मुझको फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तुझको और रोजगार नहीं मिलता ? यह बनका कटाना तो मरते हुएका काम है तू और कार कर क्यों कि पहले तो हरे दरख्त कटवावेगा जो भाग्यवान् होते हैं वे तो बागमें दरख्त लगाया करते हैं धर्म या कीर्तिके लिये प्रायः यह इरादा सब मनुष्योंका रहता है परन्तु जिससे ऐसा न होसके तो काटनेका परहेज तो रखता है सो हे पूछनेवाले ! थोडी जिन्दगीमें इतना जबर पाप

क्यों करता है और जिसने ऐसा व्यापार किया है उसको सुख नहीं रहा है और फायदा भी नहीं रहेगा सो तू यह कार मत कर और कारमें तुझको लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३० ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वनके कटानेका है तू पूछता है कि इस वनके कटवाने में मुझको फायदा है या नहीं" सो तू इस वनको कटवाय और जुतवा तुझको फायदा बहुत होगा परन्तु पुण्य खूब करना क्योंकि वन कटानेका बहुत पाप होता है सो पाप निवृत्ति करना जो न करेगा तो नमककी तरह गलजावेगा इससे पुण्य खूब करना संदेह मत कर इति प्रश्न पिंड॥३३१॥हुक्मी शकल ⚎ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल राजाके खजानची होनेका है तू पूछता हैं कि मुझको राज्यमें खजानेका कार्य्य मिलेगा या नहीं जो मुझको मिलजावेगा तो मुझको फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन बहुत अच्छे हैं सो तेरे सिपुर्द राज्यका खजाना होगा परन्तु राजाका एक मुसाहब जल्लाद और बदनजर है उसकी मित्रताके वास्ते संगमेश्वरीके मन्त्रका पुरश्चरण योग्य ब्राह्मणोंसे करवा पीछे खजानेका काम तुझको होजावेगा और इसकार्य्यमें तुझको दिन दिन लाभ ज्यादे होगा सो तू संगमेश्वरीका आराधन कर तेरे ऊपर राजाकी मेहरबानीभी रहेगी और लाभ ज्यादे होगा फिकर मतकर आल्लाताला सब अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३२ ॥ हुकूमी शकल ⚏ अतबेखारिज केतुदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यके खजानची बनानेका है" सो राज्यमें खजानचीं की चाह है खजानची बननेके वास्ते और भी कहते हैं उद्योग भी करते हैं परन्तु अब तक किसीका भी उद्योग पूरा नहीं पडा है परन्तु तुझको बहुत अभिलाषा हो रही है सो आज कल तेरे दिन जरा

साधारण हैं सो तू कौबेरी महामायाका सवा लक्ष जप और तद्दशांश हवनादि करवा यह काम तुझको मिलेगा अन्यको नहीं मिलेगा और तुझको बहुत लाभ होगा परन्तु एकवार तुझपर उलझन पडेगी सो कौबेरीश्वरीका आराधन करना सब भय दूर होजावेंगे फिकर मत कर तुझको लाभ बहुत होगा इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ २३३ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नकी सुनकलीब मंगल देवकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फौजदारीका है सो तू राजाका खर्च ओटा चाहती है कि, जो राजमें खर्च लगे सब मैं देदूं फिर राज्यमें माल आवे तब व्याज समेत ले लेऊं सो इस काममें फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! यह काम तुझको बरजरूर मिलेगा और राज्यमें तेरी मांगत है । सो तुझको काम भी होगा परन्तु तेरे ऊपर एक राज्यका मुसाहब खिजा रहेगा सो उसके निवारण करनेके वास्ते तू शतचंडीपाठ करवा इसमें तुझको लाभ बहुत होगा पुण्यकरना सब व्यवहाराम पुण्य सहायक है संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ २३४ ॥ हुक्मी शकल ⁚ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल फौजदारीका है तू पूछता है कि, इस राज्यमें घाटा बहुतहै और कई वर्षसे यह फौजदारी मेरी ही है क्योंकि सब राज्यके खर्च मेरे ही पाससे उठे हैं और राज्यमें घाटा ज्यादे है अब मैं इस कामको छोडना चाहता हूं बल्कि मेरे पाससे भी कुछ लगजावे और यह काम छूट जावे तो मैं बहुत प्रसन्नहूं सो यह काम कुशलतासे छूटेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! जिस वक्त तू छोडना चाहेगा उसी वक्त तेरे लिये राजा जाल करेगा क्योंकि इसने कोई भी अछूता नहीं जानेदियाहै इसकी धर्ममें कुछ निगाह नहीं है यह तो पैसेका पूतहै सो पहले कोई और साहूकार इसकामको ओट लेवे तो छोड देना कुछ भी तकलीफ नहीं होगी और तुझको निहायत जलदी ही हो तो तू

संकट निवर्त्तनी कालिकाके मन्त्रका आराधन करवा तेरा मनोरथ पूर्ण होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यमें पोजदारी लेनेका है तू यह पोजदारी लेले तुझको बहुत लाभ होगा क्यों कि जिसने यह काम लिया है उसको ही बहुत फायदा रहा है सो तू संगमेश्वरीके मन्त्रका आराधन करवा तुझको यह काम बरजरूर होगा और तुझको फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पोजदारीका है तू पूछता है कि, जिसने पोजदारी ली है उसको ही बहुत लाभ हुआ परंतु मुझको क्या दिनोंकी गरदिश है जिस दिनसे यह पोजदारी ली है उसी दिनसे वक्तपर तो भोजन नहीं किया और दिलको निहायत तकलीफ रहती है और इसको थोडा भी चाहते हैं परन्तु छूटती नहीं यह मरा हुआ सर्प गलेमें पड गया निकसता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको जो तकलीफ है इस पोजदारीसे नहीं है दिन नाकिश हैं तेरी पैदा तो पापकी है और पुण्य है नहीं पुण्य विना पत्थर नहीं तिरता सो तू दशवां हिस्सा पुण्य कर और इस समय विष्णुसहस्रनामका पाठ करवा तुझको इसीमें बहुत लाभ होगा तेरे सब शत्रु दूर होंगे इति प्रश्न ॥ अष्टमस्थानं समाप्तम् ॥ इति पूर्वार्द्धे द्वितीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥ अथ पूर्वार्द्धे तृतीयपरिच्छेदः ॥ पिण्ड॥ ३३७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुण्य करनेका है तेरा दिल पुण्य करनेसे बहुत प्रसन्न होता है तू पूछता है कि, मेरे मनमें कई दफे पुण्य करनेकी इच्छा होती है सो यह पुण्य हो सकेगा या नहीं और कैसा फल होगा यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पहले जन्मका

फल है इससे तेरी पुण्यमें निगाह रहती है तू पहले जन्ममें दक्षिण-दिशामें महाराष्ट्र ब्राह्मण था ईश्वरके आराधनमें बहुत तत्पर रहा करता था तैंने ईश्वरकी बहुत भक्ति की और तेरा यह भी दिल रहा कि मेरे पास धन होवे तो खूब पुण्य करूं पूर्वजन्ममें तैंने पुण्यकी ही अभिलाषा नहीं की बल्कि धनकी भी, सो पहले जन्मके भजनसे और पुण्यकी अभिलाषासे तैंने यह धन पाया है सो अब इस जन्ममें पहले जन्मका भी मनोरथ पूर्ण कर और तेरी कुटुंबमें विशेष वासना नहीं है केवल पुण्यमें वासना है सो तू पुण्य करके इस पुण्यहीसे वासना निवृत्त कर पहले ही जन्ममें तेरा मोक्ष हो जाता परन्तु तेरी पुण्यमें वासना बनी हुई है सो अब अपना मनोरथ पूर्ण कर पश्चात् तेरा मोक्ष होगा सन्देह मत कर पुण्यकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुण्य करनेका है किसी वक्त तो तेरे दिलमें ऐसा आता है कि पुण्य करूं और फिर कुछ काल पीछे तेरा दिल डुल जाता है कि सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें ब्राह्मण था पराई निंदा किया करता था परन्तु अपने नित्य नियममें समर्थ था सो जिस कालमें शरीर पूरा हुआ उस कालमें तकलीफ नहीं सही गई तब तैंने दान लेनेवाले ब्राह्मणोंकी निंदाकी है उस पापके फलसे तुझको यह तकलीफ रही तब तैंने दिलमें यह विचारा कि फिर मेरा जन्म हो तो मैं भी ब्राह्मणोंको दान दूं इसी कारणसे तुझको दानमें प्रीति है और निंदाका फल कुत्सित होता है सो तू पुण्य कर तेरा भला होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३३९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल जमीनके दानका है तेरे दिलमें जमीनके दान करनेका है तू चाहता है कि और दानका तो ऐसा उत्तम फल नहीं है जैसा कि

जमीनके दानका , परन्तु यह दान तुझसे हो न सका सो तेरे पहले जन्मका अजाब है अब तू पहले गौका दान कर तुझको यह पुण्य बन जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४० ॥ हुक्मी शकल ☷ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊके दानका है तू पूछता है कि, मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे है कि गऊका दान करूं परन्तु हो नहीं सकता सो अब यह पूछता है कि गऊका दान मुझसे कब होगा " हे पूछनेवाले ! यह दान बहुत जबर है जिसकी बहुत अच्छा प्रारब्ध होवे उससे दान बनता है सो तेरे दिलमें तो बहुत है परन्तु होता नहीं सो तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पूर्वदिशामें वैश्य था और एक साहूकारका गुमास्ता था वह साहूकार बहुत पुण्य किया करता था सो उसका दिखानेके वास्ते तू भी कुछ करता था परन्तु तेरे दिलमें दया नहीं थी सो विना दया कुछ दान तैने किया सो उस दानके प्रभावसे कुछ तेरे पास धन है परन्तु निर्दयताके कारण तुझसे पुण्य नहीं बना सो तू राधा दामोदरकी दो सुवर्णकी मूर्त्ति बनवाकर षोडशोपचार पूजनकरके नेक ब्राह्मणको दे तेरी बुद्धि शुद्ध हो जावेगी और तुझसे बहुत अच्छा दान बनेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४१ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बहुत गऊके दानका है तू पूछता है कि मेरेसे इन गउओंका दान कब होगा मैं दिलमें बहुत करता हूं परन्तु मुझसे दान होता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें क्षत्रिय था वेद शास्त्र पढा हुआ था और दो भाई थे सो तेरी तो वेदमें ही श्रद्धा थी पुराणोंमें न थी और तेरे भाईकी सब शास्त्रोंमें श्रद्धा थी सो वह तो स्वर्गलोकको गया और तेरा भूलोकमें जन्म हुआ और पूर्व जन्ममें पुण्य नहीं किया

इस कारणसे तेरी पुण्यमें रुचि है सो तू पहले श्रीमहाभारतादि श्रवण कर तेरी श्रद्धा बहुत होगी और तुझसे गौओंका दान भी बनेगा और बहुत फल होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३४२॥ हुक्मी शकल ⚏ उकलामुनकलीब शनि देवताकी है हुक्म फ़रमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनके दानका है तेरे दिलमें यह है कि इस लोकमें तो एक धनके सिवाय और कोई भी सुख नहीं देखा पर अब धनका दान करूं जिससे आगे मुझको धन मिलेगा परन्तु तुझसे हो नहीं सकता और तेरी संगति भी उत्तम नहीं है" सो पूछनेवाले ! पहले तो तू विष्णुयज्ञ कर और जपयज्ञ करवा जिससे तुझको ज्ञान होगा और यज्ञमें दक्षिणा विपुल दे और गौवोंका दान दे ऐसा करनेसे तुझसे दान बनेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फ़रमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्वस्व दानका है तेरे दिलमें यह है कि सर्वस्वदान करके श्रीगंगाजीके निकट जा रहूं सो दिलमें तो बहुत लग रही है परन्तु किसी वक्त दिल फिर जाता है इससे तू पूछता है यह दान मुझसे बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! यह दान बहुत मुशकिल है बडा उत्तम पूर्व जन्मका कर्म होवे तो यह दान हो सकता है सो तू यह कर कि पहले ब्राह्मणोंसे जप यज्ञ व्रतादिक सहित करवा फिर सर्वस्वदान कर और एक ईश्वरके सिवाय और किसी वस्तुमें ध्यान मत रख श्रीगंगाजीका स्मरण रख फिकर मत कर ईश्वर तेरा मनोरथ सिद्ध करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४४ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सर्वस्वदानका है तू पूछता है कि गृहस्थसे मेरा दिल हट गया है और अवस्था भी मैंने पाली अब सर्वस्व त्यागके वानप्रस्थाश्रमका तेरा मनोरथहै " सो तेरे पूर्वजन्मका पुण्य ज्यादा है

तू पहले जन्ममें विष्णुभक्त था तैने विष्णुकी भक्ति बहुत की थी सो उसके प्रभावसे तेरे दिलमें यह अंकुर है सो तू कुछेक काल तेरे घरमें और टिकेगा और पीछे तुझको ज्ञान होके वानप्रस्थ होजावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ वजाय साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ग्रहोंके दानका है तू पूछता है कि मेरे मनमें ग्रहोंके दान करनेकी बहुत दिनोंसे लग रही है परन्तु जब मनोरथ करूं तब ही कुछ विघ्न हो जाय सो यह दान कब होसकेगा" सो हे पूछनेवाले ! तुझको दिन निहायत नाकिश थे इससे तुझको निहायत तकलीफ रही है और जब तकलीफके दूर करनेकेवास्ते ग्रहोंके दानकी दिलमें लाये सो उसी वक्त कुछ विघ्न हो गया सो अब नाकिश दिन तो गये और सामान्य दिन रहे हैं सो अब दान कर तेरे कसाला भी शान्त होवेगा और ग्रहोंका दान भी अब होवेगा हे पूछने वाले ! जिन मनुष्योंको शास्त्रका विश्वास नहीं होता है व इसी प्रकारसे तकलीफ पाया करते हैं क्योंकि पहले तो वे शास्त्रके अविश्वास होनेसे करते नहीं और पीछे नाकिश दिन कुछ करने नहीं देते सो दान अब होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४६ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ग्रहोंके दानका है तुझको यह संदेह है कि मैं जिसके पास जाता हूं वही कुछ बतलाता है पूजा करनेवालेसे पूछा उसने दई देवताकी बतलाई और बुद्धिमान् लोगोंसे पूछा उन्होंने पूर्वकर्मका पाप बतलाया और ज्योतिषियोंको पूछा तो उन्होंने ग्रहोंका दान बतलाया सो मैं यह पूछता हूं कि मेरे क्या दोष है " पूछनेवाले ! सब एक ही बात है कोई ईश्वरको मानता है कोई खुदाको कोई और किसीको सो सब एक हैं इसमें संदेह मत कर ग्रहोंका दान कर आराम बरजरूर होगा फिकर मत

कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४७ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नुस्तुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ग्रहणमें दानका है तू पूछता है कि ग्रहणके दानका क्या फल है " हे पूछनेवाले ! ग्रहणके दानके समान और कालके दानका ऐसा फल दूसरा नहीं है तू सूर्य्य ग्रहणमें दान किया चाहता है सो तू दान करेगा और तुझको पुण्य बहुत होगा शास्त्रमें सूर्य्यग्रहणमें दानका यह फल लिखा है कि सूर्य्यग्रहणमें दिया हुआ सहस्रगुण होता है, सो तू दान कर फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चन्द्रग्रहणमें दानका है तू पूछता है कि चन्द्र-ग्रहणमें दान करनेका क्या फल है " सो हे पूछनेवाले ! चंद्रग्रहणमें शतगुणा फल होता है तू पुण्य करेगा और तुझको बहुत लाभ पुण्यका होगा यह पुण्य तेरे पूर्वजन्मके संस्कारसे बनेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३४९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कन्याके दानका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ कन्याके दानका है बहुत दिन हो गये अब कब होगा और उसका क्या फल है " सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा पूर्वजन्मका पुण्य उदय नहीं हुआ था इससे अबतक यह नहीं हो सका और अब तेरे पुण्यका उदय हुआ है सो यह विवाह अब होनेवाला है क्योंकि तेरे पूर्व पुण्य-का उदय हुआ है हे पूछने वाले ! कन्याके दानका बहुत फल है इस कन्याके दानकेवास्ते युधिष्ठिरादिकोंका भी बहुत अभिलाषा रही सो तू ब्राह्म विवाह करवा तुझको बहुत फल होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५० ॥ हुक्मी शकल ⁚ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कन्याके विवाहका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ ब्राह्मणकी कन्या-

के विवाहका है सो गया या नहीं और ब्राह्मणकी कन्याके विवाहका क्या फल है यह पूछता है " सो हे पूछनेवाले ! ब्राह्मणकी कन्याके विवाहका बहुत फल है ऐसी बुद्धि होनी बहुत मुशकिल है परन्तु तेरे पूर्व जन्मके पुण्यका उदय हुआ है सो तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें क्षत्रिय था सो तेरे शरीरसे उपकार किसीका भी नहीं हुआ और पाप तो तेरे शरीरसे बहुत बना परन्तु एक ब्राह्मणकी लडकी समर्थ हो रही थी तैंने उस लडकीका विवाह करवाया उस पुण्यके अंकुरसे तेरे दिलमें यह आता है कि एक ब्राह्मणकी लडकीका विवाह कराऊं सो तू विवाह करवा अब बरजरूर होवेगा और तुझको बहुत पुण्य होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ इज्जतमा साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्राह्मण जिमानेका है तू पूछता है कि जिस वक्त मैं ब्राह्मण जिमानेका मनोरथ करता हूं उस वक्त कुछ विघ्न होजाता है इसका क्या कारण है " सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मके कर्मका फल है तू पहले जन्ममें मध्यदेशमें शूद्र था यदि और भी कोई ब्राह्मणको खिलाता तो तू अपने दिलमें बहुत तकलीफ मानता था सो तैंने जन्म लिये पीछे अपने हाथसे कुछ भी पुण्य नहीं किया था उस पापसे तेरा पैसा सुकृतमें नहीं लगता है और उसी जन्ममें तेरे हाथसे एक पुण्य हुआ था कि एक दिन तैंने अतिथिको अन्न दिया था सो उसके फलसे तेरे पास रिजक है सो तू पहले ब्राह्मणोंका पूजन कर और उनके चरणोंका दक्षिणांगुष्ठ धोकर पी फिर तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सो एक ब्राह्मणको भोजन दियेका यह फल है संदेह मत फर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमामाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्राह्मण स्वजाति जिमानेका है सो तू पूछता है कि मैं यह काम किया चाहता हूं सो यह

कार्य्य मेरा पार पडेगा या नहीं और मेरे दिलमें जैसा है वैसा बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरा कार्य्य बहुत अच्छा होगा तेरे दिलमें यह संदेह है कि कोई तो कैसे ही कहता है कोई कैसे ही सो कदाचित् धन भी लगे और यश भी न मिले ऐसा काम तो न होजायगा सब मनुष्योंकी संमति एक नहीं होती है सो तू फिकर मत कर अव्वल तो तेरा पूर्व जन्मके भजनका प्रताप है क्योंकि पूर्व जन्मके प्रताप विगर बहुत पैसा होजावे तौ भी यश न आवे तू फिकर मत कर तेरा कार्य्य बहुत अच्छा बनेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३५३॥ हुक्मी शकल ⚍ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि मेरे पास पहले तो धन था सो विवाह तथा और कार्य्य भी बहुत अच्छे किये परन्तु अब धन भी नहीं रहा और पैदा भी नहीं है सो मेरे दिन कभी सुधरेंगे भी" सो हे पूछनेवाले! जिस वक्त तेरे पास धन था उस वक्त तो देवता कोई न जाना साधु ब्राह्मणसे भी प्रीतिसे नहीं बोला और अब नाकिश दिनोंमें तुझको तकलीफ हुई सो अब सबकी आराधना करता है सो हे पूछनेवाले! जो सुखमें ईश्वरको भजे तो दुःख न होवे और दुःखमें तो सभी भजते हैं सो तू नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब ३ वर्ष ११ मास और ७ दिन और नाकिश रहे हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब पछताये क्या होता है और संकटेश्वरीके मन्त्रका आराधन रख फिकर मत कर आराधन करनेसे फिर धन होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५४॥ हुक्मी शकल ⚎ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल ऋण दूर होनेका और धनके लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको तकलीफके ही दिन बीतेंगे या अच्छे भी आवेंगे और यह करजा कब दूर होगा" सो हे पूछनेवाले! इन नाकिश दिनोंमें निहायत तकलीफ पायी परन्तु

अब नाकिश दिन गये केवल १ मास और रहे हैं सो उद्यम कर तेरा ऋण दूर होगा और अब तेरे पास पैसा इकट्ठा होगा परन्तु श्रीरवीश्वरीका पाठ करवा तुझको लाभ बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ इति नवमस्थानं समाप्तम् ॥ अथ ॥ पिण्ड ॥ ३५५ ॥ हुकमी शकल ⠐ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले सख्स ! तेरा सवाल ईश्वरके आराधनका है तू पूछता है कि मुझको शिवजीका इष्ट है सो यह शिवजी महाराज मेरा मनोरथ सिद्ध करेंगे या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तेरा शिवजीका आराधन बहुत अच्छा है परन्तु तू शिवपुराणोक्त विधान कर शिवजी तुझपर जल्दी ही प्रसन्न होंगे सन्देह मत कर भक्ति कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५६ ॥ शकल ☰ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ईश्वरके आराधनका है तू पूछता है कि मेरी जैसी भक्ति शिवजीमें है वैसी बनी रहेगी या नहीं " सो तेरी भक्ति इससे ज्यादे बढेगी क्योंकि तेरा पूर्व जन्मका संस्कार है सो हे पूछनेवाले ! तू पहले जन्ममें दक्षिणमें भिल्लजाति था और शिवजीका परम भक्त था परन्तु जाति कम होनेसे यथार्थ भक्ति नहीं हुई शिवभक्तिमें तेरी प्रीति बनी रहीं सो तू अब भी शिवभक्त है और कुछ सन्देह मत कर तेरे वास्ते अब शिवलोक तैयार है फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५७ ॥ हुकमी शकल ⠑ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विष्णुके आराधनका है तू पूछता है कि मैं विष्णु भगवानका आराधन करता हूं सो मुझपर विष्णु प्रसन्न होंगे या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! विष्णु भगवान् तो सबहीके एकसे हैं परन्तु भक्तोंके तो वशीभूत हैं सो तू विष्णुपुराणोक्त विष्णुपूजन कर बरजरूर तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सन्देह मत कर परिश्रम किसीका वृथा नहीं जाता इति प्रश्न ॥ पिण्ड

॥ ३५८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विष्णु आराधनका है सो तू पूछता है कि मेरी विष्णु भगवानमें ऐसी ही प्रीति बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी इससे भी ज्यादे प्रीति बनी रहेगी क्योंकि पहले जन्मका तू विष्णुभक्त है सो हे पूछनेवाले तू पहले जन्ममें श्रीगंगातटपर रहनेवाला वैश्य था और विष्णुकी भक्ति और आचार विचारमें पूरा था परन्तु ब्राह्मणोंका बहुत तिरस्कार किया करता था उससे तेरी पुष्कल भक्ति नहीं हुई सो अब तू ब्राह्मणोंके चरण धो कर पी और मस्तकमें धारण कर तेरी भक्ति विष्णुमें पुष्कल होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३५९ ॥ हुक्मी शकल ⚎ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्माके आराधनका है तू पूछता है कि मैं ब्रह्माका आराधन करूं तो ब्रह्मा मुझसे प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू ब्रह्माका आराधन कर तेरे लिये ब्रह्मा बरजरूर प्रसन्न होंगे जो कोई मनुष्य शत्रुका भी आराधन करते हैं शत्रु भी उनके वशीभूत हो जाते हैं सो ब्रह्मा तो जगत्‌के मातापिता हैं परन्तु तू ब्रह्मवैवर्त्त पुराणसे ब्रह्माके पूजनका विधान देखकर कर तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६० ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल ब्रह्माके आराधनका है तू पूछता है कि जैसी भक्ति मेरी ब्रह्मा देवतामें है वैसी और देवतामें नहीं सो मैं यह पूछता हूं कि यह मेरी प्रीति ऐसी ही ब्रह्माजीमें बनी रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू फिकर मत कर तुझको पहले जन्ममें ब्रह्माने वर दे रखा है तू पहले जन्ममें उत्तरदिशा हिमाचल पर्वतमें ब्राह्मण था सो तेरे उस जन्मसे पूर्व जन्मका किया हुआ कर्म अच्छा नहीं था जिससे तू दीरद्री था सो दरिद्रके कारणसे बहुत

तकलीफ पाया तैंने अपने आत्माको बहुत धिक्कार दिया और ब्रह्माको भी बहुत गाली दीं परन्तु जब तेरा शरीर पूरा होने लगा तेरे दिलमें यह आई कि ब्रह्माका क्या दोष है ब्रह्माको मैंने वृथा गालियां दीं अब ब्रह्माका इतना आराधन करूं जो अच्छा फल होवे ऐसा चित्तमें करते तुझको ब्रह्माका दर्शन हुआ उन्होंने हे पुत्र ! वर मांग ऐसा कहा सो तू भक्ति ही मांगता भया सो तेरी भक्ति रहेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६१ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दिक्पालोंके आराधनका है तू पूछता है कि यदि मैं दिक्पालोंका आराधन करूं तो दिक्पाल मेरे ऊपर प्रसन्न होंगे या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! दिक्पालोंका आराधन कर और बलि-दान दे तेरे ऊपर दिक्पाल प्रसन्न होंगे और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६२ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुत् खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दिक्पालोंके आराधनका है सो तू पूछता है कि मुझको दिक्पालोंके आराधनमें प्रीति है सो वह बनी रहेगी या नहीं और मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तू फिकर मत कर तेरी दिक्पालोंमें प्रीति बहुत बनी रहेगी क्योंकि तू पहले जन्ममें ऋषि ब्राह्मण था सो कर्ममें बहुत सावधान था सो तैंने दिक्पालोंको बहुत बलि दिवाई है परन्तु ब्राह्मणोंकी निंदा किया करता था सो उस पापसे किसी वक्त तेरी प्रीति घट जाती है सो तू ब्राह्मणोंका पूजन किया कर दि-क्पाल तुझपर बहुत प्रसन्न होंगे जिससे निरंतर तेरी प्रीति उनपर बनी रहेगी और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुत् दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हनुमानूजीके

आराधनका है तू यह पूछता है कि मैं हनुमान्‌का आराधन करना चाहता हूं सो हनुमान्‌जी मुझपर प्रसन्न होवेंगे या नहीं ” सो हे पूछनेवाले ! तू श्रीहनुमान्‌का आराधन कर और जितेन्द्रिय रह तेरे ऊपर हनुमान् प्रसन्न होवेंगे और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा परन्तु रात्रिमें आराधन करना और बलि अपने पास रख लेना जिस वक्त दर्शन होवे उस वक्त नयन न मीचना और भय न करना बलि देना तेरा मनोरथ सिद्ध होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६४॥ हुकमी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि “पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हनुमान्‌के आराधनका है तू पूछता है कि मेरी भक्ति जैसी अब हनुमान्‌जीमें है वैसी बनी रहेगी या नहीं ” सो हे पूछनेवाले ! तू फिकर मत कर तेरा तो इसका इष्ट है तू पहले जन्ममें किष्किन्धा पुरीमें ब्राह्मण था और हनुमान्‌जीका परम भक्त था सदा भक्तिमें तत्पर रहता था तुझको एकदफे दर्शन हुए तैंने यही मांगा कि मैं तुम्हारी भक्ति चाहता हूं अब तेरे पास जो यह धन है सो भी उसीकी कृपा है परन्तु हे पूछनेवाले ! जो श्रीहनुमान्‌का आराधन किया करते हैं उनकी कुटुम्बमें प्रीति नहीं रहा करती औरत तथा संतानका भी सुख कम हुआ करता है सो तू संदेह मत कर तेरे प्रीति ज्यादे रहेगी और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६५ ॥ हुकमी शकल ⁖ नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि “ पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गोपालजीके आराधनका है तू पूछता है कि मेरे मनमें गोपालजीके आराधनकी है सो आराधन मुझसे हो सकेगा या नहीं और यदि हो सके तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं सो हे पूछनेवाले ! तू गोपालजीका आराधन कर तुझको बहुत शुभदायक है और तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सन्देह मत कर जिसने गोपालजीका आराधन किया है उसको किसी बातकी तकलीफ नहीं रही है सो तू

आराधन कर सब पाप दूर होवेंगे उत्तम लोकप्राप्ति होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥३६६॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि"पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल गोपालजीके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि गोपालजीके आराधनमें मेरी ऐसी ही प्रीति रहेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तूने पहले जन्ममें गोपालजीकी भक्ति पूर्ण कीहै तू पहले जन्ममें वृन्दावनमें ब्राह्मण था और श्रीगोपालकी भक्तिमें बहुत तत्पर रहता था सो स्वप्नमें कई दफे गोपालजीने तुझको दर्शन दिये तब तैंने भक्ति ही माँगी सो यह भक्ति बहुत शुभदायक है और जिसने यह भक्ति की है उसको किसी बातका क्लेश नहीं रहा है सो तेरी भक्ति बनी रहेगी फिकर मत कर और तुझको उत्तम लोकप्राप्ति होगी हे पूछनेवाले! जो स्वांग भरकर भी गोपालजीका पूजन करते हैं उनको भी उत्तम लोककी प्राप्ति हुआ करती है सो तू कर्मका संदेह मत कर तुझको उत्तम पदकी प्राप्ति होगी फिकर मत कर इति प्रश्नः॥ पिण्ड ॥ ३६७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल श्रीगंगाजीके आराधनका है तू पूछता है कि, श्रीगंगाजीके आराधनमें मेरी प्रीति है सो मुझको कैसी शुभदायक है" सो हे पूछनेवाले ! तुझको श्रीगंगाजीका आराधन बहुत शुभदायक है और तेरा श्रीगंगाजीसे षड्वर्ग भी मिलता है सो तू श्रीगंगाजीका आराधन रख तेरे मनोरथ सिद्ध होंगे परलोकमें विष्णुपद प्राप्त होगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ३६८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तारीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल श्रीगंगाजीके आराधनका है सो तू पूछता है कि जैसी श्रीगंगाजीमें मेरी प्रीति है वैसी बनी रहेगी या नहीं"सो हे पूछनेवाले! तेरी प्रीति ज्यादा होगी क्योंकि तुझको पहले जन्मका वरदान है तू पहले जन्म-

में पूर्वमें वैश्य था और प्रभात समय सदैव श्रीगंगाजीमें स्नान करता था और जिस कालमें तेरा शरीर पूरा होने लगा उस कालमें तू अपने लडकोंसे कहने लगा कि, मुझको श्रीगंगाजीके तीरपर ले चलो सो वे तुझको ले गये वहां तेरा अंतकाल होने लगा तब विष्णुभगवान्-के पार्षद विमान लेकर तेरे लेनेके वास्ते आये उनको प्रणाम करके तैंने उनसे यह कहा कि, मेरी प्रीति श्रीगंगाजीके भजनमें है पर मेरी प्राप्ति नहीं हुई पार्षद बोले इसी कारणसे तेरा द्विजघरमें जन्म हुआ है तू कुछ फिकर मत कर तेरी प्रीति बनी रहेगी पश्चात् उत्तम लोकप्राप्ति होगी संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३६९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रघुनाथजीके आराधन-का है तू पूछता है कि यदि मैं रघुनाथजीका आराधन करूं तो मुझपर रघुनाथजी प्रसन्न होंगे या नहीं और मुझसे हो सकेगा या नहीं" सो पूछनेवाले ! श्रीरघुनाथजीका आराधन तुझको बहुत शुभ-दायक है और तुझसे आराधन हो सकेगा और तेरा सब मनोरथ सिद्ध होगा हे पूछनेवाले ! रघुनाथजीके आराधनसे कौनसा कार्य्य असाध्य है कोई भी नहीं सो तू निस्सन्देह कर फिकर मत कर इसी-के करनेसे हनुमान् समुद्रको पार कर गये थे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७० ॥ हुक्मी शकल ⚎ कब्जुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रघुनाथजीके आराधनका है तू पूछता है कि मेरी प्रीति रघुनाथजीमें ऐसी ही बनी रहेगी या नहीं "सो हे पूछनेवाले ! तैंने पहले जन्ममें बहुत आराधन किया है सो तेरी प्रीति बहुत होगी फिकर मत कर तू पहले जन्ममें पश्चिममें ब्राह्मण था सो श्रीरघुनाथजीका आराधन बहुत करता था इससे श्रीरघुनाथकी तेरे ऊपर कृपा है सो तेरी प्रीति बनी रहेगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड॥३७१॥हुक्मी शकल ⚎

कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीभैरवजीके आराधनका है तू पूछता है कि, मेरी प्रीति श्रीभैरवजी देवतामें है मैं श्रीभैरवजीका आराधन करूं तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं और श्रीभैरवजी प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! षड्वर्ग चक्रसे तेरा और श्रीभैरवजीका वर्ग मिलता है सो तू बरजरूर श्रीभैरवजीका आराधन कर तुझपर श्रीभैरव प्रसन्न होंगे और गायत्री मन्त्रकरके आत्माका शोधन और रक्षा कर और काले कुत्ताको बलि दे तेरे सब मनोरथ सिद्ध होंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्री भैरवजीके आराधनका है तू पूछता है कि, मैंने श्रीभैरवका आराधन किया परन्तु कुछ भी फल नहीं हुआ और कुछ भय भी नहीं हुआ सो मेरे लिये श्रीभैरव देवता प्रसन्न होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! श्रीभैरव तेरे ऊपर प्रसन्न ही हैं पर जो तू चाहता है वह सिद्ध न होगा क्योंकि तुझका प्रत्यक्ष श्रीभैरव नहीं हो सकते तू पहले जन्ममें दक्षिणमें ब्राह्मण था तैंने और कार्य्य तो खोटे किये परन्तु एक गायत्रीका भजन किया था और इस जन्ममें भी तैंने अच्छा काम नहीं किया है परन्तु पहले जन्मके गायत्रीके तेजसे तेरे प्रत्यक्ष श्रीभैरव नहीं हो सकते क्योंकि यह मलिन देवता हैं और जो तू प्रत्यक्ष देवता चाहे तो देवताको शुद्ध भावसे आराधन कर प्रत्यक्ष होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवदोषका हैं और दुर्गाके आराधनका है तू पूछता है कि मेरी दुर्गामें प्रीति बहुत है इससे श्रीदुर्गाका आराधन करनेकी दिलमें है सो मैं दुर्गाका आराधन करूं तो दुर्गा मेरे ऊपर प्रसन्न होगी या नहीं और मेरा मनोरथ सिद्ध होगा

या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तू श्रीदुर्गाका आराधन कर और बलिदान दे तेरे ऊपर श्रीदुर्गा बरजरूर प्रसन्न होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७४ ॥ हुक्मी शकल ⚏ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीदुर्गाके आराधनका है तू पूछता है कि,मेरी दुर्गामें बहुत प्रीति थी और मैंने दुर्गाका बहुत आराधन किया परन्तु जैसा आराधन किया वैसा फल नहीं देखा सो मैं यह पूछता हूं कि, मेरे करनेमें कुछ न्यूनता तो नहीं जो श्रीदुर्गा सिद्ध नहीं होती हैं" सो हे पूछनेवाले ! दुर्गा तो सिद्ध ही हैं परन्तु तेरे करनेमें कुछ त्रुटि रही है सो तू अब अच्छा मुहूर्त्त देखकर आराधन कर जितेन्द्रिय रह सावधान होकर दुर्गापाठ कर और बलिदान दे तेरे ऊपर श्रीदुर्गा प्रसन्न होंगी तेरा मनोरथ सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ३७५ ॥ हुक्मी शकल ⚏ अंकीश शनिदेवता की है हुक्म फरमाती है कि, "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यक्षिणीके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ यक्षिणीके आराधनका है मैं यक्षिणीका आराधन करना चाहता हूं सो यक्षिणी सिद्ध होवेगी या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तू यक्षिणीकी मूर्तिका ध्यान करके उसका आराधन कर और संकटेश्वरीकी मूर्तिका पूजन करके 'आपोहिष्ठाइस'मन्त्रसे स्नान कर पीछे यक्षिणीके मन्त्रका आराधन कर और रात्रि दिन किसी औरतका मुख मत देख यक्षिणी तुझको बरजरूर सिद्ध होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥३७६॥हुक्मी शकल ⚏ हुमरासावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल यक्षिणीके सिद्ध करनेका है तू पूछता है कि मैंने बहुत परिश्रम किया परन्तु यक्षिणी सिद्ध नहीं हुई" सो हे पूछनेवाले ! मन्त्र तो सबही सिद्ध हैं परन्तु साधक होना बहुत मुशकिल है श्रीगायत्री करिके तेरा शरीर शुद्ध है पहले जन्ममें तू

ब्राह्मण था दक्षिण देशमें रहता था और वेद पढा था सो गायत्रीका जप बहुत करता था परन्तु एक कालमें तूने अपने पिताका अनादर किया वह वृद्ध था उसके मुखसे यह निकला कि रे मूर्ख! तुझपर देवता कभी प्रसन्न न होगा यह शाप दिया सो हे पूछनेवाले! उस शापसे तेरा मंद भाग्य है और देवताकी अप्रसन्नता है इससे अब तू अपने पितामहकी सुवर्णकी या मृत्तिकाकी मूर्ति बनवाकर पुष्यनक्षत्रसे लेकर पुष्यनक्षत्र पर्य्यन्त उस मूर्त्तिका पूजन कर और पितृसंहिताका पाठ कर फिर यक्षिणीके मन्त्रका यथोक्तविधिसे जप कर यक्षिणी सिद्ध होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७७ ॥

हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल गृहदेवताके आराधनका है तू पूछता है कि मेरे घरमें कोई बातका बन्धेज नहीं है सो मैं वास्तुदेवताका पूजन करना चाहता हूं उस पूजन करनेसे वास्तुदेवता प्रसन्न होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! परिचर्या करनेसे सब ही प्रसन्न हो जाते हैं बल्कि शत्रु भी मित्रसमान हो जाता है और जो देवता हैं यह तो सबके मातापिता हैं सो वास्तु आराधन करवा सब आनंद बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७८ ॥

हुक्मी शकल ⚎ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल वास्तुदेवताके आराधनका है तू पूछता है कि मैंने वास्तुदेवताका आराधन किया परन्तु वह प्रसन्न न हुआ जिन वस्तुओंकी मुझको पहले अभिलाषा थी और जो मेरे पास न थी उनमेंसे किसी भी वस्तुका लाभ और उत्सव न हुआ" सो हे पूछनेवाले! तेरी नीतिमें खलल है जो पुण्यका काम करता है उसमें तेरी श्रद्धा कम जचती है और जिस वक्त करता है उस वक्त तमोगुण भी आ ज़ाता है सो अब आस्तिक बुद्धिसे और सतोंगुणसे अच्छे मुहूर्त्तमें कर तेरा गृहदेवता प्रसन्न होवेगा सन्देह मत

कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३७९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सूर्य्य देवताके आराधनका है तेरे नेत्रोंमें बीमारी है उसके दूर होनेके वास्ते तू आराधन किया चाहता है सो तू यह पूछता है कि सूर्य्य-देवताके आराधनसे मुझको सूर्य्यदेवता ज्योति देंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विश्वास कारण है जो तू श्रद्धा करके और यथोक्तविधिसे करेगा तो तेरे लिये सूर्य्यदेवता बरजरूर प्रसन्न होंगे परन्तु तुझसे यथार्थ आराधन नहीं हो सकेगा क्योंकि थोडे दिनसे तेरी बुद्धि विगड रही है सो तू पहले गायत्रीका आराधन कर पीछे सूर्य्यका आराधन करना सूर्य्यदेवता प्रसन्न होंगे तेरे नेत्रोंमें बरजरूर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८० ॥ हुक्मी शकल ⚏ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि " हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नेत्रोंकी बीमारीका है सो तेरे नेत्रोंमें कुछ पीडा नहीं है तुझको पहले तो थोडा कम दीखे था और अब दिनपर नेत्रोंकी ज्योति घटती जाती है जिससे तू नेत्रोंमें निहायत तकलीफ मान रहा है और सब बातकी मौज है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्म-में पश्चिमदिशामें द्विजन्मा वैश्य था दान पुण्य करनेमें तेरी बहुत प्रीति थी और सदावर्त्त भी तेरे मकानपर था सो उससे तेरे यहां सब आनंद है परन्तु एक शास्त्रका पढा हुआ ब्राह्मण यह विचार कर तेरे मकानपर आया कि कुछ मिलेगा सो जिस कालमें वह तेरे पास आया उस कालमें तैने अभ्युत्थान और आसन नहीं दिया और तू उससे यह बोला कि अन्धा है ? कहां चला आता है सो वह ब्राह्मण उसी वक्त उलट गया और यह शाप दे गया कि अन्धेको अन्धा दीखै है सो तुझको शाप है इससे अब ब्राह्मणोंके पग पूज और सूर्य्यका आराधन कर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ इति दशमस्थानं समाप्तम् ॥ अथ पिण्ड ॥ ३८१ ॥ हुक्मी शकल

: नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि यह रोजगार मैं करता हूं इस रोजगारमें मुझको विशेष लाभ नहीं हुआ सो अब होगा या नहीं और अन्य रोजगारको बहुत दिलमें करता हूं परन्तु बनता नहीं " हे पूछनेवाले ! तुझको इसी रोजगारमें लाभ होगा परन्तु अब बहुत दिनोंसे तेरे दिन नाकिश आ रहे हैं सो नाकिश दिनोंमें लाभके वास्ते उद्योग करता है परन्तु फायदा नहीं होता और इसी रोजगारमें अनेक मनुष्य बन गये हैं सो तू संकटविनाशनीके मन्त्रका संकल्प यथाशक्ति दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको इसी वक्त दे तुझको लाभ बरजरूर होगा अब दो वर्ष ३ मास ११ दिन नाकिश और रहे हैं फिकर मत कर लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि कोई रोजगार किया चाहता हूं वह चलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! रोजगार तेरा अब भी अच्छा है परन्तु और लोगोंके रोजगारको देखकर तेरा मन चलता है सो तू रोजगार कर तू जैसा लाभ चाहता है वैसा ही लाभ होगा परन्तु जिस वक्त तेरे दिलमें सचावट इस रोजगारकी हो जाय उस वक्त सवा लक्ष धनेश्वरीके मन्त्रका जप दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे और किसीसें कहे मत कहनेसे जप तपका फल नहीं होता है संदेह मत कर तुझको लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि रोजगार कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! अब दिन तुझको नाकिश हैं तू बारम्वार दिल करता है परन्तु दिनोंकी गरदिश करके दिलमें सचावट नहीं होती सो तू फिकर मत कर तेरा रोजगार ६१ दिन बाद होगा परन्तु तू

धनेश्वरीके महामन्त्रको जप बलिदान दे और ब्राह्मणोंको जिस वक्त जपका संकल्प दे उसी वक्त दक्षिणा भी उनको दे तू फिकर मत कर रोजगार होगा अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८४॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि यह रोजगार मेरा कब होगा " सो तेरा रोजगार होनेवाला है परन्तु जो तेरा दिल रोजगारको चाहता है उससे कुछ देर पीछे दिल हट जाता है सो चन्द्रमा तेरे जन्मपत्रमें विरुद्ध है वही तेरे दिलको स्थिर नहीं रहने देता सो तू ११ पलकी चन्द्रमाकी मूर्ति बनाकर नेक ब्राह्मणसे चन्द्र-पूजन-विधिके अनुसार पूजन २१ दिन करवा और चन्द्रबलि दे तेरा रोजगार बरजरूर ४० दिन बाद लगेगा और लाभ बहुत अच्छा होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८५ ॥ हुक्मी शकल ≡ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू पूछता है कि किस दिशासे लाभ है " सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें यह बहुत फिकर रहता है कि किस दिशासे लाभ होगा और तू दिलसे निश्चय करता है परन्तु दिल फिर डिग जाता है सो तेरा पञ्चम भवन (बुद्धिस्थान) बिगड रहा है तू जन्मपत्र दिखलाकर उसकी तजवीज कर और श्रीभगवतीका ध्यान रख और पूर्वको गमन कर तुझे लाभ बहुत होगा परन्तु पहले तेरा रोजगार कम लगेगा सो दिल नहीं डिगाना क्योंकि २ मास २२ दिन तुझको ना-किश रहेंगे पूर्वमें धनदेश्वरीका आराधन यथाशक्ति करवाना तुझको पूर्वसे लाभ होगा फिकर मत कर तेरा दिल भी साहदारी पूर्वकी देता है सन्देह मत कर गमन कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८६ ॥ हुक्मी शकल ⁘ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है

कि मुझको कौन दिशासे लाभ होगा" सो हे पूछनेवाले! तू दिशाका निश्चय भी करता है परन्तु दिल साक्षी नहीं देता और इसी तजवीजमें रातको निद्रा भी नहीं आती है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे बहुत नाकिश दिन हैं जिसकरके तेरे दिलको टिकने नहीं देते सो तू इस वक्त श्रीभगवतीके आराधनकी चित्तमें कर और जितनी तेरी श्रद्धा हो उतना चंडीके परममन्त्रका आराधन करा और तू दक्षिणको गमन कर तुझको लाभ बरजरूर होगा दक्षिणके लाभमें तेरा दिल भी साहदारी भरता है सो तू यह कर फिकर मत कर तुझको लाभ पूरा होगा परन्तु दक्षिण दिशामें तुझको १ मास २९ दिन नाकिश हैं सो दिल न डिगाना इतने दिनों पीछे पूरा लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू पूछता है कि मुझको कौन दिशासे लाभ है तेरे दिलमें निश्चय हो जाता है परन्तु फिर दिल डिग जाता है सो तेरे दिलको सचावट नहीं पडती" सो तुझको पश्चिम दिशासे लाभ है सो तू पश्चिमका निश्चय कर और जन्मपत्रमें तेरा एकादश भवन बिगड रहा है सो उसके वास्ते इसी वक्त जितनी तेरी ताकत होय उतना धनेश्वरीके मन्त्रका संकल्प दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दे तुझको लाभ बरजरूर पश्चिमसे होगा तेरा दिल भी सचावट देता है गमन कर फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३८८ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू पूछता है कि मुझको किस दिशासे लाभ है" सो तू दिलपर बहुत चिंतवन करता है परन्तु किसी दिशाको सचावट नहीं होती और जो कुछ दिल सचावट देता भी है तो फिर झट लौट जाता है सो तू कुछ फेर दिलमें मत कर तेरे जन्मपत्रमें धन भवन बिगड रहा है वह तेरे दिलको बिगाडता है सो तू जलदी श्रीकु-

बेरेश्वरीके मन्त्रका जप करवा तुझको उत्तर दिशासे लाभ है और कुछ तेरा दिल भी सचावट देता है संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड॥ ॥ ३८९ ॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि कौन रोजगारमें फायदा है" सो हे पूछनेवाले शक्स ! तेरे दिलमें अनेक रोजगारोंकी आती है परन्तु दिलमें सचावट नहीं पडती पर अब तेरे दिन बहुत अच्छे आये हैं इस ही उपस्थित रोजगारमें तुझको लाभ होगा परन्तु यह कार्य्य बडा है सो तू श्रीभगवतीका पाठ अपनी ताकत माफिक करवा तुझको बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ३९० ॥ हुक्मी शकल ∴ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि किस रोजगारमें फायदा होगा "सो जिस रोजं-गारको करता है उसीमें विशेष लाभ नहीं होता और दिल भी उस रोजगारपर नहीं ठहरता सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन बहुत नाकिश थे परन्तु अब ५ मास ७ दिन और नाकिश रहे हैं सो अब जिस रोजगारको करेगा उसीमें तुझको फायदा होगा परन्तु अब तू श्रीभगवतीके महामन्त्रका सवा लक्ष जप करवा और पुष्कल दक्षिणा दे फिकर मत कर बरजरूर लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९१ ॥ हुक्मी शकल ∴ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाका है तू पूछता है कि राजा मुझको कैसा चाहता है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा और राजाका जन्मपत्रसे बहुत वर्ग मेल है परन्तु तेरे जन्मपत्रमें शत्रुभवन बिगड रहा है सो तेरे गुप्त शत्रु ज्यादे हैं जिस समयमें राजा तेरी तोफगी करता है उस कालमें वे तेरी तकदीरी कर देते हैं सो शत्रुघातिनी भगवतीके मन्त्रके जपका संकल्प इसी वक्त करवा दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे और बलिदान कर तेरा शत्रु नष्ट

होगा और राजा तेरे ऊपर प्रसन्न हो जावेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९२ ॥ हुक्मी शकल हुमरा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाके विषयमें है तू पूछता है कि राजा मुझको कैसा चाहता है" सो हे पूछने-वाले ! पहले राजाका दिल तेरे ऊपर पूरा था और तुझको बहुत चाहता था परन्तु तेरे दिलमें कुछ गुमान न था और ऐसा भी नहीं जानता था कि राजा ऐसे उलट दिया करते हैं सो हे पूछनेवाले ! तेरा छठा भवन शत्रुग्रस्त है तू शत्रुके दूर करनेके वास्ते शत्रुघातिनी श्रीभगवतीके मन्त्रका जप सवा ७ लक्ष करवा फिर राजा वैसा ही चाहने लग जायगा और तेरी तथा राजाकी प्रीति ज्यादे बढेगी फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९३ ॥ हुक्मी शकल बयाज सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मुझको किसकी नौकरीसे फायदा है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे २ मास ११ दिन अभी नामाफिक हैं सो नाकिश दिनोंको व्यतीत करके तुझको राजाकी नौकरीसे फायदा होगा परन्तु श्रीभगवतीका जितना आराधन करेगा उतना ज्यादे तनख्वाह बढेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९४ ॥ हुक्मी शकल नुसूद खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मुझको किस नौकरीसे फायदा है" सो हे पूछनेवाले ! अब नाकिश दिन प्रायः व्यतीत हुए और १ मास २२ दिन नाकिश और रहे हैं सो इन दिनों बाद तेरी वैश्यकी नौकरी लगेगी और तुझको बहुत लाभ होगा सो भगवतीका पाठ करा जितना भग-वतीका आराधन रक्खेगा उतना लाभ ज्यादे होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९५ ॥ हुक्मी शकल नस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती हे कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है

तू पूछता है कि नौकरी कहीं होगी" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पिछले दिन निहायत नाकिश गये हैं परन्तु ३१ दिन बाद तेरे अच्छे दिन आवेंगे सो तेरी नौकरी इसी जगह हो जावेगी परन्तु तू श्रीगणेशके मंगल मन्त्रका आराधन करवा इसके करवानेसे तुझको अच्छी नाकरी मिलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९६ ॥ हुक्मी शकल ः अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मेरी नौकरी कहां होगी "सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरा भाग्योदय नहीं हुआ था परन्तु अब भाग्योदय होगा और तेरी नौकरी विदेशमें होगी परन्तु एकदफे तो कुछ कम होगी और पीछे बढ़ेगी दिल न डिगाना सो अब तेरी तकदीर खुलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९७ ॥ हुक्मी शकल ∸ः नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मेरी नौकरी कब होगी "सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरे जन्मपत्रमें ग्रह खराब हैं जो तजवीज करता है खाली जाती है इसलिये तू पहले मंगलमूर्तिके मन्त्रका आराधन करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९८ ॥ हुक्मी शकल ∸ः अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकरीका है तू पूछता है कि मेरी नौकरी कब होगी "सो हे पूछनेवाले ! तुझको प्रथम तो नौकरी मिलती नहीं और जो कोई मिले तो सन्तोष माफिक नहीं मिलता सो तू मंगलकी तांबेकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और दानपद्धतिसे मंगलका दान करवा फिकर मत कर तेरी नौकरी दान करनेके बाद १ मास १७ दिनमें लगेगी सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ३९९ ॥ हुक्मी शकल ∸ः इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती

है कि अफसरकी मेरे ऊपर मेहरवानी होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अफसरकी और तेरी जन्मपत्रसे वर्ग प्रीति बहुत मिलती है परन्तु तेरे जन्मपत्रमें शत्रुभवन बिगड रहा है सो जिस वक्त अफसर तेरी तोफगी करता है उस वक्त तेरे शत्रु तेरी तक्दीरी उठा देते हैं सो तू शत्रुओंके दूर करनेके वास्ते श्रीभगवती शत्रुघातिनीके मन्त्रका आराधन करवा और बलिप्रकारसे बलिदान दे फिकर मत कर तुझपर अफसरकी बहुत मिहरवानी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ४०० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अफसरका है तू पूछता है कि मेरे ऊपर अफसरकी मेहरवानी है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा शत्रु बडा बलवान् है पहले तो अफसरकी तेरे ऊपर बहुत प्रीति की निगाह थी अब कुछ तो तेरी भी गुना है और कुछ तेरे शत्रुओंने भी भ्रमकर रक्खा है सो तू अब निहायत दिक हुआ है और तुझको भय निहायत है फिकर मत कर श्रीभगवती शत्रुविनाशिनीके मन्त्रका आराधन करवा तेरा शत्रु दूर होगा और अफसरकी नेक निगाह होगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥ ४०१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि अफसर कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! अफसरके आनेमें कुछ देर नहीं है यहां आनेकी गुफ्तगू हो रही है सो जल्दी ही आया जान दूर नहीं है परन्तु हे पूछनेवाले ! तू पूछता है कि अफसर मुझसे प्रसन्न है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू श्रीकामवरेश्वरीकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकरके नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा और श्रीकामवरेश्वरीके मन्त्रका सवा लक्ष आराधन करवा अफसरकी नेक निगाह रहेगी इति प्रश्न पिण्ड ॥ ॥ ४०२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अफसरका है तू पूछता है कि अफसर कब

आवेगा" सो अफसरके आनेमें देर है आनेका मनसूबा तो ठीक था परन्तु अब उसके पास और जगहका पत्र आ गया है सो अब उसके आनेमें देर है सो कुछ ढीलसे आवेगा और तेरे दिन भी सामान्य हैं सो तेरे ऊपर अफसर कुछ नाराज रहेगा सो तू श्रीमंगलमूर्तिके मन्त्रका आराधन रख और जप करवा बलिदान दे फिकर मत कर अफसर आवेगा और तुझको नेकनामी मिलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥ इति एकादशस्थानफलं समाप्तम्॥ अथ पिण्ड॥ ४०३॥ हुक्मी शकल ⚏ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल खर्चका है तू पूछता है कि मैं एक खर्च किया चाहता हूं सो मेरा कार्य्य पार पडेगा या नहीं और पार पडेगा तो मुझको यश मिलेगा या नहीं" सो हे पूछने वाले! ऐसे कार्य्य पूर्वजन्मके संस्कारसे होते हैं सो तेरा पूर्वजन्मका संस्कार अच्छा है तू पहले जन्ममें उत्तर दिशामें ब्राह्मण था और श्रीगंगाजीके तीरमें ईश्वरका भजन बहुत किया करता था परन्तु तेरे पास धन नहीं था सो तेरी यश करनेकी बहुत अभिलाषा रही परन्तु धन विगर नहीं होसकता, उस आशाकरके इस जगह तेरा जन्म हुआ है सो तेरा कार्य्य बहुत अच्छा होगा और तेरेको यश भी अच्छा मिलेगा परन्तु कार्य्यकी पूर्तिके वास्ते विष्णुसहस्रनामका अनुष्ठान करा कार्य्य पूर्ण होगा संदेह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ४०४॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल खर्चके शुभाशुभका है तू पूछता है कि मेरा वित्त तो सामान्य था और कार्य्य जबर उठा लिया सो मेरा कार्य्य परवस्त हो या नहीं" हे पूछनेवाले! यह कार्य्य तेरे वित्तसे ज्यादा नहीं है और जो वित्तसे ज्यादे किया करता है उसीका यश हुआ करता है सो तेरा कार्य्य बहुत अच्छा होगा औ तेरा यश भी बहुत होगा परन्तु कार्य्यपूर्तिके वास्ते श्रीविष्णुसहस्रनामका पाठ करवा कार्य्य बहुत

उत्तम होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४०५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खर्च और पैदाका है तू पूछता है कि मेरा सदैव खर्च तो ज्यादे होता है और पैदा कम होती जाती है" सो हे पूछनेवाले ! तू सच पूछता है ऐसे ही है परन्तु तू फिकर मत कर तेरे पहले जन्मका अजाब है तू पहले जन्ममें पूर्व दिशामें वैश्य था एक वैश्यकी दूकानमें गुमास्ता रहता था और चालाक बहुत था ऐसी चालाकी किया करता था कि दूकानकी पैदा और खर्च मालिकको बराबर दिखला देता था और वह मालिक बहुत भोला था सो तैने उसका धन बहुत खाया उस पापसे तुझको लाभ नहीं होता सो तू प्रायश्चित्त कर तीर्थमें जाकर राधा दामोदरकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाके नेक ब्राह्मणको दे तेरा धन बढेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४०६ ॥ हुक्मी शकल ⁘ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खर्च और पैदाका है तू पूछता है कि "मेरा खर्च तो बहुत ज्यादे है और पैदा कम है बहुत फजूल खर्च मैंने हटा भी दिया है और कुछ पैदा होती है तो बरकत नहीं होती सो क्या कारण है हे पूछनेवाले ! तू अबतक नहीं जानता तेरे पितरोंका कोप है सो तू पित्तरोंका आराधन कर अपने पूज्योंका पूजन कर पितरोंका गयाश्राद्ध या पिण्डारा करवा तेरे पास धन हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४०७ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यसंबंधी है सो तू पूछता है कि राज्यमें क्या जुर्माना होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन नाकिश हैं जुर्माना ज्यादे होगा परन्तु तुझसे बन पडे तो शत्रुघातिनी कालीके मन्त्रका आराधन करवा और बलिदान दे ईश्वरने चाहा तो जुर्माना न होगा और

जो हो गया तो मुनाफामें छूट जायगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४०८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्य-संबंधी है तू पूछता है कि क्या जुर्माना होगा" सो हे पूछनेवाले यह मुकदमा नहीं है यह जीवका जंजाल है इसमें जुर्मानाकी क्या पूछता है इसमें जिन्दगी और घर बन रहें यही बडी बात है और तुझको अब दिन निहायत नाकिश आ रहे हैं जो मनुष्य तेरे देखनेसे उठता था वह अब तेरे हाथ पकडनेसे भी नहीं उठता सो तू संकटनाशिनी महाकालीके मन्त्रका आराधन करवा नेक ब्राह्म-णोंको दक्षिणा और मन्त्रसंकल्प संग ही दे यह करनेसे तेरे मुकद-मेमें जान आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४०९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चन्द्रमाकी है । हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है तू पूछता है कि यह मनुष्य कैदसे कब छूटेगा सो हे पूछनेवाले! इसका मुराफा कर अब इसको २ मास ३ दिन और नाकिश रहे हैं और शत्रुघातिनी भगवतीके मंत्रका आराधन करवा और तंदई करके झगडा झगड यह कैदसे छूटजावेगा उद्यम कर जर लगे जोरू आती है, पैसा खरच शत्रु हारेगा और तू जीतेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४१० ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है तू पूछता है कि यह मनुष्य कैदसे कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! इस मनुष्यको दिन निहायत नाकिश थे और अब ५ मास ११ दिन और नाकिश रहे हैं सो इसके छूटनेके वास्ते बंधविमो-चनी भगवतीके मन्त्रके जपका संकल्प सवा लक्ष दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे इसकी सुनाई बरजरूर होगी फिकर मत कर भगव-तीका आराधन कर यह झगडा नहीं है जीवको जंजाल है इस कैद-

में घर बिगड जावेंगे भगवतीका आराधन कर जलदी ही छूटेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४११॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत् दाखिल ब्रृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुराफाका है तू पूछता है कि मेरा मुराफा लगेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मुकद्मा इसी जगह जय होता है परन्तु तेरा शत्रु निहायत फरेवदार है सो उसने कारदार अपना कर लिया है जिससे कुछ देवबलकी तुझको आवश्यकता है और दिन भी तुम्हारे निहायत नामाफिक थे परन्तु अब श्रीभगवती शत्रुघातिनीके मन्त्र-के जपका संकल्प दक्षिणासमेत नेक ब्राह्मणको दो और बलिदान करो फिर तुम मुराफा करो मुकद्मा जीतोगे संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४१२ ॥ हुक्मी शकल ⚎ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुराफाका है तू पूछता है कि मेरा मुराफा लगेगा या नहीं "सो हे पूछनेवाले ! तेरा मुकद्मा ऐसा नहीं हुआ है कि तेरा मुराफा लगे और तेरे दिन निहायत नाकिश हैं इसीसे यह तकलीफ हुई है सो तेरा मुराफा नहीं लगेगा और लगेगा तो दंड ज्यादे होगा सो तू चुपका हो बैठ जो तुझसे न रहा जाय तो ११ माशे सोनेका१५पंदरहका यन्त्र बनवा कर नेक ब्राह्मणसे षोडशोपचार पूजन करा फिकर मत कर और शत्रुघातिनीके मन्त्रका जप सवा लक्ष करवा और भगवतीको बलि दे संदेह मत कर जरलगे जोरू होती है सो यह कर तेरा मुराफा लगेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४१३॥ हुक्मी शकल ⚏ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्माका है तू पूछता है कि मुकद्मा जीतूंगा या हारूं-गा" सो हे पूछनेवाले ! यह मुकद्मा तैने जबरदस्ती गलेमें पहर लिया और अब पछताता भी है परन्तु अब पछताये क्या होता है मनुष्यको समझ होवे तो कोई भी बेवाजबी काम न करे पूर्वजन्मके

जो कर्म हैं उन्हींको नाकिश और अच्छे दिन कहते हैं सो पूर्व जन्ममें जिस अवस्थामें अच्छा या बुरा किया जाता है उसी अवस्थामें सुख दुःख दिया करता है सो तेरे पहले जन्मका इस अवस्थाका पाप था उसका फल भोगना ही पडेगा और जो तू निहायत तकलीफ मानताहो और शत्रुको दूर किया चाहता हो तो तू श्रीभगवतीकी ९ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवा कर नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा ३१ दिन दुर्गापाठ करवा तू मुकद्दमा जीतेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४१४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू पूछता है कि मुकद्दमा जीतूंगा वा नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह मुकद्दमा बहुत दिनोंका है और इस मुकद्दमेमें दोनोंका जर ज्यादे लगा है और अब दोनों थोक निहायत तकलीफ पाते हैं परन्तु छोड नहीं सकते सो तेरा दिल निहायत तकलीफ मान रहा है सो दिन दोनोंहीको नाकिश हैं सो तू मंगलमूर्तिके मंत्रका जप करवा बरजरूर जीतेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥४१५॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाको दण्ड देनेका है तू पूछता है कि राजा क्या दंड लेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे ऊपर राजाकी खफगी है और तेरे शत्रु वारंवार तेरी अदावत रखते हैं; और तेरे दिनभी नाकिश हैं ऐसा दंड नाकिश दिनोंमें हुआ ही करता है सो तू सुवर्णका २१ का यन्त्र ९ पलका बनवा कर पूजन करवाके नेक ब्राह्मणको दे और २१ दिन भगवतीका आराधन करवा तुझसे राजा दंड न लेगा और तेरा शत्रु पैमाल हो जावेगा और तेरे ऊपर राजाकी मिहरवानी हो जावेगी फिकर मत कर जर खरचे जारूं मिलती है संदेह मत कर तुझको दंड न होगा इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥

॥ ४१६ ॥ हुक्मी शकल ⋮ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजासे दंड पानेका है तू पूछता है कि राजा दंड थोडा लेगा या ज्यादे" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो राजा दंड कम नहीं लेगा क्योंकि राजाकी निगाह कडी हो रही है परन्तु तू अब श्रीभगवतीके बीजमन्त्रको सुवर्णके पत्रपर लिखवाकर प्राणप्रतिष्ठापूर्वक दुर्गापद्धतिके विधानसे उसका पूजन नेक ब्राह्मणसे करवा और बलिदान दें जो दंड होगा तो बहुत कम होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४१७ ॥ हुक्मी शकल ⩶ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुछ खरीदे हुए मालका है उस मालमें तुझको टोटा है सो व्यापारमें टोटा और फायदा दोही होते हैं परन्तु इस टोटाने दिल निहायत दिक कर दिया सो यह पूछता है कि मेरी इस व्यापारमें इज्जत बनी रहेगी या नहीं और मुझको फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तो टोटाका जहूरा देख पहले तुझको टोटा रहा तब दुर्गा आराधन कबूला था फिर फायदा हुआ तब जिस दिलसे कबूला था उस दिलसे नहीं किया सो तैंने माल खरीद रखा है और जैसा आराधन किया वैसा कुछ लाभ भी है परन्तु अब तेरे नाकिश दिन हैं नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब २५ दिन और नाकिश रहे हैं पीछे अच्छे आवेंगे सो पुण्य कर बेईमानी दिलमें मत रख जर लगाये जर होता है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४१८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालमें लाभका है तू पूछता है कि मेरे मालमें टोटा ज्यादा है सो इस मालमें मुझको फायदा होगा या टोटा ही रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! जिस वक्त तुझको फायदा रहता है उस वक्त खूब हाथ जोड़के देवताकी विनती करता है और जब फिर तुझको फायदा

हो जाता है तब सब देवताओंको भूल जाता है सो हे पूछनेवाले ! अब नाकिश दिनोंकी गरदिश करके तुझको टोटा है और दिलको कहीं भी चैन नहीं पडता और रातमें नयनोंमें नींद भी नहीं आती सो तैने दुर्गाका आराधन कराना तुझको कुछ थोडा टोटा रहेगा फिकर मत कर तैंने माल बेच रखा है सो ईश्वरके आराधनसे पूरा पडेगा अब ३१ दिन और नाकिश रहे हैं पीछे अच्छे आवेंगे नियत पुण्यमें रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४१९ ॥ हुक्मी शकल ∴ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जिनसके भावका है तू पूछता है कि यह जिनस आगे घटेगी या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अभी तो यही भाव चलेगा परन्तु फिर कई दिन पीछे तेज रहेगा सो १५ दिन चलेगा पीछे कुछ मन्दा रहेगा परन्तु हे पूछनेवाले ! तेरे दिन नाकिश ज्यादा हैं सो तू कांई व्यापार कर परन्तु पहले एक ब्राह्मणसे मंगलमूर्तिके मन्त्रका आराधन करवा फिर व्यापार करना लाभ होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४२० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले ! तेरा सवाल जिन्सके तेज मन्दीका है तू पूछता है कि मन्दी जिन्स कब रहेगी" सो हे पूछनेवाले ! अभी तो मन्दी न रहेगी कुछ हेर फेरसे यही भाव रहेगा परन्तु कोई दिन बाद कुछ मन्दा रहेगा और फिर तेज भी रहेगा परन्तु कुछ विशेष मन्दा रहेगा सो तू व्यापार विशेष मत करना क्योंकि तेरे दिन सामान्य हैं इन दिनोंमें तुझको कसर रहेगी और श्रीकुबेरेश्वरीके बीजमंत्रका जप किसी नेक ब्राह्मणसे ११ दिन करवा फिर तुझको बरजरूर लाभ होगा टोटा दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ इति द्वादशस्थानं समाप्तम् । इति पूर्वार्द्धे तृतीयः परिच्छेदः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थः परिछेदः ॥ पिण्ड ॥ ४२१ ॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने

वाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्के शुभाशुभका है पूछता है कि यह संवत् कैसा होगा इसमें समा होगा या काल पडेगा"सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् देशदेशांतरमें बहुत अच्छा होगा वर्षाकी खैंच और बहुत वर्षा हो तो हुआ ही करते हैं परन्तु संवत् अच्छा होगा सो हे पूछनेवाले ! आश्विनमासमें बीमारी तो मनुष्योंको आवेगी क्योंकि मंगल और शनि देवता इस संवत्में बिगड रहे हैं सो तू सबसे मंगल और शनिका दान और जप करवा बीमारी न होगी संवत् अच्छा रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४२२ ॥ हुक्मी शकल ⚏ उकला सावित मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्के शुभाशुभका है तू पूछता है कि संवत् कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले !संवत् सामान्य है कहीं अकाल नहीं होगा परन्तु कहीं तो अच्छा होवेगा और कहीं सामान्य कहीं कुछ भी न होगा परन्तु इस संवत्में शनिदेवता है सो अच्छा है लडकाकी सन्तान ज्यादे होगी और बीमारी विशेष नहीं होगी कहीं कुछ होगी भी तो शांत होजायगी और पशुओंको शरीर पीडा कुछ कहीं कहीं होगी सो यह संवत् नाकिश तो नहीं है परन्तु सामान्य है फिकर मत कर ईश्वर अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ॥ ४२३ ॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू पूछता है कि यह सम्वत् मेरे लिये कैसा रहेगा" सो हे पूछनेवाले! यह संवत् तेरे लिये अच्छे रहेगा जिसमें चैत्र और वैशाख दो मास सामान्य रहेंगे ज्येष्ठ और आषाढ ये दो मास अच्छे रहेंगे इस प्रकार यह संवत् तेरे लिये अच्छा रहेगा फिकर मत कर परन्तु तेरे जन्मपत्रमें शनिदशा अच्छी नहीं है उसका दान और जप करवा अच्छा रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ४२४ ॥ हुक्मी शकल ⚌ हुमरा सावित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-

वाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू पूछता है कि यह संवत् मेरे लिये कैसा होगा "सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् तेरे लिये नाकिश हैं एक तो दिलपरसे सन्देह कभी नहीं जाता है और कुछ न कुछ तकलीफ बनी रहती है सो इस संवत्में तेरे लिये बहुत अली और डली आवेगी दिलको बहुत फिकर रहेगा सो तू प्रथम तो अपने वर्ष प्रवेशके दिन सालग्रह करवा नवग्रहोंके पृथक् पृथक् भोजन करवा और ग्रहोंके दान दे यह करनेसे अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४२५ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सामनी खेती का है तू पूछता है कि सामनी कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले ! सामनी तो बहुत अच्छी होगी परन्तु कुछ कीडेका नुकसान रहेगा और किसी किसी जगह वर्षा न होनेसे सूख भी जायगी परन्तु इस सालमें बुध और बृहस्पति दो ग्रह अच्छे पडे हैं सो खेतीका अन्न अच्छा होगा और आश्विन मासमें बीमारी होगी उसको दूर करनेके वास्ते सूर्य्य देवताका आराधन दान और जप करवानेसे निवृत्त हो जावेगी फिकर मतकर खेती अच्छी होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४२६ ॥ हुकूमी शकल ⚏ नुस्रत खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू पूछता है कि सामनी खेती कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले ! यह साल सामनीके हकमें कुछ नाकिश है सो कहीं तो सामनी हो जावेगी और कहीं खेत कोरे हीं रह जावेंगे; परन्तु साढी समय माफिक सारे ही होगी सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें; रद्द दस्त और पंसलीके दर्दकी बीमारी होगी जो बृहस्पति और सूर्य्य देवताका आराधन दान पुण्य और जप करवावेगा उसको किसी बातका क्लेश न रहेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ ४२७ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नुक्तह् दाखिल बृह-

स्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल साढीकी खेतीका है तू पूछता है कि इस सालमें साढीकी खेती कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें साढीकी खेती बहुत अच्छी होगी और वर्षा भी बहुत अच्छी होगी फिकर मत कर। हे पूछने वाले ! इस साल वर्षा बहुत होगी संदेह मतकर और इस साल सब साख तो अच्छी होगी, परन्तु बीमारी ज्यादे होगी और मरी भी किसी देशमें ज्यादे पडेगी तो अन्न सो बहुत होगा परन्तु बीमारीके सबबसे कुछ आनन्द लोगोंको नहीं होगा इस कारण मनुष्योंको विष्णुयज्ञ करवाना चाहिये, विष्णुयज्ञ करवानेसे बीमारी नहीं होगी और साढी अच्छी होगी संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४२८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल साढीकी खेतीका है तू पूछता है कि खेती कैसी होगी" सो हे पूछनेवाले ! इस साल साढी अच्छी होगी दो ग्रह सामान्य हैं एक तो शनि बिगड रहा है और सूर्य्य बिगड रहा है सो इस कारणसे साढीकी खेती न होगी और इस सालमें बीमारी भी न होगी और राजाओंका पश्चिमदिशामें आपसमें विग्रह होगा सो विष्णु पूजनसे सब शांत होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४२९ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नकी मुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्नका है सो तू पूछता है कि इस साल अन्नका क्या भाव रहेगा अन्न तेज रहेगा या मंदा रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें सूर्य्य और मंगल दो ग्रह तो ऐसे पडे थे कि अन्न ढूंढा हीं पावे परन्तु शनिदेवता और बृहस्पति दोनों ग्रह इस सालके प्रारंभसे अच्छे पडे हैं सो शनि और बृहस्पति प्रथम तो दोनों ग्रह बलवान् हैं दूसरे बलवान् घरमें पडे हैं और शुभग्रहों करकै सलाह करते हैं सो इस सालमें अन्नका भाव मंदा रहेगा परन्तु जिस वक्त

सूर्य्य और मंगल अपने अंशमें अपनी गुफ्तगू करेंगे तब तेज दिखलावेंगे सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन सामान्य हैं सो तुझको समझकर व्यापार करना और तुझसे न रहा जाय तो सूर्य्य और मंगल देवता का दान और जप अपनी ताकत माफिक करवाना फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्नके भावका है तू पूछता है कि अन्न मंदा रहेगा या तेज रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें अन्न तेज रहेगा इस सालके प्रारंभमें बुध और राहु दोनों ऐसे पडे थे कि अन्नको कुत्ते भी न खावें परन्तु शुक्र और मंगस दोनों ऐसे बैठे हैं कि अन्नका समुद्र भी भर देवे तो एक दाना प्रातःकाल न पावे इससे इस साल अन्नका भाव तेज रहेगा परन्तु बुध और राहु अपने अंशोंकरके जो गुफ्तगू करेंगे तो अन्न उस समयमें कुछ मंदा रहेगा परन्तु यह साल तेजीका है संदेह मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्त्रके भावका है तू पूछता है कि इस सालमें वस्त्रका क्या भाव रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! इस सालमें वस्त्र मंदा रहेगा परन्तु बृहस्पति और बुध ये दोनों ग्रह इस सालके बैठनेके वक्त ऐसे पडे कि कपडा ढूंढा न मिले परन्तु सूर्य्यदेवता और चंद्रमा दोनों ऐसे पडे हैं कि वस्त्र रास्तेमें पडा हो तो भी कोई न पूछे सो कपडा मंदा रहेगा परन्तु जिस वक्त बुध और बृहस्पति ये दोनों ग्रह अपने निज अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे तब तो तेज दिखलाई देगा संदेह मत कर इस सालमें बृहस्पति और बुधका दान और जप करवानेवालोंको कपडेमें बहुत फायदा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥४३२॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स! तेरा

सवाल वस्त्रके भावका है तू पूछता है कि कपडेका क्या भाव रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! कपडा तेज रहेगा मंगल और राहु दोनों ग्रह इस सालके बैठनेके समयमें ऐसे पडे थे कि कपडेको कोई हाथमें न पकडे परन्तु सूर्य्य और शुक्र ऐसे पडे हैं कि कपडा टोहा भी न मिले इससे कपडा तेज रहेगा परन्तु जिस वक्त मंगल और राहु अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त मंदा दिखला देंगे फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ लहियन खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रसके भावका है तू पूछता है कि रसका क्या भाव रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! रसका भाव मंदा रहेगा परन्तु इस सालके बैठनेके समयमें सूर्य्य और चंद्रमा दोनों ऐसे बैठे थे कि रसका दर्शन भी न होने दें परन्तु मंगल और शनिदेवताने कृपा की सो मंगल और शनि दोनों ऐसे पडे हैं कि रसकी नदी चलावें इससे रसका भाव मन्दा रहैगा परन्तु जिस वक्त सूर्य्य और चन्द्रमा अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त तो तेज दिखला देंगे सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३४ ॥ हुक्मी शकल ⚎ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रसके भावका है तू पूछता है कि रस मन्दा रहेगा या तेज रहेगा" सो हे पूछनेवाले ! रस तेज रहेगा मंगल और बुध दोनों ग्रह इस वर्षके बैठनेके समय ऐसे पडे हैं कि रसकी नदी चलावें परन्तु सूर्य्य और शनिदेवता दोनों इस सालमें ऐसे बैठे हैं कि समुद्रको भी सोष लेवें इससे रसका भाव तेज होगा परन्तु मङ्गल और बुध जिस वक्त अब अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त मन्दा दिखला देंगे फिकर मत कर तेज होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुग्रहकी श्याम वर्ण है सो हुक्म फरमाती है

कि "पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल अमल (नशा) के भावका है तू पूछता है कि अमलका भाव मन्दा रहेगा या तेज रहेगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! अमलका भाव मन्दा रहेगा क्योंकि इस सालमें बृहस्पति और शुक्र यह दोनों ग्रह जिसवक्त यह साल प्रारम्भ हुआ उस वक्त ऐसे बैठे हैं कि अमल (नशा) नयनों ही दीखे परन्तु यह अमल शनि और राहुका भोजन है सो शनि और राहु ये दोनों अमलके भोजनसे विमुख हैं इससे अमल मन्दा रहेगा परन्तु बृहस्पति और शुक्र ये दोनों जिस वक्त अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त तो तेज दिखा देंगे परन्तु इस सालमें मन्दा रहेगा सन्देह मत कर हे पूछनेवाले ! तेरे दिन नाकिश हैं तू सुवर्णकी मंगलकी मूर्ति बनवाकर पूजन नेक ब्राह्मणसे करवा फिकर मत कर लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३६ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अमलके भावका है तू पूछता है कि अमल मन्दा रहेगा या तेज रहेगा" सो अमल तेज रहेगा परन्तु इस सालके बैठनेके समय चन्द्रमा और बुध ये दोनों ऐसे बैठे हैं कि अमलकी जहाज उतरैं परन्तु शनि और राहु ये दोनों इस सालमें ऐसे पडे हैं कि केवल अमलका भोजन करते हैं इस कारणसे अमल तेज रहेगा परन्तु चन्द्रमा और बुध ये दोनों जिस वक्त अपने अंशोंमें गुफ्तगू करेंगे उस वक्त तो मन्दा दिखलाय देंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४३७॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीव शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि इस शहरमें आये मुझको बहुत दिन हुए परन्तु लाभ विशेष नहीं हुआ सो इस शहरसें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस शहरका और तेरा वर्ग नहीं मिलता है परन्तु तू श्रीभगवतीका प्रसाद बोल और यथाशक्ति भगवतीका आराधन करवा फिकर मत कर तुझको ⁘ लाभ

वरजरूर होगा तेरा दिल भी लगेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३८ ॥ हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा यह सवाल है कि मुझको इस शहरसे फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! इस शहरसे तुझको फायदा है क्योंकि तू इससे ऋण मांगता है परन्तु यह शहर तुझको पूजनीय है सो तू ११ माशे सोनेकी श्रीभगवतीकी मूर्ति बनवा कर योग्य ब्राह्मणसे उसका पूजन करवा और श्रीभगवतीके मन्त्र बीजका सवा सात लक्ष जप करवा तुझको बहुत लाभ होगा फिकर मत कर इसी शहरसे तुझको बहुत लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४३९ ॥ हुक्मी शकल ⁞ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि–" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रका है तू पूछता है कि हमारे घरसे पत्र कब आवेगा तेरा दिल बहुत डोल रहा है और रात्रिमें निद्रा नहीं आती दूसरे या तीसरे दिन अपने घरमें चला जाता है सो तुझको फिकर ज्यादे हैं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें कुछ सन्देह होता है सो अब तेरे घरसे कुशल पत्र आनेवाला है तू सन्देह मत कर इन दिनोंमें मंगलमूर्तिका आराधन रख और बलिदान कर सन्देह न रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४४०॥ हुक्मी शकल ⁞ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू पूछता है कि मेरे घरसे पत्र पहले आया था उसमें लिखा था कि घरमें कुछ बीमारी है फिर घरसे पत्र नहीं आया सो दिनरात सन्देह दिलसे नहीं उतरता है " सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो तू नाकिश दिनोंमें पुण्य कर परन्तु अब तेरे घरमें सब प्रसन्न हैं तेरा पत्र रास्तेमें है आया ही चाहता है भगवतीके मन्त्रबीजको सुवर्णके पतरेमें लिखवा और प्राणप्रतिष्ठा करके षोडशोपचार पूजन करवा और भगवतीके बीजमन्त्रका जप सवा ९ लक्ष

करवा तेरे घरमें आराम होगा और तेरा सन्देह दूर होगा और तुझको लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हस्तीसंबन्धी है तू पूछता है कि मेरे दिलमें हस्ती लेनेकी है सो मुझको मिलेगा या नहीं और जो मिलेगा तो कैसा मिलेगा और हस्तीसे मुझको कैसी बफेदारी है " सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें तो ज्यादे दिनोंसे है परन्तु अव्वल तो तेरी हिम्मत नहीं पडती और जब हिम्मत पडती है तो ऐसे मुसाहिबपर तसल्ली नहीं होती कि यह तो ठीक ठीक ले आवेगा और अबतक तेरा भाग्योदय भी हुआ परन्तु हस्तीकी पीठपर चढनेका भाग्योदय नहीं हुआ है सो अब २ मास २१ दिन बाद तेरा हस्तीपर चढनेका भाग्योदय होगा और अब तुझको हस्ती बहुत अच्छा मिलेगा और बहुत बफेदारी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत् खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हस्ती संबन्धी है तू पूछता है कि इस हस्तीसे मुझको लहना है या नहीं मैं इस हस्तीसे निहायत तकलीफ मान रहा हूं और मैं यह पूछता हूं कि यह हस्ती बिकेगा या नहीं मैंने इतनी तक दिलमें की है कि जो कुछ अबके इसका कोई दाम लगावेगा मैं उसको देदूंगा परन्तु अब तक कोई सौदागर खरीदनेवाला नहीं आया अब मैं यह पूछता हूं कि इसका पाप मेरे गलेसे निकलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन बडे नाकिश थे परन्तु अब ४ मास २१ दिन और नाकिश रहे हैं सो इन दिनोंबाद बिकेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रुत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल घोडा लेनेका है तू पूछता है कि मैं जैसा घोडा चाहता हूं वैसा मिलता

नहीं और जाति बन्धेजमें वैसा मिले भी तो चालाक नहीं मिलता और जो चालाक भी हो और इयावे सिक्के भी हो तो कोई न कोई भौंरीका या तिलकका ऐब पाता है सो ऐबको देख कर दिल सचा-वाट नहीं देता सो जैसा घोडा मैं चाहता हूं वैसा मिलेगा या नहीं और जैसा लेनेको दिल चाहता है वैसा मिलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन सख्त थे सख्त दिनोंमें दिलका मनोरथ पूर्ण नहीं होता सो अब तुझको बहुत शुभदायक और बहुत चालाक और बहुत खुबसूरत घोडा मिलेगा और तेरा दिल बहुत खुश होजावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४४ ॥ हुक्मी शकल ⋮ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल घोडेका है तू पूछता है कि यह घोडा कब विकेगा " सो हे पूछनेवाले ! यह घोडा तुझको नाकिश मुहूर्त्त और स्थिर लग्नमें मिला था सो तूने इसको बेचनेकी बहुत तदबीर की परन्तु यह बिका नहीं सो तू अब यह पूछता है कि इसको खिला कर बहुत रकम बरबाद की और अब वसूल होनी मुशकिल है सो हे पूछनेवाले ! इस घोडेमें तुझको फायदा नहीं रहेगा परन्तु अब तेरे नाकिश दिन गये और जगहसे अब तुझको लाभ होगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४४५॥ हुक्मी शकल ⁖ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल महिषी लेनेका है" सो तू यह पूछता है कि मैं बहुत फिरा परन्तु महिषी मुझको जैसी चाहिये थी वैसीकी तजबीज नहीं लगी और जो कोई मेरी निगाहमें चढी तो उसका मालिक बेचनेको नट गया और जिनके मालिक बेचनेको कहते हैं वे मेरी पसन्द न आई सो मैं पूछता हूं कि मुझको महिषी मिलेगी या नहीं और मिलेगी तो कैसी मिलेगी " सो हे पूछनेवाले ! महिषी बहुत अच्छी तुझको मिलनी चाहती है तू

फिकर मत कर अब तजवीज लगनेवाली है परन्तु तेरे कुटुम्बमें कुलदेवताकी आराधना कम हो गई है अब कुलदेवताको दूध दहीसे प्रसन्न रखना फिकर मत कर महिषी अच्छी मिलेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४४६॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल महिषी बेचनेका है तू पूछता है कि मेरी महिषी बिकेगी या नहीं मैंने इसके बेचनेकी बहुत कोशिस की सो बिकी नहीं और मुझको निहायत तकलीफ हो रही है सो यह महिषी बिकेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले! इसका खूंटा बदल दे इस खूंटेको काढकर और दूसरी जगह गाड इस खूंटेके तले अस्थि है सो खूँटा बदलनेसे तुरत बिक जायगी और तू फिकर मत कर तेरे नाकिश दिन है सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर बहुत नाकिश दिन गये अब ५ मास ३ दिन और नाकिश रहे हैं सो इन दिनों बाद तेरे सब बातका आनन्द हो जावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊके लेनेका है तू गऊके वास्ते बहुत फिरा परन्तु तजवीज नहीं लगी, सो हे पूछनेवाले ! जिसको तू देखता है वह तेरी पसन्द नहीं आती और जो तेरी पसन्द आती है उसका मालिक नहीं बेचता सो बहुत तजबिज करी परंतु तजवीज नहीं लगी अब लगेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको दिनोंकी गरदिश थी इससे तेरी कुछ तजबीज नहीं लगी सो अब नाकिश दिन गये अब तेरे अच्छे दिन आये हैं सो अब तेरी गऊ बहुत अच्छी आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊके बेचनेका है तू पूछता है कि इस गऊके बेचनेकी तजबीज बहुत की सो बिकी नहीं और जिस दिनसे दिलमें यह किया था

कि विक जावे तो अच्छा परन्तु विकती नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अव यह विकी चाहती है तू इसके शिरमें दही और तेल शनिके रोज डाल वरजरूर विकेगी अव तेरे नाकिश दिन गये फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इतिं प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४४९ ॥ हुक्मी शकल ≡ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके शुभाशुभका है तू पूछता है कि यह मकान मेरे पास है सो मेरे लिये शुभ है या नहीं इस मकानमें वधेवा नहीं है और कभी तो मनुष्योंको तकलीफ रहती हैं और कभी पशुओंको कभी रोजगारकी और मनुष्योंका वधेवा नहीं है जो यह मकान अशुभदायक होवे तो इस मकानको छोड दूं यह पूछता है " सो हे पूछनेवाले ! यह मकान तेरे लिये शुभदायक है परन्तु तेरे कुटुम्बमें पितृदोष है सो वह वे औलाद जवान अवस्थामें मरा है सो उसका मन विषयभोगोंसे नहीं भरा उसकी वासना वनी रही सो वह सव प्रकारसे कुटुम्बको दुःख देता है सो उसके वास्ते श्रीमद्भागवत ७ दिन सुना और एक गऊ दान करो, और कपडोंकी जोडी देओ गयाजी या पिण्डारेमें श्राद्ध करवाओ तुम्हारी सव पीडा और क्लेश मिटेंगे दिलका फिक्र दूर होगा वधेवा सव बातोंमें होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ४५० ॥ हुक्मी शकल ÷ कवजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके शुभाशुभका है तू पूछता है कि जिस मकानमें मैं रहता हूं यह मकान मुझको शुभदायक है या नहीं इस मकानमें मेरे मनुष्योंका वधेवा होता नहीं" सो यह मकान तुझको शुभदायक नहीं है क्योंकि इस मकानमें सवव यह है जव यह मकान वना तव इसमें एक गरीवकी जमीन मिली थी और देनेमें उसकी नाराजी थी परन्तु तुमने छल और लोभ देकर उससे जमीन लेली परन्तु पीछे वह बहुत दुःखी हुआ और उसने बहुत श्वास भरे सो

उसका दिल दुखानेसे तुम्हारे बन्धेज नहीं है सो या तो इस मकानको छोड दे और या एक मकान कुटुंबी नेक ब्राह्मणको बनवा दे और इस मकानके वास्ते एक पुरश्चरण श्रीगायत्रीका करवा तेरे कुटुंबमें बंधेज होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ इति त्रयोदशस्थानफलं समाप्तम् ॥ अथ पिण्ड ॥ ४५१ ॥ हुक्मीशकल ∴ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे पितामहको बीमारी है उससे निहायत तकलीफ हो रही है भूख नहीं लगती और जो कुछ जरासा भी खा लेता है तो बहुत तकलीफ देता है सो तू पूछता है कि यह कब अच्छा होगा " सो हे पूछनेवाले ! इसके तुमने कई इलाज करवाये परन्तु एक भी काम न आया सो इसको दिन नाकिश हैं और यह कालके मुखमें आरहा है सो हे पूछनेवाले ! गौके पुण्यसे दुःख हटता है सो हो सके तो एक गोदान कर नहीं तौ एक कलशमें घी भरके और जितनी तेरी ताकत हो उतना सुवर्ण गेरके नेक ब्राह्मणको दे इसको जलदी ही सुख होगा दान कर फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे पितामहको बीमारी है अनेक इलाज किये परन्तु एक माफिक न आया ज्यों ज्यों इलाज करते हैं त्यों २ बीमारी बढती है सो मैं पूछता हूं कि इसको आराम कब होगा और किस दोषसे यह रोग है" सो हे पूछनेवाले ! तू तो आरामकी पूछता है और यह कालके मुखमें आरहा है क्योंकि प्रथम तो इसकी खुराक नहीं रही और जो कुछ भोजन करै तौ पचता नहीं सो इसके दिन निहायत नाकिश आये हुए हैं तू इसके हाथसे पुण्य करवा और राधादामोदरकी सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर नेक ब्राह्मणको दे और गौका दान दे फिकर मत कर पुण्य

करनेसे सुख जलदी ही होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५३ ॥ हुक्मीं शकल ∴ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी पितामहीको बीमारी है अनेक इलाज किये परन्तु कुछ आराम नहीं हुआ और अब दिनपर दिन बीमारी ज्यादा होती है सो पूछता है कि इसको आराम कब होगा और क्या दोष है" सो हे पूछनेवाले! इसको बीमारी ज्यादा है प्रथम तो इससे भोजन नहीं किया जाता है और भोजन कर भी लेवे तो पचता नहीं सो हे पूछनेवाले! यह कालके मुख- में आरहा है इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठका संकल्प करवाकर गऊदान करवा इससे जलदी इसको सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५४ ॥ हुक्मी शकल ∴ उकलामुनक- लीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी पितामहीको बीमारी है प्रथम तो भोजनमें रुचि नहीं है और जो कुछ भोजन कर भी लेवे तो वह भोजन पचता नहीं है और कई इलाज किये परन्तु कोई भी दुरुस्त न आया" सो हे पूछनेवाले! इसके दिन निहायत नाकिश हैं इसके हाथसे एक कलश घीका भरकर फिर उसमें ५ तोला सुवर्ण डालकर नेक ब्राह्मणको दान कर इसको सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५५ ॥ हुक्मी शकल ∴ अंकीश शनि देव- ताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे पिताको बीमारी है अनेक इलाज किये परन्तु दिनोंकी गरदिश करके एक भी काम न आया सो तेरे पिताको बीमारी बहुत ज्यादा है और दिनपर दिन ज्यादे होती है जो तदबीर की उससे ज्यादे होती है सो यह कालके मुखमें आगया है ईश्वर बचावै परन्तु इसके हाथसे एक तिलधेनुका संकल्प करवा और एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठका संकल्प करवा इसको आराम

जल्दी होगा इति प्रश्न॥पिण्ड॥४५६॥हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि मेरे पिताको बीमारी है इस बीमारीको दिन ज्यादे हुए और अब तक आराम नहीं हुआ है अनेक इलाज किये पर एक भी उसके काम न आया सो तू पूछता है कि इसको आराम कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! इसको अब १९ दिन नाकिश रहे हैं सो इसके हाथसे नगदी नेक ब्राह्मणको दिवा और गौका संकल्प करवा आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५७ ॥ हुक्मी कशल ⚏ बयाज सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी माताको बीमारी है दिन ज्यादे हुए शरीरसे थक गई कभी कुछ आराम होता भी है तो फिर वैसी ही हो जाती है और जो इलाजें हकीमोंने किये उनसे कुछ लाभ नहीं हुआ जो इसके ग्रह सामान्य बताये उनका दान भी किया परन्तु अबतक आराम नहीं हुआ " सो हे पूछनेवाले ! इसको सामान्य मारक है और विशेष आनेवाला है सो तू नवग्रहोंका दान और जप करवा इसका क्लेश दूर होगा फिकर मत कर इस मारकमें पुण्य सहाय होता है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५८ ॥ हुक्मी शकल ⚏ तुम्रुत् खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तेरी माताके शरीरमें बीमारी है तू पूछता है कि कभी तो बीमारी बढजाती है और कभी घटजाती है और कोई इलाज किये भी पर कुछ फायदा न हुआ सो यह क्या बीमारी है इसका निदान अच्छे अच्छे हकीमोंने किया परन्तु अबतक पता नहीं लगा कि क्या बीमारी है " सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे पितृदोष है उसीसे यह बीमारी है कभी तो वायुकी और कभी पित्तकी देख पडती है और कभी कफकी कभी सांनिपातकी सो इसको पितृदोष

है अब यह निहायत बीमारीने ग्रस ली है परन्तु अब भी इसके हाथसे एक गऊका संकल्प और श्रीमद्भागवतके श्रवणका संकल्प और गयामें पिण्डका संकल्प करवा ईश्वरने चाहा तो अच्छी हो जायगी संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४५९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे ताऊको निहायत सख्त बीमारी है उससे न तो भोजन किया जाता और जो कुछ भोजन कर भी लेवे तो हजम नहीं होता" सो हे पूछनेवाले! इसके दिन निहायत नाकिश हैं कालक मुखमें आरहा है सो एक तो इसके हाथसे छायापात्र दान करवावो और नेक ब्राह्मणोंको रोकडी दान दिलावो सुख बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ३६०॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे ताऊको बीमारी है अनेक इलाज किये परन्तु उसको कोई भी काम न आया उसको प्रथम तो क्षुधा नहीं लगती और जो किसी तरह भोजन भी किया तो कण्ठसे उतरता नहीं और हजम नहीं होता है जो कुछ दवा देओ तो अन्दर नहीं जाती और जो चली भी जावे तो गुण नहीं करती" सो तू पूछता है कि इसको आराम कब होगा। हे पूछनेवाले! यह कालके मुखमें आ रहा है इसके हाथसे यमराज और महामृत्युञ्जयके मन्त्रका संकल्प करवाकर नेक ब्राह्मणोंको दे और रोकडी भी नेक ब्राह्मणोंको दे इसको सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मंगल देवताकी मुनकलाब है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल ताईकी बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी ताईको बहुत ज्यादे दिनोंसे बीमारी है सो आराम नहीं होता और अनेक इलाज कर लिये अब तक कुछ आराम हुआ नहीं" सो हे पूछनेवाले! उसको मारक आरहा

है परन्तु चन्द्रमाने बचाय रक्खी है सो उसके हाथसे ५ घीके कलश भरकर और एक २ तोला सुवर्ण डालकर नेक ब्राह्मणको दे और रुद्र जप करवा इसको आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९६२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी ताईको बीमारी है अच्छीं नहीं होती उसका इलाज भी करवाया परन्तु उसका मर्म किसी हकीमने नहीं पाया अब इसको आराम कब होगा और रोग किस दोषसे है " सो हे पूछनेवाले ! इसके ओपरी बीमारी है तुम्हारे कुटुम्बमें पितृदोष है जिस करके मनुष्योंका इकलास नहीं रहता है और दिलमें सन्देह रहता है सो हे पूछनेवाले !इसके हाथसे श्रीमद्भागवतका संकल्प और गायत्रीके जपका संकल्प नेक ब्राह्मणोंको दे और पितरोंके वास्ते गया श्राद्ध या पिण्डारेके श्राद्धका संकल्प ले इसको आराम बरजरूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६३ ॥हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे चचाको बीमारी बहुत दिनोंकी है अनेक इलाज किये परन्तु कुछ आराम न हुआ अब आराम कब होगा " हे पूछनेवाले ! यह तो अब कालके मुखमें आ रहा है सो अब तू श्रीविष्णुभगवान्‌की २ तोला सुवर्णकी चतुर्भुजी मूर्ति बनवाकर षोडशोपचार पूजन कर उसे नेक ब्राह्मणको दे सन्देह मत कर इसको सुख होगा और इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठका संकल्प करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे चचाको ज्यादा बीमारी है प्रथम तो कुछ खाना नहीं खाया जाता और कुछ खा भी ले तो हजम नहीं होता

कई इलाज किये पर कोई (इलाज) कार न आया अब पूछता है कि यह अच्छा कब होगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! इसको बीमारी ज्यादा है कालके सुखमें आ रहा है सो इसके हाथसे जमीनका दान कर और महामृत्युंजयके मन्त्रका इस वर्षमें अनुष्ठान करा इसको सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी चाचीको बीमारी है अब तो शरीरसे भी थक गई और अन्न भी नहीं खाती और कई इलाज किये कोई भी कार न आया सो कब अच्छी होगी" सो हे पूछनेवाले ! तू संदेह मत कर अब तो यह बीतली (होचुकी) परन्तु ऐसा कहा करते हैं कि "जबतक श्वास तबतक आस" सो इसके हाथसे विष्णुसहस्रनामका आराधन और महामृत्युंजयके जपका इसी वक्त संकल्प करवा अच्छी होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६६ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबुजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी चाचीको निहायत बीमारी है कंठसे कुछ (भोजनादि) उतरता नहीं और अनेक इलाज हकीमोंने किये परन्तु दिनोंकी गरदिशकरके कोई भी माफकत नहीं आया सो अब इसको आराम कब होगा" हे पूछनेवाले ! इसको ओपरी बीमारी है इस कारणसे कभी कुछ कभी कुछ दिखलाई पडता है, तू पितरोंकी आराधना कर पितरोंके वास्ते श्रीगायत्रीका आराधन करवा और कलश दान दे और पितरोंकी गया और पिण्डारा करवा इसको आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईको बीमारी ज्यादे है सब कुटुंबको निहायत फिकर हो रही है सो दिन पर दिन

रोग बढता जाता है और जो औषधी करें सो कोई भी कार नहीं करती इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको निहायत सख्त बीमारी है इसको जन्मपत्रसे दशाभी नाकिश है सो तू महामृत्युञ्जयका जप और रुद्राभिषेक करवा पीपलके दरख्तमें काले तिलोंसे पानी डाल फिकर मत कर इसको सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६८॥ हुक्मी शकल ☷ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईको बीमारी ज्यादा है इलाज भी किया ग्रहोंका दान और अपनी ताकत माफिक पुण्यभी किया परन्तु उसको आराम नहीं हुआ सो अब उसको आराम कब होगा" हे पूछनेवाले ! उसको बीमारी ज्यादा है सो तू एक सहस्र विष्णुसहस्रनामके पाठोंका संकल्प करवा कर नेक ब्राह्मणोंसे यथाशक्ति पाठ करवा सन्देह मत कर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४६९ ॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईकी औरतको निहायत बीमारी है दिन रात नींद नहीं आती और कुछ खाया भी नहीं जाता है और जो कुछ खावे भी तो पचता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन निहायत नाकिश हैं सो तू इसके हाथसे नवग्रहोंके दान जप और एक कपिला गऊ तथा कुछ वित्तानुसार रोकडी नेक ब्राह्मणों-को दिवा इसको बरजरूर आराम होगा सन्देह मत कर अल्ला ताला अच्छी करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४७० ॥ हुक्मी शकल = उक्ला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे भाईकी औरतको अर्शसे बीमारी है जो इलाज किया सो काम नहीं आया और अब दिन दिन बीमारी ज्यादे होती जाती है और हकीमोंको भी यथार्थ निश्चय नहीं हुआ कि कौन बीमारी है सो अब आराम कब होगा"

सो हे पूछनेवाले ! अव्वल तो इसके निहायत नाकिश दिन हैं और दूसरे तुम्हारे कुटुंबमें पितृदोष है सो तू इसके हाथसे महामृत्युञ्जयके जपका संकल्प करवा और पितरोंके वास्ते गयाश्राद्ध करना कबूलकर सन्देह मत कर इसको बरजरूर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिंड ॥४७१॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका हैं तू पूछता है कि मेरे लडकेको बीमारी है सो उसकी बीमारीकी खबर न पडी कि क्या बीमारी है कभी तो दस्त लग जाते हैं और कभी रद्द करता है खाता कुछ नहीं और शरीरसे सूख रहा है" सो हे पूछनेवाले ! इसको तालु कंठकी बीमारी है और कभी तो आराम होजाता है सो हे पूछनेवाले ! तैंने दुर्गाकी यात्रा पहले मुकर्रर की थी सो तैंने नहीं दी सो जब तक दुर्गाकी यात्रा न करेगा तबतक इसको आराम न होगा सो तू यात्राकी तजबीज कर संदेह मत कर यह करनेसे बरजरूर आराम देगा और ११ माशे सोना डाल कर घृत छाया दान करके योग्य ब्राह्मणको दे उसी समय आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ४७२ ॥ हुक्मी शकल ☱ डुंमर साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे लडकेको ज्यादे दिनोंकी बीमारी है अनेक इलाज किये परन्तु दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त न हुए और अब दिन दिन ज्यादे बीमारी बढती है सो तू पूछता है कि इस लडकेको आराम कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! इस लडकेको अब दिन निहायत नाकिश हैं सो तू इस लडकेके हाथसे एक चतुर्भुजी विष्णु भगवान्‌की मूर्ति बनवाकर उसका पूजन करा और महामृत्युञ्जयके मन्त्रका आराधन करवा इसको आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ४७३ ॥ हुक्मी शकल ☱ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि

" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे नानाको बीमारी है सो उसको सख्त बीमारी है प्रथम तो उससे खाया नहीं जाता और जो कुछ खा लेवे तो हजम नहीं होता और अनेक इलाज करवाये परन्तु एक भी इलाज दिनोंकी गरदिश करके काम न आया सो अब यह पूछता है कि इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! यह कालके मुखमें आरहा है इसको दिन निहायत नाकिश हैं परंतु श्रीमहामृत्युञ्जयका अनुष्ठान इसीवक्त जारी करवा और एक कलशमें घी भरके २ तोला सुवर्ण उसमें छोड और नेक ब्राह्मणको दे, संदेह मत कर इसको आराम बरजरूर होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥४७४॥हुकमी शकल ⚍ नुस्रतखारिज सूर्य्यदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे नानाको बहुत ज्यादे दिनोंसे बीमारी है सो उस बीमारीमें वह निहायत घबरा रहा है शरीरमें तमा न रही और जो इलाज किया सो कोई काम न आया " सो हे पूछनेवाले ! यह तेरा नाना तो कालके मुखमें आरहा है इसको बीमारी निहायत ज्यादा है सो हे पूछनेवाले ! तू इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्र नामके पाठोंका संकल्प कराकर नेक ब्राह्मणोंको सुवर्ण दान दे यह करनेसे सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४७५ ॥ हुकमी शकल ⚎ नुस्रतदाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी नानीको बीमारी है सो उसको यह बीमारी कई दिनोंसे है और तो दिनपर दिन प्रथम तो भोजन थक गया और दूसरे शरीरमें ताकत न रही और अब कुछ बीमारी भी ज्यादे होती है सो अब आराम कब होगा " हे पूछनेवाले ! इसको सख्त बीमारी है इसको ईश्वरने धन बहुत दिया है इसके हाथसे एक पुरश्चरण गायत्रीका संकल्प करवा और कलश तथा जमीनका दान कर-

वा इसके जीवको सुख होगा संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ॥ ४७६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है किं मेरी नानीको बीमारी है कब अच्छी होगी" हे पूछनेवाले ! वह तो अच्छी हो चुकी भुने हुए अन्नको जमाया चाहे और उसमें फिर जलकी परवस्ती करे तो वह क्या जमेगा कभी नहीं सो हे पूछनेवाले! अब २१ दिन बाद तेरे नाकिश दिन आवेंगे इससे तू मंगलका दान और सवा लक्ष जप करवा नहीं तो तेरे ऊपर जरूर आफत आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ४७७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ मुनकलीब मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे मामाको निहायत ज्यादे बीमारी है उसको आराम कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! तूने इलाज भी बहुत किये परन्तु दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त न हुए सो तू इसके हाथसे सूर्य्यदेवता और शनिका दान और छायापात्रमें २१ तोला सुवर्ण गिरवाकर नेक ब्राह्मणको दे और महामृत्युंजयका जप अखंड करवा इसको आराम बरजरूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ४७८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे मामाको बीमारी है अब तो कुछ आराम है पर कभी ज्यादे हो जाती है और कोई इलाज करे तो उसवक्त किसी औषधिसे कुछ आराम हो जाता है पर फिर वैसी हो जाती है और आराम नहीं होता " सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे मामाके कुटुम्बमें पितृदोष है जिसकरके सुख नहीं रहता कभी किसी बातका क्लेश रहता ही है सो तू पितरोंका आराधन करवा और पितरोंका गयाश्राद्ध करवा अथवा पिण्डारा करवा श्रीमहाभारतका पुस्तक नेक पढेहुए ब्राह्मणको दे इससे आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥

पिण्ड॥४७९॥हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि मेरी मामीको बीमारी है सो प्रथम तो भोजन खाती नहीं और जो कुछ खाती भी है तो हजम नहीं होता " सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन निहायत नाकिश हैं सो तू शनि और बृहस्पतिका दान और जप करवा और ३ मासे सुवर्ण नेक ब्राह्मणको दे संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरी मामीको बीमारी है सो उसको बीमारी ज्यादे दिनोंकी होगी इससे उसको अब तकलीफ ज्यादे है और शरीरसे निहायत हरारत हो रही है और कोई इलाज दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त न आया सो पूछता है कि कब अच्छी होगी " सो हे पूछनेवाले ! यह तो कालके मुखमें आ रही है परन्तु इसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनामोंके पाठोंका संकल्प करवा और एक कलश तांबेका घीसे भरकरके और जितनी तेरी ताकत हो उतना सुवर्ण उसमें छोडके नेक ब्राह्मणको दे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि एक मनुष्यको बीमारी सख्त है उससे भोजन भी नहीं किया जाता और जो कुछ भोजन कर लेवे तो पचता नहीं और शरीरसे भी निहायत थक गया है जो कुछ इलाज किये सो दिनोंकी गरदिश करके काम नहीं आये " सो हे पूछनेवाले ! इसको मङ्गलग्रह जन्मपत्रसे निहायत नाकिश है सो मङ्गल धरणीका पुत्र है इससे मकान बनवाकर किसी नेक ब्राह्मणको दान करके दे फिकर मत कर इसको मङ्गलके कोपसे कभी कुछ कभी कुछ वर्षोंसे बीमारी चली आती

है कभी पुण्यके फलसे अच्छी होजाती है सो अब उक्त उपायकर इसको आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि एक मनुष्यको बीमारी है सो उसको ज्यादे बीमारी है अनेक इलाज किये परन्तु माफिक नहीं आये और अब दिन पर दिन थकता जाता है"सो इसको शुक्र और राहु दो ग्रह निहायत नाकिश हैं इस मारकमें इसकी जिंदगी रहनी मुशकिल है सो इसके हाथसे शुक्र और राहुका दान और जप करवा तथा महामृत्युंजयका अखण्ड जप करवा इसको आराम होगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे शत्रुको बीमारी है सो बीमारी ज्यादे दिनोंसे है परन्तु ऐसा दुष्ट है कि मरता नहीं सो मैं पूछता हूं कि इस बीमारीमें यह मरेगा या नहीं "सो हे पूछनेवाले ! इसको बीमारी ज्यादे दिनोंकी है और इसका दिन भी निहायत नाकिश है परन्तु इसका मारक नहीं आया है सो अब७दिन बाद आनेवाला है अब भी सामान्य मारक है सो तू शत्रु विनाशकारक घटाकर्ण मन्त्रका जप इस प्रकारसे करवा फिर फौरन मौत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८४ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि मेरे शत्रुको बीमारी है वह मेरा बडा दाना दुश्मन है सो उसको सवर ज्यादे है मैंने उसके सङ्ग अनेकबार नालायकी की है परन्तु उसने तबभी लायकी ही की है परन्तु अब उसको बीमारी बहुत ज्यादा है सो मैं यह पूछता हूं कि बहुत अच्छा कब होगा या उसका शरीर ही पूरा होगा" सो हे पूछनेवाले!जैसा तू कहता है

वैसा ही है परन्तु अब उसके दिन निहायत नाकिश हैं सो हे पूछनेवाले! उसके हाथसे एक सहस्र विष्णुसहस्रनाम पाठका संकल्प करवा और गऊके दानका संकल्प करवा आराम होगा ज्यादे क्लेशमें पुण्य सहाय होता है फिकर मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥४८५॥ हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल शत्रुके मरनेका है तू पूछता है कि मेरा शत्रु बहुत नालायक है और विना मतलब मुझको तकलीफ देता है सो यह दुष्ट कब मरेगा "सो हे पूछनेवाले! इसको अभी मारक नहीं है परन्तु तुझको निहायत तकलीफ देता हो तो सूर्य्यके दिन पीले आकके ७ पत्ते लाकर आककी ही पलासीसे इन पत्तोंपर उसका नाम लिख कर अग्निमें ७ दिन होम कर तेरे शत्रुको मारक होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८६ ॥ हुक्मी उकल ⁞ तकला मुनकीव शनिग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू किसी शत्रुकी बीमारीको चाहता है तू पूछता है कि मेरा शत्रु जबर है और बातबातमें मुझको दिक करता है सो तू चाहता है कि इसको बीमारी भी कुछ नहीं होती सो इसको बीमारी होगी या नहीं "सो हे पूछनेवाले ! इसके ग्रह बहुत सख्त हैं इसको देखकर सब कांपते हैं सो तू मट्टीके बरतनकी ठेकरीपे शनिवारको उसका नाम केशर और आकके दूधसे लिखकर आंचमें दबा दे जितनी देर आंचमें ठेकरीको दबी हुई रखेगा उतनी देर शरीरमें अग्नि लगी रहेगी और बुखार चढ जावेगा और छोटेसे छोटाभी शत्रु, उसको सिंह दिखाई देगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४८७ ॥ हुक्मी शकल ⁞ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके मारनेका है सो तू पूछता है कि मैं शत्रुसे निहायत दिक कर दिया हूं मुझको गलीमें भी नहीं चलने देता है सो मेरा

दिल निहायत दिक होगया है अब मेरे दिलमें यह है कि मैं शत्रुको किसी तजबीजसे मरवाया चाहता हूं" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुको किसीसे मरवावे मत अब तेरे दिन नाकिश हैं जो किसीसे मरवावेगा तो तू ही पकडा जावेगा सो तू अब नाम मत ले और ६ मास २१ दिन बाद इसको नाकिश दिन आवेंगे सो तब यह निहायत तकलीफ पावेगा और बहुत दिक होगा जिसको देखकर तू बहुत खुशी होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥४८८॥ हुकमी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके मारनेका है सो तू पूछता है कि मेरा शत्रु निहायत दुष्ट है मुझको गली चलते हुए भी बोली ताना मारता है सो तू सम्मुख नहीं हो सकता तेरे दिलमें निहायत गरदिश आरही है सो तेरे दिलमें यह है कि शत्रुको मार दूं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तू शत्रुको मत मार क्योंकि तेरे दिन अब निहायत नाकिश हैं जो तू अब शत्रुपर हाथ छोडेगा तो तेरा शत्रु तो नहीं मरेगा पर तेरे ऊपर राजकी निहायत खफगी होगी फिकर मत कर शत्रुविनाशिनी कालीके मन्त्रका आराधन करवा शत्रु नष्ट होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ इति चतुर्दशस्थानफलं समाप्तम् ॥ अथ पञ्चदशस्थानफलम् ॥ पिण्ड ॥ ४८९ ॥ हुकमी शकल ⚌ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा"सो हे पूछनेवाले! अब तेरे भाग्योदयमें कुछ देर नहीं है तू श्मशानका भस्म लेकर पहलेतो गङ्गाजलसे शिवजीका स्नान करवा और पीछे श्मशानके भस्मका शिवजीको त्रिपुंड्र तिलक २१ दिन चढा तब तेरा भाग्योदय होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥पिंड॥४९०॥हुकमी शकल ⚍ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा मेरा कई दफे रोजगार लग

जाता है परंतु फिर दूर हो जाता है अब मेरा रोजगार फिर न छूटे ऐसा कब लगेगा" हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्योदय हुए ३ वर्ष हुए परंतु तेरे जन्मपत्रमें एक तो सूर्य्य दूसरे शुक्र दो ग्रह माफिक हैं जब कहीं तेरा रोजगार लग जाता है उसमें प्रथम तेरा दिल नहीं लगता और कोई अफसर आकर कुछ कहे तो दिलको बर्दास्त नहीं होती उसी वक्त अफसरके सामने हो जाता है सो अफसरके सामने होनेसे या कोई और बेफायदा करनेसे लाभ नहीं होता सो अब तू सूर्य और शुक्रका आराधन करवा फिकर मत कर तेरा निरन्तर रोजगार हो जावेगा इति प्रश्न॥पिंड॥४९१॥ हुक्मी शकल : नुस्रत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले ! तेरा सवाल भाईके भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे भाईका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे भाईका भाग्योदय ४ मास ९ दिन बाद होगा परंतु इसके हाथसे एक गऊका पूजन ११ दिन करवा इससे इसको लाभ अच्छा होगा क्योंकि इसको पहले जन्मका गऊका शाप है सो पूजन करनेसे इसको जल्दी ही लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४९२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाईके भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे भाईका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तू सन्देह मत कर इसके भाग्योदयमें बहुत देर है शनि और मङ्गल दो ग्रह इसके जन्मपत्रमें सामान्य पडे हैं सो उनका दान और पूजन और जप कर जब तक इन ग्रहोंको न पूजेगा तब तक इसका भाग्योदय नहीं होगा सो तू इन ग्रहोंका पूजन करवा इसका भाग्योदय होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४९३ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे पुत्रका भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पुत्रका भाग्योदय होनेवाला है कुछ

दूर नहीं है तू अपने पुत्रके हाथसे शिवजीका गङ्गाजलसे स्नान करवा और चिता भस्मका चन्दन २१ दिन चढवाय ऐसा करनेपर जल्दी ही भाग्योदय होगा इसके हाथसे यश भी ऐसे होंगे कि जो तुम्हारे कुटुं-बमें अबतक किसीसे नहीं बन आये और इसके जन्मपत्रमें ग्रह भी बहुत उत्तम हैं सो तू सन्देह मत कर सन्देहके दिन गये अब उत्तम दिन तुझको और तेरे पुत्रको आये हैं फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥४९४॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फर-माती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू पूछता है कि मेरे पुत्रका भाग्योदय कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! इसके जन्मपत्रमें ग्रहोंने पञ्चम भवन बिगाड रखा है, बुद्धिका कारण पञ्चम भवन होता है और भाग्योदयका कारण बुद्धि होती है सो इसका बुद्धिस्थान बिगड रहा है प्रत्यक्षमें इसकी बुद्धि तीक्ष्ण नहीं है सो पंचम भवनमें जो माफिक ग्रह पडे हैं और जो माफिक देखते हैं उनके जपका संकल्प नेक ब्राह्मणको दे और तद्दशांश हवन तद्दशांश तर्पण तद्द-शांश मार्जन तद्दशांश ब्राह्मण भोजन करवा और इसको ब्राह्मी बूटी और श्याम गऊका घृत खवाय इसकी बुद्धिकी चपलता और शरीरकी चेष्टा सुन्दर होगी सन्देह मत कर इसकी तकदीर ऐसा करनेसे जल्दी ही खुलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥४९५॥हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि चोर कितने हैं और किस दिशाको गये हैं और मेरा धन मिलेगा या नहीं " सो हे पूछने-वाले ! चोर ४ थे वह तेरे धनको लेकर पूर्वको गये और तेरा धन छिपा दिया है अब वह तेरा धन चोरोंके घरमें भी नहीं रहा है सो अब तेरे दिन निहायत नाकिश हैं नाकिश दिनोंमें गुजरान कर तेरा धन नहीं मिलेगा और जो तुझसे न रहा जाय तो श्रीकालिकाका आरा-धन करवाकर इसपर उद्योग कर ऐसा करनेसे कुछ मिलेगा इति

प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४९६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव् चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे धनको चोर लेगये प्रथम तो चोर कितने हैं और किस दिशामें गये हैं तथा मेरा धन मिलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तेरा धन दक्षिण दिशाको गया है और कुछ धन छोड भी गये हैं और चोर ३ थे। हे पूछनेवाले ! तेरे दिन निहायत नाकिश हैं अब तू कोई उद्योग करेगा तो नहीं होगा सो अब तेरे १९ दिन और नाकिश रहे हैं सो तू नाकिश दिनोंके बाद उद्योग करना कुछ तुझको मिल जावेगा फिकर मत कर अच्छे दिनोंमें और भी लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड॥४९७॥हुक्मी शकल ⩶ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि कितने चोर थे और किस दिशाको गये और मेरा धन मिलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! चोर ९ थे और धन लेकर पश्चिमको गये और तेरा धन नहीं मिलेगा क्योंकि तुझको दिशाका सामान्य अन्तर है सो तेरा धन आता नहीं दीखता है तू उद्योग करेगा तो तेरा कुछ धन मिलेगा और जो तुझे सबर न हो तो तू गङ्गाजलसे शिवजीको स्नान करवा कर और चिता भस्मका त्रिपुण्ड्रतिलक शिवजीको कर २१ दिन ऐसा करनेसे कुछ धन मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४९८ ॥ हुक्मी कशल ⁒ जमात कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे धनको चोर लेगये हैं और किस दिशामें लेगये हैं मेरा धन मिलेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! चोर ९ थे वह उत्तरदिशाको धन लेगये और अब तेरे दिन नाकिश हैं सो तू जबर उद्योग कर और दुर्गाका आराधन रख पाठ करवा फिकर मत कर कुछ देरसे धन लगे धन आवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ४९९ ॥ हुक्मी

शकल ∻ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मुझको एक मनुष्यने भालदी है एक जगह एक साहूकारके मकानमें धन बताया है सो मेरा दिल चोरीकरनेको है सो चोरी कब करूं और माल मेरे हाथ आवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन बहुत नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर अब धन तेरे हाथ नहीं लगेगा और जान जोखिममें पडेगी सो तू चोरी मत कर तुझको लाभ नहीं है और अब २५ दिन बाद तेरे दिन अच्छे आवेंगे सो तुझको और भी लाभ बहुत होगा सन्देह मत कर श्रीभगवतीके बीजमन्त्रका आराधन करवा सब बातका आनन्द होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५०० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें चोरी करनेकी है एक मनुष्यने कुछ धनकी एकके साज लाई है सो मेरा मन यह कहता है कि मैं चोरी करूं" सो हे पूछनेवाले ! तू इस जगे चोरी मत कर क्योंकि तेरी चोरी जाहिर हो जायगी और राजासे तुझको बहुत जुर्माना होगा सो तू मत कर हे पूछनेवाले ! चोरीमें कोई जबर साहूकार हुआ नहीं सुना इससे तू चोरी मत कर तुझको विगर चोरी ही फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ इति पञ्चदशस्थानफलं समाप्तम् ॥ अथ षोडशस्थानफलं प्रारभ्यते ॥ पिण्ड ॥ ॥ ५०१ ॥ हुक्मी शकल ∻ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थ यात्राका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें तीर्थ यात्रा करनेकी है परन्तु बहुत दिन हुए हो नहीं सकती और मेरी तीर्थयात्रा होगी तो सुखसे होगी या दुःखसे" हे पूछनेवाले ! तेरी तीर्थ यात्रा अब होगी क्योंकि अब तेरा पुण्योदय हुआ है और रास्तेमें भूखे अपाहजोंको कुछ देता रहना जिस करके तंदुरुस्ती रहेगी और जो तुझपर हाथ डालेगा वह तेरे

पुण्यके प्रतापसे जाहिर हो जावेगा सो तू फिकर मत कर तेरी तीर्थ यात्रा बहुत अच्छी होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५०२॥ हुकमी शकल ⚍ उकला मुनकलीव शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनो-रथ तीर्थयात्राको बहुत दिनोंसे कर रहा है परन्तु कुछ न कुछ विघ्न हो जाता है गृहस्थका सबब जबर है और दिल भी धीरज नहीं धरता क्योंकि अबतक ऐसा कहीं जाना भी नहीं बना है" सो हे पूछनेवाले ! तीर्थ यात्रा करनी कुछ सामान्य नहीं क्योंकि इस तीर्थ यात्राके तुल्य और पुण्य नहीं होता है सो अब तक तैंने पक्का मनसूवा नहीं किया था अब पक्का मनसूवा किया है सो तू तीर्थ यात्रा कर तेरी तीर्थयात्रा बहुत अच्छी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५०३॥ हुकमी शकल ⚌ अंकीश दाखिल शनि-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीजगन्नाथजीकी यात्राका है बहुत दिनोंसे इच्छा करता हूं परन्तु गृहसे निकास नहीं होता" सो हे पूछनेवाले ! अब तक तेरा पुण्योदय पूर्व जन्मका नहीं हुआ था यह श्रीजगन्नाथजीके दर्शन पूर्वजन्मके पुण्योदय बिगर नहीं होता है सो अब तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हुआ है सो अब तुझको श्रीजगन्नाथजीके दर्शन होवेंगे संदेह मत कर एक वार तो फिर भी जानेमें कोई दिनका अवरोध होगा परन्तु अब ५ मास भीतर तेरी तीर्थयात्रा (श्रीजगन्नाथजीके दर्शन) होगी पुण्य ज्यादे करना कुशलता रहेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५०४॥ हुकमी शकल ⚌ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछ-ता है कि जब मेरे मनमें श्रीजगन्नाथजीके दर्शनकी आई उसी वक्त कोई न कोई अवरोध होजाता है दिलमें दर्शनोंकी लग रही है परन्तु

होने नहीं पाते" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पहले और इस जन्मका ऐसा पुण्य नहीं कि जिसकरके तुझको दर्शन होवें सो तू पुण्य कर तेरे श्रीजगन्नाथजीके दर्शनोंमें कुछ देर है संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९०५॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अपने शरीरके सुखका है, तू पूछता है कि मेरा दिल निहायत नाराज रहता है और मेरा दिल नहीं लगता है और घरके मनुष्य मेरी संमतिमें नहीं हैं और मुझको उनकी संमति अच्छी नहीं लगती और जो मैं किया चाहता हूं सो भी नहीं होसकता सो मेरा मनोरथ यह है कि या तो मैं इस जगहसे चला जाऊं या मेरा कार्य्य सब पृथक् होजावे और मेरा अब १० माससे रोजीना जब्त है मेरा हाथ भी शख्त है और घरमें दौलत बहुत है परन्तु मेरी एक कौडी भी नहीं है सो मैं यह पूछता हूं कि मैं अपने हाथ माथे कब होजाऊंगा" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरे दिन अब निहायत नामाफिक हैं तू २ वर्ष ७ मास ११ दिनसे कैदसमान है और अब भी तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो ३ मास भीतर तू अपने हाथ माथे होजावेगा, परन्तु संदेह तुझको ज्यादे बढेगा इससे तू पितरोंके वास्ते नेक ब्राह्मणको एक सुवर्णकी मूर्ति ९ पलकी बनवा और पूजन करवाकर दे तुझको सन्तानका भी सुख होगा तुच्छ कार्यमें निगाह मत दे बडोंका यश देख सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९०६ ॥ हुक्मी शकल ☱ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरसे जुदा होनेका है सो तू पूछता है कि हमारे घरमें जो मुरव्वीं बन रहे हैं उनमें तो अक्ल बालककीसी भी नहीं है और घरमें दिन रात औरतोंका क्लेश रहता है और मरदोंके भी दिल फट रहे हैं अपना सब चाहते हैं सो मैं यह पूछता हूं कि इससे धनका भी

नुकसान है और घरके क्लेशसे इज्जत भी बिगडती है जो निहायत शत्रु थे वे अब इस हालको देखकर बहुत खुशी होते हैं सो मैं यह पूछता हूं कि यह क्लेश कब मिटेगा और शीर जुदा कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे पितृदोष है तू पितरोंके वास्ते गायत्रीके पुरश्चरण और गयाश्राद्ध करा फिर यह क्लेश सब दूर होगा फिकर मत कर और शीर भी फौरन जुदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥ ५०७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुहाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें बहुत दिनोंसे बद्रीनारायणके दर्शनोंकी लग रही है परन्तु अबतक जाना न बना जब मनोरथ करूं तब ही कोई विघ्न बीचमें आपडता है सो अब यह पूछता हूं कि श्रीबद्रीनारायणके दर्शन मेरे प्रारब्धमें है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! ये श्रीबद्रीनारायणके दर्शन कुछ सामान्य नहीं हैं पूर्वजन्मका पूर्णभाग्योदय होवे तब इस उत्तराखण्डका दर्शन होता है और श्रीबद्रीनारायणका दर्शन तो बहुतहीं पुण्योदय होवे तब होता है सो तुझको दर्शन अब होवेंगे उद्यम कर संदेह मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥५०८॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मैं अब बद्रीनारायण जानेका मनोरथ करता हूं सो मुझको श्रीबद्रीनारायणके दर्शन कुशलतासे होवेंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तू दर्शनोंके वास्ते गमन कर तेरा पूर्वजन्मका पुण्य बहुत ज्यादे हैं तू संदेह मत कर तुझको दर्शन कुशलतासे होगा और बहुत आनन्द होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५०९॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवास तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मैं सेतुबन्ध रामेश्वरकी यात्रा किया चाहता हूं सो बहुत दिनोंसे मनोरथ करता हूं

परन्तु गृहस्थके सबबसे नहीं होसकता सो अब मैं यह पूछता हूं कि मेरी सेतुबंध रामेश्वरकी यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरा पहले जन्मका बहुत पुण्य है परन्तु अबतक उदय नहीं हुआ है अब ३ मास बाद उदय होनेवाला है सो अब (३ मास बाद) तुझको बरजरूर दर्शन होवेंगे सो तैंने पुण्य खूब करना धनका यही फल है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ सेतुबन्धरामेश्वरके दर्शन करनेका है कुशलतासे मुझको दर्शन होवेंगे या नहीं"सो हे पूछनेवाले ! तेरा पूर्व जन्मका पुण्य ज्यादे है सो अब उदय हुआ है इससे अब तुझको दर्शन बहुत कुशलतासे होवेंगे सन्देह मत कर पुण्य करना पहले जन्मका किया तो अब पाया है अबका किया आगे पावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५११ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे मनमें द्वारकाजीकी यात्राकी बहुत दिनोंसे लग रही है परन्तु गृहस्थके व्यापारकरके दर्शनोंके वास्ते गमन नहीं होसकता सो अब मैं यह पूछता हूं कि मेरी श्रीद्वारिकाके दर्शनोंके वास्ते यात्रा होगी या नहीं"सो हे पूछनेवाले ! तू संदेह मत कर अब तेरी यात्रा होनेवाली है सो अब तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हुआ है अब ५ मास बाद तेरी यात्रा होगी पुण्य करना इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ द्वारिकाकी तीर्थयात्राका है सो यात्रा सुखसे होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी यात्रा बहुत आनंदसे होगी क्यों कि तैंने पहले जन्ममें पुण्य किया है उस पुण्यके-प्रतापसे संदेह मत

कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१३ ॥ हुक्मी शकल ⠿ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ पुष्करयात्राके वास्ते बहुत दिनोंसे है परन्तु गृहस्थके व्यापार और मंदभाग्यता होनेसे पुष्करयात्रा नहीं होती सो मैं पूछता हूं कि श्रीपुष्करजीमें स्नान होगा या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरे दिलमें यथार्थ अब जची है अबतक तेरे पूर्वजन्मका पुण्योदय नहीं हुआ था सो अब हुआ अब १ मासमें पुष्करस्नान होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१४ ॥ हुक्मी शकल ⠿ कबजुलदाखिल सूर्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे दिलमें पुष्करजीके स्नानकरनेकी है पुष्करजीका स्नान होगा या नहीं और सुखसे होगा या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! कार्तिक सुदि ११ एकादशीसे लेकर ५ दिन पंचभीष्म कहाते हैं सो इन ५ पांच दिनोंमें पुष्करजीमें सब तीर्थ आते हैं सो पंचभीष्मोंमें पुष्करमें स्नानका यह फल है कि जैसा सब तीर्थोंमें किया सो तू स्नान कर तेरा पूर्वजन्मका पुण्य है तुझको सब बातका सुख रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ५१५॥ हुक्मी शकल ⠿ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीगंगाजीके स्नानका बहुत दिनोंसे है परन्तु मनोरथ सिद्ध नहीं होता सो मैं यह पूछता हूं कि मेरा स्नान श्रीगंगाजीमें होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! श्रीगंगाजीका स्नान कुछ कमती नहीं है जिसके स्नानकी देवता भी अभिलाषा करते हैं सो तेरा पूर्वजन्मका पुण्य ज्यादे है परन्तु अबतक उदय नहीं हुआ है सो अब २ मास भीतर उदय होगा इसलिये तुझको सर्वपापमोचनी श्रीगंगाजीमें स्नान करावेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१६ ॥ हुक्मी शकल

☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल श्रीतीर्थयात्राका है सो तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीगङ्गाजीके स्नानका है सो स्नान होगा या नहीं और स्नान होगा तो सुखसे होगा या दुखसे" सो हे पूछनेवाले ! तू सच पूछता है क्योंकि सर्वपाप मोचनी श्रीगंगाजीका स्नान पूर्वभाग्योदय विगर नहीं होता है सो अब तेरा पूर्वभाग्योदय होता है संदेह मत कर स्नान जरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकली शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि बहुत दिनोंसे मेरा मनोरथ प्रयागकी यात्राका है परन्तु जाना नहीं बनता सो अब बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरा स्नान बरजरूर बनेगा यद्यपि श्रीप्रयागका स्नान मन्दभाग्योंको मुशकिल है परन्तु तेरा पूर्वजन्मका पुण्य ज्यादे हैं अब स्नान होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ प्रयागके स्नानका है सो स्नान होवेगा या नहीं और स्नान होवेगा तो सुखसे होवेगा या दुःखसे" हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय पूर्वजन्मका हुआ है सो तू स्त्रीको संगमें लेकर स्नानकर गंगा यमुना सरस्वतीका स्नान पूरे भाग्यसे होता है सो तू कर सुखसे होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५१९ ॥ हुक्मी शकल ⚌ अंकीश शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि श्रीशिवपुरी काशीजीकी यात्राकी बहुत दिनोंसे मनमें लग रही है परन्तु जब मनोरथ किया तब पार न पडा सो अब यह पूछता हूं कि मेरी श्रीविश्वनाथपुरीकी यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विश्वनाथपुरीका दर्शन पूर्णप्रारब्धीको ही होता है सो अब

तेरा पूर्वजन्मका भाग्योदय हुआ है सो अब जल्दी ही काशीजीका वास होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५२० ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है "हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ काशीजीमें विश्वनाथके दर्शन करनेका है सो दर्शन होंगे या नहीं और जो होंगे तो सुखसे होंगे या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पूर्वजन्मके पुण्यका उदय अब हुआ है सो अब तुझको विश्वनाथ-पुरीके दर्शन होंगे और बहुत आनन्द रहेगा सन्देह मत कर यह दर्शन पूर्ण पूर्वजन्मके तप बिना नहीं होते हैं सो फिकर मत कर दर्शन जल्दी ही होंगे सुख रहेगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ ५२१ ॥ हुक्मी शकल ⚌ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे है कि ब्रह्मपुत्र तीर्थकी यात्रा करूं परन्तु जब मनोरथ करता हूं उसी वक्त कोई विघ्न होजाता है" सो हे पूछनेवाले ! जो तदबीर करता है वह नहीं लगती सो अब तेरा पूर्व जन्मके पुण्यका उदय हुआ है सो अब १ मास ७ दिन बाद तेरी ब्रह्मपुत्रकी यात्रा होगी परन्तु अब तेरे दिन जरा नाकिश हैं इसी कारणसे तेरा दिल भी बिगडा रहता है सो तू श्रीमती भगवती मंगलमूर्तिका आराधन कर और दुर्गापाठ करवा बलिदान दे तेरे व्यापारमें लाभ भी बहुत होगा और तीर्थयात्रा भी होगी और फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥५२२॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ अब ब्रह्मपुत्र तीर्थकी यात्रा करनेका है सो इस यात्रामें किसी प्रकारका क्लेश तो न होवेगा और शरीरको सुख होगा यह पूछता है" सो हे पूछनेवाले ! पूर्वजन्मके पुण्यका उदय अब हुआ है सो तू यात्रा कर तुझको किसी बातका फिकर न होगा संदेह मत

कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५२३ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्रुत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे मनमें बहुत दिनोंसे गयाजीकी यात्रा करनेकी है" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा मनोरथ तो बहुत दिनोंसे है परन्तु गृहस्थके व्यापारकरके जाना नहीं हुआ सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन निहायत नाकिश थे परन्तु अब १९ दिन बाद तेरे दिन अच्छे आनेवाले है सो संदेह मत कर अब तेरे पितरोंका गयाश्राद्ध होगा और अब तेरे सब बातका आनन्द होगा फिकर मत कर अब तेरे पितर प्रसन्न हैं गया पितरोंकी करवा अब होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५२४ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतबेखारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे कुटुंबमें प्रथम तो उज्वल संतान नहीं होती और होती है तो जीती नहीं सो मेरा मनोरथ गयाश्राद्ध करवानेका है सो यात्रा किस विधि करूं और करनेके पीछे मुझको संतानका सुख होगा या नहीं सो हे पूछनेवाले ! प्रथम तो श्रीगायत्रीका एक पुरश्चरण सवालक्ष नेकब्राह्मणोंसे करवा और श्रीमद्भागवतका श्रवण कर और तद्दशांश हवन, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मणभोजन बहुत प्रीतिसे कर और जो तीर्थ रास्तेमें आवे उसतीर्थमें श्राद्ध कर और आश्विनमें या माघमें ४९ श्राद्ध श्रीगयामें करवा फिर तेरे सन्तानका सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५२५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मंगलेदबताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरे मनमें श्रीअयोध्याजी जानेकी बहुत दिनसे है परन्तु जाना बनता नहीं जब मनोरथ करता हूं तब कोई ऐसा विघ्न होता है कि जाना नहीं बनता सो अब मैं यह पूछता हूं कि मेरा जाना बनेगा या नहीं और जाना बनेगा तो

कब होवेगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तक तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय नहीं हुआ है अब ९मास२१दिन बाद पुण्योदय होगा सो इस अवधि बाद तेरा कार्य्य बनेगा पुण्य करना इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५२६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीअयोध्याजीकी यात्रा करनेका है सो यह पूछता है कि यह यात्रा अब होगी या नहीं और होगी तो सुखसे होगी या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरी यात्रा होगी संदेह मतकर और बहुत आनन्दसे होगी तेरा तप जबर है तू पहले जन्ममें पूर्व दिशामें श्रीदामानाम ब्राह्मण था और श्रीरघुनाथजीकी तेरे भक्ति भी बहुत थी सो तेरे ऊपर रघुनाथजी प्रसन्न हुए और कहने लगे कि हे पुत्र ? वर मांग सो तैंने रघुनाथजीकी भक्ति ही मांगी इस कारणसे तेरी इस जन्ममें भक्ति ज्यादा है सो तू फिकर मत कर तेरी तीर्थयात्रा अच्छी होगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५२७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि बहुत दिनोंसे मेरा मनोरथ मथुराजीकी यात्राका है परंतु जब मनोरथ करता हूं उस वक्त कोई ऐसा काम आता है कि जाना नहीं बनता सो अब यह पूछता है कि मेरा जाना बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तक तो पूर्वजन्मका पुण्योदय तेरा नहीं हुआ है परन्तु अब ९ मास २१ दिनमें तेरा पुण्योदय होगा सो तब तेरा जाना बनेगा सन्देह मत कर यह श्रीमथुराजीकी यात्रा बहुत उत्तम है जो वहांका भंगी हो उसको भी स्वर्ग मिलता है फिकर मत कर तेरी यात्रा बरजरूर होगी इति प्रश्न ॥ पिंड॥५२८॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है मेरा मनोरथ मथुराकी यात्राका है सो यात्रा होगी या नहीं"

सो हे पूछनेवाले ! तू सन्देह मत कर अब तेरी मथुरा यात्रा होगी अव तेरा पूर्व जन्मका पुण्योदय हुआ चाहता है यह यात्रा पुण्योदय विगर नहीं हुआ करती और पूर्वजन्ममें तू मध्यदेशमें वैश्य था सो श्रीकृष्णका निहायत भक्त था और जो श्रीकृष्णके चरित्र थे सो तू रातदिन चिन्तवन रक्खा करता था सो जिस वक्त तेरा शरीर पूरा हुआ उस वक्त तू स्वर्गको नहीं गया तैंने श्रीकृष्णजीकी भक्ति हीं वरी सो हे पूछनेवाले ! अब तुझको सब दर्शन होंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५२९ ॥ हुक्मी शकल ≡ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीयमुनाके स्नान करनेका है सो जब मनोरथ करता हूं उसी वक्त कोई अवरोध हो जाता है सो मैं पूछता हूं कि मेरा स्नान होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! श्रीयमुनाजीका स्नान कुछ सामान्य नहीं है जो यमुनामें स्नान करके दान किया करते हैं वे धर्मराजकी यातना नहीं भोगते क्योंकि यह धर्मराजकी बहन है और अब तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय हुआ है सो अब १ मास ५ दिन बाद तुझको दर्शन होंगे सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३० ॥ हुक्मी शकल ÷ कवजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीयमुनाजीके स्नानका है सो स्नान होगा या नहीं और होगा तो सुखसे होगा या दुःखसे" सो हे पूछनेवाले ! यमुनाजीमें तेरा स्नान होनेवाला है परन्तु अब तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो १७ दिन बाद तुझको बीमारी होगी उसकी तदबीर करना सो तुझको जन्म पत्रसे सामान्य मारक है सो प्रथम जितनी तेरी ताकत हो उतना नवग्रहोंका दान और जप करवाना आराम जरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३१ ॥ हुक्मी शकल ÷ कवजुलखारिज राहुग्रह-

की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थ-यात्राका है सो तू पूछता है कि मेरा मनोरथ पिण्डारे तीर्थमें जानेका बहुत दिनोंसे था परन्तु जब जानेकी तजवीज करता हूं उस वक्त कोई विघ्न हो जाता है" सो हे पूछनेवाले ! तुझको तकलीफ पितृदोषसे है और तेरे कुटुम्बमें बधेवा भी नहीं है और हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे दिन भी निहायत नाकिश थे और अब दिन तुझको सामान्य हैं न तो बुरे और न अच्छे सो अब उद्योग कर अब तेरा पिण्डारे जाना होगा और तेरा मनोरथ सब सिद्ध होगा सो तू पहले तो जितनी तेरी ताकत होय उतना श्रीगायत्रीका जप करवा और पीछे भागवतका श्रवण कर और पीछे श्रीपिण्डारेश्वरतीर्थमें पितरोंका श्राद्ध करवा सब बातका आनन्द होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है सो तू पूछता है कि मेरे दिलमें पिंडारेमें पित्रीश्वरोंका श्राद्ध करवानेका है सो श्राद्ध होगा या नहीं और जो होगा तो मेरा मनोरथ सिद्ध होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन निहायत नाकिश हैं परन्तु अब १० दिन बाद तेरे दिन अच्छे आवेंगे सो अच्छे दिनोंमें पिंडारेश्वर तीर्थमें तेरे पित्रीश्वरोंका श्राद्ध होगा सन्देह मत कर तेरा सब मनोरथ सिद्ध होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३३ ॥ हुक्मी शकल ∸ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती हैं कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुरु-क्षेत्रयात्राका है तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ कुरुक्षेत्रकी यात्राका बहुत दिनोंसे है सो इस कुरुक्षेत्रमें जब मनोरथ करूं उसीवक्त कोई विघ्न हो जाता है सो अब जाना होवेगा या नहीं"सो हे पूछनेवाले!तेरी यात्रा अब होगी क्योंकि श्रीकुरुक्षेत्रका स्नान और दान पूर्णकर्मविगर नहीं हुआ करता सो अब तेरा पहले जन्मका पुण्योदय हुआ है सो हे पूछने-

वाले! पहले जन्मका अजाब दूर हुआ और अब तेरा पहले जन्मका पुण्यउदय हुआ है अब कुरुक्षेत्र यात्रा होगी फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥५३४॥हुक्मी शकल ⚏ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल तीर्थयात्राका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ श्रीकुरुक्षेत्र यात्राका है सो कुरुक्षेत्र यात्रा होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी कुरुक्षेत्र यात्रा अब होगी तेरी यात्रामें अब कुछ देर नहीं है क्योंकि तेरा पहले जन्मका पुण्य उदय हुआ है तू पहले जन्ममें दक्षिणदेशमें हरिभक्त नाम करके ब्राह्मण था सो तैंने भगवान्की भक्ति बहुत की और निर्धन होनेसे तुझसे दान नहीं बना और दानके करनेकी अभिलाषा बहुत रही तेरी ऐसी भक्तिको देख-कर भगवान् प्रसन्न हुए सो यह वर दिया कि तेरे हाथसे दान अगले जन्ममें कुरुक्षेत्रमें होगा उस वरदानका अब समय आरहा है सो अब स्नान दान होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३५॥ हुक्मी शकल ⚏ अकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके दर्शनका है तू पूछता है कि देवताके दर्शनोंकी बहुत दिलमें लग रही है सो जब २ मनोरथ करता हूं सिद्ध नहीं होता कुछ न कुछ विघ्न होजाता है सो अब मुझ-को देवदर्शन होंगे या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अबतक तेरे पूर्वजन्म-का पुण्योदय नहीं हुआ था परन्तु अब १५दिन बाद तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय होगा सो तुझको बरजरूर दर्शन होंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५३६ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके दर्शनका है तू पूछता है कि मेरा मनोरथ देवताके दर्शनका है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पूर्वजन्मका पुण्योदय होरहा है इसीसें तेरे दिलपर देवताके दर्शनकी धारणा हुई है सो अब कुछ क्लेश तो तेरे शरीरको होगा परन्तु देव दर्शन तुझको बहुत अच्छी तरहसे होंगे

सन्देह मत कर ईश्वर सब आनन्द करेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९३७॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित्त चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल स्वर्ग या नरकका है सो पूछता है कि मेरा शरीर पूरा हुए पीछे मैं स्वर्गको जाऊंगा या नरकको" सो हे पूछनेवाले ! तू स्वर्गको जायगा संदेह मत कर क्योंकि जैसा तुझसे जवान अवस्थामें पाप बना था वैसा पुण्य भी बना है और जब तुझसे पाप हुआ तब तुझको विशेष ज्ञान नहीं था और अब तो तू बहुत पछताता है और जो तैंने पुण्य किया सो नरक और पापकी भीतिसे किया परन्तु अब वे पाप जब तेरे दिलमें आते हैं तब तेरा दिल बहुत घबराता है सो तू पुण्य कर जीवोंपर दया रख दिलमें सबर रख अपनी ताकत माफिक शय्यादान जमीनका दान और गौदान कर संदेह मत कर ईश्वरका भजन कर तू स्वर्गको जावेगा फिकर मत कर भजन कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३८ ॥ हुक्मी शकल ☷ तुस्तुत खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल इस शरीरकी गतिका है तू पूछता है कि मेरा यह जीव स्वर्गको जावेगा या नरकको" सो हे पूछनेवाले ! ये शरीरभी यदि स्वर्गको जावेंगे तो नरकको कौन शरीर जावेंगे सो जन्म लिये पीछे तेरे हाथसे या दिलसे या जबानसे किसीका भला नहीं हुआ शरीर दिल और वाणीसे तुझसे बुरा बहुतोंका हुआ है सो तू नकरको जावैगा और हे पूछनेवाले! पहले जन्मका भी तेरा पुण्य नहीं है सो तू पहले जन्ममें दक्षिण दिशामें चांडाल था सो एक तेरे दिलपै दया आगई थी कि तैने जीव हिंसा नहीं करी उस दयाके कारणसे तू द्विजन्मा हुआ है परन्तु अब तेरे दया पुण्य नहीं रहा सो हे पूछनेवाले! जो तू स्वर्ग चाहे तो तीर्थ दान जप कर नहीं तो रौरव नरक तेरे वास्ते तैयार है और जो तैंने कुछ पुण्य किया है सो ऐहलौकिक फलके वास्ते किया है परलोकके वास्ते कुछ नहीं किया सो पुण्य कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३९ ॥ हुक्मी

शकल ⚍ नुस्तुदाखिल बृहस्पतिकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है सो तू पूछता है कि मुझको सन्तानका सुख नहीं हुआ एक विवाह पहले करवाया था फिर उस औरतसे सुख नहीं हुआ फिर उसकी इजाजत लेकर उसके जीते ही और विवाह करवाया सो उसके भी सन्तानका सुख न हुआ सो अब यह पूछता है कि मेरे औरस सन्तानका सुख है या नहीं" सो तेरे पहले जन्मका अजाब है पहले जन्ममें पूर्वमें क्षत्रीके घर तेरा जन्म हुआ था सो तू ग्रामका सरदार था और दूसरे किसी मनुष्यकी नहीं चलने देता था अपनी बातको ऊपर रखता था पाप पुण्यको नहीं गिनता था सो तेरे एक लडका हुआ था सो परवस्त हुआ जब वह तुझे बरजने लगा कि तू पापके काम क्यों करता है सो तैने उसका कहा न माना और क्रोधमें आकर वह लडका तैने ग्रामसे निकाल दिया सो उस वक्त तो उसकी औरत उसके संग न गई फिर लौटकर वह लडका आया नहीं वह संन्यासी होगया सो उसकी औरत अपने पातिव्रतधर्ममें तत्पर रही उस औरतको भी तुमने बहुत तकलीफ दी सो उसने तुझको शाप दे दिया था कि तुझको दूसरे जन्ममें सन्तानका सुख न होगा और तेरी औरत तुझको निहायत तकलीफ देगी सो हे पूछनेवाले ! तू एक लडका और एक औरतकी सुवर्णकी मूर्ति बनवा और पूजन करके शय्यामें बैठा वह शय्या सब वस्तु जेवर समेत नेक ब्राह्मणको दे सन्तान सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५४० ॥ हुकमी शकल ⚎ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है तू पूछता है कि पहले मेरी औरतसे सन्तानका सुख न हुआ फिर उसी औरतकी इजाजत लेकर और औरत विवाही सो उससे भी सन्तानका सुख न हुआ सो अब यह पूछता है कि मुझको सन्तानका सुख होगा या नहीं" सो. हे पूछनेवाले ! तुझको

औरस पुत्रका सुख नहीं होगा और गोदका भी तब होगा कि जब ७ पल सुवर्णकी मूर्ति बनवाकर रेशमी वस्त्र सहित संकल्पकरके नेक ब्राह्मणको दे तेरा पहलेजन्मका शाप दूर होगा गोदका सुख होगा फिकर मत कर और जो तू औरसपुत्रका ही सुख चाहे तो एक बहुत अच्छा मकान बनवाकर सब वस्तु समेत कुटुंबी नेक ब्राह्मणको दे तेरे सन्तान होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५४१॥ हुक्मी शकल ÷ नकी सुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्माके दर्शनका है सो तू पूछता है कि मुझको ब्रह्माका दर्शन होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ? ब्रह्माका दर्शन होना बहुत मुश्किल है सो तुझको दर्शन न होगा क्योंकि दर्शन ज्ञान तथा भक्तिसे होते हैं सो तुझको ज्ञान नहीं है यह पूर्वजन्मका शाप है सो पहले पहले जन्ममें तू शूद्र था तब बाल्य अवस्थामें तैंने कुछ द्विजकी टहल की और जब समर्थ हुआ किसीको भी नहीं मानता भया सो तेरा पिता शाप देता भया कि रे दुष्ट ! तू नास्तिक हो सो उस जन्ममें तो शापकी भीतिसे तैंने नास्तिकपना नहीं किया अब फल हुआ है सो तेरेको रौरव नरक तैयार है अब भी कुछबचाव चाहे तो दान भक्ति कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५४२ ॥ हुक्मी शकल ⁚ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले ? तेरा सवाल ब्रह्मदर्शनका है सो पूछता है कि "मुझको ब्रह्मदर्शन होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ? जैसा तुझको अब ज्ञान है वैसा ही सदा रख चित्तको मत चलने दे सब जीवोंमें एकब्रह्म समझ तुझको बरजरूर दर्शन होगा तेरे पाप तो क्षीण हो गये हैं परन्तु कभी दिल उलटता है सो इसको रोक फिकर मत कर तुझको अब दर्शन होनेवाले हैं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५४३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्तमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मोक्षका है तू पूछता है कि मेरा मोक्ष होगा या

नहीं" सो हे पूछनेवाले ! मोक्षको तों जितने सामान्य ज्ञात हैं व सब ही चाहते हैं परन्तु कर्म विगर नष्ट हुए मोक्ष नहीं होता है सो हे पूछनेवाले ! इन कर्मोंको देखें तो तेरे लिये उत्तम नरकमें भी सन्देह है अधम महारौरव नरकमें जावेगा सो मोक्षकी पीडा देख पुण्यदान कर जिससे भक्ति होवे भक्तिसे यज्ञादिक होते हैं यज्ञादिकोंसे ज्ञान होता है जिससे भक्ति है सो पैडी २ चढ तैंने वृथा मनुष्योंका अनादर किया है सो पहले किया अब पाया और अब किया आगे पावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥५४४॥हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है "कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ब्रह्मदर्शनसे मोक्षका है तू पूछता है कि मेरा मोक्ष होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मोक्ष होरहा है तू जीवन्मुक्त है तेरा प्रथम तो पहले जन्मका ही कर्म अच्छा था परन्तु इस जन्ममें तरुणावस्थामें कुछ निन्दित कर्म बनआया सो अब संन्यासके लेनेसे सब वस्तुके त्यागनेसे दूर हुआ सो तेरा मोक्ष होवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥५४५॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवमंदिरका है तू पूछता है कि देव सत्य है या मिथ्या है" सो हे पूछनेवाले ! देवता तो सत्य है परन्तु अब मनुष्य विगर पानीका कांच है सो विगरपानीके कांचमें मुख देखा चाहे सो तो प्रत्यक्ष है परन्तु दीखता नहीं सो जिस मनुष्यके भजन तपस्यारूपी पानी है उनको दीखते हैं वह किसीसे कहते नहीं सो देवता तो सत्य ही है इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ५४६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है सो तू पूछता है कि मेरे मनमें यह सन्देह है कि मुसलमान तो और धर्म मानते हैं और ब्राह्मण और धर्म मानते हैं इसी प्रकारसे शास्त्रोंमें भी बहुत धर्म दिखाये हैं सो कौनसा धर्म सत्य है" सो हे पूछनेवाले ! जो शास्त्रमें

कहे हैं वेही धर्म सत्य श्रीमनुजी और याज्ञवल्क्यजी जो धर्म कह गये सो सत्य हैं इन्होंने ब्राह्मणसे लेकर चांडाल पर्यन्त सबके धर्म कहे हैं सो सत्य हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ५४७ ॥ हुक्मी शकल ∴ कब्जुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल परीक्षाका है तू पूछता है कि यह प्रश्न शास्त्र सत्य है या नहीं और तुझको किसीका निश्चय भी नहीं है सो तू ऐसा प्रश्न करता है जो पावे नहीं।" सो हे पूछनेवाले ! तेरा प्रश्न न मिलेगा क्योंकि तेरे दिलमें शक है प्रश्न कब मिलता है कि प्रथम तो अपने दिलको साफ करे पीछे अपने कुल देवताकी आराधना करे फिर अपनी श्रद्धा माफिक धन लेकर प्रश्नका चिन्तवन करता हुआ प्रश्न कहनेवालेके पास जावे फिर कहनेवालेको देवताकी तुल्य माने और बहुत दिलसाफ होकर पूछ तब मिलता है सो फिर करना फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५४८ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल परीक्षाका है तू यह पूछता है कि मेरा प्रश्न बतलाया जायगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! सब वस्तुमें विश्वास कारण है सो तुझको पक्का विश्वास नहीं हुआ पक्के विश्वास विगर प्रश्न नहीं मिलता है इनमें तो विश्वास ही कारण है तेरा प्रश्न गुप्त नहीं प्रसिद्ध है और मतलबका भी है अविश्वासके कारणसे नहीं कहा तुम्हारा अविश्वास ही मुख्य प्रश्न है सो विश्वास करके अपने मकानसे विचारके फिर कर प्रश्न बरजरूर मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५४९ ॥ हुक्मी शकल ∸ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है तू पूछता है कि मुझे सन्तानका सुख नहीं हुआ और शास्त्रोक्त विधिसे तजवीज भी बहुत की और जो जिसने बतलाया सो भी किया" सो हे पूछनेवाले ? तैने सन्तानके वास्ते यत्न किया और धन

लगाया परन्तु एक तो तू शुद्ध नहीं रहा और औरतोंसे संग किया और तेरी औरतके बीमारी रही और विश्वास भी कम रहा सो विश्वास करिके और जितेन्द्रिय रहकर केवल एक अपनी औरतसे संग कर जो तजबीज पहलेकी है वही कर फिर तेरे सन्तान जरूर इसी औरतके होवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ इति षोडशस्थानं समाप्तम् ॥ इति चतुर्थपरिच्छेदः ॥ इति रमलगुलजारस्य पूर्वार्द्धः समाप्तः ॥ अथ रमलगुलजारस्योत्तरार्द्धं प्रारभ्यते ॥ अथ संकीर्णप्रश्नाः ॥ पिण्ड ॥ ५५० ॥ ☰ "इसका प्रश्न यह है हमारा भाग्योदय होगा या नहीं" इस आदमीका भाग्योदय पूर्वदिशाके व्यापारसे होगा इसको पहले दिनोंकी गरदिश बहुत रही मित्र भी दुशमन होगए दिनोंकी गरदिशसे जो काम किया उसहीमें नुकसान हुआ अब फायदा व्यापारहीसे होगा पूर्वसे भाग्योदय अच्छा होगा परन्तु श्रीसूर्य्यनारायणका आराधन रखना आदित्यहृदयका ५।१००० पाठ करवाना यथाशक्ति सूर्य्यका व्रत कर २१ दिन पीछे भाग्योदय अच्छा होगा २ वर्ष ४ मास पीछे कुछ लाभ होगा धन भाग्योदय एक वर्ष पश्चात् होगा इति प्रश्न ॥ ५५१ ॥ ☰ प्रश्न "कौन दिशासे लाभ है" इसको पूर्व दक्षिणसे लाभ होगा श्वेत काली वस्तुके व्यापारसे फायदा होगा परन्तु शिवार्चन करना पक्षप्रदोषका व्रत करना सवालक्ष शिवार्चन करवाना तथा षडक्षरी मन्त्रका जप करवाना तिससे लाभ होगा कुछ विस्मय नहीं होगा मास ५ पीछे फायदा अच्छा होगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ ५५२ ॥ ☰ "प्रश्न सफेद वस्तुका व्यापार किया है" सो कुछ मध्यम फायदा होगा कुछ धनकी प्राप्ति होगी नहीं इसको प्राप्ति व्यापारसे सुफेदसे लहना तो अच्छा है परन्तु दिन साधारण हैं इससे प्राप्ति मध्यम होगी १२० दिन पश्चात् प्राप्ति अच्छी होगी मंगलका व्रत करना शिवार्चन करना तिससे प्राप्ति अच्छी होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५५३॥ ☰ "प्रश्न

कालीवस्तुसे लाभका है " दक्षिणदिशामें प्राप्ति होगी काली वस्तुके व्यापारसे पहले इसको नुकसान जियादा रहा चित्तको उद्वेग रहा दिनोंकी गरदिश बहुत है अगर श्रीजीकी कृपासे बच गया तो अब फायदा अच्छा होगा परन्तु कालीजीके ५१ पाठ करवाना व्रत गणेश ४ चौथका करना काली वस्तुसे लाभ होगा दक्षिण दिशामें १७९ दिन पश्चात् और वर्षके पश्चात् बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५५४॥ ⁘ प्रश्न इसका यह है कि "इसने व्यापारके वास्ते गुमास्ता भेजा है" सो सफेद वस्तु और रक्तवस्तुसे फायदा होगा दिन उसको अच्छे हैं फायदा अच्छा होगा परन्तु श्रीसूर्य्यका पुण्य रखना आदित्यहृदयके ५१ पाठ करना ११ व्रत करनेसे ६९ दिनके बाद प्राप्ति अच्छी होगी इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥५५५॥ ⁘ प्रश्न इसका यह है कि " हमारे घरमें एक शख्सको बीमारी है सो उस शख्सको आंखोंकी बीमारी है कुछ रातको कम दीखता है " सो इसको पहले जन्मका अजाब है इस शख्सने पूर्व जन्ममें कुछ पाप किया था उसकी शान्तिके लिये एक १ काली गऊ अच्छे सुपात्र ब्राह्मणको दे कपडे पहिनाय २२९ ब्राह्मण भोजन करा दान दे श्रीकालीजीके १५१ पाठ करानेसे भला होगा श्रीभगवती अच्छा करेंगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥५५६॥ ⁘ प्रश्न इसका यह है कि "हम दिशावर पूर्वमें दूकान करेंगे फायदा होगा कि नहीं " इस शख्सको पूर्व दिशासे फायदा है दूकानसे लाभ होगा अपने नामसे व्यापार विशेष श्वेतवस्तुका और पीली वस्तुका कर लाभ अच्छा होगा विशुद्ध होकर श्रीभवानीजीकी आराधना रखनी प्रत्येक व्यतीपातमें ब्राह्मण भोजन कराना यथाशक्ति दुर्गा ८ अष्टमीका व्रत करना एक वर्ष पीछे श्रीजीकी कृपासे फायदा अच्छा होगा॥ निर्विघ्नतासे एक वर्षबाद दूकानपर जियादा काम चलेगा लाभ बहुत होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५५७ ॥ ⁘ प्रश्न इसका यह है कि "हम दक्षिणमें जायँगे या दूकान (रोजगार) दक्षिणमें करेंगे सो

फायदा होगा या नहीं" इसको फायदा अच्छा होगा काली वस्तुके व्यापारसे विशेष करनेसे फायदा होगा अबतक दिन नाकिश थे जब ही जानेका कुछ विचार किया तभी कुछ विघ्न हो गया दिनोंकी गरदिशसे खरच जियादे और प्राप्ति स्वल्प हुई अब दक्षिणमें फायदा अच्छा होगा चित्त प्रसन्न रखना बृहस्पतिका पूजन और ५१००० जप कराना तथा आमवस्याको ब्राह्मणभोजन कराना यथाशक्ति पक्षप्रदोषका व्रत करना एक वर्ष पीछे फायदा अच्छा होगा श्रीजीकी कृपासे ५ मास १० दिन पश्चात विशेष लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५५८ ॥ ⚍ प्रश्न इस मनुष्यका यह है कि" हमको लाभ कब होगा हमको कितने दिन नाकिश और हैं" इस मनुष्यने दिनोंकी गरदिशमें जो तजवीज करी उसहीमें घाटा (नुकसान) रहा जिससे मित्रता थी उससे शत्रुता होगई इसको किसीसे यश नहीं रहा अब श्रीभवानीजीकी कृपासे लाभ व्यापारमें सुफेद वस्तुके लेन देनेसे परन्तु श्रीमहादेवजीका पूजन कराना चतुर्दशीव्रत करना अमावस्याको ब्राह्मणोंकी कन्या जिमानी यथारुचि ब्राह्मण १ जिमावना त्र्यम्बक मन्त्र जप२१००० इसके बाद लाभमें कुछ विघ्न नहीं होगा अब तेरे ९ मास ९ दिन और मध्यम हैं परन्तु विशेष तजवीज करनेसे लाभ अच्छा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५५९ ॥ ⚍ प्रश्न इस मनुष्यका यह है कि" हमारी पूर्वमें दूकान है रोजगारमें फायदा कब होगा" सो इस मनुष्यको पहले नुकसान है रोजगारमें फायदा कब होगा" सो इस मनुष्यको पहले नुकसान रहा दिन नाकिश हैं जो व्यापार किया उसहीमें नुकसान रहा क्योंकि दिन इसके बहुत नाकिश थे श्रीजीकी कृपासे तन्दुरुस्ती रहीं यही गनीमतकी बात है सो अब इसको पूर्वसे लहना होगा फायदा अच्छा होगा सुफेद वस्तुके देनेसे ४ मास १० दिन पश्चात् व्यापार दुकानपर अच्छा चलेगा धन बढेगा परन्तु ९१ दुर्गा पाठ कराना अष्टमीका व्रत करना नवमीको एक कन्याको भोजन कराना पश्चात् आप भोजन करना एक वर्ष पश्चात् लाभ विशेष होगा। पूर्वसे फायदा

अच्छा है फिकर मत कर दिलमें विश्वास रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ९६० ॥ ⁝ प्रश्न लाभका है इस मनुष्यको पहले वर्षमें लाभ अच्छा हुआ अबके वर्षमें नुकसान है कोई तदबीर करै उसमें नुकसान रहे यह वर्ष इसको साधारण है जो व्यापार करे उसमें चिन्ता लगी रहे सो लाभ होगा ३ मास २० दिन पश्चात् सुफेद रक्त वस्तुके लेने देनेसे लाभ होगा परन्तु गणेश ४ का व्रत करना ब्राह्मणको भोजन कराय आप करना "सर्वा बाधाविनिर्मुक्तः" इस मन्त्रका संपुट देकर चण्डी पाठ कराना दिन ९१ तथा ३१ फिर फायदा अच्छा होगा चित्त प्रसन्न रहेगा व्यापारमें फायदा होगा इसही ग्रामसे अथवा पूर्वसे फिकर मत कर अगले वर्षमें व्यापारसे धन बढेगा इति प्रश्न पिंड ॥ ९६१ ॥ ÷ " प्रश्न गमनमें लाभका है " इस मनुष्यने पहले दक्षिणमें यात्रा की उस यात्रामें कुछ फायदा नहीं हुआ शरीरमें भी खेद रहा चित्त नहीं लगा क्योंकि दिन इसको साधारण थे अब इसको पूर्वसे किसी मनुष्यके द्वारा फायदा होगा सो मनुष्य उज्वल है गौर रक्तवर्ण है मध्य अवस्था है उसके द्वारा व्यापारसे फायदा अच्छा होगा परन्तु श्रीकालीका इष्ट रखना अष्टमीका व्रत करना नवमीके रोज १ ब्राह्मणको भोजन करवाकर आप भोजन करना ९१ दुर्गापाठ तथा १ वर्ष तक पूजा करवाना पश्चात् पूर्वसे फायदा रहेगा १२३ दिन बाद लाभ अच्छा होगा दिन श्रेष्ठ आवेंगे लाभ विशेष होगा दश पांच दिनमें किंचित् अरिष्ट होगा पर कुछ फिकर नहीं करना इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९६२ ॥ ⁝ "प्रश्न यात्रा लाभका है" इस मनुष्यने प्रथम यात्रा पूर्वदिशाकी करी कुछ फायदा हुआ नहीं जो कुछ तजवीज करी उसहीमें नुकसान रहा कुछ उम्मेद नहीं हुई चित्त नहीं लगा शरीरमें अडचन किंचित् रही अन्न हजम कम हुआ दिन उसके माफिक नहीं थे श्रीजीकी कृपासे अब दक्षिणमें यात्रा करना व्यापारमें लाभ अच्छा होगा श्वेत और काली वस्तुके लेन देनमें लाभ

होगा और एक मनुष्यकी मार्फत तजबीज बनेगी मनुष्य मध्य अवस्थाका है क्षत्री वर्ण है उसके सकाशसे लाभ दक्षिणमें होगा परन्तु शिवार्चन कराना प्रदोषव्रत करना एक वर्ष पश्चात् लाभ अच्छा होगा चिन्ता मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥५६३ ॥ प्रश्न "लाभका है इस मनुष्यने गुमास्ता भेजा है श्वेतवस्तुके व्यापारमें खरीद करना" सो तुमको दिन मध्यम हैं सो लाभ भी मध्यम है १२६ दिन बाद फायदा होगा मंगलका पूजन करना २१०० जप ७ व्रत मंगलके रोज ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति कराना पश्चात् लाभ होगा रुईका व्यापार करना लाभ अच्छा होगा कुछ नुकसान नहीं होगा इति प्रश्न॥पिण्ड ॥५६४॥ प्रश्न राज्यका है इस आदमीको राज्यसे प्राप्ति है इस पर मेहरबानी अन्तःकरणसे रहती थी परन्तु शत्रु उत्पत्ति होकर लाभमें विघ्न हो गया है" तुमको दिन नाकिश हैं शत्रु प्रबल है सो श्रीचण्डीके पाठ ९१ कराना शत्रुजययन्त्र बांधना मंगलका व्रत करना पश्चात् लाभ होगा १०९ दिन तुमको नाकिश है लाभ स्वल्प है पश्चात् राज्यसे लाभ अच्छा होगा शत्रुका नाश होगा श्रीजीकी कृपासे सब बात बनेगी इति प्रश्न पिंड॥५६५ प्रश्न "राज्यका काम हाथ आवेगा या कुछ ढीलसे" तदबीर की गई परन्तु दिनोंकी गरदिशसे हुई नहीं दिन नाकिश हैं और राज्यमें दुशमन उठ रहे हैं तुम्हारी न्यूनता कहते हैं १२९ दिन पश्चात् राज्यसे काम मिलैगा लाभ होगा परन्तु 'सर्वाबाधाप्रशमनं' इस मन्त्रका संपुट देकर ९१ पाठ कराना तथा शत्रुञ्जय मन्त्रका पूजन करना व्यतीपातके दिन यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराना एक वर्ष पश्चात् राज्यसे पूर्ण लाभ होगा काम बनेगा काम साधनको एक वर्ष चंडी पूजनकर इति प्रश्न ॥पिंड ॥ ५६६ ॥ प्रश्न इसका यह है कि "राज्यसे भय हो रहा है सो मध्यम होगा या विशेष" इस आदमीके दिन नाकिश हैं अच्छी करता है परन्तु दिनोंकी गरदिशसे उल्टी पडती है दुश्मनोंकी उत्पत्ति

हो रही है शत्रु प्रबल है उपाय "राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो" इस मन्त्रसे संपुट देकर श्रीचंडीके ५१पाठ कराना अष्टमीका व्रत करना पश्चात् भयका नाश होगा ५१तथा २१ दिन भीतर कार्य्य होगा द्रव्यका अधिक व्यय नहीं होगा दंड भी स्वल्प होगा श्रीजीकी कृपासे सर्व शत्रुओंका नाश होगा चिंता नहीं करना श्रीभवानीजी तेरे पक्षपर हैं सो द्रव्य विशेष खर्च नहीं होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५६७ ॥ ⠶ प्रश्न इसका यह है कि "हम राज्यमें अरजी पेश करेंगे तो जीतेंगे या नहीं, इस आदमीके शत्रु प्रबल हैं दिन रात छल छिद्र करते हैं और विचारते हैं दुश्मन पक्के हैं परन्तु श्रीभवानीजीकी कृपासे अरजी पेश कर तू जीतेगा द्रव्यका तो खर्च पडेगा परन्तु परिणाममें जीतेगा आपदुद्धारका पाठ २१ तथा ५१ दिन कराना इतवारको सिन्दूर और फुलेल बटुकको चढाना काले कुत्तेको चपातियां खिलाना और प्रति दिन १ ब्राह्मणके लडके कुमारको भोजन कराना पश्चात् तुम्हारे शत्रुका नाश होगा फिकर मत कर श्रीभैरवजीकी कृपासे दुश्मनका भय दूर होगा तुम जीतोगे अच्छे दिनमें अरजी पेश करो इति प्रश्न पिंड ॥ ५६८ ॥ ☰ प्रश्न "जमीनका है" इसकी जमीनपर दुश्मन दावा करता है और दुश्मन छलछिद्री है परन्तु श्रीभवानीकी कृपासे जमीन मिलेगी दिन तुमको अच्छे हैं शत्रुका भय दूर होगा परन्तु श्रीदुर्गापाठ हनुमान स्तोत्रका पाठ ५१ दिन करवाना एक ब्राह्मणकी कन्याका पूजन कराना भोजन कराना ५१ तथा ७१ दिन भीतर कार्य्य होगा १ मनुष्यका मांह कर मनुष्यका मध्यवर्ण है मध्य जाति है उससे कार्य्य श्रेष्ठ होगा जमीनमें भी फायदा देवैगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५६९ ॥ ⠑ प्रश्न "जमीन मोल लूँगा उससे फायदा होगा कि नहीं" इस मनुष्यको इस जमीनसे फायदा होगा जमीन लेनी हवेली मंदिर निर्विघ्नतासे होगा जमीन ले उसमें आग्निकोण है कच्ची हांडीमें सुवर्णकी सर्पिणी सिन्दूर लगा

कर रक्तवस्त्रमें लपेटकर हांडीमें धरकर अग्निकोणमें गाड दे तब उस घरमें खुशी रहेगी अपमृत्यु नहीं होगा मनुष्यका वंधेज होगा ईर्षा लडाई महामारी चौराहा मसान लाग लपेट उस मकानमें कुछ नहीं होगा खुशवक्ती रहेगी जमीन निर्विघ्नतासे फायदा देगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७० ॥ ⚍ प्रश्न मकानका है इस मकानमें भय मालूम होगा इस वास्ते दुर्गापाठ श्रीगायत्रीका जप २१ दिन कराना पश्चात् हवन कराना ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति कराना: पश्चात् मकानसे फायदा होगा इस मकानके लिये पीछे ९१ मास पश्चात् अकस्माद्धनकी प्राप्ति होगी खुशवक्ती रहेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७१ ॥ ⚍ प्रश्न स्थानका है यह मकान शुभदायक नहीं है मकान सर्पिणीके फणपर है नेष्ट है इस मकानमें प्रवेश नहीं करना दुःख देनेवाला है यह मकान अपने स्वामीको मध्यम है इस मकानमें सवालक्ष गायत्री जप चंडीपाठ करा पश्चात् हवन कराना ब्राह्मण भोजन यथाशक्ति दे बाद मकान शुभदायक होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ५७२ ॥ ⚍ "प्रश्न कुआ मन्दिर बनवानेका है" यह मनुष्य कुआ-मन्दिर बनाया चाहता है सो श्रीभगवतीकी कृपासे निर्विघ्नतासे होगा कुआमें जल मिष्ट निकलेगा जमीनमें दश हाथपर किंचित् पहाड निकलेगा पर १२ हाथमें मन्दिर श्रेष्ठ होगा किसी बातका विघ्न नहीं होगा तुझको लाभ थोडे दिनोंमें अच्छा होगा उमेद कर दिलमें फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५७३ ॥ ⚍ "प्रश्न राज्यलाभका है" इस आदमीका झगडा राज्यमें बहुत दिनसे है दिन बहुत नाकिश हैं झगडेसे बरबाद होगया दिनोंकी गरदिशसे जो तदबीर करता है उसहीमें उलटी पडती है शत्रु प्रबल है छलछिद्री है परन्तु भवानी-जीकी कृपासे तुम जीतोगे " सर्वाबाधाप्रशमनं " इस मन्त्रका संपुट देकर ५१ दुर्गापाठ कराना पीपलमें जल चढाना शत्रुंजय मन्त्र बांधना १२० दिन भीतर तुम फते पाओगे शत्रुकी हानि होगी इति प्रश्न॥

पिण्ड ॥ ५७४ ॥ ⚍ "प्रश्न फायदेका है" इस मनुष्यसे लहना कम है यश नहीं जिस आदमीसे मित्रता करता है दिनोंकी गरदिशसे उससे कुछ लाभ नहीं होता अब इसमें लहना होगा मित्रता बढेगी १५२ दिन बाद लाभ होगा श्रीशिवजीका इष्ट रखना पक्षप्रदोषका व्रत करना ब्राह्मणको भोजन कराना २१ दिन ५ माला त्र्यंबकमन्त्र जप पश्चात् फायदा होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५७५ ॥ ⚍ "प्रश्न लाभका है" सो इस शख्स (सेठ) से फायदा होगा तुम्हारे हाथसे व्यापार या दूकानमें उनफेद होगी तुमको भी लाभ है बेशक गमन कर दिन तुमको बहुत अच्छे हैं ७२ दिनके बाद और अच्छे आवेंगे लाभ होगा सूर्य्यनारायणका २१ व्रत करना आदित्यहृदयका पाठ ५१ कराना पश्चात् लाभ होगा फिकर मत कर श्रीजी सहाय करेंगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५७६ ॥ ⚍ "प्रश्न लाभका है व्यापारसे इस मनुष्यको शरीरसे फायदा होगा शीरमें व्यापार करनेसे लाभ है शीरीको और तुमको दिन अच्छे हैं परन्तु गोपालसहस्रनामका पाठ करावना गणेश ४ का व्रत कराना एक ब्राह्मणको भोजन कराकर आप भोजन करना लाभ होगा चित्तमें प्रसन्न होके साझीसे मिलकर श्रीजीका ध्यान कर व्यापार कर तेरे को फायदा होगा दिन १२० पश्चात् अकस्मात् प्राप्ति होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५७७ ॥ ⚍ "प्रश्न पत्रीके आगमनका है" विदेशमें इसके प्यारे लोग खुशी हैं चिट्ठी इसकी आई थी बहुत दिन हुए इससे कुछ चित्तको उद्वेग है वह शरीरसे खुशी है आनंदमें है लाभ है १२–१३ दिन भीतर चिट्ठी जरूर आवेगी फिकर मत कर चिट्ठी जरूर आवैगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५७८ ॥ ⚍ प्रश्न इसका "विदेशका है" विदेशमें उसके शरीरमें बीमारी हुई शरीर कृश है चित्तको उद्वेग है दिन माफिक हैं परन्तु श्रीभवानीजी सहाय है अब खुशी है शरीरसे आनन्द है परन्तु मङ्गलका और शुक्रका जप और दान करा देना ३१ दिन बाद दिन बहुत अच्छे आवैंगे शरीरसे अच्छ

होगा लाभ होगा फिकर मत कर अब ४ दिनसे खुशीसे हैं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७९॥ ⁝ प्रश्न "विदेशका है" इसका नजदीकी दोस्त विदेशमें गया है उसको लाभ अच्छा होगा ९० दिन उसको और मध्यम हैं पश्चात् अकस्मात् लाभ अच्छा होगा उसको पहले दिन माफक थे श्रीजीकी कृपासे विदेशमें लाभ अच्छा होगा खुशी रहेगी परन्तु श्रीशिवजीका व्रत कर विधिसे पूजन करना ब्राह्मणोंको आमान्न देना पश्चात् खुशी रहेगा दिन दिन लाभ अच्छा होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८० ॥ ⁝ "प्रश्न विदेशका है" इसका मनुष्य विदेशमें है सो खर्च भेजा नहीं इसके खर्च आये बहुत दिन हुए अब खर्च जरूर भेजेगा उसके चित्तमें याद है खर्च भेजेगा फिकर मत कर दिन तुमको साधारण हैं सो जब ही खरच भेजनेको करता है तभीं कोई दिनोंकी गरदिशसे अकस्मात् विघ्न होजाता है अब खर्चो १९ तथा २० दिन भीतर आवेगी श्रीजीका ध्यान रख खुशवक्ती होगीं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९८१॥ ⁝ प्रश्न करजका है इस आदमीको करजा बहुत हो रहा है दिन दिन बढ रहा है इसका रोजगार माफिक हैं कई तजवीज करता है परन्तु दिनोंकी गरदिशसे लाभ अच्छा होता नहीं अब १२० दिनके बाद लाभ होगा विदेशसे अपना हर्वासे फिकर मत कर करज तेरा दूर होगा लाभ अच्छा होगा सूर्य्यका आराधन कर सब काम फते होंगे इतिं प्रश्न॥पिण्ड॥९८२॥ ⁝ प्रश्न सन्तानका है इस शख्सको अब तक सन्तान हुई नहीं सन्तान अवरो-ध है पहले जन्मका इस औरतका अजाब है इस औरतने पहले जन्ममें बालहत्या की थी उस अजाबसे अब तक सन्तान नहीं हुई उपाय इस-का यह है कि एक सुवर्णका लडका बनवा कर यथाशक्ति ९१ दिन उसकी पूजा कर सन्तानगोपालका पाठ करा शतचंडीका पाठ करा तथा अष्टमीका व्रत करना नवमीके दिन कन्याको भोजन कराना उसको रक्तवस्त्र पहराना इस प्रकार १ वर्ष तक सूर्य्यका व्रत करना

जिस दिन व्रत सम्पूर्ण हो उस नवमीके रोज ब्राह्मणको भोजन कराना नव ९ कन्या जिमावनी सब कन्याओंको वस्त्र देना १ बटुकको देना इस रीतिसे उपाय करनेसे पूर्व जन्मका अजाब दूर होगा संतानका सुख निश्चय होगा पुत्र औरतके पेटसे होंगे जीवेंगे फिकर मत कर औलादका सुख होगा कुछ देर नहीं इति, प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५८३ ॥ ⚍ प्रश्न सन्तानका है इस मनुष्यको उज्वल प्रभूतका सुख हुआ नहीं कन्याका तो सुख है कन्या बार २ जन्मती हैं इस मनुष्यकी औरतको पहले जन्मका अजाब है इस औरतके पहले जन्ममें कन्या बहुत हुईं पश्चात् पुत्रकी इच्छा करके कन्यासे द्वेष चित्तमें रक्खा और १ कन्याकी हत्या हुई जिससे पहले जन्मका अजाब है पुत्रसुख विलम्बसे होगा उपाय एक गोदान अमावस्याके रोज कर सब सामग्री समेत गौ सुफेद और सूर्यका व्रत करना संतानगोपालका ५१००० मन्त्र जप और दुर्गापाठ संपुट कर इतने बाद सन्तानका सुख होगा पहले जन्मकी हत्या दूर होगी औलादका सुख इसी औरतके पेटसे होगा कुछ विलम्ब नहीं है और गोदके पुत्रका योग नहीं है इसके उदरसे पुत्रसुख होगा दीर्घ आयु होगी इति प्रश्न॥पिण्ड॥५८४॥ ☰ प्रश्न सन्तानका है इस मनुष्यके औलाद होती है पर जीती नहीं सो पहले जन्मके अजाबसे मृतवत्सा हो गई है यह मनुष्य पहले जन्ममें क्षत्री था घोडेपर सवार होकर चहल कदमी करता था वहां रास्तेमें एक लडका घोडेका पेटमें आकर मर गया जिसके शापसे इस जन्ममें पुत्रका सुख विलम्बसे होगा उपाय सवालक्ष शिवार्चन और सुवर्णकी दुर्गाकी मूर्ति बनवानी यथाशक्ति पश्चात् षोडशोपचार पूजन करके 'ओं ह्रीं श्रीं क्लीं अतिदेवता बालकसुखदायिनी पूर्वजन्मपापं हन हन पुत्रसुखं कुरु कुरु स्वाहा' इस मन्त्रसे शतचण्डी पाठ संपुटित करना "कुमारीपूजनं पश्चात हवनं. ब्रह्मकुलभोजनं. यथाशक्ति विधाय दीर्घजीविसन्तान-

जन्म स्यात् ततः शिवार्चनमृत्युञ्जयपाठाः कार्य्याः पश्चात् सन्तति-दीर्घजीविनी भविष्यति"इति प्रश्न ॥पिंड॥५८५॥ ÷ प्रश्न सन्तानका है इस मनुष्यके सन्तान होकर फिर वंध्यायोग हो गया सो पहले जन्मकी औरतका अजाब है पहले जन्ममें इस औरतने अपने खाविन्द-को बहुत दुःख दिया इसका खाविन्द रोगी था उसकी टहल बन्दगी किंचित् नहीं की और कभी मालिकका नाम नहीं जाना कुटुम्ब अष्ट प्रहर पोषण किया कभी १ घडी राम नाम नहीं लिया इससे स्त्रीके पूर्व जन्मके दोषसे सन्तानका सुख विलम्बसे होगा उपाय आदि-त्यहृदयका पाठ ५१ दिन, चंडीका पाठ सम्पुटित सूर्य्य का और अष्टमीका व्रत एक वर्ष करना पश्चात् सन्तानका सुख होगा इस ही स्त्रीके उदरसे सन्तान (पुत्र) का जन्म होगा और आयु दीर्घ होगी सन्तानजन्मके पश्चात् आशीर्वाचन २१००० रुद्रीपाठ कराना पश्चात् कुछ अरिष्ट नहीं होगा फिकर मत कर सन्तान होगी कुछ विलंब नहीं इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५८६ ॥ ÷ "प्रश्न इसके सन्तानका है" इसके संतानका सुख इस औरतसे नहीं होगा इस औरतको वंध्या योग है इस स्त्रीके सन्तानका योग बडी मुशकिलसे होगा द्वितीय स्त्रीके संतान योग होगा दूसरा विवाह करनेके पीछे चंडी पाठ ५१ कराना "कुमारीपूजनमष्टमीव्रतं रविव्रतं वर्षमेकं कारयित्वा पश्चात् द्वितीय-स्त्रीसकाशात् पुत्रसन्ततिः सुखं च भविष्यतीति" प्रश्नः॥पिंड ॥५८७॥ ÷ "प्रश्न सन्तानका है" सन्तानका जन्म नहीं होगा इस ही स्त्रीसे कुछ विलंब नहीं है गोद तथा दत्तपुत्रका तेरे भाग्यमें सुख नहीं है सो गोद किसीका पुत्र मतल नुकसान होगा इस स्त्रीके हाथसे एक वर्ष सगर्भा गऊका पूजन करा पश्चात् गौके वत्सी जन्मै उसीमें वत्सका सुख है सुवर्ण देकर स्त्रीके हाथ संकल्प करा दे कराके दान दे इसके पहले जन्मका अजाब है इसने गऊके अगाडीसे उठायकर अपने घरकी पालना की सो प्रायश्चित्त है

श्रीचंडीका संपुट पाठ कराओ संतान होगी सुख होगा फिकर मत कर इति ॥ पिंड ॥ ५८८ ॥ ⚏ " प्रश्न सन्तानका है " इस मनुष्यको औरस पुत्रका सुख नहीं है दश प्रकारके पुत्रोंमें दत्तपुत्रका सुख होगा तुम वेशक किसीके पुत्रको गोद लो फायदा होगा मित्रता बढेगी तेरी अन्त अवस्थामें टहल करैगा तू फिकर मत कर श्रीजी सहायता करैंगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५८९ ॥ ⚏ प्रश्न सगाई इस मनुष्यकी अवतक नहीं हुई प्रथम सगाई आई परन्तु दुश्मनके प्रपंचसे अबतक संबंध नहीं हुआ तथा दिनोंकी गरदिशसे अब सगाई होगी पूर्वकी दिशाकी तथा उत्तरकी एक आदमी द्रोहकी है परन्तु " पत्नीं मनोरमां देहि" इस मन्त्रका संपुट देकर दुर्गाका पाठ कराना २१ तथा ९१ दिन ९० तथा १२० दिन भीतर वटवृक्षका पूजन करना जरूर सगाई होगी विलंब नहीं है दिनोंकी गरदिशसे मनुष्यके ध्यानमें आवै नहीं दुशमन उकाय देते हैं परन्तु सगाई होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ५९० ॥ ⚏ " प्रश्न स्त्री की प्राप्तिका है " इस शख्सकी पहली शादी होकर औरत मर गई अब दूसरी शादी होगी दक्षिणमें तथा पश्चिममें गौरवर्णकी स्त्री प्राप्त होगी १ मनुष्यका माहकर उस मनुष्यकी मध्य अवस्था है मध्यवर्ण है ऐसा मनुष्यका माहकर द्वितीय होगी कुछ द्रव्य भी खर्च होगा परन्तु विवाह निश्चय होगा फिकर कुछ मत कर ९० दिन भीतर स्त्री प्राप्ति होगी परन्तु ९१ संपुट दुर्गापाठ करना पक्ष प्रदोषका व्रत करना पश्चात् विवाह होगा कुछ विलंब नहीं है श्रीभगवती आनन्द करेगी इति ॥ पिंड ॥ ५९१ ॥ ⚏ " प्रश्न पुनः संबंधका है" इस मनुष्यके तीसरी स्त्रीका योग है कुछ ढील है स्त्री होकर मर गई परन्तु तृतीयस्त्रीका सुख है दिन १ तथा प्रहर १२० भीतर पश्चिम तथा उत्तरसे प्राप्ति होगी कुछ द्रव्य खर्च होगा परिणाममें तीसरी स्त्रीका सुख है" श्रीभवानीजीका इष्ट रख सब बात

अच्छी होयगी इति ॥ पिंड ॥ ५९२ ॥ ⁝ इस मनुष्यकी स्त्रीसे वने नहीं अन्तःकरणमें नाडियां विरुद्ध हैं सो अष्टप्रहर घरमें कुछ वने नहीं श्रीशिवजीका पूजन करना पक्ष प्रदोषका व्रत करना पश्चात् स्त्रीसे मिलाप होगा घरमें कुछ विघ्न न होगा शान्ति रख घरका कलह मिट जायगा इति ॥ पिंड ॥ ५९३ ॥ ⁝ प्रश्न चोरीका है इस मनुष्यके चोरी नहीं हुई घरमें ही मिल जायगी तदबीर कर चोरी कहीं गई नहीं शांतिसे पूछो मिल जायगी फिकर मत कर इति ॥ पिंड ॥ ५९४ ॥ ⁝ प्रश्न चोरीका है इस मनुष्यके घरमें चोरी हुई चोर घरभेदू है पुरुष है मध्यजाति है मध्य अवस्था है चोरी मिल जायगी कुछ ढीलसे वस्तु ग्रामके बाहर गई नहीं मिल जायगी पूर्वदिशामें उस वस्तुमें साझी है २ तथा ३ धनकी चोरी हुई दिनोंकी गरदिशसे दिन तुमको माफिक हैं चोरी आवेगी कुछ देरीसे फिकर मत कर चोरी मिल जायगी श्रीचंडीका ध्यान रख मिल जायगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥५९५॥ ⁝ प्रश्न चोरीका है इस मनुष्यकी कुछ वस्तु तथा रकम लेकर मनुष्य दक्षिणमें भाग गया पीछे पश्चिममें जायगा इस मनुष्यको दिनोंकी गरदिश है जो तदबीर करता है उसमें वने नहीं परन्तु आकर्षणका मन्त्र प्रयोग करावनेसे वस्तु आ जायगी चोरी मिल जायगी चोरीमें साझी ३ हैं परन्तु परिणाममें रकम आ जायगी फिकर मत कर श्रीजी सहायता करेंगी इति प्रश्न॥ पिंड ॥५९६॥ ⁝ "प्रश्न पशुकी चोरीका है" इस मनुष्यके पशुकी चोरी हुई सो दिनोंकी गरदिशसे मध्यजातिका श्यामवर्ण छोटी कद ऐसा शख्स दक्षिणमें तथा पश्चिममें ले गया सो वह मिल जायगी तदबीर कर श्रीभगवतीका ध्यान कर तेरा पशु आ जायगा ५७ दिन तुमको और नामाफिक हैं फिकर मत कर चोरी आ जायगी श्रीजी सहायता करेंगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५९७ ॥ ⁝ "इस मनुष्यकी वस्तु तथा वस्त्र किसीने उठालई" १ पुरुष अपनी जातिका है परन्तु देवेगा

नहीं क्योंकि दिन नाकिश हैं ४७ दिनके बाद अच्छे आवेंगे चोर पक्का है घने दिनमें मालूम होजायगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ५९८ ॥ ⚍ प्रश्न रोगीका हैं " इस मनुष्यके प्रश्नमें किसीके तप जाडा आवै है रोज तथा इकतरेसे" सो इसको दिन माफिक हैं १५ दिनसे खेद ज्यादा है सो मंगलका दान और महामृत्युंजयका जप १९ दिन कराना सूर्यका ११ व्रत करना पश्चात् इसको आराम हो जायगा दिन इसको २१ और माफिक हैं परन्तु औषध कर श्रीभवानीजी सहायता करेंगी तप जाडा चला जायगा कुछ देर नहीं है इति प्रश्न॥पिण्ड॥५९९॥ ⚍ "इस मनुष्यका प्रश्न रोगीका है" उसको रोग आतशी गरमीका है कुछ अतिसारका अंश है बहुत दिनसे बीमारी है सो दिन इसको बहुत नाकिश हैं जो दिनोंकी गरदिशसे दवाई करे उससे ही घना होगा सो श्रीचंडीके ३१ पाठ कराना व्यतीपातके दिन छायापात्र और मंगलका जप और दान कराना ९० दिन और माफिक हैं परन्तु श्रीदुर्गाका ध्यान रख तुझको आराम होयगा खुश रहना कुछ देर नहीं है फिकर मत कर इति ॥पिंड ॥ ६०० ॥ ☰ प्रश्न रोगीका " प्रश्न इसका यह है कि इस बालकको रोग है जो ऊपर लिखा" सो लडका इसका दिन दिन सूखता है पहली तथा नई पेटमें बीमारी है कोई तदबीर करे है सो लगे नहीं नन्दनीया योगिनीकी पेटमें है ९० दिन इसको बहुत नाकिश हैं परन्तु मंगल तथा शनिश्वरके रोज अर्द्धरात्रिमें पूजा नन्दनीके नीचे धर ५१ चंडीपाठ करा मंगलका दान तथा २१०० महामृत्युंजयका जप कराना पश्चात् शरीरमें आनन्द होगा फिकर मत कर श्रीजी सहायता करेंगी परिणाम कुशल है उपाय कराना सो तुम्हारे लडकेको दिनपर दिन आराम होगा आयु बहुत है श्रीशिवजीकी कृपासे अच्छा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६०१ ॥ ⚍ इस मनुष्यको संग्रहणी रोग है अन्न हजम नहीं होता चित्त उदास रहता है

पेटकी बीमारी है बहुत दिनोंसे जो तद्वीर करता है उसहीमें नुकसान होता है दिन इसको नाकिश हैं ४२ दिन श्रीशिवार्चन करना पक्षप्रदोषका व्रत करना मंगल शुक्रका दान करना जप करा देना श्रीदुर्गाकी कृपासे परिणाम कुशल है फिकर मतकर आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६०२ ॥ ≑ इस मनुष्यपर किसी शख्सने जादू टोना कर रक्खा है चित्तमें भ्रमता है रोग दिन दिन बढता है सो इसको दिन बहुत नाकिश हैं उपाय ९१ दुर्गापाठ संपुट करा कुमारी पूजन पश्चात् दान व्यतीपातके दिन कर फिर आराम होगा ११ दिन बाद आराम होगा खुशी रहेगा श्रीभवानीजीकी कृपासे परिणाम कुशल है फिकर मत कर आराम होगा कुछ देर नहीं इति ॥ पिण्ड ॥ ६०३ ॥ ≡ इस मनुष्यको बवाशीरका रोग है मस्सा दुख देता है इसको अग्निसे उत्पन्न रोग बहुत दिनोंसे है कभी तो रोग घट जाता है किनहीं दिनोंमें बढ जाता है दिन नामाफिक हैं उपाय शिवार्चन करना त्र्यंबकमन्त्र जपवा ३१ दिन रविवारका व्रत करना ११ के दिन आमान्न ब्राह्मणोंको देना पश्चात् आराम होगा १२० दिन इसको नामाफिक हैं श्रीसूर्य्यकी कृपासे परिणाम कुशल है रोग जावेगा फिकर मत कर औषध कर इति ॥ पिंड ॥ ६०४ ॥ ≐ प्रश्न रोगीका है इस मनुष्यके बादीका रोग हैं बादी प्रबल है शरीरमें गरमीकी तासीर है सो रोग दुख देवे है इसके ३२ दिन नाकिश हैं उपाय–सूर्य्यका ११ व्रत आदित्यहृदयके पाठ ३१ मंगलके रोज दान करना पश्चात् श्रीभवानीजीकी कृपा और उपायसे आराम होगा फिकर मत कर कुछ देर नहीं इति ॥ पिण्ड ॥ ६०५ ॥ ≑ "प्रश्न रोगीकाहै इस मनुष्यको मूत्रकृच्छ्र धातुक्षीण है दिन२बढता है शरीर छीजै है इसके शरीरमें चेतना नहीं गरमीकी उत्पत्ति इसके ज्यादा है" सो ४९ दिन बाद औषध कर आराम होगा श्रीशिवजीका ध्यान कर पक्षप्रदोषका व्रत कर पश्चात् श्रीशिवजीकी कृपासे आराम

होगा कुछ फिकर मत कर श्रीशिवजी सहायता करेंगे इति ॥ पिंड ॥ ६०६ ॥ ⠶ "इसका प्रश्न कैदका है" इसके मनुष्य कैदमें हैं उसको दिनोंकी गरदिश बहुत है जो तदबीर की उसीमें नुकसान रहा इसके दुश्मन प्रबल हैं दिनोंके फेरसे राज्यकी क्रूरदृष्टि है इसका उपाय चंडीपाठ कराना कौमारीकी पूजा करनी भौमदान करना इतने उपायोंसे कैदसे मनुष्य छूट जायगा द्रव्यका खरच पडकर यह मनुष्य छूट जायगा तदबीर कर श्रीभगवतीकी कृपासे छूट जायगा कुछ देर नहीं इति ॥ पिण्ड ॥ ६०७ ॥ ⠶ प्रश्न लाभका है ये मनुष्य लेखा करनेको जायंगे लेखा इनका दुरुस्त होगा कुछ विघ्न नहीं होगा परन्तु कुछ दिनोंमें लाभ होगा अब इनको दिन नामाफिक हैं श्रीहनुमानजीका ध्यान करना प्रसन्न रहना लाभ होगा फिकर मत कर इति ॥ पिंड ॥ ६०८ ॥ ⠶ प्रश्न यात्राका है इस मनुष्यकी यात्रा होगी कुछ देर नहीं यात्रासे लाभ होगा इस मनुष्यके चित्तमें यात्राकी बहुत दिनोंसे है परन्तु जाना नहीं होता अब यात्रा होगी कुछ देर नहीं है लाभ तुझको अच्छा होगा बेशक गमन कर श्रीभवानीजीका ध्यान रख उनकी कृपासे लाभ होगा कुछ फिकर मत कर इति ॥ पिंड ॥ ६०९ ॥ ⠶ प्रश्न संतानका है इस मनुष्यकी औलाद होके मर गई पश्चात् कुछ हुआ नहीं है इसके प्रबन्ध योग है पहले जन्ममें इस मनुष्यके हाथसे बालहत्या हुई जिससे १ संतान होकर मर गया पीछे नहीं हुआ उपाय एक गऊ अमावस्याके दिन दान कर ,व्यतीपातके रोज अन्नका संकल्प कर यथाशक्ति संपुटित दुर्गापाठ ५१ दिन कराना अष्टमीका व्रत एक वर्ष करना पश्चात् पूर्व जन्मकी हत्या दूर होगी संतानका सुख होगा फिकर मत कर कुछ देर नहीं परन्तु उपाय कर तेरे संतानका सुख होगा बरजरूर इति ॥ पिंड ॥ ६१० ॥ ⠶ प्रश्न यात्राका है इस मनुष्यको पूर्वसे लाभ होगा इसको २० दिनके बाद अच्छे आवेंगे फायदा पूर्वसे होगा बेशक गमन

कर श्रीभगवती तुम्हारी सहायता करेगी फायदा होगा एक वर्ष सूर्य्यव्रत करनेसे लाभमें विघ्न नहीं होगा शरीर खुश रहेगा बेशक यात्रा कर पूर्वसे फायदा होगा इति ॥ पिण्ड ॥ ६११ ॥ ⁝ इस मनुष्यको यात्रासे लाभ है उत्तर दिशासे अच्छा फायदा होगा तेरी यात्रा उत्तम होगी दिन बहुत अच्छे हैं लाभ अच्छा होगा बेशक गमन कर उत्तरमें फायदा होगा परन्तु शिवजीका पूजन करना चतुर्दशी-का व्रत करना अमावास्याके दिन ब्राह्मणको आमान्न देना पश्चात् लाभमें कुछ विघ्न नहीं होगा शरीर प्रसन्न रहेगा फिकर मत कर तुझको लाभ अच्छा होगा इति ॥ पिंड ॥ ६१२ ॥ ⁝ प्रश्न यात्राका है इस मनुष्यको दक्षिणकी यात्रासे फायदा होगा इसके दिन बहुत अच्छे हैं ३१ दिनके बाद अकस्मात् लाभ होगा परन्तु मंगलका व्रत और दान करना शिवजीका पूजन करनेसे लाभ है कुछ विघ्न नहीं होगा बेशक गमन कर तुझे दक्षिणसे लाभ है इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६१३ ॥ ⁝ प्रश्न लाभका है इस मनुष्यको इस सालमें अन्नसे कुछ मध्यम फायदा होगा अति उग्र लाभ नहीं है परन्तु लाभ होगा बेशक व्या-पार कर तेरे दिन अच्छे हैं परन्तु अमावस्याको १ ब्राह्मणको भोजन कराना श्रीशिवजीका पूजन कर तुझको अच्छा लाभ होगा श्रीभवानी-जी तेरी सहायक हैं तू निस्सन्देह कर तुझको फायदा होगा इति ॥ पिण्ड ॥ ६१४ ॥ ⁝ प्रश्न लाभका है व्यापार करनेसे इसको फायदा होगा रक्तवस्तुसे लाभ होगा इसके दिन बहुत अच्छे हैं व्यापार कर तुझको फायदा होगा परन्तु श्रीभगवतीका ध्यान रखनेसे लाभमें कुछ विघ्न नहीं होगा बेशक व्यापार कर तुझको फायदा अच्छा होगा इति ॥ पिण्ड ॥ ६१५ ॥ ⁝ प्रश्न यात्राका है तुम्हारी यह प्रथम यात्रा है सो कर तुझको फायदा होगा दिन तुमको बहुत श्रेष्ठ हैं बेशक यात्रा कर तुझको लाभ होगा परन्तु श्रीहनुमानजीका ध्यान रख सूर्य्यका व्रत कर तुझको यात्रासे लाभ होगा इति पिण्ड ॥ ६१६ ॥ ⁝ प्रश्न

लाभका है हे मनुष्य ! दूसरी वा तीसरी यात्रासे तुझको लाभ होगा दिन तुमको बहुत अच्छे हैं तुम बेशक गमन करना तुझको यात्रासे लाभ होगा तुम बेशक गमन करो फायदा होगा परन्तु शनैश्चरका ध्यान रखना सूर्य्यका पूजन कर तुझको लाभ होगा फिकर मत कर इति ॥ पिंड ॥ ६१७॥ प्रश्न ∸ लाभका है इस मनुष्यको ४२ दिन बाद लाभ होगा परन्तु पक्षप्रदोषका व्रत कर शिवजीका पूजन करनेसे फायदा होगा बेशक नौकरी कर तुझको लाभ होगा इति ॥ पिंड ॥ ६१८ ॥ ≑ प्रश्न उत्सवका प्रारंभ करनेका है सो निर्विघ्नतासे होगा इस उत्सवमें सुख होगा किसी बातका विघ्न नहीं होगा दिन तो बहुत श्रेष्ठ हैं बेशक उत्सवका प्रारंभ कर तेरा कार्य निर्विघ्न होगा प्रथम गणेश पूजन कर और व्रतकरके काम करो इति पिंड ॥६१९॥ ≡ प्रश्न झगडेका है मनुष्यका आपसमें काम बनेगा कोई एक शख्स बहकाता है परन्तु दिन तुम्हारे अच्छे हैं सो आपसमें ही तुम्हारा झगडा निपट जावेगा फिकर मत कर श्रीभवानीजी फते- करेंगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६२० ॥ ≡ इस मनुष्यके घर या कुटुंबमें मृत्यु बहुत हुई पूर्वमुख मकान होनेसे प्रेतका दोष है दिन इसके नाकिश बहुत हैं गृहमें रुदन होता है सो ग्रहोंकी दृष्टि क्रूर हैं दिनोंकी गरदिश बहुत है उत्सवमें बहुत विघ्न होता है सो यह जमीन यावनी है यवनको जिद कर रक्खा है यह मकान बने पीछे १ या २ वर्ष भीतर अनेक मौत होगई हैं जबतक इस मकानको नहीं छोडोगे तबतक सुख नहीं पावोगे जो नहीं ही छोडो तब तो एक मकान बनवाकर नेक ब्राह्मणको दो उससे सब दोष दूर होजायगा इस मकानमें अमावस्याको एक श्वेत गोदान १०१ चंडीपाठ सवालक्ष गायत्रीका जप कराना कुमारी कन्या ९ कुमार लडका पांचोंको भोजन कराय वस्त्र पहराय देना पश्चात् पूर्वमुख मकानका प्रायश्चित्त दूर होगा और गृहमें खुशवक्ती होगी किसी बातका विघ्न नहीं होगा अब ५९ दिन बाद अच्छे दिन

आवेंगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥६२१॥ ⚍ प्रश्न विद्याका है इस मनुष्यको विद्या आवेगी अपने कारसे फायदा होगा इसकी बुद्धि जरा मन्द है सो वाक्‌वादिनी सरस्वतीका पूजन कर तुझको विद्या बहुत श्रेष्ठ आवेगी विद्यामें फुरती होगी एक वर्ष बाद बुद्धिकी चमत्कारी होगी विद्या आवेगी इति ॥पिंड ॥ ६२२ ॥ प्रश्न लाभका है इस मनुष्यको पशुओंसे लहना अच्छा है लाभ होगा दिन तुमको श्रेष्ठ हैं बेशक खरीद कर तुझको लाभ अच्छा है पशुओंके क्रयविक्रयसे लाभ होगा परन्तु श्रीगणेशजीका व्रत कर चतुर्दशीको शिवजीका पूजन कर तुझको लाभ अच्छा होगा इति ॥ पिंड ॥ ६२३ ॥ ⚎ प्रश्न लाभका है तुमको वस्त्रके व्यापारसे फायदा होगा दिन तुम्हारे अच्छे हैं बेशक व्यापार करो तुझको वस्त्रोंसे लाभ है परन्तु मङ्गलका पूजन करो तुमको ९० दिन बाद अकस्मात् लाभ है फिकर मत कर श्रीभवानीजी सहायक हैं लाभ होगा इति ॥ पिंड ॥ ६२४ ॥ ⚏ प्रश्न स्त्री प्राप्तिका है तुझको स्त्री मिलेगी दूसरी स्त्रीसे फायदा है स्त्री लहनी होगी सन्तानका सुख होगा श्रीभवानीजी सहाय हैं इति ॥ पिंड ॥ ६२५ ॥ ⚍ शकल नकी मंगलकी है इस आदमीका सवाल है कि "राज्यकी मेहरबानगी होगी और कुछ उनफेद होगी या नहीं" जवाब इस मनुष्यको दिन दुरुस्त हैं राज्यसे फायदा अच्छा होगा राजाके दीवान व कामदारोंकी मेहरबानी रहेगी इस आदमीके दुश्मन बहुत हैं रात्रिदिन छलछिद्र विचारते हैं परन्तु तेरेपर श्रीभगवतीकी कृपा है सर्व दुश्मन पैमाल होवेंगे तुमको बहादुरी मिलेगी राजाकी मेहरबानी विशेष होगी धन मिलेगा नेकनामी मिलेगी परन्तु श्रीचंडीपाठ ९१ कराना मंगलकी पूजा करनी २१ या ३ दिन पश्चात् सब दुश्मनोंका नाश होगा राज्यसे धन मिलेगा फिकर मत कर श्रीजी सहाय हैं इति ॥ पिण्ड ॥ ६२६ ॥ ⚌ शकल अंकीश शनैश्चरकी है इसका सवाल यह है कि "राज्यसे कुछ

उनफेद हुई अब विशेष होगी या नहीं" जबाब इस आदमीको राज्यसे उनफेद अच्छी होगी इज्जत बढेगी परन्तु दुश्मन प्रबल हैं छलछिद्र विचार रहे हैं सो सूर्य्यका पूजन कर श्रीचंडी पाठ कराना पश्चात् सर्व शत्रुओंका नाश होगा श्रीभगवती सहाय हैं राज्यके काम दारोंसे दीवान मुसद्दियोंसे मित्रता बढेगी वह पक्ष पर रहेंगे धन इज्जत राज्यसे बढेगी सर्वशत्रु पैमाल होगा फिकर मत कर श्रीभवानी सहाय हैं राज्यसे उनफेद अबके विशेष होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ६२७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल दाखिल सूरजकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरी मुराद किसमत उदय होनेकी है" इसकी किसमत खुलेगी अपने देशमें ही व्यापारमें किसी शख्स का माहकर सौदा होकर फायदा होगा मगर दिन तेरे माफिक हैं किसमत खुलनेकी तदबीर लगाता है फायदा होगा परंतु तेरे दिनोंकी गरदिशसे तदबीर दुरुस्त नहीं होती सो तदबीर करते रहना शनिश्चरके रोज मलीदा करके काले कुत्तेको खिला शनैश्चरजीकी कांडीका २२१००० जप ब्राह्मणसे करा जांटके दरख्तमें पानी गेर पीछे तेरी किसमत खुलेगी श्वेत और काली चीजके लेन देनमें फायदा होगा दो वर्ष १० महीने बाद तुझको कुछ धन मिलेगा १ वर्ष ८ महीना बाद तेरी किसमत खुलेगी दिन ज्यादे होगी फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा ॥ पिण्ड ॥ ६२८ ॥ ⚍ हुक्मी शकल अतबे खारिज केतुकी है फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूर देश जानेका है" अव्वल तू रोजगारके वास्ते पूर्वदेशमें गया मगर रोजगार कुछ हुआ नहीं क्योंकि दिनोंकी गरदिश है वहांका दाना पानी न होनेसे तेरा दिल वहां लगा नहीं देहमें कुछ बीमारी रही अनाज हजम हुआ नहीं सो तू दीतवारके रोज ब्राह्मणोंके ५, ५ लडकोंको जिमादे भैरूंका यकीन रख तेरे दिन दुरुस्त होजावेंगे ९० रोज बाद तेरा रोजगार अच्छा

लगेगा १ शख्स तेरा दोस्त होगा उससे फायदा होगा और तेरा जाना पूर्वदेशमें फिर होगा उससे धन लाभ होगा और तन्दुरुस्ती रहेगी फिकर मत कर अगली सालमें तेरी इज्जत बढेगी रोजगार ज्यादा होगा इति ॥ पिंड ॥ ६२९ ॥ हुकमी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसमत खुलनेका है" सो इस शख्सकी तकदीर परदेशमें खुलेगी अपना पेशाकर २ सौदा कर फायदा होगा परन्तु दिन तेरे माफिक हैं दिन खुलनेकी तदबीर लगाता है मगर दिनोंकी गरदिश-से तदबीर दुरुस्त नहीं होती सो तदबीर कर मंगलके रोज मलीदा करके जितनी तेरी ताकत हो उतने ब्राह्मणोंको खिला व फुलेल सिन्दूर हनुमान्‌जीको लगा श्रीहनुमानका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा आकीदा श्रीहनुमान्‌का रख दोमहीने २९ रोज बाद १ जातिबिरा-दरी शख्ससे तेरी दोस्ती होकर फायदा होगा कुछ धन मिलगा १ वर्ष ९ महीना बाद तेरी तकदीर दूर देशमें खुलेगी खेत व कालीचीजके लेनदेनमें और तेरी जाति बिरादरीके एक शख्ससे तेरा मिलाप होकर तेरी तकदीर खुलेगी सौदामें फायदा होगा दिन २ ज्यादा इज्जत बढेगी मगर ज्येष्ठके महीने उजाडमें गरीब फकीरको पानी पिला धर्म-की नियत रख तेरी तकदीर ज्यादा खुलेगी धनका खजाना आखिरमें ज्यादा २ होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति ॥ पिंड ॥ ६३० ॥ ☱ हुकमी शकल लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूरदेश जानेका है" अव्वल तू दक्षिणमें गया रोजगार तेरा कम लगा तेरे दिलमें जैसी रोजगारकी उम्मेद थी दिनोंकी गरदिशसे वैसा हुआ नहीं दिन तेरे माफिक हैं रोजगारकी तदबीर लगाता है मगर लगती नहीं सो तदबीर कर २१ दिन दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करवा अष्टमी के दिन ९ लडकियोंको जिमा कपडे दे तेरा दक्षिणमें ही

रोजगार अच्छा लगेगा बेशक गमन कर साढेचारमहीनेबाद तुझको धन मिलेगा तेरी जातके एकशख्ससे दोस्ती होकर रोजगार अच्छा लगेगा सो दक्षिण दिशाका जाना दुरुस्त है तेरी इज्जतबढेगी फायदा होगा तन्दुरुस्ती रहेगी कुरंदा अच्छा करेगाइति ॥पिण्ड॥६३१॥ ⚍ हुक्मी शकल ! हुमरा मुनकलीब मंगलकी है हुक्म देती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल तकदीर खुलनेका है" तेरी किसमत अच्छी खुलेगी नौकरीपेशा कर तेरे दिन दुरुस्त हैं मालिककी तेरेपर परवस्ती ज्यादा रहेगी इनाम मिलेगा तेरा दुशमन १ शख्स है सो पैमाल होजावेगा और तेरे हाथसे जर पैदा होगी मगर तुझको यश नहीं सो गणेश ४ का व्रत कर आकीदा गणेशका रख तेरा रोजगार अच्छा बनेगा मालिककी परवरिश ज्यादे होगी इज्जत तेरी बढेगी फिकर मत कर ५ महीने ३ दिन बाद रोजगारमें धन मिलेगा इति ॥ पिण्ड ॥ ६३२ ॥ ⚍ हुक्मी शकल उक्तेलवर्गेरज आफतापकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स ! तेरा प्रश्न रोजगारके लिये दूर देश जानेका है" सो तू बेशक गमन कर तुझको फायदा होगा रोजगार अच्छा लगेगा और कोई शख्स तेरा दोस्त है उसकी मारफत रोजगार लगेगा चार महीने और १३ दिनमें तुझको धन मिलेगा कुछ दिलमें खुशी होगी मगर शिवचौदशका व्रत कर श्रीशिवजीका पूजन ब्राह्मणसे करवा १ रोटी कुत्तेको दे तुझको फायदा होगा और अब जरा बीमारी होगी ११ या १९ दिन पश्चात् आराम होगा तन्दुरुस्ती रहेगा दिन २ रोजगार अच्छा लगेगा फिकर मत कर अगली सालमें इज्जत बढेगी इति ॥ पिण्ड ॥६३३॥ ⚍ हुक्मी शकल उकला मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूरदेश जानेका है" तू पहले भी रोजगारके वास्ते गया था सो तेरा रोजगार अच्छा लगेगा दिलमें खुश रह क्योंकि दिन तेरे दुरुस्त हैं सो अब तू बेशक गमन

कर तुझको फायदा होगा तन्दुरुस्ती रहेगी मगर मंगलके रोज मलीदा कर फकीरको खिला मंगलका जप ब्राह्मणसे ३१००० करा और धर्मकी नियत रख तुझको ६ महीने बाद फायदा रहेगा और तेरे दिलमें खुशी होगी धन मिलेगा इज्जत बढेगी फिकर मत कर अगली सालमें ज्यादा फायदा होगा इलाही तेरे पक्षपर है तेरा जाना दुरुस्त है इति ॥ पिण्ड ॥ ६३४ ॥ ☰ हुक्मी शकल इज्जतमा बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल दूरदेश जानेका है" तू पहले भी गयाथा परदेशमें तेरा रोजगार नहीं लगा दिनोंकी गरदिशसे जो तदबीर करी उसमें भी नुकसान रहा प्यारे भी दुशमन होगये तेरा दिल वहां लगा नहीं अब तू बेशक गमन कर दो महीने १० दिन बाद तुझको धन मिलेगा खुशी होगी मगर पक्ष प्रदोषका व्रत कर इतवारके रोज ९ कन्या मलीदासे जिमाव आदमका आकीदा रख तेरी तनदुरुस्ती रहेगी रोजगार अच्छा लगेगा फिकर मत कर अगली सालमें इज्जत ज्यादा बढेगी तेरा जाना दुरुस्त है इति ॥ पिंड ॥ ६३५ ॥ ☷ हुक्मी शकल सुनकलीव है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल रोजगारके वास्ते दूरदेश जानेका है" सो पहले रोजगारके वास्ते तू पूर्व देशमें गया मगर दिनोंकी गरदिशसे रोजगार तेरा वहां लगा नहीं जो तदबीर रोजगारकी करी उसमें ही नुकसान रहा दिल तेरा कुंद रहा किसीसे फायदा हुआ नहीं अब तू दक्षिणमें जो कोई शख्स तेरा दोस्त है उसकी मारफत तेरा रोजगार अच्छा लगेगा मगर शनिश्चरका पूजन करा डकोतको दान दे कुत्तोंके रोटी खिला धर्मकी नीयत रख तुझको फायदा होगा दो महिना २० रोज बाद तुझको खुशी रहेगी धन मिलेगा फिकर मत कर तेरा जाना दक्षिणमें दुरुस्त है दक्षिणमें तेरी मांगत है धन इज्जत अगले सालमें ज्यादा होगी तन्दुरुस्ती रहेगी इति ॥

पिण्ड ॥ ६३६ ॥ ⚍ हुक्मी शकल कब्जुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कहीं परदेश जानेका है " सो पहले भी रोजगारके वास्ते दक्षिणमें गया मगर रोजगार कम लगा दिनोंकी गरदिशसे जो तदबीर करी उसमें ही नुकसान रहा दिन तुझको माफिक हैं मगर सोमप्रदोषका व्रत कर और सोमवारके रोज हलवा करके जितनी तेरी ताकत होय उतने गरीब अपाहजोंको खिला आदम बाबाका आकीदा रख तुझको फायदा होगा अब तू पूर्वदेशमें जा तुझको धन मिलेगा पूर्व दिशावरमें तेरी मांगत है चार महीने २७दिन बाद तुझको फायदा होगा इज्जत बढेगी दिलमें खुशी होगी फिकर मत कर अगले सालमें रोजगार दिन २ ज्यादा होगा अब तेरा जाना पूर्वमें दुरुस्त है तनदुरुस्ती रहेगी इति॥ पिण्ड ॥ ६३७ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि परदेशमें जाऊं दूकानसे फायदा होगा कि नहीं" पहले तेरा रोजगार अच्छा हुआ दिन दुरुस्त थे अब प्रायः वर्ष रोजसे दिन नाकिश हैं जो तदबीर रोजगारकी करता है उसीमें नुकसान होता है फायदेकी कुछ सूरत देखी नहीं सो तू शनिश्चरके रोज दालके चिलके (पूडे) करा डकोतको खिला और ९१ दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा फकीरको खिला धर्मकी नीयत रख चार महीने बाद तेरी दूकानमें फायदा होगा कुछ धन मिलेगा और अगले साल दूकानमें सुफेद सौदाके लेनदेनसे फायदा होगा कुछ धन बढैगा इज्जत बढेगी दुर्गाजीका आकीदा रख इलाही दिन २ इज्जत ज्यादा करेगा इति ॥ पिण्ड ॥ ६३८ ॥ ⚌ हुक्मी शकल हुमरा साबित मंगलकी है सो हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि अव्वल दूकान कहीं करेंगे तो फायदा होवेगा " सो इस सख्सके नाम दूकानमें अच्छा नहीं और किसीके नाम फायदा होगा सो

तू अच्छी सायतमें दूकान कर दिन तेरे दुरुस्त हैं सुफेद लाल चीजमें तुझे फायदा होगा इज्जत तेरी दिन २ ज्यादा होगी मगर शिवार्चन तू किसी ब्राह्मणसे करा और १ साल पक्षप्रदोषका व्रत कर तेरी दूकानमें फायदा होगा और तू निश्चय करके मान अगले सालमें सौदामें फायदा होगा धन ज्यादा बढेगा और एक शख्ससे तेरी दोस्ती होकर तुझको नफा होगा मगर आदम बाबाका आकीदा रख धर्मकी नीयत रख इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६३९ ॥ ⚏ हुक्मी शकल बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है" सो तूने दूकान कहीं करी मगर उस दूकानमें अबतक रोजगार नहीं हुआ अगरचे रोजगारकी तदबीर बहुतसी की मगर कुछ नफा दूकानमें नहीं हुआ सो शायद दूकान दुरुस्त नहीं है और दिन तेरे नाकिश हैं सो तदबीर कर आदित्यहृदयका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा. इतवारके रोज खीरसे ७ ब्राह्मण जिमा श्रीसूर्य्यका रोज पूजनकर विनती कर तुझको फायदा होगा चार महीने १७ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त होयंगे दूकानमें फायदा होगा इज्जत ज्यादा होगी मगर सूर्यकी हरवक्त पूजा कर फायदा होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६४० ॥ ⚍ हुक्मी शकल खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है" तू दूकान कर तेरे नामसे फायदा होगा सुर्ख सुफेद वस्तु लेने देनेमें फायदा है मगर चार महीने बाद दूकान चलेगी सीरमें नफा होगा कुछ दिलमें खुशी होगी पीपलके दरख्तमें पानी गेर रोज अमावस्याके रोज कुँवारा ब्राह्मणको जिमा और दूध पिला तुझको फायदा होगा तेरे दिन दुरुस्त हैं २ शख्स तेरी जातके हैं उनकी दोस्ती या साहदारी होनेसे दूकानमें फायदा ज्यादा होगा अगले तीन या ९ साल धन बढेगा सौदा खुदा अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६४१ ॥ ⚎ हुक्मी शकल नुस्रतुद्दाखिल बृहस्पतिकी

है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है सवाल दो शख्सोंका है" तेरा रोजगार अच्छा लगेगा मगर एक शख्स और है उसकी शीरसे व्यापार कर तुझको फायदा होगा तेरा सब सोफियाना निबहेगा साझियोंसे फायदा है तुम्हारा साझी कोई दगादार नहीं होगा सो तू शीर मिलाकर दूकान कर तुझको नफा होगा ६७ रोजबाद तेरे दिलमें खुशवक्ती होगी कुछ धन मिलेगा मगर शुक्रका दान दे मलीदा करके ब्राह्मणको खिला व धर्ममें नीयत रख तुझको धन मिलेगा इज्जत बढेगी आगल सालमें मुफेद चीजसे ज्यादा फायदा होगा इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ६४२ ॥ ⁝ हुक्मी शकल अतवेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल यह है कि मैं साझी मिलाकर करता हूं मुझको फायदा होगा या नहीं" जबाब इस शख्सके शीरी भी दुरुस्त हैं ईमानदार हैं सौदामें नफा होगा मगर शीरियोंसे मिलकर कोई सौदा कर तुझको फायदा होगा दिन अब ९ रोजसे तुझको दुरुस्त आये हैं पहले दिन तेरे नाकिश थे और शीरियोंके भी दिन दुरुस्त हैं ईमान कायम हैं सो तू हिम्मत करके बिसमिल्ला मनाके सौदा कर फायदा होगा मगर तू बुधकी रोज शामके वक्त राहुका दान डकोतने दे जप माला शनिश्चरकी किसी ब्राह्मणसे करा तेरे सौदामें नफा होगा और १३० रोज बाद सौदामें नफा होगा धन मिलेगा फिकर मतकर अल्ला अगलीसालमें इज्जत बढावेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६४३ ॥ ⁝ हुक्मी शकल मुनकलीब नकी मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारमें धन मिलनेका है" जबाब इस शख्सको नाजके सौदामें फायदा होगा पहले भी इसको नाजके व्यापारमें फायदा रहा और अबकी सालमें नाजके व्यापारसे फायदा होगा मगर थोडे तेरे दिन नाकिश हैं सो तदबीर कर मङ्गलके रोज हनूमानको फुलेल व सिंदूर लगा मलीदा करके ब्राह्मणको खिला कुछ पूजा दुर्गाकी कर

वृक्षमें पानी गेर तुझको फायदा होगा ९० रोज बाद तुझको सौदामें नफा होगा धन बढेगा और अगलेसालमें तुझको नाजके लेनदेनमें फायदा ज्यादा होगा इज्जत बढेगी मगर तू धर्मकी नीयत रख कुत्तेको रोटी गेर या खरको दलीया खिला तुझको फायदा होगा धन दौलत इलाही ज्यादा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६४४॥ ⠅ हुक्मी शकल अतवेदाखिल जुमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन मिलनेका है" जवाब इस शख्सको नाजके सौदामें नफा होगा नाजके लेन देनमें पहली सालमें इसको नुकसान रहा अबके सालमें नाजके व्यापारमें फायदा होगा मगर कुछ थोडा और इसके दिन जरा नाकिश हैं मगर तीन महीने १९ दिन बाद तुझको फायदा होगा तदबीर कर चन्द्रमाका दान दे पूर्णमासीके रोज तस्मै करके ब्राह्मणको खिला जितनी तेरी ताकत हो उतनेको चांदीकी तसवीर दान दे फिर तुझको फायदा होगा तेरी उमरमें तुझको फायदा नहीं हुआ मगर किसमत तेरी अच्छी है अगली ३ साल बाद तेरी तकदीर खुलेगी सुफेद सुर्ख चीजके लेन देनमें धन मिलेगा इज्जत बढेगी मगर धर्मकी नीयत रख रोज धन बढेगा इलाही पक्षपर है इति प्रश्न पिण्ड ॥६४५॥ ⠅ हुक्मी शकल इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारमें धन मिलनेका है" जवाब इस शख्सको सफेद वस्तुके लेन देनसे फायदा होगा तेरे पहले दिन नाकिश थे जो तदबीर करी मगर फायदेकी वस्तु कम रही अब ७ रोजसे दिन दुरुस्त आये हैं सो तुझको रोजगारमें फायदा होगा मगर तू अब ९ ब्राह्मणोंको चांदके रोज चावल खिला सुफेद कपडेमें ९) चावलोंके लिये डाल २) दक्षिणा दे चांदनीं आठको सालभर कर तुझको फायदा होगा तकदीर तेरी अभी नहीं खुली ३ या ४ साल बाद तेरी तकदीर खुलेगी मगर इस सालमें भीं फायदा थोडा होगा मगर अगाडी सालोंमें नफा ज्यादा रहेगा फिक्र

मत कर अल्लाताला तेरी मुराद पूरी करेगा इज्जत बढेगी धन दौलत दिन दिन ज्यादा होगी इति प्रश्न पिण्ड ॥६४६॥ ⁝ हुक्मी शकल मुनकलीब चांदकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारमें धन मिलनेका है" जवाब इसके सुफेद वस्तुके लेन देनमें फायदा होगा पहले भी इस शख्सके सौदामें फायदा रहा अबके सालमें भी सुफेदके सौदामें नफा होगा मगर कुछ थोडा इसके दिन दुरुस्त हैं जो तदबीर करेगा उसमें ही फायदा होगा मगर तू जुमेरातको आदमबाबाकी पूजा कर जितनी तेरी ताकत हो चनेके लड्डू ब्राह्मणको खिला शिव चौदशका सालभर व्रत कर तुझको फायदा होगा दिन २ ज्यादा इज्जत बढेगी फिकर मत कर अगली सालमें अल्लाताला तेरी मुराद पूरी करेगा मगर धर्मकी नियत रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६४७ ॥ हुक्मी शकल लह्यान ⩧ खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन मिलनेका है" सो तू अपना पेशा कर धन मिलेगा अब तक तेरे दिन नाकिश थे जो तदबीर की उसमें कुछ मुराद पूरी नहीं हुई तेरे यार भी दिनोंकी गरदिशसे दुश्मन हो गये अब १५ दिन बाद तू अपना पेशा कर तुमको फायदा होगा कुछ धन मिलेगा मगर शनिश्चरके रोज मलीदा डाकोतको खिलाना शनिश्चरकी तसबीर दान कर जांटके दरखतमें पानी गेर काले कुत्ताको रोटी गेर तेरी किसमत १० महीने और १४ दिन बाद खुलेगी फिकर मत कर अगली सालमें अल्लाताला तेरी मुराद पूरी करेगा मगर तदबीर प्रति दिन ज्यादा कर इति ॥ पिण्ड ॥ ६४८ ॥ ⩦ हुक्मी शकल कबजुल दाखिल सूर्य्यकी है मुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धन मिलनेका है" सो तुझको दिनोंकी गरदिश ज्यादा है तदबीर धन मिलनेकी करता है मगर धन नहीं मिलता और जो किसी शख्ससे प्यार करता है तो दिनोंकी गरदिशसे दुश्मन दीख-

ता है किसी शख्ससे फायदा नहीं होता सो दिन तेरे नाकिश हैं मगर तदबीर हमेशा करनी चाहिये सुबेके वक्त पीपलके दरख्तमें पानी गेर कुत्तेको चपातियां खिला सालभर पक्षप्रदोषका व्रत कर इतने बाद तेरे दिन फिरेंगे तेरे पेशासे प्रथम दोसाल कम धन मिलेगा मगर ३ साल बाद तेरी तकदीर खुलेगी अपना पेशा कर कोई १ शख्स साह (साझी) कर धनदौलत तेरे ज्यादा होगी मगर नाकिश दिनोंमें गुजरान देवीका आकीदा रख अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६४९ ॥ ⚍ हुक्मी शकल कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल धन मिलनेका है" इस शख्सके दिन दुरुस्त हैं सो धन मिलेगा मगर कुछ थोडा परन्तु ४ महीने १७ दिन बाद तुझको गुमास्तासे धन मिलेगा तेरे गुमास्ताकी नीयत दुरुस्त है सो इसके हाथसे फायदा रहेगा मगर तू सूरजका आकीदा रख दीतके रोज खीरसे ब्राह्मणको खिला सुर्ख कपडा दक्षिणा दे २ वर्ष ६ महीने १२ दिन सुबेके वक्त हाथ जोडके सूर्य्यके अगाडी विनती कर तुझको फायदा होगा तकदीर ३ साल बाद तेरी मुराद हासिल करेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६५०॥ ☰ हुक्मी शकल लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल दुश्मनके भयका है" जवाब इस शख्सका दुश्मन कहीं बादशाहको अरजी पेश करने गया है मगर कुछ सुनाई नहीं होगी और इस शख्सके दिन दुरुस्त हैं पहले दिन बहुत नाकिश गये जो तदबीर की उसीमें नुकसान रहा अब १७ रोजसे दिन दुरुस्त आये हैं सो दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा मगर आदम बाबाका आकीदा रख तुझको फायदा होगा तू फिकर मत कर तेरे पक्षपर बादशाह है तेरे दुश्मनका नाश होगा चार महीने २ रोज बाद दुश्मन पैमाल होगा इलाही पक्षमें है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५१ ॥ ☰ हुक्मी शकल जमात साबित

बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनका है" जवाब इस शख्सके दुश्मन राजमें झगडा करते हैं दुश्मन अवल हैं छल छिद्री ज्यादा हैं रातदिन तकरार करते हैं सो राजमें तू जीतेगा मगर दिन तेरे नाकिश हैं सो तदबीर कर संपुट देकर दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा कुछ भैरवका आकीदा रख रोज मलीदा करके कुँवारे लडके ७ वा ९ जिमा तेरे दुश्मन पैमाल होजावेंगे ३१ दिन बाद राजमें कुछ मिलाप होगा दुश्मन तेरे पैमाल होजावेंगे फिकर मत कर राज तेरी पक्षपै होजावेगा दुश्मनोंका पैमाल निश्चय होगा दुश्मन तेरे पैरों पडेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ६९२ ॥ ⚍ हुक्मी शकल उकला मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनका है" सो तू अरजी पेश कर अदालतमें जीतेगा मगर दिन तेरे नाकिश हैं दुश्मन तेरा जोरवाला है रातदिन तकरार करता है मगर तदबीर कर मंगलका व्रत कर दुर्गापाठ २१ वा ९१ किसी ब्राह्मणसे करा दुश्मनका संपुट देकर धर्मकी नियत रख दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा मगर एक दफे किसी शख्सको पाकर दुश्मन तेरा जोरपाके तुझको नीचा दिखलावेगा आखिरमें तू जीतेगा मगर कुछ धन दौलत खरच पडेगा बादशाह तेरे पक्षपर है फिकर मत कर इलाही तेरी मुराद पूरी करेगा और तू अरजी अव्वल पेशकर राजमें तू जीतेगा दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६९३ ॥ ⚍ हुक्मी शकल कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनके झगडेका है सो इसके साथ झगडा बहुत दिनोंका है दुश्मन जोरवाला है यह शख्स राजमें झगडा करके दिनोंकी गरदिशसे बरबाद होगा दिन इसको बहुत नाकिश हैं सो तदबीर कर ५१ दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा

मंगलकी पूजाकर हरवक्त हाथ जोड कर विनती कर तू आखिरमें जीतेगा मगर १ महीना बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे तू १ दफे दुश्मनका जोर खाकर दुःख पावेगा मगर अब राजाका एक शख्स तेरी तरफ होगा सो निश्चय करके मान तू जीतेगा दुश्मन तेरा खारिज होकर पैमाल होजावेगा फिकर मत कर इलाही तेरी पक्षमें है तेरी मुराद हासिल होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५४ ॥ हुक्मी शकल जमात ☰ साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनके झगडेका है सो तू अपील करेगा मुनाफा लेकर और जंगे मगर दुश्मन तेरा जोरवाला है रातदिन तकरार करता है दिन तेरे नाकिश हैं जो तदबीर करता है दिनोंकी गरदिश करके उसमें ही हानि उठाता है मगर तू बटुकका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा कालेकुत्तेको रोटियें गेर धमकी नियत रख आखिरमें तू जीतेगा मगर कुछ धन तेरा खरच पडेगा बादशाह तेरे पक्षपर होगा दुश्मन तेरा बहुत जोरसे हार खावेगा मगर अपील तू बेशक पेश कर तू जीतेगा फिकर मत कर इलाही तेरी मुराद पूरी करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५५ ॥ ÷ हुक्मी शकल फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनका है" सो तेरा दुश्मन अरजी पेश नहीं करेगा तुझको डरपाता है सो तू डरपे मत अव्वल तो अरजी नहीं देगा जो अरजी देगा तो बिलफौर खारिज होकर खिलाफ खावेगा तू जीतेगा दिन तेरे जरा नाकिश हैं सो तू दिन गुजरान कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५६ ॥ ═ हुक्मी शकल उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजभावका है सो तू अरजी पेश मत कर तेरा कार्य्य विना अरजी पेश किये दुरुस्त होगा ९ दिनसे दिन दुरुस्त आये हैं सो तू अव्वल अरजी पेश मत कर तू जीतेगा दुश्मन पैमाल

होगा अल्लाताला तेरी बिगर अरजी मुराद पूरी करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५७ ॥ हुक्मी शकल अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाकी अरजी देनेका है" सो तू बेशक अरजी पेशकर करजा तुरत मिलेगा मगर राजमें कुछ धन तेरा खरच पडेगा तेरा करजा खरच समेत सब मिलेगा राजा तेरे पक्षपर रहेगा न जीतेगा सूदसमेत धन तेरा मिलेगा फिकर मत कर इलाही मुराद पूरी करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६५८ ॥ हुक्मी शकल हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले सख्स ! तेरा सवाल करजेकी आमदनीका है"सो तुझको धन मिलेगा मगर थोडा और कुछके दिनोंकी देरीसे क्योंकि तेरे दिन बहुत दिनोंसे नाकिश हैं मगर गुजरान कर तेरा करजा सब मिलेगा मगर राजमें मुकद्दमा न गेर अरजी मत कर १ महीना १९ दिनबाद दिन दुरुस्त आवेंगे फिकर मतकर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ६५९ ॥ हुक्मी शकल बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल करजाकी आमदनीका है"सो तेरे दिन नाकिश हैं तदबीर तो करता है मगर दिनोंकी गरदिशसे चलती नहीं तेरा मुकद्दमा राजमें बहुत दिनोंसे है मगर फैसला होकर मुकद्दमा साबित हुआ नहीं इस मुकद्दमासे तू बरबाद होगया अब दो महीने ५ दिन बाद दिन तेरे दुरुस्त आवेंगे करजा तेरा सब मिल जायगा एक शख्स मध्यजाति गौरवर्णका तेरी तरफमें होकर मुकद्दमाका फैसला बिल फौर करेगा तेरा कुछ धन राजमें खरच पडेगा मगर तेरा करजा सूदसमेत सब मिलेगा मगर देरसे फिकर मत कर अब २० दिन बाद राजमें तेरी सुनाई होगी अल्ला तेरी मुराद हासिल करेगा दुश्मन पैमाल होगा इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ६६० ॥ हुक्मी शकल नस्रतुलखारिज आफताफकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स !

तेरा सवाल राजसे धनकी आमदनीका है सो तुझको धन मिलेगा कुछ देर नहीं है अब ५ रोजसे दिन दुरुस्त आये हैं सो तेरा धन सब मिलेगा फिकर मत कर दुश्मन तेरा पैमाल होजावेगा अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा कुछ देर नहीं राजा तेरे पक्षपर है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६६१॥ हुक्मी शकल = नुस्रतुदाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनके झगडेका है सो दुश्मन तेरा जोरवाला है दिन तेरे नाकिश हैं सो तदवीर कर आपदुद्धार वटुकका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा मङ्गलकी पूजा करनी मलीदा करके मङ्गलके रोज ९ ब्राह्मणोंको गेहूंके आटाके पदार्थ खिला टका २ दक्षिणा दे अब २५ रोज बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे तेरी जमीनका फैसला विलफौर होगा दुश्मन तेरा पैमाल होगा जमीन तेरी मिलेगी मुकदमा जीतेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६६२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनका है सो जमीन राजसें तुझको मिलेगी मगर कुछ देरीसे और उस जमीनसे तुझको फायदा होगा इज्जत ज्यादा बढेगी मगर सूर्य्यकी पूजा कर हर वक्त हस्त जोडके विनती कर धर्मकी नीयत रख जमीन तुझको मिलेगी दो महीने १२ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे तेरी मुराद अल्लाताला अच्छा करेगा मगर एक दुश्मन तेरा राज्यमें है सो पैमाल हो जावेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६६३॥ ⁝ नकीमुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनका है" तेरा झगडा राजमें बहुत दिनसे है तू झगडे और दिनोंकी गरदिशसे बरबाद हो गया मदद तेरी बन्द है अब ३२ रोज बाद तेरी तामील जारी होगी दुश्मन तेरा पैमाल हो जावेगा मगर कुछ धन तेरा खरच होगा राजाका एक शख्स तेरी तरफ मजबूत है मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६६४॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे दाखिल शुक्र-

की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनसे फायदेका है" सो इस जमीनसे तुझको फायदा होवेगा मन्दिर हवेली निर्विघ्नतासे होगी मगर तू धर्मकी नियत रख फकीरोंको दलिया खिला इलाही मुराद तेरी हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६६५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकी नौकरीका है सो तेरी राजमें नौकरी होगी मगर कुछ देरीसे और नाकिश दिन गये अब १९ दिन बाद दुरुस्त आवेंगे और तुझको राजसे फायदा है मगर राजमें तेरा दुश्मन जोरवाला है सो सूर्य्यकी पूजा कर धर्मकी नियत रख तेरा दुश्मन पैमाल होगा रोजी तेरी राजसे अच्छी होगी फिकर मतकर इलाही अगले सालमें कुछ मुरातबा बढावेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६६६ ॥ ⁝ हुक्मी शकल तरीख मुनकलीव चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जमीनसे फायदाका है सो इस जमीन हवेली और मन्दिरसे तुझको फायदा नहीं होगा यह जमीन बरबादी चाहती है जमीनका लेना और वास करना तुझको अच्छा नहीं सो जमीन मत ले इसमें वास मत कर अल्लाताला जमीन मज्जैत हवेली और दिलावेगा अन्देशा मत कर ये जमीन अच्छी नहीं इति प्रश्न॥पिंड॥६६७॥ हुक्मी शकल ⁝ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजमें मुरातबा ज्यादाका है सो इस शख्सका मुरातबा ज्यादा होगा राजाकी मेहरबानगी है इसको नेकनामी मिलेगी इसके दिन दुरुस्त हैं एक शख्स तेरा दुश्मन राजपूत है मगर दफै होवेगा अगली सालमें तेरा मुरातबा ज्यादा होगा धन इज्जत बढेगी मगर धर्मकी नियत रख उजाडमें प्यासोंको पानी पिला चार महीने १० दिन बाद तेरा मुरातबा अल्लाताला बढावेगा तन्दुरुस्ती रहेगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६६८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल

दाखिल सूरजकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजका काम हाथ लेनेका है" सो इस सख्सको पहले राज्यमें उनफेद अच्छी हुई राजाकी मिहरवानी रही अब कोई रोज बाद दुश्मनोंने जोर पाकर इस शख्सको दूर कर दिया दिन इसके नाकिश हैं जो तदबीर करता है दिनोंकी गरदिश करके उसमें ही कुछ फायदा नहीं होता सो ३१ दिन दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा दशमीका व्रत कर अमावसके रोज हलवा ब्राह्मणोंको यथाशक्ति खिला धर्मकी नीयत रख तीन महीने १९ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे सब मुराद तेरी अल्लाताला अच्छा करेगा और एक शख्स तेरा दुश्मन जोरवाला है पर ३ महीने १९ दिन बाद दुश्मन पैमाल हो जावेगा अंदेशा मत कर इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६६९ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू पूछता है कि एक शख्सको बीमारी ज्यादा है कई इलाज किये परन्तु दिनोंकी गरदिश करके कोई भी इलाज दुरुस्त न आया अब दिनोंकी गरदिश कितनी रही है और इसको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको दिन २ बीमारी ज्यादा होगी इसको सामान्य मारक है यह कालके मुखमें आ रहा है सो प्रथम तो इसको भोजनमें रुचि नहीं होती और कुछ रुचि होवे तो भोजन किया न जाय और कर लेवे तो पचे नहीं तदबीर कर एक कलसा तांबेका घीका भरवाय सुवर्ण मासे ११ गेरके दे आराम होगा इति ॥ पिण्ड ॥ ६७० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजभावका है" सो तू बेशक राजाको सवाल दे तेरा सवाल दुरुस्त बढेगा दुश्मन तेरे बहुत हैं राजाके कानमें दिन रात तेरी तरफका जिकर करते हैं सो भगवतीका अकीदा रख धर्मकी नियत रख तेरे दुश्मन

सब पैमाल हो जावेंगे राजकी परवस्ती रहेगी धन इज्जत ज्यादा चढैगी फिकर मत कर नेकनामी मिलेगी इलाही पक्षमें है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७१॥ हुक्मी शकल फरहा ⁞ मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजके भयका है सो तुझको दिन नाकिश हैं राजसे थोडा भय होगा क्योंकी दुश्मन तेरा जोरवाला है रात दिन तकदीरी करता है मगर दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा मंगलकी पूजा कर तेरा दुश्मन पैमाल होजावेगा २७ दिन और तुझको नाकिश है पश्चात् भय दूर होगा राजमें धन कुछ तेरा खरच पडेगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७२ ॥ हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकी दहशतका है" सो तुझको राजकी दहशत होगी तेरे ऊपर जुर्माना होगा तुझको दिन माफिक हैं दुशमन तेरा फरेबी है मगर तदबीर कर शनिश्चरकी पूजा कर आपदुद्धारका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा कुत्तेको रोटी गेर धर्मकी नीयत रख तेरे २१ दिन और नाकिश हैं बाद दुश्मन तेरे सब पैमाल होजावेंगे अंदेशा मत कर अल्लाताला करेगा तो जुर्माना भी कम होगा मगर मिहनत कर राज तेरा दुशमन है मगर एक शख्स मध्यवर्णका तेरी तरफ है तुझको चाहता है उससे दोस्ती कर तेरा काम बिलफौर होगा राजकी दहशत दूर होगी फिकर मत कर अल्लाताला तेरा अंदेशा दूर करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७३ ॥ ⁞ हुक्मी शकल :अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदमेंसे छूटनेका है सो उस शख्सको दिन नाकिश हैं जो तदबीर करता है वही दुरुस्त नहीं होती मगर फिर तदबीर कर दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा सूर्य्यकी पूजा कर हर वक्त हाथ जोडकर विनती कर वो शख्स ! कैदसे छूटेगा मगर ३१ दिन उसके और नाकिश हैं बाद

दिनोंकी गर्दिशके दुश्मन सब पैमाल होवेंगे कैदसे छूट जायगा मगर धनका खरच बरजरूर पडेगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा एक शख्स गौरवर्णका तेरा दोस्त है उससे जोर पाकर वह शख्स कैदसे जल्दी छूटैगा मगर आकीदा सूर्यका रख अल्लाताला मुराद तेरी हासिल करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा सावित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजाका कामदार आवेगा हमको फलदारी होगी या नहीं यह है" सो इस शख्सको कामदारोंसे फलदारी है इस कामदारसे फायदा होगा पाराना बढेगा दिन तेरे दुरुस्त हैं दुश्मन तेरा पैमाल होगा मगर मंगलकी पूजा कर इस कामदारसे तेरेको फलदारी अच्छी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७५ ॥ हुक्मी शकल बयाज ⚍ सावित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है" वह शख्स कैदसे नहीं छूटेगा अभी देरी है उसके दिन नाकिश हैं राजके सब आदमी दुश्मन हैं इससे मुकदमा वरबाद होगया तेरे दुश्मन फरेबी हैं सो तदबीर कर कैदसे छूटनेमें देरी है अंदेशा मत कर छूट जायगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७६ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतुल खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुआमें हजत बनानेका है" सो तेरे सवालका काम दुरुस्त होगा कुछ फिसाद नहीं होगा तेरे दिन दुरुस्त हैं मगर इतने तामील जारी रहे भैरूं हनुमान् वा कालीको पूजा कर दलिहा फकीरोंको खिला अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा तुझको सदरहमत है इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६७७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतुल दाखिल बृहस्पतिकी है, हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बाग बगीचा तालाव बनवानेका है सो तेरे अच्छे काममें कुछ फिसाद नहीं होगा तेरी नीयत दुरुस्त है

तेरी सब मुराद पूरी होगी दुश्मन तेरे सब पैमाल होजावेंगे दिन तेरे दुरुस्त हैं तकदीर तेरी अच्छी है ३ मास बाद और ज्यादा तकदीर खुलेगी मगर धर्मकी नीयत रख फकीरोंको दलिया खिला अल्लाताला तेरी मुराद सब हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजा दूर होनेका है " तेरा करजा दूर होगा मगर खरच ज्यादा है आमदनी कम है दिन तेरे नाकिश हैं ५ महीने ९ दिन बाद दुरुस्त आवेंगे करज तेरा सब दूर होगा २, ३ साल बाद तकदीर तेरी खुलेगी धन मिलेगा इलाही मुराद तेरी हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६७९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धनकी आमदनीका है " सो तू लेखा कर परमेश्वरकी मेहरवानी तुझ पर पूरी रही है धन भी बहुत दिया है संतोष रख नेकनामी होगी धन बहुत मिलेगा दिल ठीक रख तुम्हरा मुरातवा बढेगा लेखा तेरा होजावेगा कुछ दिन पीछे लेखा हिसाब दुरुस्त होगा मगर ४२ दिन तेरे और नाकिश हैं सो मंगल की पूजा कर धर्मकी नीयत रख इस करजामें भी तुझको कुछ धन मिलेगा मगर थोडा; और १ साल बाद करजा तेरा सब आजायगा फिकर मत कर इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६८० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादके होनेका है सो तेरे औलाद अबतक हुई नहीं हमल भी तेरी स्त्रीको नहीं रहा तेरे हमल बन्धयोग है पूर्व जन्ममें तैने अजाब बहुत किया तिस अजाब करके इस पैदाइशमें तेरे हमल भी नहीं रहा सो तू अमावसके रोज दूध देनेवाली गाय और कुछ उसके साथ धन किसी ब्राह्मण को दे और हलवा करके ५१ अथवा ३१ ब्राह्मणोंको खिला चावलों-

की दक्षिणा दे और साल भर सूर्य्यकी पूजा कर और सूर्य्यका व्रत कर तेरा पहले जन्मका अजाब दूर होगा तेरी औरतका कुछ गुनाह नहीं तेरी गुनाहसे इतनी देरी हुई अब ९ महीने १३ दिन बाद फरजन्द होनेकी तजवीज लगेगी हमल औरतके रहेगा सूरजका आकीदा रख धर्मकी नीयत रख अल्लाताला करेगा तो १ वा २ साल भीतर तेरे फरजन्द होगा फिकर मत कर १ फरजन्द १ छोकरी जिन्दा रहेंगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६८१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है" सो तेरे फरजन्द छोकरी आज तक हुई नहीं तेरी औरतको हमल तो रह जाता है मगर ठहरता नहीं सो तेरे पहले जन्मका अजाब है और तेरी औरतकी भी गुना है सो तू तदबीर कर सोमवती अमावस्याके रोज गोरी या लाल गायकी पूजा करके ब्राह्मणको दे सवालाख फूल चढाकर आदम बाबाकी पूजाकर यथाशक्ति १०० अथवा ५० ब्राह्मणोंको हलवा खिला प्रीति करके पितरोंकी गया श्राद्ध कर साल भर १४ का व्रत कर जब तेरा अजाब दूर होगा अंदेशा मत कर इसी औरतके हमल ठहरेगा फरजन्द होगा मगर ढील है सो तू आदम बाबाको हरवक्त हाथ जोडके विनती कर धर्मकी नीयत रख तेरे अगली साल बाद हमल ठहरेगा इलाहीं फरजन्द देगा अन्देशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६८२ ॥ हुक्मीं शकल ⚎ कबजुल दाखिल सूर्य्यकी है हुक्मी फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है" सो अबतक फरजन्द छोकरी हुई नहीं तेरी औरतका पूर्व जन्मका अजाब है सो इस औरतके फरजन्द छोकरी नहीं होगी क्योंकि तेरे औगुन दूर होनेके नहीं सो तू और शादीकर उस औरतके फरजन्द छोकरी होगी हमल बिलफौर ठहरेगा मगर सन्तानगोपालका संपुट पाठ किसी ब्राह्मणसे करा साल भर पक्षप्रदोषका व्रत कर चन्द्रग्रहणमें १ मन गेहूं टका१३।

किन्हीं २५ ब्राह्मणोंको दे कुत्तेको चपातियां खिला धर्मकी नीयत रख तेरी दूसरी औरतके फरजन्द होगा अल्लाताला जिन्दा रक्खेगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६८३॥ हुक्मी शकल ⠀ कबजुलखारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है सो तेरे १ फरजन्द होकर फिर बन्द होगई हमल भी न रहा और कोई तदबीरसे हमल रहा सो ठहरा नहीं सो तेरे अगले जन्मका अजाब (गुना) है सो तदबीर कर सवालाख त्र्यंबक मन्त्र किसी ब्राह्मणसे जपवा बाद १९ सेर वा एक मन गेहूं सुर्ख कपडा ९॥ गज टका २६॥ किसी ब्राह्मणको दे आगे लिखे जानेवाले यन्त्रको ६२ मासे सुवर्णका बनवाकर किसी ब्राह्मणको दे अथवा किसी ब्राह्मणद्वारा नित्य सहस्रशीर्षा मन्त्रसे पूजन करवा हमल रहेगा यथा श्रद्धासे ब्राह्मण भोजन करवा

२	९	४	२	७	६	६	१	८
७	५	३	९	५	१	७	५	३
६	१	८	४	३	८	२	९	४

यह सुवर्णका । यह चांदीका । यह तांबेका ।

रक्तचन्दन सब भूषण ब्राह्मणको दे पीपलके दरख्तमें पानी गेर सालभर सूरजका व्रत कर तब तेरा अजाब दूर होगा फिकर मतकर फिर इसी औरतके हमल ठहरेगा फरजन्द होगा अंदेशा मतकर १ अथवा २ साल भीतर अल्लाताला करेगा फरजन्द जरूर होगा फिकर मतकर इलाही जिन्दा रखेगा ॥ इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६८४ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है

हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले ! तेरा सवाल औलादका है सो तेरे छोकरी होकर बन्द होगयी हमल भी न रहा और किसी तदवीरसे हमल रहा मगर ठहरा नहीं सो तेरे पहले जन्मका अजाव (गुना) है सो तदवीर कर अमावसके रोज सुवेके वक्त सुफेद गायकी पूजा करके अच्छे गरीब ब्राह्मणको यथाशक्ति दे और सालभर पीपलमें पानीं दूध मिलाकर गेर एक छोकराको अमावसके रोज कच्चा दूध पिला सालभर चौदशका व्रत कर तव अजाव दूर होके हमल बिलफौर ठहरेगा इसी औरतके फरजन्द होगा अन्देशा मत कर २ साल भीतर तेरे फरजन्द होगा मगर धर्मकी नीयत रख कीडियोंको दालिया गेर अल्लाताला फरजन्द तुझको देगा जिंदा रहेगा ॥ पिण्ड ॥ ६८५ ॥ हुक्मी शकल ⸫ फरहा मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है" सो तेरे एक औलाद होकर मर गई फिर कुछ हुआ नहीं हमल भी न रहा हमल रहा भी तो ठहरा नहीं सो तेरे पहिले पैदायशका अजाव (गुना) है सो तदवीर कर सन्तानगोपालका किसी ब्राह्मणसे अनुष्ठान करवा मंगलका दान दे सूर्य्यग्रहणमें १ मन गेहूँ खांड १० सेर घी ५ सेर सुर्ख कपडा ९ गज किसी भूखे ब्राह्मणको दे १ सालभर आदमबाबा-का आकीदा रख और पूजन कर सो पक्षप्रदोषका व्रत कर अमावस सोमवारके रोज खीरपकाके शक्तिके अनुसार किसी ब्राह्मणको खिला बाद अजाब दूर होगा २ सालके भीतर फरजन्द होगा मगर धर्मकी नीयत रख हमेशः सुबेके वक्त कुत्तेको चपातियां गेर अन्देशा मत कर अल्ला तुझको फरजन्द देवेगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥६८६॥ हुक्मी शकल उकला ⸫ मुनकलाव शनि-श्चरकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औला-दका है सो तेरे छोकरी हुई फरजन्दका सुख हुआ नहीं आजतक फरजन्दका दुःख है सो तेरे पहले जन्मका अजाव है बडा गुनाह है

सो तदबीर कर सूर्य्यंकी पूजा कर किसी ब्राह्मणसे आदित्यहृदयका पाठ करा अमावस रविवारके दिन सुबेके वक्त बछडेवाली पीली गाय-को सब असबाब समेत मयदस्तूर किसी ब्राह्मणको दे जिस दिन होम हो उस दिन सब देवताओंको फातियां दे और ब्राह्मणांको शक्तिके अनुसार हलवा खिला और सालभर सूर्य्यका व्रत कर हर वक्त सूर्य्यके अगाडी हाथ जोडके विनती कर तेरा अजाब दूर होगा गुना माफ होगी बाद फरजन्द इसी औरतके दोसाल बाद होगा अन्देशा मत कर मगर तेरे पापसे छोकरी तेरे कलाममें ज्यादा लिखी है मगर फरजंद इलाही बजरूर देगा इति ॥ पिंड ॥ ६८७ ॥ हुक्मी शकल अंकीश ☷ दाखिल शनैश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलाद होनेका है" सो तेरी सन्तान हुई मगर जीती नहीं तेरी स्त्रीको मसानका रोग है मृत-वत्सा रोग है सो तेरे पहले जन्मका अजाब है साबित गुना है मगर तदबीर कर गर्भिणी सुफेद गायकी ९ महीने तक पूजा कर जिस वक्त वह गाय ब्यावे उस वक्त बछिया बछाके मुखमें सोना गेरके उसको दान दे १०१ दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा होम करवा हलवा बनवा करके ब्राह्मणको यथाशक्ति खिला और साल-भर आठैंका व्रत कर नवमीके रोज ब्राह्मणकी छोकरीको हलवा खिला कपडा स्वर्ण दे तब अजाब तेरा दूर होगा और औलाद तेरी जीवेगी इस ही औरतके अब तेरे फरजन्द होगा इस ही दिनसे आदम-बाबाकी ५ साल भर पूजन और रुद्रीका पाठ कर धर्मकी नीयत रख कुत्तेको चपातियां सुबहकी वक्त खिला अल्लाताला तेरी औलाद-को जिन्दा रक्खेगा अन्देशा मत कर तेरे कलाममें २ फरजन्द और छोकरी १ लिखी है इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६८८ ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है" सो होनेकी नहीं शायद हो भी जावे तो

मरेगी जीनेकी नहीं सो तेरे औरतके अगले जन्मकी गुना है ज्यादा अजाब है सो माफ होनेका नहीं कुछ तदबीर कर कोई छोकरा मोल ले भाई बन्धुका वा दोस्तका जो मिले उससे तुझको फायदा होगा मगर धर्मकी नीयत रख आदमबाबाकी पूजा कर हरवक्त हाथ जोडके मिहनत कर पक्षप्रदोषके दोनों व्रत कर दूसरे दिन किसी ब्राह्मणको सीधा देना और सब रोज हरवक्त कुत्तेको रोटी खिला तब पीछे तेरे छोकरे पर कोई आपत्ति नहीं आवेगी और उस छोकरेसे तुझको फायदा होगा अंदेशा मत कर इलाही जिन्दा रक्खेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६८९॥ हुकमी शकल ≕ बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल औलादका है" सो तेरी औरतको हमल है उस हमलमें इलाही फरजन्द देगा मगर तेरी औरतके दिन नाकिश हैं सो मंगलका दान दे पूजा और जप किसी ब्राह्मणसे करा धर्मकी नीयत रख अल्लाताला तुझको फरजंद देगा अंदेशा मत कर इलाही तेरा फरजन्द जिन्दा रक्खेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६९० ॥ हुकमी शकल ≐ नुस्रत खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औलादका है " सो तेरे अब तक औलादका सुख नहीं हुआ तेरे दिन नाकिश हैं पहले जन्मका अजाब है सुफेद गाय बछडेकी मा सब सामग्री समेत तू अमावसके दिन नेक ब्राह्मणको दे सूर्य्यकी पूजा कर अल्लाताला तुझको बरजरूर औलाद देगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६९१ ॥ हुकमी शकल ≡ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीके अंदेशेका है " उस शख्सने किसी मुल्कमें गये बाद जानेका कभी ब्यौरा भी नहीं दिया उस शख्सको दिनोंकी गरदिश ज्यादा है मुल्क मुल्कमें फिरता है मगर कुछ फायदा नहीं हुआ रोजगार उसका लग जाता है मगर ठहरता नहीं दिनोंकी गरदिश करके १० महीने और नाकिश

हैं बाद अच्छे आवेंगे रोजगार भी लग जावेगा मगर तू अंदेशा मत कर उसकी तंदुरुस्ती है मिजाज अच्छा है तेरे पास ब्यौरा जल्दी आवेगा मगर खुशवक्तीके १ बरस और ९ महीने बाकी हैं बाद उस शख्सको धन मिलेगा और कुछ मुरातबा बढैगा मगर तू धर्मकी नीयत रख अल्लाताला उस शख्सको बेग ही मिलेगा तू अंदेशा मत कर उस शख्सके हाथका खत जरूर आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६९२॥ हुक्मी शकल ∴ कबजुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल है कि किसी शख्सके खत आये बहुत रोज हुए सो वह कैसा है "सो उस शख्सकी तकदीर अच्छी नहीं चित्तको अंदेशा है उसके दिन नाकिश हैं रोज-गार भी उस शख्सका इन दिनोंमें कम है १ महीने बाद दिन अच्छे आवेंगे रोजगार भी कुछ ज्यादा होगा तुमको खत बरजरूर आवेगा कुछ देरी नहीं है उसने १ खत भेजा मगर आया नहीं तू अंदेशा मत कर उस शख्सकी तन्दुरुस्ती है मिजाज भी अच्छा है मगर उस शख्सको कहला भेजो चौथका व्रत करै सालभर सूर्यका जप और दान दे इतनेमें इलाज करेगा तो दिन पर दिन रोजगार ज्यादा होगा इतिं प्रश्न ॥ पिण्ड ॥६९३ ॥ हुक्मी शकल ∸ कबजुल खारिज राहु-की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके खत आनेका है "सो उस शख्सका खत बरजरूर आवेगा तू अंदेशा मत कर उसका मिजाज अच्छा है तन्दुरुस्ती है सो तेरे पास खत ५ या ७ दिन भीतर खुशवक्तीका बरजरूर आवेगा इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ६९४ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके किसी मुल्कमें बीमारीका है " सो उस शख्सको बीमारी ज्यादा है और उसके दिन नाकिश हैं मगर तदबीर कर मंगलका जप और दान किसी ब्राह्मणको दे इसको १९ दिन नाकिश और

हैं मगर अब २ रोज से उसको आराम है तू अंदेशा मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा तो तन्दुरुस्ती रहेगी खत बरजरूर अच्छा आवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६९५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि "कोई शख्स किसी मुल्कमें गया है सो उस शख्सको लाभ होगा कि नहीं" उस शख्सके २ महीने १० दिन और नाकिश हैं बाद रोजगार लगेगा लाभ होगा मगर उस शख्सको जरा बीमारी पानीको होगी सो कुछ अंदेशा नहीं १५ दिन अथवा २० दिन रहेगी सो कुछ फिकर मत कर लाभ उसको अच्छा होगा अच्छे दिन उसकी यात्रा हुई है सो खुशवक्ती होगी धन मिलेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ६९६ ॥ हुक्मी शकल उकला ⁝ मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल है कि किसी मुल्कमें कोई शख्स है खरच कब भेजेगा" उसका रोजगार अच्छा है खुशवक्ती है खत तुम्हारे पास बरजरूर भेजेगा खरच भी भेजेगा मगर कुछ ढील है तू अंदेशा मत कर रोजगार २ महीने १० दिन बाद उसका अच्छा लगेगा खरच तुझको बरजरूर भेजेगा उस शख्सको भी तेरी तरफका अंदेशा है सो खरच जरूर भेजेगा इति प्रश्न पिण्ड ॥ ६९७ ॥ हुक्मी शकल अंकीश ⁝ दाखिल शनैश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले वह शक्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके अंदेशेका है" सो वह शख्स तुझको बिगर कहे गया तुझको मालूम भी नहीं सो तू अंदेशा मत कर वह शख्स खुशी है तुझको पता जल्दी लगेगा उसके दिन नाकिश हैं दिनोंकी गरदिश करके वह शख्स इस वक्त छायामें बैठा है मिजाज अच्छा है तू अंदेशा मत कर अल्लाताला उस शख्ससे तुझको जल्दी मिलावेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६९८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी

शख्सके आनेका है"सो वह शख्स बरजरूर आवेगा मगर दिल उस शख्सका कुंद है मिजाज तो अच्छा है इन दिनोंमें उसको लाभ अच्छा है दिन उस शख्सके दुरुस्त हैं उस शख्सके भी मनमें आनेकी जल्दी है सो इलाही उसको जल्दीसे लावेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६९९ ॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मुल्कसे खत आनेका है "सो खत बरजरूर आवेगा रास्तेमें है इस वक्त वह खत रवाने होरहा है उस खतमें कुछ धन दौलत भी है मगर तेरी मुरादसे कम है सो खत व दौलत तेरे पास बरजरूर आवेगी ९ या ७ रोज भीतर खत आवेगा अन्देशा मत कर इलाही तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७०० ॥ हुक्मी शकल ☷ नस्रुतुलखारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी शख्सके आनेका है"सो वह शख्स जल्दी आवेगा उसको तेरी तरफका अन्देशा बहुत हैं वह शख्स इस वक्त रास्तेमें चल रहा है उसका मिजाज अच्छा है सो तेरे पास १० या १५ रोज भीतर बरजरूर आवेगा फिकर मत कर खुशी रह पैदाकुरंदा मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न पिंड ॥७०१॥ हुक्मी शकल ☷ लह्यान बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शादीका है"सो इसकी अबतक शादी हुई नहीं दिन इसके नाकिश हैं सगाईकी तदबीर बहुत की मगर दिनोंकी गरदिशसे सगाई नहीं हुई औरतइसके कलाम में बरजरूर लिखी है धन खरच होगी मगर कुछ देरी है और ये इलाज कर मंगलके रोज मलीदा करके ब्राह्मणको खिला पक्षप्रदोषका व्रत कर दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा हमेशः सुबहके वक्त बडके दरख्तमें पानी गेर धर्मकी नीयत रख तेरी शादी बरजरूर होगी एक शख्स मध्यसूरत उमर ४० वर्षके भीतर है उसके मार्फत पूर्व पश्चिमकी औरत मिलेगी औरत गोरा बदन खूबसूरत मिलेगा कुछ

देरी नहीं है ७२ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे सब्र रख पैदा कुरंदा तेरी मुराद हासिल करेगा बरजरूर अंदेशा मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७०२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दूसरी शादीका है" इसकी अव्वल शादी होकर मर गई दूसरी औरत मिलेगी मगर धन खरच पडैगा मगर दिन इसके सख्त हैं कई तदबीर लगाई मगर दिनोंकी गरदिश करके तदबीर खाई नहीं दुश्मन इस शख्सके जालसाज हैं शिकायत इसकी हरवक्त करते हैं दूसरी औरत इसके कलाममें लिखी है मगर सूर्य्यकी पूजाकर हर वक्त हाथ जोडके मिन्नत कर आदित्यहृदयका पाठ किसी ब्राह्मणसे करा सूर्यका व्रत कर तुझको औरत मिलेगी उत्तर या पूर्व दिशाकी आवेगी गोरा वदन खूबसूरत मगर दो महीने १२ दिन इसके और सख्त हैं बाद दिन अच्छे आवेंग एक आदमी मध्यवर्णका है उससे मिलाप करके औरत मिलेगी अन्देशा मत कर औरत तुझको जल्दी मिलेगी सब्र रख इलाही तेरी मुराद हासिल करेगा धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७०३॥ हुक्मी शकल ⚍ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो इसकी दो शादी होकर फौत हो गई अब तीसरा औरतका योग है सो मिलेगी मगर तदबीर कर तेरी तीसरी औरत तकदीरमें बरजरूर लिखी है परन्तु दिन तेरे नाकिश हैं कई तदबीर की मगर दिनोंकी गरदिश करके तदबीर खाई नहीं सो दुर्गाका पाठ किसी नेक ब्राह्मणसे करा मंगलका व्रत कर धर्मकी नीयत रख औरत तुझको जल्दी मिलेगी ३५ दिन और तुझको नामाफिक हैं बाद अच्छे आवेंगे सो औरत तुझको पूर्व उत्तर देशकी मिलेगी अंदेशा मत कर मगर तेरा धन खरच पडेगा एक शख्ससे मिलाप होकर गौरवर्ण-की खूबसूरत औरत मिलेगी इलाही जिंदी रक्खेगा इस औरतसे तुझ-

को फलेदारी है फिकर मत कर पैदाकुनन्दा तेरी मुराद पूरी करेगा सबर रख औरतके मिलनेमें कुछ देरी नहीं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७०४ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है". सो औरत तुझको मिलेगी घर बना देगी उससे सुख होगा मगर धन दौलत तेरा खरच पडेगा कई तदबीर की मगर दिनोंकी गरदिश करके तदबीर ठीक नहीं हुई सो बृहस्पतिका दान दे पूजा कर प्रदोषका व्रत कर अमावसके रोज बारह ब्राह्मणोंको हलवा कर खिला धर्मकी नीयत रख ६३ दिन बाद तुझको अच्छे दिन आवेंगे अन्देशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७०५ ॥ हुक्मी शकल ⁞ फरहा मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है" सो, तेरी औरत जिन्दी है मगर उस औरतके ऊपर दूसरी औरतका सवाल है सो तुझको मिलेगी कुछ धन खरच पडेगा दुश्मन सब पैमाल होजावेंगे परन्तु कुछ दिनोंके बाद औरत बरजरूर मिलेगी तू अंदेशा मत कर दूसरी औरतसे फायदा होगा उसके औलाद होगी इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७०६ ॥ हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीब शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल औरतका है" सो सगाई इसकी हो गयी मगर सगाई होनेके बाद फरेब लाता है दिनोंकी गरदिश करके दोस्त भी दुरुस्त होगये सो तदबीर कर दुर्गापाठ संपुट देकर किसी ब्राह्मणसे करा अन्तके दिन १० सेर गेहूं सुर्ख कपडा ९ हाथ सुर्ख चन्दन टका १३ किसी भूखे ब्राह्मणको दे सूर्य्यका आकीदा रख हरवक्त हाथ जोड सूर्य्यका व्रत कर तेरी मुराद पूरी होगी दुश्मन तेरे सब पैमाल होजावेंगे ३६ दिन बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे औरत मिलेगी सगाईवालेका कुछ फरेब नहीं चलेगा औरत बरजरूर मिलेगी अंदेशा मत-

कर इस औरतसे तुझको फलेदारी होगी औलाद तेरा होगी नाम चलेगा सबर रख कुछ देर नहीं पैदाकुरन्दा सब तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७०७ ॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सगाईका है" इस शख्सकी सगाईकी तदबीर लगी जहां तहां जिकर चला और कोई शख्स आके करार कर गये मगर इसकी सगाई अब तक हुई नहीं दिन इसके नाकिश हैं एक दुश्मन जाल-साज है सो आदमबाबाकी पूजा कर पक्षप्रदोषका व्रत कर सूर्यका दान दे ४२ रोज बाद तेरे दिन दुरुस्त आवैंगे उत्तर वा पूर्वकी सगाई इसकी बरजरूर आवेगी मगर कुछ धन खरच पडेगा सगाई होनेंसे कुछ देर नहीं अंदेशा मत कर अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न॥पिण्ड ॥ ७०८ ॥ हुक्मी शकल: ☰ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल औरतका है" सो इसकी सगाई करके राजमें नालिश करी है और दुश्मन इसके ज्यादा हैं दिन इसके नाकिश हैं मगर ३९ दिन बाद दुरुस्त आवेंगे सो सब दुश्मन पैमाल होजावेंगे राजमें तू जीतेगा अंदेशा मत कर इलाही मुराद हासिल करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७०९ ॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्र-माकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल छोकरेकी सगाईका है" सो उस शख्सकी सगाई होगी कुछ देरी नहीं और उसकी तकदीर अच्छी है इसकी सगाई धनवाले इज्जतदारके साथ होगी तुझको धन मिलेगा इज्जत ज्यादा बढेगी मगर एक शख्स दुश्मन है शिकायत हरवक्त करता है मगर तेरी तकदीर अच्छी है दुश्मन सब पैमाल होजावेंगे सगाई अच्छे खानदानीके घर होगी तेरे दिन दुरुस्त हैं पैदाकुरन्दा तेरी सब मुराद हासिल करेगा अन्देशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७१० ॥ हुक्मी शकल ☰

नुस्रतुलखारिज सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी औरतसे मिलापका है" सो उस औरतसे तेरा मिलाप होगा बरजरूर अंदेशा मत कर उस औरतसे तुझको फलदारी भी है तुझको वह औरत दुश्मनकी शिकायत करके कम चाहती है २७ रोज तुझको और नाकिश हैं बाद अच्छे आवेंगे औरतका मिलाप बरजरूर होगा कर्मका आकीदा रख औरत मिलेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७११ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नुस्रतुल दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उस शख्सको तप है दिन उसके नाकिश हैं तपकी बीमारी ज्यादा है आतिशका रोग है और इलाज भी कई करे मगर दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त नहीं आये सो तदबीर कर जुमाके रोज चावल पकाके अच्छे ब्राह्मणको खिला टका २ चावल कोरा सुफेद कपडा दाक्षिणा दे घी कटोरामें डालके सोना डालके छाया देखकर अच्छे हाफिजको दे मंगलका दान दे आदमबाबाका आकीदा रख उसके हाथसे कुत्तोंको चपातियां खिला धर्मकी नीयत रख आराम उसको बरजरूर होगा मगर ११ दिन उसको और नाकिश हैं बाद आराम बरजरूर होगा अंदेशा मत कर उसकी तंदुरुस्ती रहेगी उमर ज्यादा है और मंगलके रोज चौरहामें बार बजे सहनक दे हकीमोंसे इलाज पैदा कुरंदा इलाही उसको आराम जलदी करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥ ७१२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उसको ज्वर है बीमारी बहुत है उसका बदन सूख गया पैरोंमें फुटनी रहती है अनाज हजम नहीं होता हमेशह अच्छी चीज खानेको रूह चलती है मगर खाया नहीं जाता अब ज्वर मांसमें है दिन उसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं हुए सो तदबीर कर दुर्गापाठ

मृत्युञ्जयका जप किसी नेक ब्राह्मणसे करा अमावसके रोज ५ सुफेद गाय दूध देनेवाली सब असबाब समेत किसी ब्राह्मणको दे ५१ या जितनी तेरी ताकत हो इतने ब्राह्मणोंको हलवा खिला और ११ अपाहज मँगतोंका हलवा खिला टका २ दक्षिणा दे हमेशः सुबेके वक्त सूर्यके आगे हाथ जोडके मिन्नत कर धर्मकी नीयत रख उसको आराम बरजरूर होगा तंदुरुस्ती रहेगी उमर ज्यादा है २९ या ४० रोज बाद आराम होगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७१३॥ हुकमी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका हैं सो उस शख्सको बीमारी बहुत रोजसे है संग्रहणीकी बीमारी है पतले दस्त ज्यादे होते हैं कभी उस शख्सके रद्द होती हैं अनाज हजम नहीं होता दिन इसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिशक-रके इलाज दुरुस्त नहीं आये अब ६१रोज और नाकिश हैं मगर तद-बीर कर मंगलके रोज सवा मन गेंहूं भूखे अपाहिजोंको बांट लाल गाय दूध देनेवाली सब असबाब समेत किसी नेक ब्राह्मणको दे शनि-श्वरका दान डकोतको दे फकीरोंको दलिया खिला घी कटोरीमें डालके सोना गेरके उसकी छाया दिखलायके अच्छे ब्राह्मणको दे धर्मकी नीयत रख ५१ दुर्गापाठ करा तब उसको आराम बरज-रूर होगा फिकर मत कर उसकी उमर ज्यादा है तन्दुरुस्ती रहेगी अब २० या ३१ दिन बाद आराम होगा बरजरूर आतश सब दूर होगी बदन अच्छा जल्दी होगा फिकर मत कर इलाज कर दवाई लगेगी और पैदाकुरंदा इलाही तेरी मुराद हासिल करेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७१४ ॥ हुकमी शकल ⁘ अतबे दाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीकी बीमारीका है" उसको कई रोजसे तप कंठमें अवरोधकी बीमारी है उसके बदनमें गरमी आतश ज्यादा

है कुछ पेटमें भी गाढ है दस्त खुलकर नहीं होता अब १० या १५ रोजसे बीमारी ज्यादा है दिन उसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं आये सो मंगलकी पूजा कर मलीदा करिके अच्छे ब्राह्मणको खिला गेहूं भूखे अपाहिजोंको बांट महामृत्युंजय मन्त्रका जप करा कुत्तोंको चपातियां गेर सूर्यका व्रत कर हर वक्त हाथ जोडके मिन्नत कर उस शख्सको बरजरूर आराम होगा उसकी उमर ज्यादा है तन्दुरुस्ती रहेगी घबरावे मत मगर धर्मकी नीयत रख अल्लाताला आराम बरजरूर करेगा अंदेशा मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७१५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीकी बीमारीका है सो उसको बीमारी तप जाडाकी है अनाजपर रूह करता है मगर हजम नहीं होता उसका बदन सूख गया दिन उसके नाकिश हैं इलाज भी कई किये मगर दिनोंकी गरदिशकरके इलाज दुरुस्त आये नहीं सो तदबीर कर बृहस्पतिकी पूजा कर और दान दे नुकती दाने लड्डू करके ब्राह्मणको खिला चना किन्ही अपाहिजोंको बांट तेल चपातियोंमें डालके कुत्तोंको खिला धर्मकी नीयत रख उसका आराम बरजरूर होगा उस शख्सकी उमर ज्यादा है तन्दुरुस्ती रहेगी मगर मंगलके रोज आधीरातके वक्त चावल पकाके सैहनकमें डालके शरबतका प्याला सुर्ख कपडा चौराहेमें धर और हकीमसे इलाज करा आराम उसको जल्दी होगा अंदेशा मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७१६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल बीमारीका है उस शख्सको बीमारी तप जाडाकी है इकंतरे आता है पानीका दाह ज्यादा है उसके तनके अन्दर आतश ज्यादा है बदनकी ताकत कम है अनाज भाता नहीं दिन इसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिशकरके इलाज

दुरुस्त आये नहीं सो तदबीर कर बुधके रोज रातके वक्त केतुका दान दे डकौतको मलीदा खिला ७ बावले अपाहिजोंको हलवा खिला भैरवका पाठ ११ दिन किसी नेक ब्राह्मणसे करा वटुकका अकीदा रख हरवक्त हाथ जोडके मिन्नत कर छाया देखकर घीकी कटोरी सोना सहित किसी अच्छे ब्राह्मणको दे धर्मकी नीयत रख कुत्तोंको चपातियां गेर १० या १५ रोज और नाकिश हैं बाद आराम जरूर होगा अंदेशा मत कर उमर उसकी ज्यादा है तन्दुरुस्ती है आराम जल्दी होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ७१७ ॥ हुक्मी शकल ☰ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है उसको तप तीसरे दिन आता है तृतीयक ज्वर है दो दिन तो दुरुस्त रहता है तीसरे दिन बीमारी ज्यादा होती है किसी चीजका परहेज रखता नहीं सो उसको बीमारी ज्यादा है वदनमें गरमी अनाजपर रूह कम है फुटनी रती है सो दिन उसके नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं आये सो तदबीर कर रविवारको सूर्यका दान दे सूर्यकी पूजा कर हरवक्त हाथ जोडके मिहनत कर यथाशक्ति तस्मै करके ब्राह्मणको खिला आदित्यहृदयके ९१ पाठ किसी नेक ब्राह्मणसे करा धर्मकी नियत रख उसको ३५ दिन बाद दिन दुरुस्त आवेंगे आराम उसको पहले ही होगा बरजरूर अंदेशा मत कर उमर उसकी ज्यादा है तन्दुरुस्ती होगी इलाजं कर पैदा कुरंदा उसको अच्छा बरजरूर करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७१८ ॥ हुक्मी शकल ÷ कब्जुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है " सो उस शख्सको बीमारी तपकी है इकतरा आता है गफलती रहती है वदनमें आतिश है १० दिनसे नाकिश दिन आये हैं सो मंगलका दान कर हनुमानकी पूजा कर घीका चिराग बाल मंगलका व्रत कर छायादा-

दे फकीरको गेहूंका दलिया खिला धर्मकी नियत रख १० रोज बाद दिन दुरुस्त आवेंगे फिकर मत कर आराम जलदी होगा इलाज कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७१९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि ". पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है " सो उसको दिनरात तप रहता है वदनमें आतश है उच्चाट देहमें रहता है पानीकी चाह और दाह है दिन उसके नाकिश है १० रोज बाद दुरुस्त आवेंगे आराम वरजरूर होवेगा अंदेशा मत कर शुक्रका दान दे अमावसके रोज ब्राह्मणको हलवा खिला कुत्तोंको चपातियां गेर आराम जल्दी होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ ७२० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हैंजेकी बीमारीका है" सो उस शख्सके दिन ज्यादा नाकिश हैं कालके मुखमें है मगर रविवारके दिन सोना मूंगा मोती फलमें गेरके अन्न मिष्टान्न किसी ब्राह्मणको दे दुर्गाका पाठ करा १ मन गेहूं घृत १५ सेरका संकल्पकर बांट चौराहेमें छिडकाकर दिन ४ उसको और नाकिश हैं मगर आराम होजावेगा उसके वदनमें आतिश ज्यादा है उच्चाट है पानीकी दाह है मगर फिकर मत कर ४ या ६ पहर पीछे दाह मिट जायगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ मुनकलीव शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है उसको बीमारी बादीकी है वदन दुखता है कईदफे दरद कहीं २ होजाता है वायुका जोर है" सो उसके दिन नाकिश आये वहुत रोज हुए मगर दिन अब १४७ और नाकिश हैं बृहस्पतिकी पूजा कर दान दे २५००९ जप करा इतवारके रोज गेहूं, गुड, चंदन, तेल, मूंगा, मोती, किसी भूखेको दे आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स !

तेरा सवाल लडकेकी बीमारीका है" सो उसको बीमारी ज्यादा है वदन लडकेका सूख गया गफलत है आतिश गरमीकी है दिन उसके नाकिश ज्यादा हैं कालके मुखमें आगया है मगर १० मासा सुवर्ण घृत १ सेर कांसीके पात्रमें रखके सुबेके वक्त दान दे सीरासे ब्राह्मणको भोजन करा घृत डालके मूंगा १ मोती १ कुछ सोना दक्षिणा दे दुर्गापाठका संकल्प कर आराम उसको बरजरूर होगा १० या १९ दिन और नाकिश हैं पीछे आराम हो जावेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२३ ॥ हुक्मी शकल ⩨ मुनकलीव शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके बीमारीका है सो उस औरतके दिन नाकिश हैं बीमारी ज्यादा है इलाज दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त नहीं होता वदन कृश है आतिश ज्यादा है अन्न भाता नहीं बदपरहेजी भी की है दिनोंकी गरदिश करके मगर शनिश्चरका दान कर शिवजीकी पूजा कर गेहूं घृत बांट उस औरतको २१ या ३१ दिन बाद आराम होगा फिकर मत कर उमर ज्यादा है आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२४ ॥ हुक्मी शकल ⩨ अंकीश दाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धातुक्षीणताकी बीमारीका है" सो इसको आतिशकी बीमारी है धातुक्षीण कई रोजसे है वदनमें इसके ताकत नहीं सो मंगलकी पूजा कर श्रीहनुमान्‌जीके मन्दिरमें घीका चिराग जला पक्षप्रदोषका व्रत कर १ साल भर पीछे आराम होगा १ साल और नाकिश है बाद आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२५ ॥ हुक्मी शकल ⩨ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो उस शख्सको बीमारी लकवाकी है लकवा उस शख्सको मार गया वदनमें कुछ ताकत नहीं रही इलाज कर इलाज दुरुस्त आवेगा ३१ दिन और नाकिश हैं मगर लकवा उसके

और दर्फ़ भी आवेगा आराम हो जावेगा मगर सूर्य्यकी पूजा कर हर-वक्त हाथ जोडके मिन्नत कर आराम बजरूर होगा फिकर मत कर उमर ज्यादा है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दुश्मनसे जीतनेका है" सो तेरा झगडा मुफस्सिल हो गया था मगर दिनोंकी गरदिश करके दुश्मन उत्पन्न हो गया तेरे दिन नाकिश हैं डेढ वर्षसे मैलका सिंह होजाता है दिनोंकी गरदिश करके दोस्त भी दुश्मन होगया मगर तू २१ दुर्गापाठ किसी ब्राह्मणसे करा मङ्गलकी पूजा कर अब ९६ रोज तुझको और नाकिश हैं बाद दुश्मन पैमाल होजावेगा तेरी मुराद हासिल होगी राजका भी तेरा मनोरथ होजावेगा मगर धन खरच जरूर होगा आखिरमें तू जीतेगा फिकर मत कर ४ महीने बाद तुझको धन मिलेगा सौदामें दिन अच्छे आवेंगे खुशवक्ती होगी अब तू राजमें अरजी पेश कर दुश्मनका नाश होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७२७॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है" सो तुझको २ वर्ष ९ माससे दिन नाकिश हैं दिनोंकी गरदिश करके सब द्रव्यका नाश होगया धन मिलनेकी कई तदबीर की मगर नुकसान रहा धन नहीं मिला और आदमियोंसे क्षीण हो गया घरमें मौत ज्यादा हुई धनका नुकसान रहा तू दिनोंकी गरदिश करके बरबाद होगया जिससे दोस्ती करता है वह दुश्मनी करता है आखिरमें तुझको यश नहीं मगर तू शिवजीकी पूजा कर श्रीसूर्य्य-का पाठ कर हर दफे हाथ जोडकर मिन्नत कर अच्छा होगा २ वर्ष बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे रोजगार भी अच्छा होगा तेरे दुश्मन सब पैमाल होजावेंगे तुझको धन मिलेगा आखिर उम्रमें मुरातबा बढेगा फिकर मत कर नाकिश दिनोंमें गुजरान कर इति प्रश्न॥पिण्ड ॥७२८॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है

कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतका है सो ये औरत तेरी वर जरूर फौत होगी मगर और शादी होजावेगी जल्दी उस औरतसे तुझको खुशवक्ती होगी मगर कई दिन बाद;और इस औरतका चलन स्वभाव अच्छा नहीं तुझको कम चाहती है इन दिनोंमें तेरे दिन मध्यम हैं जिगरी चिन्ता हैं मगर चिन्ता मत कर तुझको दूसरी औरतका योग है दूसरी औरत खूबसूरत व गोरा वदन है तुझको मिलेगी उससे तेरी मुराद हासिल होगी औरत दक्षिण दिशाकी है उस औरतसे फलेदारी है औलाद भी अच्छी होगी मगर तू सूरजका आकीदा रख तुझको फायदा है औलादका सुख है फिकर मत कर इलाही तेरी मुराद पूरी करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७२९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी आदमीसे फलेदारीका है सो आदमी तेरा दोस्त है उससे लाभ दिन दिन ज्यादा होगा तेरे दिन दुरुस्त हैं मगर उस शख्ससे तुझको फायदा कम है दोस्ती ज्यादा है जैसी है वैसी तुझको फलेदारी नहीं तुझको चार महीने बाद इस ही दोस्तीसे लाभ है मगर १ शख्स तेरा दुश्मन है उसने तेरी कई दफे शिकायत की है मगर उस दुश्मनकी कुछ चलेगी नहीं तेरा उसका पहली पैदायशका प्याराना है मगर तू शनिश्चरके रोज काले कुत्तोंको तेल मिलाके चपातियां खिला मीठा दलिया अपाहजोंको खिला तेरी उसकी दोस्ती ज्यादा बढेगी लाभ अच्छा होगा आखिरमें इज्जत बढेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७३० ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रतुल खारिज आफताबकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नेत्रोंकी बीमारीका है" सो उस शख्सको जलकी बीमारी है हरवक्त आंखोंमेंसे पानी निकलता है यह बीमारी उसके कई दिनोंसे है अगले जन्मकी गुना है पहले जन्ममें वह ब्राह्मण था सो एक बालककी आंख इसनें

फोड डारी थी अब इसगुनाहकी तदबीर कर २ नेत्र सोनेके बनवाके व्यतीपातके रोज दान दे सूर्यका व्रत और आदित्यहृदयका पाठ१बरस तक करा हरवक्त हाथ जोडके मिन्नत कर कई दिनोंबाद गुनाह माफ होगी १ बरस ३ महीना और नाकिश हैं कई इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिशकरके इलाज दुरुस्त नहीं होता सूर्यका पूजन करा आखिरमें नेत्र अच्छे होजावेंगे हे पूछनेवाले ! तुम्हारे कुटुंबमें बे औलाद मनुष्य मरा है सो उसका अंश माफिक है जहां गया है वहीं विष होजाता है सो उसकी गयाजी अथवा पिण्डार करवा नहीं तो मनुष्यों और पशुओंपर हाथ गेरेगा सो तू तजवीज कर अच्छे होजायंगे जरा पानी तो पडेगा जोत जावेगी नहीं मगर धर्मकी नीयत रख आँख इस शख्सकी बरजरूर अच्छी होवेंगी फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७३१ ॥ हुक्मी शकल ☷ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल बीमारीका है"सो उस शख्सको सूजाक की बीमारी है पेसाब बहुत चीस (जलन) मारकर होती है इन्द्रिय रुक जाता है सो बीमारी बहुत है कई इलाज तैने किये मगर उस सुजाकमें आराम नहीं हुआ जड टूटी नहीं सो अगले जन्मका अजाब है यह शख्स पहले पैदायशमें वेश्यागामी था और १ ब्राह्मणी रांडसे सीनाजोरी करके खराब हुआ उस अजाबसे सूजाककी बीमारी हुई मगर कई दिनोंके बाद जड टूट जावेगी: क्योंकि दिनोंकी गरदिश है ७ अथवा १० बरस बीमारी रहेगी पीछे कोई हकीमसे दवाई लेकर उसकी बीमारी जावेगी इलाज दुरुस्त होगा मगर ब्राह्मणीको व्यतीपातके रोज ब्रह्म आभूषण दान दे पैदा कुरंदाका आकीदा रख बीमारी चली जावेगी नाकिश दिनोंमें गुजरान कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥७३२॥हुक्मी शकल ☳ कबजुल दाखिल सूर्यकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल बीमारी-

का है" इस शख्सको सांसको बीमारी है. दम बहुत उठता है दुःख बहुत होता है अन्न हजम नहीं होता कफ सामान्य पडता है सो इस शख्सके पहली पैदायशकी गुनाह है सो इसने अपनी औरत मार डारी सो स्त्रीहत्या इसको बहुत दुःख देती है सो कालके घरमें बैठा है बचना मुशकिल है मगर तदबीर कर किसी नेक ब्राह्मणसे ७ दिन कथा सुन गऊदान दे ब्राह्मणोंको कपडा पाहना ब्रह्म भोजन करवा चार महीने दो दिन बाद तुझे आराम होगा शिवजीका व्रत कर हरवक्त ध्यान रख तेरे आराम बरजरूर होगा फिकर मत कर इलाही अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७३३ ॥ हुक्मी शकल ☰ लह्यान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" उस शख्सको घूबेकी बीमारी है शिरमें हरवक्त दर्द रहता है उसको कई दिनोंसे बीमारी है अगले जन्मका गुनाह है पहले ब्राह्मण था इसने एक कन्याके संग भोग किया उस गुनाकी तदबीर कर व्यतीपातके रोज कन्याको जिमा आदित्य हृदयका पाठ ९१दिन करा हरवक्त सूर्यको हाथ जोड गुना साफ होगी मगर कई दिनोंके बाद तेरे दिन दुरुस्त आवेंगे १ बरस ३ महीना और नाकिश हैं इलाज किये मगर दिनोंकी गरदिश करके इलाज दुरुस्त नहीं होता सूर्यका पूजन करा घुवेमें आराम होगा कुछ आखोंकी जोत कम रहेगी मगर धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७३४ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतुलखारिज आफताबकी है हुक्म फरमाती है है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" उस शख्सकी बीमारी दस्तकी है सो दस्त बहुत टूटके होते है राध और खून गिरता है सो उस शख्सको उठने तककी शक्ति नहीं हैं इलाज भी किये परन्तु दिनोंकी गरदिश करके दुरुस्त नहीं आये विष्णुसहस्रनामके २१ पाठ करा शिवजीके मन्दिरमें चिराग कर इलाही आराम करेगा फिकर

मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७३५ ॥ हुक्मी शकल ☷ जमात साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल रोगका है" उस शख्सको मृगीका रोग है मुखमें फेन आता है अचेत होजाता है चित्तपर कुछ फुर्ती नहीं होती गफलत रहती है इसके पहले जन्मकी गुनाह है उसका दोस्त क्षत्री था उसको इस शख्शने दगाकर मारा सो गुना है तदबीर भाद्रपदके महीनेमें अमावसके रोज घोडेका दान दे ब्राह्मणसे दुर्गापाठ सम्पुट ६१ दिन तक करा तुझको आराम होगा फिकर मत कर इलाही आराम करेगा धर्मकी नीयत रख इति प्रश्न॥ पिण्ड॥७३६॥ हुक्मी शकल ☷ हुमरा साबित मंगलकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल राजमें इजाराका है " सो राजमें इजारामें लाभ सामान्य होगा क्योंकि चार महीने तीन दिन तेरे नाम्राफिक हैं तेरा रोजगार इतने दिन बाद होगा इज्जत बढेगी धन मिलेगा मगर पहले तदबीर कर दुर्गापाठ ५१ या ३१ दिन करा धर्मकी नीयत रख इतवारके रोज काले कुत्तेको दलिया खिला शनिश्चरका दान दे सोम प्रदोषका व्रत कर और भी जिस दिन व्रत कर उसी दिन ब्राह्मणको मलीदा खिला अल्लाताला तेरी मुराद हासिल करेगा खुशवक्ती रहेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७३७ ॥ हुक्मी शकल ☷ अंकीशदाखिल शनिश्चरकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राजसे दुरुस्त होनेका है" सो दिन बहुत नाकिश हैं तैने कई तजबीज की मगर दिनोंकी गरदिशसे काम दुरुस्त नहीं आया परन्तु अब २७ दिन बाद तुम्हारा बनाव अपने घरमें होगा मगर तदबीर कर आपदुद्धारका पाठ २१ दिन तक करा। तेरे काम आदमबाबा दुरुस्त करेगा फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ७३८ ॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीब शुक्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल घोडा लेनेका है सो घोडा लेनेमें फायदा नहीं

होगा तेरे दिन नाकिश हैं सो तुझको लाभ नहीं होगा मगर ५७ दिन बाद दिन दुरुस्त आवेंगे सो तेरा रोजगार होजावेगा सूर्य्यके ३१ व्रत कर अल्लाताला तुझको लाभमें रक्खेगा अब तू इस तरहसे गुजरान कर फिकर मत कर इति प्रश्न पिण्ड॥७३९॥हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज सूर्य्यकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है" सो गरमीकी बीमारी है बदनमें फुनसी और फोडा बहुत होते हैं गरमीका रोग ज्यादा है दिन नाकिश हैं कालके मुखमें आरहा है सो तजबीज कर मङ्गलके रोज किसी नेक ब्राह्मणको मंगलका दान दे और मंगलका अनुष्ठान और सूर्य्यके व्रत ११० कर तुझको आराम होगा पैदा कुरन्दाका आकीदा रख इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भैंस लेनेका है सो इस शख्सको फायदा होगा अब इसके दिन दुरुस्त हैं सो बेशक ले लाभ होगा मगर एक तजबीज करके लाना जिस रोज उसके दूधकी खीर पकाना किसी भूखेको खिलादेना अल्ला तुझको फायदा देगा खुशी होगी कुछ विघ्न नहीं होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गऊ लेनेका है" सो गऊके लेनेमें फायदा रहेगा अब तक दिन तेरे नाकिश थे अब कुछ दिनके बाद दुरुस्त आवेंगे सो कुछ विघ्न नहीं होगा इलाही तेरी खुशवक्ती करेगा बेशक गऊ ले कुछ चिन्ता न कर लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है से तू यह पूछता है कि मुझको देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं" सो देव आराधनमें फायदा बहुत है परन्तु पुष्यनक्षत्रमें गुरुवारके दिन और रात्रिमें आरंभ करना शुद्ध दिनमें चैत्र श्रावण

मार्गशिरको टाल देना सिद्ध होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४३ ॥ हुक्म शकल ⚏ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्मी फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ऋणविमुक्तिका है सो तू यह पूछता है कि ऋणविमुक्ति कब होगी" सो ऋण अब ही दूर होनेका नहीं मंगलका आराधन करना ताम्रपात्रमें षट्कोण यन्त्र लिखके विधिपूर्वक रक्तपुष्पोंसे पूजन करना ऋण दूर होगा जलदी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४४ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है" सो तूने पुत्र गोद लेनेका जतन किया सो ठीक है परन्तु इस पुत्रके लेनेमें फायदा नहीं पाओगे क्योंकि इसका और तुम्हारी औरतका वैरभाव है सो और बालकको लेना जरा ढीलमें फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७४५ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता हैं कि यह औषधि कैसी है" सो इस औषधिमें फायदा है देते ही आराम होगा परन्तु सुफद कपडा तन्दुल चांदी कपूर मिश्री सोमवारको पण्डितको दे जितनी तेरी ताकत हो उतना रोकडी धन दे देते ही ३ दिन बाद आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४६ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुत् खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू पूछता है शिकार मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! शिकार इस वक्त जलदी हाथ लगेगी और खूब तर माल मिलेगा नगरकी उत्तर तर्फ जाना पीछेको नहीं देखना शिकार बरजरूर मिलेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७४७ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नुस्रुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पर औरतके

संगका है तू पूछता है कि पर औरतसे संग होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पर औरतसे संग होगा दो मास बाद तुम्हारे हाथ बेशक लगेगी जो कभी दैवयोगसे दूर हो जायगा तो पश्चात् बहुत परिताप होगा सन्देह मत कर इन व्रतोंके यही उद्यापन हुआ करते हैं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाका है सो तू यह पूछता है कि नौका कब आवेगी" तुम्हारा प्रश्न श्रेष्ठ है नौका जल्दी ही आवेगी और जरफूनण आवेगी तीन३ योजनपर ठहर रही है दिलजमई रख कुछ धर्म कबूल करना जल्दी ही आवेगी संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७४९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकीमुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल खतके आनेका है" सो हे पूछनेवाले ! खत जल्दी ही आवेगा जरफूनण भी आवेगा दिलजमई रख घबराना नहीं राजी रहना खत जल्दी ही आवेगा आठ पहर भीतर, संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७५० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्र-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है" अब वर्षा ३ दिन भीतर वर्षेगी आई समझना देर नहीं है उत्तरकी तरफसे रात्रिमें वर्षा आवेगी परन्तु पुण्य करना नहीं तो अबके आषाढमें बहुत वर्षा आवेगी ३८ दिन तक झडी रहेगी नुक-सान होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७५१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है" सो तूने जो देवताके आराधनकी विचारी है उसमें प्रसन्न न होगा तुझको अपने कुलदेव-ताका पूजन करना ठीक है यही सब फल देगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ७५२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देव-ताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कर-

जाके दूर होनेका है तू यह पूछता है कि यह करजा कब दूर होगा" सो एक वर्ष तक दूधमें काले तिल शहद मिलाके एतवारको छोडकर पीपलमें डाल तेरा ऋण विमोचन होगा और ऋण विमोचनका पाठ करवा करजा जल्दी ही दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ७५३॥ हुकमी शकल ⚍ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है" सो पुत्र गोद लेनेमें तुझको फायदा बहुत है क्योंकि तुम्हारे जन्मपत्रमें सन्तान नहीं लिखी है क्योंकि तुम्हारे पितर नहीं होने देते सो गोदके पुत्रका भी सुख तब होने देंगे जब उनकी शांति करवावेगा और श्रीशिवजीकी भक्ति करना गोद लेनेसे फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ७५४॥ हुकमी शकल ⚏ कबजुलदाखिल सूर्य्यदेवताकी है: हुक्म फरमाती है कि "पूछने वाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है" सो इस औषधिके लेनेमें फायदा नहीं है भूलके मत लेना सूर्य्यका पाठ २० दिन तक करवा १५ दिनमें निश्चय आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥७५५॥ हुकमी शकल ⚏ कबजुलखारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल शिकारका है" पर शिकार नहीं मिलेगा बहुत क्लेश होगा १ दिनकी ढीलसे मिलेगा शिकार भारी मिलेगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ७५६॥ हुकमी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल परस्त्रीसे गमन करनेका है" सो पर औरतसे गमन होगा २ दिनकी देर है शनैश्चरके दिन अर्द्धरात्रिमें कन्याका काता हुआ सूत उस औरतके बाम पग तलेकी मिट्टी लेकर इतवारके दिन उस औरतके मस्तकपर डाल स्त्री वश होगी सन्देह मत कर यही कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥ ७५७॥ हुकमी शकल ⚏ फरहा सुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है

कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाके आनेका है तू यह पूछता है कि हमारी नौका कब आवेगी" सो तुम्हारी नौकामें कुछ बखेडा पड गया रविके रोज तुमने कुछ पुण्य विचारा था पर किया नहीं सो करनेसे नौका आवेगी और तेरी नौकाके आनेमें देर है १० दिनमें आवेगी अब क्या है माल मिलेगा श्रीदुर्गापाठ करवाना सो फिकर मत कर नौका पुण्यसे ही चला करती है इति प्रश्न पिण्ड ॥ ७५८ ॥ हुक्मी शकल ⁞ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमातीं है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि इसमें काल होगा या समा" सो आपने काल समाकी पूछीं समा मध्यम है परन्तु पशुजाति सुखी रहेगी वर्षा ज्यादा होगी तडित् भय ज्यादा होगा राजा प्रजा सुखी रहेंगे श्रावण और माघ मास भर अन्न मन्दा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ ७५९ ॥ हुक्मी शकल ⁞ अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है" सो अबही वर्षामें देर है इस जगह पुण्य नहीं है सो वर्षा होगी परन्तु अब ही २५ तथा ३० दिन-की ढील है सो पीछे वर्षा बहुत होगी और पुण्य करनेसे जल्दी होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७६० ॥ हुक्मी शकल ⁞ हुमरा मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल देवताके आराधनका है तू यह पूछता है कि देवताके आरा-धनमें फायदा है या नहीं" सो तुझको देवताके आराधनमें फायदा नहीं यह बात नहीं है देवताकी आराधना करनेसे फल जरूर मिलता है जिस देवताकी तुमने दिलमें विचारी है कुछ उपाय करनेसे वही तुमको फल देगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ७६१ ॥हुक्मी शकल ⁞ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू यह पूछता है कि मेरा करजा कब दूर होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा करजा अब ही दूर

होगा अब दिन अच्छे आये हैं पहिले दिन नामाफिक थे अब ६ मास—से अच्छे आये हैं सो करजा दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७६२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतुखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेने-का है तू यह पूछता है कि पुत्र गोद लेनेमें फायदा है या नहीं "सो गोदके पुत्रमें फायदा है परन्तु २ महीने व्यतीपातके दिन ब्राह्मणोंको जिमा घृतका दान करना २॥ वर्षमें अच्छा फल पावेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७६३ ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रतुद्दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है " सो हे पूछनेवाले ! इस औषधिके सेवनमें फायदा है परन्तु हकीम नामाफिक है बीमारी ज्यादा है महामृत्युञ्जयका जप करवाना जल्दी आराम होगा इति प्रश्न॥पिण्ड॥ ७६४ ॥हुक्मी शकल ⚏ अतबे खारिज केतु ग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि शिकार मिलेगी या नहीं " सो इस वक्त शिकार मिलेगी परन्तु दूर मिलेगी जलकी तृषा आपको ज्यादा लगेगी ९॥ घटी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ७६५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नकी मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतके संगका है" सो तैने जो औरतके सङ्गकी विचारी सो कार्य्य सिद्ध होगा परंतु दोष बहुत है इसे दूर ही रहना इसका और तेरा एक गोत्र है बिना गोत्रकी २॥ मास बाद आपसे आवेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥७६६॥हुक्मी शकल ⚎ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमातीहै कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे दोस्तीका है " सो इसकी आपने दोस्तीकी पूछी सो दोस्ती आपकी खूब होगी दोस्त मिलेगा परन्तु अन्तमें वैर ज्यादा होगा इसमें संदेह नहीं फिर १९ दिनमें एक बार मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७६७॥

हुक्मी शकल ⠇ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि काल पडेगा या समा होगा" सो काल पडनेका नहीं मध्यम संवत् होगा भाद्रपदमें अन्नका भाव तेज होवेगा ४। ५। ८ इन राशियोंको फायदा रहेगा २१ दिन तेज रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७६८ ॥ हुक्मी शकल ⠇ तरीख मुनकलीव चंद्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी"सो तीसरे दिन २॥पहर जल वर्षेगा अमृत वर्षेगा सभी जिनस पैदा होगी वर्षा जल्दी होगी संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ७६९ ॥ हुक्मी शकल ⠿ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताका है तू यह पूछता है कि मुझको देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं " सो आपने देवताके पूजनकी विचारी सो आपको देवतासे फायदा नहीं चित्तमें इस देवताकी बहुत दिनोंसे है पर अब दूसरेकी आराधना कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७० ॥ हुक्मी शकल ⠿ कबजुल दाखिल सूर्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स !तेरा सवाल करजा दूर होनेका है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा करजा थोडा रह गया है वह भी उतरा जान परन्तु शनैश्चरका जप ३॥ मास कर शनिके दिन ब्राह्मण जिमाना चाहिये ४ मास भीतर करजा दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७१ ॥ हुक्मी शकल ⠿ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है" सो आपको इस पुत्रमें फायदा होगा पहले सवा लक्ष महादेवके लिङ्ग बनवाकर पूजन कर फिर लेना पहले लेनेसे दिल न मिलेगा इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥ ७७२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

बीमारीका है कि इस औषधिके सेवनमें फायदा होगा या नहीं " सो इस औषधिके लेनेसे ही बादी ज्यादा होगी फिर बाई आवेगी सो औषधि नहीं लेना और ठहरके करना फिर आराम होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७३ ॥ हुक्मी शकल ∸ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है सो तू यह पूछता है कि शिकार मिलेगा या नहीं " आपको शिकार जाते ही मिलेगी श्याम मृग मिलेगा फिर उसको आप गेर देवेंगे कुछ देर ठहरके गेरोगे संदेह मत करो इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७४ ॥ हुक्मी शकल ≐ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके खरीदनेका है सो तू यह पूछता है कि इस वस्तुके खरीदनेमें मुझे फायदा है या नहीं " सो इस वस्तुके खरीदनेमें तुझको फायदा है और इस वक्त तुझको अन्नका व्यापार फलदायी है घबराना नहीं तेज जलदी होगा श्रीदुर्गाका आराधन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७७५॥ हुक्मी शकल ≡ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जबर चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी चिन्ता मिटेगी या नहीं " सो अब तुम्हारी चिन्ता २ मास बाद मिटेगी पिछले दिनोंमें ऐसी चिन्ता रही सो अब दूर होगी शनिश्चरके दिन काले कुत्तेको उडदकी बडी तेलमें बनाकर १ वर्ष तक गेरना सब संदेह दूर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७६ ॥ हुक्मी शकल ≟ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे दोस्तीका है " सो इस दोस्तीमें फायदा नहीं अन्तर साफ नहीं इस कारणसे दोस्ती रहती नहीं सो पीछे पछतावेगा सो दोस्तीकी सलाह कुछ दिनोंकी ढीलसे करना संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७७ ॥ हुक्मी शकल ≡ बयाज सावित

चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है "तू यह पूछता है कि अबके काल पडेगा या समा होगा" सो अबके काल पडेगा अन्न थोडा होगा भाव मध्यम रहेगा बालकोंको पीडा माताका उठाव ज्यादा होगा कोई दिन तकलीफ रहेगी सो बालकोंके हाथसे छायापात्र करवाना संवत् अच्छा रहेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७७८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुतुखारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! इस प्रश्नमें वर्षाकी ढील है क्योंकि ग्रहोंका योग अब हीन है सो अब कई दिनोंके बाद ग्रहोंका योग आनेवाला है सो जल्दी ही आवेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७७९॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रुत् दाखिल गुरुदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल है कि देवताके आराधनका है तू पूछता है कि मुझको देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं" सो तुझको देव आराधनमें फायदा है परन्तु दुर्गाका आराधन पुष्य नक्षत्रमें रात्रिको कराना जलदी ही उत्तम लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके दूर होनेका है तू यह पूछता है कि मेरा करजा दूर होगा या नहीं सो अब तेरा ऋण दूर होगा परन्तु कुछ पुण्य कर ऋण जल्दी ही दूर होगा अब दिन अच्छे आये हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकीमुनकलीव मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि इस पुत्रके गोद लेनेमें फायदा है या नहीं" सो आपको इस पुत्रके गोद लेनेमें ही फायदा है तुम्हारा इसका वर्ग मिलता है परन्तु मंगलका जप एक महीना

करना सब आनन्द रहेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८२ ॥ हुक्मी शकल ॥ ⁝ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुप्त चिन्ता का है तू यह पूछता है कि मेरे मनमें गुप्त चिन्ता है सो मिटेगी या नहीं" सो तुम्हारे मनमें जो चिन्ता है सो मिटी चाहती है परन्तु कुलदेवताका आराधन कर तुम्हारे ऊपर बडा जाल आया था परन्तु धुल गया सो शिवजीका पूजन कर जितनी तेरी ताकत हो उतना दुर्गापाठ कराओ तेरी चिन्ता मिटेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मनुष्यसे दोस्तीका है सो तू यह पूछता है कि इसकी दोस्तीमें मुझको कैसा फायदा है" सो इस उत्तम दोस्तीमें बडा फायदा है दोस्ती करना जो तू चाहेगा सो ही तुझको देगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरी मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवतका है तू यह पूछता है कि इस साल समा होगा या काल" सो हे पूछनेवाले ! जो तैंने काल समाकी पूछी सो समा होगा घास ज्यादा होगी प्रजा आनंद करेगी और एक महीना तेज होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी " सो हे पूछनेवाले ! इस प्रश्नसे वर्षा जल्दी होगी और बहुत होगी २९ दिन अंदर नदी नाले चलेंगे सो फिकर मत कर वर्षा अच्छी हावेगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७८६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है सो तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय देव-

ताके आराधनसे होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको देवताके आराधनमें फायदा नहीं है तू विष्णुसहस्रनामका पाठ कर या करवा इससे तेरा भाग्य खुलेगा दौलत मिलेगी उत्तर दिशासे फायदा जलदी होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७८७ ॥ हुक्मी शकल ⠶ कब्जुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल करजाका है तू यह पूछता है कि मेरा करजा दूर कब होगा" सो तेरे करजा उतरनेमें देर है तुझको करजेका भय रहता है सो तू सूर्यके पाठ करवा सब करजा दूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७८८ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि इस पुत्रके गोद लेनेमें तुझको कैसा सुख रहेगा" हे पूछनेवाले ! इस पुत्रके गोद लेनेमें तुझको बहुत क्लेश रहेगा सो अपने गोत्रका लेना अपनी ताकत माफिक श्रीभगवतीका आराधन करवा बहुत फायदा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७८९ ॥ हुक्मी शकल ⠶ फरहा मुनकली शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि इस औषधिके लेनेमें मुझको फायदा है या नहीं सो इस औषधिके लेनेसे तुरत आराम होगा शरीरमें श्रद्धा होगी परन्तु इस वर्षमें ग्रह कष्टकारी है सो ब्राह्मण भोजन करवा इसके हाथसे अमावसको घृत लवण दान कर महामृत्युंजयका जप करवा आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥७९०॥ हुक्मी शकल ⠶ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतानका है तू यह पूछता है कि मुझको औरस पुत्रका सुख है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्यमें संतानका सुख है परन्तु कालान्तरमें होगा ३ तीन जीवेंगे पहली कन्या हुई है गोपाल बीज मन्त्रका जप करवा फिर पुत्र होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥

पिण्ड ॥ ७९१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मालके खरीदनेका है सो यह पूछता है कि इस मालके खरीदनेमें मुझे फायदा रहेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस जिन्सके लेनेमें फायदा न रहेगा अगाडी मन्दा नजर आता है सो जलदी मन्दा होकर तेज होगा किसीसे कहना नहीं कहोगे तो पछताओगे इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७९२ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दिलकी चिन्ताका है सो तू यह पूछता है कि मेरे दिलकी चिन्ता दूर होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे मनकी चिन्ता अब दूर हुई चाहती है चिन्ता शरीर तुल्य मनुष्यकी है सो भगवती-का आराधन करवा चिंता उदासी ११ दिन भीतर दूर होगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ७९३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दोस्तीका है सो तू यह पूछता है कि मुझको इस दोस्तीमें फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस दोस्तीमें तुझको फायदा नहीं है उलटा कुछ हरजा रहेगा इसकी दोस्ती न करना नहीं तो पछतावेगा औरसे करना ठहरके कई दिनोंमें सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥७९४॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रतखारिज सूर्य्यदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है. कि मुकद्दमामें जीतूंगा या हारूंगा" सो आपको मुकद्दमेमें फते है डरना नहीं शत्रुमें कुछ तत्त्व नहीं है सो काम आपका हुआ देर नहीं है शनिग्रहका दान और जप करा १ वर्ष और ५ मास भीतर फते होगी इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ७९५ ॥ हुक्मी शकल ⚍ नकुदुदाखिल बृहस्पति देव-ताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

सन्तानका है सो तू यह पूछता है कि मुझको औरस पुत्रका सुख है या नहीं" हे पूछनेवाले ! तेरे पुत्र होगा परन्तु दुर्गाका आराधन करवा देवताओंमें भक्ति रख और पीपलको नित्य सींच आदित्यका व्रत करना पुत्रकी रक्षा करनी सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिंड ॥ ७९६ ॥ हुक्मी शकल ⋮ अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी चीजको लेनेका है तू पूछता है कि मुझे इस वस्तुके लेनेमें फायदा है या नहीं" सो इस चीजके लेनेमें फायदा है श्रीदुर्गाका आराधन करनेसे फायदा होगा परन्तु कुछ दिन ठहरके लेना फायदा होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ७९७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरकी चिन्ताका है सो तू पूछता है कि मेरे दिलकी चिंता मिटेगी या नहीं" सो तेरे दिलकी चिन्ता अब ही दूर न होगी परंतु जब विदेशमें जाओगे तब दूर होगी ७ मास और नाकिश हैं पीछे दूर होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७९८ ॥ हुक्मीशकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल दोस्तीका है तू यह पूछता है कि तुझको दोस्तीमें फायदा होगा या नहीं" सो इस दोस्तीमें दोनोंको फायदा है इस-वास्ते दोस्ती करनी मुनासिब है और तुझको लाभ बहुत होगा रोजी कदर खुलेंगे अब एक वर्षमें होगी इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥७९९॥हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि अबका संवत् कैसा होगा " सो अबका संवत् मध्यम है पीडा ज्यादा होगी रोग पीडाका जोर दो मास रहेगा पीछे अच्छा रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥८००॥हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछने-वाले ! वर्षा आई चाहती है देर मत समझना आंधीके साथ ३ दिन-भीतर आवेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८०१ ॥ हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है तू यह पूछता है कि मुझे देवताके आराधनमें फायदा है या नहीं सो आपको देवताके आराधनमें फायदा है परन्तु क्षुद्रदेवता फायदा देगा शिव विष्णुरूप सब देवतामें है सो उपासना कर २ वर्षमें सिद्ध होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८०२ ॥ हुक्मी शकल ⁚ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है सो तू पूछता है कि अबके संवत् अच्छा होगा या काल होगा" सो अबके सम्वत् होगा ६ घडी बाद मन्दा रहेगा और एक मास पीछे रस धातुकी तेजी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८०३ ॥ हुक्मी शकल ⁚ कबजुलखारिज राहुग्रह-की है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है सो तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो वर्षामें देर नहीं है आई जान परन्तु भारी वर्षामें देर है सन्देह मत कर २१ दिन बाद जबर वर्षा होवेगी इति प्रश्न पिण्ड ॥८०४॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल देवताके आराधनका है तू यह पूछता है कि मुझको देवताके आराधनसे फायदा है या नहीं" सो तुझको देवताके आराधनमें फायदा ज्यादा है उनमें भी श्रीशिव तथा विष्णुसे फायदा है २१ दिन पीछे प्रसन्न होंगे सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥८०५॥ हुक्मी शकल ⁚ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है "कि पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल करजाके दूर होनेका है तू पूछता है कि मेरा करजा दूर होगा या नहीं" करजा बहुत दिनोंका है सो शत-

चण्डी करा जिससे करजा दूर होगा मनमें धीरज रख इसमें सन्देह नहीं इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८०६॥ हुक्मी शकल ⁘ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको लाभ कब होगा।" सो आपने लाभका प्रश्न किया सो इस प्रश्नसे जो लाभ है उससे ज्यादा होगा निर्विघ्नतासे लाभ होगा परन्तु सूर्य्य तुझको नाकिश हैं ताकत माफिक आदित्य हृदयका पाठ करा लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८०७ ॥ हुक्मी शकल ! ⁘ दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल हठ का है तू पूछता है कि मैंने एक हठ पकड ली है सो काम बनेगा या नहीं" सो आपकी हठ टूटती दीखे है सो कुल देवताका धर्म कबूल कर रह जायगा ६ माससतक दुर्गाका आराधन करवा काम बन जायगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८०८ ॥ हुक्मी शकल ⁘ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है तू यह पूछता है कि सन्तानका सुख रहेगा या नहीं" सो तुम्हारे सन्तानका सुख अच्छा रहेगा परन्तु तेरे जन्म पत्रमें ग्रह सामान्य हैं इस वास्ते कष्ट रहता है सो शिव मन्त्रका जप करवा पुत्रका सुख होगा इति प्रश्न पिण्ड ॥८०९॥ हुक्मी शकल ⁘ ब्याज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके खरीदनेका है तू यह पूछता है कि इस मालके खरीदनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो इस मालके खरीदनेमें तुझको फायदा है परन्तु ढीलमें होगा कुछ ब्राह्मण भोजन करवा इससे तुझको फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८१० ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्रतखारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरमें चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी चिन्ता

कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! चिन्ता तुम्हारी दूर हुई चाहती है घबराना नहीं नाकिश दिन गये अब दिन अच्छे आते हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८११ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नुस्रुद-दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दोस्तीका है तू यह पूछता है कि मुझको इस दोस्तीमें फायदा होगा या नहीं" सो इस दोस्तीमें तुझको फायदा नहीं दोस्तीमें खराबी होगी वगैरह है दोस्ती न करना करोगे तो पछताओगे फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८१२ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि अबके संवत् कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! अबके संवत् अच्छा होगा आनन्द रहेगा एक मासमें चौपाये तेज रहेंगे सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥८१३॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीब मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वर्षाका है तू यह पूछता है कि वर्षा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! वर्षा ढीलमें होगी पुण्य करो पीछे वर्षा बहुत होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८१४ ॥ हुक्मी शकल ⁘ अतबेदाखिल शुक्र देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है सो तू यह पूछता है कि मेरा माल चोरी गया है सो मिलेगा या नहीं" सो तुम्हारी चोरी आनेकी नहीं चोर दुष्ट है श्याम सूरत है क्रोधी है जवान है इस वक्त किसीसे झगडता है २६ वर्षका है सो तेरी चोरी न मिलेगी सन्देह मत कर ईश्वर और देगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८१५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्श ! तेरा सवाल लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं" सो तुझको लाभ नहीं होगा और जो होवेगा तो बहुत परिश्रमसे थोडा

लाभ होवेगा अब तुमको १४ दिन तक लाभकी सूरत नहीं सो पुण्य करनेसे लाभ होवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥ ८१६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तारीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकदमेका है तू यह पूछता है कि मुकद्दमा जीतूंगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! इस मुकद्दमामें फते पावोगे शत्रुको मारोगे तुम्हारी फते होगी डरना नहीं मति रखना कुछ दुर्गाका आराधन करवा तू जीतेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८१७ ॥ हुक्मी शकल ⩸ लह्यान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संतानका है तू यह पूछता है कि मेरी संतान होगी या नहीं सो तेरी सन्तान सन्तानगोपालका अनुष्ठान करवानेसे होगी पहले जन्ममें तैंने सोना चुराया था सो उस पापसे कन्या होती है परन्तु पुण्य करनेसे पुत्र सुख होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥पिंड॥८१८॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके लेनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके लेनेसे मुझको लाभ होगा या नहीं" सो इस वस्तुको तू मत खरीद इस वस्तुमें तुझको लाभ नहीं है यह वस्तु तैंने पहले भी खरीदी थी सो सामान्य लाभ रहा था और वस्तु खरीद कुछ ठहरके, फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८१९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछ-वाले शख्स ! तेरा सवाल गुप्त चिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी यह चिंता मिटेगी या नहीं " सो हे पूछनेवाले तेरी ! चिन्ता मिटी चाहती है फते होगी दिल अपना प्रसन्न रख अब दिन अच्छे आये हैं कुछ मालकी खबर चाहते हो सो तीन दिनमें· चिन्ता दूर होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८२० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि

" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल दोस्तीका है सो तू पूछता है कि इस दोस्तीमें मेरेको फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! इस दोस्तीमें तुझको बहुत फायदा होगा ज्यादा लाभ होगा तुम्हारा दास योग मिलता है और मनोरथ पूर्ण जलदी होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२१ ॥ हुक्मी शकल ∴ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संवत्का है तू यह पूछता है कि संवत् कैसा होगा " सो हे पूछनेवाले ! यह संवत् मध्यम होगा और बालकी पीडा होगी नदी नाले चलेंगे और भादवामें अन्नका भाव तेज रहेगा फिकर मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८२२ ॥ हुक्मी शकल ∴ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्मी फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल इमारत बनानेका है सो यह पूछता ह कि मेरी इमारत अब बनेगी या नहीं सो हे पूछनेवाले ! तेरी इमारत अभी नहीं बनेगी १ वर्ष पीछे बनेगी तुझको सुख होगा अभी दिन नाकिश है मंगलका जप करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२३ ॥ हुक्मी शकल ∴ अंकीस दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरा माल आवेगा या नहीं" सो इस चोरीका धन कुछ नहीं मिलेगा तेरी वस्तु पश्चिमकी तरफ बहुत दूर गई है सो पुण्य करनेसे कुछ आई जायगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ ८२४ ॥ हुक्मी शकल ∴ डुमरा साबित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तुझको लाभ ज्यादा होगा राजी रह लाभ अच्छा होगा फते तुम्हारी जल्दी ही होगी और सब आनन्द होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२५ ॥

हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि इस मुकद्दमेमें मैं जीतूंगा या शत्रु जीतेगा" सो हे पूछनेवाले इस मुकद्दमामें जल्दी नहीं करना देरसे मुकद्दमा होगा फते तुम्हारी रहेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२६ ॥ हुक्मी शकल ⚌ नुस्रुद्द खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तान होनेका है तू यह पूछता है कि मेरे पुत्र होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पुत्र होगा शनिदेवताका जप और पूजन करना शनिकी शांति करा अमावसके दिन घृत नूण दान कर पुत्रमुख होगा पुण्य कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२७ ॥ हुक्मी शकल ⚎ नुस्रुत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मालके खरीदनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझे इस मालके खरीदनेमें लाभ है या नहीं" सो इसके खरीदनेमें लाभ है परन्तु कम है और ढीलमें है सो दुर्गाका आराधन करनेसे ज्यादा लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गुप्तचिन्ताका है तू यह पूछता है कि मेरी चिन्ता कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! तेरी चिन्ता अभी दूर नहीं होगी चिन्ता भारी है कुछ पाताल या आस्मानकी खबर चाहता है सो पुण्य कर मनोरथ सिद्ध होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८२९ ॥ हुक्मी शकल ⚏ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसीसे दोस्तीका है तू यह पूछता है कि मुझको इस दोस्तीमें फायदा है कि या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस दोस्ती करनेमें लाभ नहीं क्योंकि अगले जन्ममें इसके साथ तेरा वैर था इससे तुझको दोस्तीमें फायदा नहीं होगा कुछ दिनोंकी ढील

देकर और किसीसे दोस्ती करना सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८३० ॥ हुक्मी शकल ⠣ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अभी तेरे दिन नाकिश हैं इनमें ऐसा ही रोजगार रहेगा कुछ दिन गये रोजगार बँधेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८३१ ॥ हुक्मी शकल ⠿ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान बनानेका है तू यह पूछता है कि मेरा मकान बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब ही मकान न बनेगा तेरे शत्रु ज्यादे हैं कुछ ढील लगेगी २ वर्ष बाद तेरा मकान बनेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८३२ ॥ हुक्मी शकल ⠇ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरी चोरी लगेगी या नहीं " सो अब चोरीका पता ७ दिनमें लगेगा कुछ खर्च पडेगा कुछ पुण्य करो धन मिलेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८३३ ॥ हुक्मी शकल ⠶ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कोई काम करनेका है ":सो तुझको इस काममें ज्यादे लाभ होगा परन्तु धर्म करना जितना पुण्य करेगा उतना लाभ ज्यादा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८३४ ॥ हुक्मी शकल ⠹ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है "हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमेका है सो तू यह पूछता है कि मैं इस मुकद्दमाको जीतूंगा या हारूंगा" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं मुकद्दमा वही जीतता हैं और तू जीता चाहे तो :श्रीदुर्गाके महामन्त्रका आराधन करवा सन्देह मत कर तू जीतेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८३५ ॥ हुक्मी शकल ⠳ कबजुल

खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्रके सुखका है तू यह पूछता है कि मुझको पुत्रसुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तुझको पुत्रका सुख नहीं है सो तू सन्तानगोपालके महामन्त्रका जप करवा सन्तान सुख होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड॥८३६ ॥हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल मालके लेनेका है तू यह पूछता है कि इस मालके लेनेमें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस जिनसके लेनेमें फायदा है परन्तु लक्ष्मीके मंत्रका आराधन करवा और किसीका सीर भी करना लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८३७ ॥ हुक्मी शकल ∸ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरमें चिन्ताका है तू यह पूछता है कि चिन्ता कब मिटेगी "सो हे पूछनेवाले ! तेरी चिन्ता अब दूर होनेकी नहीं यह घरकी चिन्ता है बहुत क्लेश है सो शनिवारको पीपलके दरख्तका पूजन कर चिन्ता दूर होगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८३८॥ हुक्मी शकल ∸ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि मेरी मूकप्रश्नमें श्रद्धा नहीं है सो सत्य है या मिथ्या " सो तू गुप्त चिन्तन करके परीक्षा करता है सो सब सत्य है भाव ही कारण है इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८३९ ॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सम्बन्धका है सो तू यह पूछता है कि इसका सम्बन्ध कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! इसका सम्बन्ध जलदी होगा परन्तु इसके ग्रह विगड रहे हैं सो दुर्गाका आराधन करवा २१ दिन तक, पैगंबरकी मिहरबानगीसे जलदी ही काम होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८४० ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनें-

वाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है सो तू यह पूछता है कि मेरा ज्याद रोजगार कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! अब तो रोजगार मंदा है तेरे जन्मपत्रमें दशा नेष्ट है दिन अच्छे आये रोजगार खूब होगा परन्तु श्रीबीजमन्त्रका जप कराना फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८४१ ॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानका है तू यह पूछता है कि मुझको मकानका सुख कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! अभी तुझको मकानका सुख होनेमें देर है तेरे दिन अभी नाकिश हैं १ संवत् बाद होगा मंगलका जप करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८४२ ॥ हुक्मी शकल ☰ नुस्रुद् खारिज सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरी चोरी मिलेगी या नहीं " सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पूरा होगा तेरी चोरी १७ दिन अन्दर मिलेगी परन्तु श्रीजीका आराधन रख संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥८४३॥ हुक्मी शकल ☰ नुस्रुद् दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं सो हे पूछनेवाले अब दो मास अन्दर तुझको लाभ होगा व्यापारेश लग्नेशका संबंध है सो लाभ अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ६४४ ॥ हुक्मी शकल ☰ अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि इस मुकदमा में मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मुकद्दमासे तुझको लाभ नहीं है क्योंकि अभी तेरे ३१ दिन नाकिश हैं सो अच्छे दिन आनेपर दुर्गाजीका आराधन करना आधि फते होगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥८४५॥ हुक्मी शकल ☰ नकी मुनकलीब मंगल देवताकी है हुक्म फर-

माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सन्तानका है तू पूछता है कि पुत्रका सुखहोगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! सन्तानगोपालके बीज-मन्त्रके आराधनसे औरस सन्तानका सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥८४६॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्तुके खरीदनेका है तू पूछता है कि इस वस्तुके खरीदनेमें फायदा होगा या नहीं" सो इस वस्तुके लेनेमें फायदा कम है तू एक वर्ष तक नाकिश दिनोंमें गुजरान कर पीछे लाभ होगा फिकर मत कर इति ॥ प्रश्न पिंड ॥ ८४७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि इसका विवाह कब होगा" सो विवाह होनेवाला है कुलदेवताका पूजन करना संगमेश्वरीके बीजमन्त्रका आराधन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८४८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चंद्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबन्धका है तू यह पूछता है कि यह संबन्ध मुझको कैसा है सो हे पूछनेवाले ! यह सम्बन्ध तकलीफ देनेवाला है इसके हाथसे मंगलके जपका संकल्प करा एक वर्ष ७ दिन अन्दर अच्छे घरका संबन्ध होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८४९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा " सो तेरा रोजगार जल्दी ही होगा थोडी देर है बहुत रोजगार होगा श्रीजीका आराधन रखना इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८५० ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान बनवानेका है तू यह पूछता है कि मेरा मकान बनेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तेरे १ वर्ष तक दिन नाकिश हैं सो

१ वर्ष बाद बनेगा मंगलका आराधन करा तेरा मकान होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८५१ ॥ हुक्मी शकल ⠷ कब्जुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीके मालका है तू यह पूछता है कि मेरा माल हाथमें आवेगा या नहीं" सो तेरा कुछेक माल कुछ अर्सेमें हाथमें आवेगा तेरे पडोसीने चोरी कराई है सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥८५२॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है सो तू यह पूछता है कि मुझको लाभ होगा या नहीं" सो अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं लाभ बहुत ज्यादा होगा परन्तु सूर्यदेवताका जप करवाना लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८५३ ॥ हुक्मी शकल ⠟ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि इस मुकद्दमामें मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछने-वाले ! इस मुकद्दमासे तुझको लाभ अधिक है परिश्रम भी पडेगा ६ वा ८ दिन की देरी है सन्देह मत कर पुण्य कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८५४ ॥ हुक्मी शकल ⠻ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पुत्रके सुखका है तू यह पूछता है कि मेरा पुत्र होता है फिर जीता नहीं सो मुझको पुत्रका सुख होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको पुत्रका सुख होगा शिवजीका अभिषेक करवाना तेरा दान लगा नहीं सो फिर कर करके मत पछता दो वर्ष अन्दर सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८५५ ॥ हुक्मी शकल ⠿ अंकीश शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा कब होगी" सो हे पूछनेवाले ! तुमने यात्राकी विचारी सो होगी नहीं और कदाचित् होगी

तो लाभ नहीं होगा श्रीशिवजीके आराधनसे एक वर्ष बाद यात्रा और लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८९६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि विवाह कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह अब होनेवाला है अबही तेरे दिन अच्छे आये हैं सो ३ मास अन्दर होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ८९७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि इसका संबंध कब होगा" सो इसके संबंधमें ७ मासकी देर है सो इसके जन्मपत्रमें ग्रह सामान्य हैं उनकी शांति करवा और दुर्गापाठ करवा तब सम्बन्ध होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥८९८॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार होता नहीं जो रोजगार करूं उसीमें फायदा नहीं है" सो अब तेरे दिन शख्त हैं ३ मास बाद अच्छे आवेंगे जीव लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८९९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रतदाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके बनानेंका है तू यह पूछता है कि मेरा मकान कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मकान ६ मास बाद होगा पुण्य कराना दिन नाकिश हैं फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८६० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे खारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरा चोरीका माल मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा माल ज्यादे गया और पश्चिम दिशामें गया है सो ७ दिन बाद तेरा माल आधा मिलेगा सन्देह मत कर महाकालीके बीजमन्त्रका आराधन करवा सन्देह

मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८६१ ॥ हुक्मी शकल ÷ नकी सुन-कलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि इस कार्य्यमें लाभ होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! इस कार्य्यमें तुझको लाभ होगा और जिससे बतलाये हो उसीमें तुम्हारा राशिवर्ग मिलता है सो अब लाभ होगा ९ मास तेरे अच्छे हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८६२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि मैं मुकदमा जीतूंगा या हारूंगा ? सो हे पूछनेवाले ! तू मुकद्दमा जीतेगा उत्तम जाति तेरी तरफ होगा संदेह मत कर दुर्गा-का आराधन रख इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८६३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें कार्य्य करनेका है तू यह पूछता है कि मुझको इस शीरमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! साझेमें बहुत लाभ और आनन्द होगा ३ वर्ष पीछे बहुत लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ८६४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुन-कलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी देशको जानेका है तू यह पूछता है कि विदेशको जाना कब होगा लाभ कैसा होग।" सो तुझको अब २९ दिन नाकिश हैं सो ठहर कर जाना लाभ बहुत अच्छा होगा श्रीभगवतीके बीजमन्त्रका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८६५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ विवाहका है सो कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह दो वर्ष अन्दर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥पिंड॥८६६॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती

है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सम्बन्धका है तू यह पूछता है कि सम्बन्ध कब होगा? सो हे पूछनेवाले ! सम्बन्ध होनेवाला है सो तू सम्बन्धेश्वरीके मन्त्रका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८६७ ॥ हुक्मी शकल ⚎ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजीके दर खुलनेका है सो तू यह पूछता है कि मुझको दौलत कब मिलेगी? सो हे पूछनेवाले ! सब वस्तुका आनन्द हुआ जान तुझको अब ही दौलत मिलनेवाली है परन्तु मंगलका जप करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८६८ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकानके बनानेका है । सो हे पूछनेवाले! अब मकानके बनानेमें पैसा बहुत लगेगा जरा धीरज रखो ७ मास बाद कम पैसा लगेगा मकान भी बेफायदा रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८६९ ॥ हुक्मी शकल ⚎ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू पूछता है कि मेरी चोरी हुई है मैं यह पूछता हूं कि मेरा धन आवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा माल ज्यादे गया है चरलग्नमें गया है सो नहीं आवेगा सन्देह मत कर ईश्वर और देगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७० ॥ हुक्मी शकल ⚎ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी कार्य्यका है सो तू यह पूछता है कि इस कार्य्यमें मुझको लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुमने जो काम विचारा है सो अच्छी तरह होगा उसमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७१ ॥ हुक्मी शकल ⚎ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीके बोनेका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीसे लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको

उत्तर पश्चिमकी तरफ खेती करनेसे लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ८७२ ॥ हुक्मी शकल (— · — —) हुमरा साबित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें रोजगार करनेका है तू यह पूछता है कि इस शीर (साझा) में मुझको फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस शीरमें तुझको फायदा नहीं है खराब होगा शीर नहीं करना न्यारा कार कर फायदा होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७३ ॥ हुक्मी शकल (— — · —) बयाज साबित चन्द्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि यात्रा अब होगी यानहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब ही यात्रा न करना अभी यात्रा करनेमें लाभ नहीं होगा २१ दिन पीछे यात्रा कर लाभ बरजरूर होगा इति प्रश्न पिंड ॥ ८७४ ॥ हुक्मी शकल (· · — —) नुस्रतखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाह सगाईका है तू यह पूछता है कि विवाह सगाई होवेगी या नहीं" हे पूछनेवाले !अब तेरे दिन नाकिश हैं सो अब तेरा विवाह सगाई होनेका नहीं १ वर्ष बाद विवाह होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७५ ॥ हुक्मी शकल (— — · ·) नुस्रत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सम्बन्धका है तू यह पूछता है कि सम्बन्ध कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! सम्बन्ध हुआ जान परन्तु ९१ दिन दुर्गाका आराधन करवा तेरा सम्बध बरजरूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७६ ॥ हुक्मी शकल (· · · —) अतबेखारिज केतुकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" हे पूछनेवाले!तेरे रोजगारमें अब ही देर है तुझको सूर्य्यदेवता नामाफिक हैं सो सूर्य्यका व्रत और जप करवा ७ मास बाद रोजगार अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥

॥८७७॥ हुक्मी शकल ⁞ नकी मुनकलीब मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान इमारत बनवानेका है तू यह पूछता है कि मकान (इमारत) बनेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मकान अब ही हुआ चाहता है सन्देह मत कर वास्तुपूजन करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८७८ ॥ हुक्मी शकल ⁞ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेंवाले शख्स ! तेरा सवाल चोरीका है तू यह पूछता है कि मेरी वस्तु चोरी गई है या घरमें भूल गया " सो हे पूछनेवाले ! तेरी वस्तु चोरी नहीं गई घरमें देखो ऊंची जगह धरी मिलेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ ८७९ ॥ हुक्मी शकल ⁞ इज्जतमा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब अच्छीं होगी" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारी बीमारी दूर होनेमें है सों रोग दूर होगा शनिदेवताका जप सवा लक्ष करवा आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८८० ॥ हुक्मी शकल ⁞ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें कैसा लाभ है" अबके खेतीमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८८१ ॥ हुक्मी शकल ⁞ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल शीर (साझा) का है तू यह पूछता है कि मुझको इस शीरमें फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको इस शीरमें फायदा नहीं है सो सन्देह मत कर अभी लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८८२ ॥ हुक्मी शकल ⁞ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है सो तू यह पूछता है कि मुझको यात्रामें लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे

दिन नाकिश हैं सो अब ही यात्रा न करना २१ दिन बाद करना लाभ बरजरूर होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८८३ ॥ हुक्मी शकल ⁖ कब्ज़ुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा विवाह होगा था नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा विवाह होनेवाला है परन्तु तेरे सूर्य्य नामाफिक हैं सो सूर्य्यकी मूर्ति बनवा करके पूजन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८८४ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता हैं कि यह सम्बन्ध होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरा संबंध होगा राहुग्रहका जप करवा संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८८५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अभी दिन तेरे नाकिश हैं १८ दिन बाद तेरा रोजगार होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८८६ ॥ हुक्मी शकल ⁘ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मकान (इमारत) का है सो तू यह पूछता है कि मकान अब बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरी इमारत अब ही होगी श्रीभगवतीके बीजमन्त्रका आराधन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥८८७॥ हुक्मी शकल ☱ अंकीश दाखिल शनि देवताकी है हुक्म फरमाती है पूछनेवाला शख्स ! तेरा सवाल शत्रुसे भयका है तू पूछता है कि मेरा शत्रु निहायत खोटा मनुष्य है उस शत्रुका नाश कब होगा" सो तू सूर्य्यगायत्रीका आराधन करवा सन्देह मत कर शत्रु दूर होगा इति प्रश्न पिण्ड ॥८८८॥ हुक्मी शकल ⁖ हुमरा साबित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि

" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी दूर कब होगी " सो सूर्य्य देवताका जप करवा महा-मृत्युंजयका जप करवा १४ दिन बाद आराम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८८९ ॥ हुक्मी शकल ⠿ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तुझको खेतीमें बहुत लाभ होगा मंगलका जप करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८९० ॥ हुक्मी शकल ⠿ नुस्रतुखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें रोज-गार करनेका है तू यह पूछता है कि शीरमें फायदा होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो उसके शीरमें लाभ कम होगा हिम्मत करके अकेला कर श्रीसूर्य्यका जप करवा २० दिन बाद लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिंड॥८९१॥ हुक्मी शकल ⠿ नुस्रत दाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि यात्रा होगी या नहीं और होगी तो लाभ होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले !अब तेरे १९ दिन सामान्य है सो मंगलका जप करवानेसे यात्रा होगी संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड॥ ८९२ ॥ हुक्मी शकल ⠿ अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछताहै कि मेरा विवाह कब होगा "सो हे पूछने-वाले ! तेरा विवाह देरमें होगा कुल देवताका पूजन कर फिक्र मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८९३ ॥ हुक्मीशकल ⠿ नकी मुनकलीब मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल संबंधका है तू यह पूछता है कि इसकी सगाई कब होगी"सो हे पूछनेवाले ! अब इसके दिन अच्छे आये हैं सो अब संबंध होगा ६

मास बाद केतुग्रहका जप करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८९४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल रोजगारका है तू यह पूछता है कि मेरा रोजगार किस दिशामें होगा "सो हे पूछनेवाले ! तेरा रोजगार दक्षिण दिशामें लगेगा दक्षिण दिशासे तुझको बहुत लाभ है सब आनन्द होवेंगे शांभवीके मन्त्रका जप करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८९५ ॥ हुकमी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीका है तू यह पूछता है कि सवारीके लेनेकी मेरे दिलमें है सो यह सवारी मिलेगी या नहीं सो हे पूछनेवाले ! तेरे दिन अभी समान हैं सो ३ मास ११ दिन बाद लेना फल होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८९६ ॥ हुकमी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके जीतनेका है सो तू यह पूछता है कि शत्रुको मैं जीतूंगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुके ग्रह आज दिन तेज है तेरे दिन नाकिश हैं तू शुक्रदेवताका जप जितनी तेरी ताकत हो उतना करवा तू शत्रुको जीतेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ८९७ ॥ हुकमी शकल ⁝ लंहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि आराम कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! शिवजीका पूजन और जप करवा ७ दिनमें आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८९८ ॥ हुकमी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ ज्यादा है या व्यवहारमें " सो हे पूछनेवाले तुझको खेतीमें लाभ कम है १९ दिन बाद व्यापारमें लाभ होगा

फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ८९९ ॥ हुक्मी शकल ≛ कवजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें रोजगार करनेका है सो तू यह पूछता है कि शीरमें फायदा होगा या नहीं" सो हे "पूछनेवाले ! शीरमें तुझको फायदा नहीं है तू अकेला कार्य्य कर फायदा होगा परन्तु दुर्गापाठ करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९०० ॥ हुक्मी शकल ≣ जमात सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा होवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरी यात्रा होगी सन्देह मत कर लाभ बहुत होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९०१ ॥ हुक्मी शकल ≑ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी कार्य्यका है तू पूछता है कि मेरा कार्य्य कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे कार्य्यमें देर नहीं है तेरे दिन अच्छे हैं सो सन्देह मत कर तेरा कार्य्य होगा ॥ इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९०२ ॥ हुक्मी शकल ≑ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सम्बन्धका है तू यह पूछता है सम्बन्ध कब होगा" सो तू सन्देह मत कर अब दिन अच्छे आये हैं सो संबंध हुआ चाहता है कुलदेवता और सूर्यका पूजन कर शनि मंगलका दान कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९०३ ॥ हुक्मी शकल ≡ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कैदसे छूटनेका है तू यह पूछता है किं एक मनुष्य कैदमें पडा है सो कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! उसके दिन निहायत नाकिश थे परन्तु अब दुर्गाके बीजमंत्रका आराधन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९०४ हुक्मी शकल ≛ हुमरा सावित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले

शख्स ! तेरा सवाल सवारी लेनेका है " सो तू सवारी ले सवारीके लेनेमें तुझको बहुत फायदा होगा अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९०५ ॥ हुक्मी शकल ⁞ बयाज सावित चंद्रमाकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके विषयमें है तू शत्रुको दिक किया चाहता है" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुसे भय मत मान अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं सो तू फतह करेगा परन्तु श्रीदुर्गाका आराधन कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९०६ ॥ हुक्मी शकल ⁞ नुस्रत् खारिज सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह रोग कब दूर होगा" सो तू महामृत्युंजयका जप करवा और शनिदेवताका जप करवा आराम होवेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९०७ ॥ हुक्मी शकल ⁞ नुस्रदाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि अबके खेतीमें फायदा होगा कि नहीं " सो पश्चिम दिशामें बोना सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९०८ ॥ हुक्मी शकल ⁞ अतबेखारिज केतुदवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझे शीरमें लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू शीर कर तुझको लाभ बहुत होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९०९ ॥ हुक्मी शकल ⁞ नकीसुनकलीव मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवालें शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा होगी या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो यात्रा न होगी और लाभ भी न होगा ७ मास तक पीछे लाभ होगा श्रीदुर्गाका आराधन कर सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९१० ॥ हुक्मी शकल ⁞ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती

है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पू ता है कि मेरा विवाह कब होगा " सो हे पूछनेवाले!तेरा विवाह अभी नहीं होगा तेरे दिन नाकिश हैं जिस जगह तेरा सम्बन्ध है उस जगह कुछ दिल फिर रहा है सो तू मंगलका जप करवा सन्देह मत कर एक वर्ष बाद विवाह होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९११ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि औरतके गर्भ है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! औरतके ३ मासका गर्भ है तू बृहस्पतिकी जप करवा और पीपलमें जल डाल पूरा होगा सन्देह मत करइतिं प्रश्न ॥ पिण्ड॥ ९१२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीके छूटनेका है सो तू यह पूछता है कि बंदी कब छूटेगा "सो हे पूछनेवाले!बंदीके दिन निहायत नाकिश है वह न छूटेगा परन्तु श्रीदुर्गाका आराधन करवा इससे ईश्वरने चाहा तो छूट जायगा इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ९१३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है तू यह पूछता है कि मुझे सवारी लेनमें फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तुझे सवारी लेनेमें फायदा है परन्तु २९ दिन बाद लेना फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९१४॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवालें शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके विषयका है सो तू यह " पूछता है कि शत्रु कब दफा होगा " सो तेरा शत्रु दफा होनेवाला है तू संदेह मत कर फते करेगा सूर्य्यका आराधन कर इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥ ९१५॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमातीं है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है

कि यह बीमारी कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले ! अब १६ दिन और नाकिश है सो तुझको आराम होगा पहली शांति करवा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९१६ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खेतीसे लाभका है तू यह पूछता है कि इस सालमें मुझको लाभ कैसा है" सो हे पूछ-ने वाले ! इस वर्षके ग्रह तेरे लिये नाकिश हैं सो अबके खेतीमें लाभ मध्यम होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९१७ ॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें व्यापारका है" सो हे पूछ-नेवाले ! शीरमें फायदा नहीं है तेरे शीरवालेके दिन नाकिश हैं सो कोई दिन ठहरके व्यापार करना लाभ होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९१८ ॥ हुक्मी शकल ÷ उकला मुनकलीब शनि-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यात्राका है तू यह पूछता है कि मेरी यात्रा होगी कि नहीं और यात्रा होगी तो लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब ही तेरी यात्रा न होगी और विदेशमें तेरा दिल भी नहीं लगेगा सो तू १०८ दुर्गापाठ करवा लाभ बहुत होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९१९ ॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवता-की है हुक्मी फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है सो तू यह पूछता है कि इस विद्यामें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस विद्यामें तुझको फायदा नहीं है और जो निहायत श्रम करेगा तो कुछ आवेगी फलेदारी न होगी इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९२० ॥ हुक्मी शकल ☱ हुक्म साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि यह गर्भ बचेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुम्हारे पितृदोष है सो इसके गर्भ न बचेगा सो तू

पितरोंका गयाश्राद्ध या पिंडारकाश्राद्ध करवा सन्तान सुख होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९२१ ॥ हुक्मी शकल बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीके छूटनेका है तू यह पूछता है कि यह बंदी छूटेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस बंदीके दिन निहायत नाकिश हैं सो श्रीभगवतीके बीजमन्त्रका आराधन करवा और पीपल तथा बडमें जल डाल छूटेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९२२ ॥ हुक्मी शकल नुस्रतूखारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है तू यह पूछता है कि सवारी लें या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको सवारीसे फायदा नहीं है सो पहले तुझको सवारीमें फायदा न रहा सो अब ६ मास बाद लेना फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९२३ ॥ हुक्मी शकल नुस्रतदाखिल बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके विषयका है तू यह पूछता है कि शत्रु मेरे ऊपर जाल करता है सो मुझको हरावेगा या उसको मैं हराऊंगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा शत्रु निहायत बदमाश है सो उससे टल रहना जो उसको जीता चाहे तो श्रीशिवजीका आराधन कर संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ॥ ९२४ ॥ हुक्मी शकल अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि इस रोगीको आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब ६ दिन और नाकिश रहे हैं परन्तु महामृत्युंजयके मन्त्रका जप करवा आराम होगा संदेह मत कर इति प्रश्न पिंड ॥ ९२५ ॥ हुक्मी शकल नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल लाभका है तू यह पूछता है कि मुझको खेतीमें लाभ कैसा होगा " सो पूछनेवाले अबके तुझे खेतीमें कम

लाभ है ओर व्यवहारमें लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९२६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरका है तू यह पूछता है कि शीरमें लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! शीरमें तुमको ७ मास पीछे लाभ बहुत होगा परन्तु भगवतीका पाठ करवा बहुत लाभ होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९२७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शरीरकी आयुका है सो तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है और आगे कैसी गुजरेगी" सो हे पूछनेवाले ! इस शरीरकी आयु ज्यादा है और आगे अच्छी गुजरेगी परन्तु विष्णुसहस्रनामका पाठ करा सब आनन्द रहेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९२८॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है सो तू यह पूछता है कि विद्या आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! विद्या आनेकी नहीं तेरा पंचम भवन विगड रहा है सो ग्रहकी शांति करवा कुछ आवेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९२९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! गर्भ तो है परन्तु विटोक होरही है सो देवदोष है तू कुलदेवताका आराधन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३० ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीके छूटनेका है तू यह पूछता है कि बंदी छूटेगा या नहीं" सो अब बंदीके दिन अच्छे आये हैं दुर्गाकी शतचंडी करवा बरजरूर छूटेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल सवारीके लेनेका है सो तू यह पूछता है कि सवारीके लेनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको सवारीके लेनेमें फायदा नहीं है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३२ ॥ हुक्मी शकल ☰ बुधदेवताकी हैं हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है तू यह पूछता है कि शत्रु दूर कैसे होगा सो तेरे ग्रह जबर है तू भगवतीका आराधन करवा तेरा शत्रु भगेगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३३ ॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है सो तू यह पूछता है कि इस बीमारीमें आराम कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! अब दिन अच्छे आये हैं सूर्य्यका जप करवा २१ दिन बाद अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड॥ ९३४ ॥ हुक्मी शकल ≐ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "हे पूछनेवाले ! तेरा सवाल खेतीका है तू यह पूछता है कि अबकी खेतीमें मुझको लाभ कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तुझको खेतीमें अबके लाभ अच्छा है परन्तु कुलदेवताका आराधन कर फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९३५॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्म करनेका है तू पूछता है कि मुझसे धर्म अब बनेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले!अब तो तुझसे धर्म बनता दीखता नहीं अब तेरे दिन नाकिश हैं फिर बनेगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९३६ ॥ हुक्मी शकल ☰ हुमरा साबित मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि"पूछनेवाले शक्स ! तेरा सवाल आयुका है सो तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु ७२ वर्षकी है अच्छी गुजरेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥ ॥ ९३७ ॥ हुक्मी शकल ☰ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है

यह पूछता है कि मुझको विद्या आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे जन्मपत्रमें पञ्चम भवन बिगड रहा है सो तुझको विद्या न आवेगी वृथा काल क्यों खोता है इति प्रश्न॥पिण्ड॥९३८॥ हुकमी शकल ⠿ नुस्रत खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवालेशख्स! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ है सो पूरा होता नहीं" सो हे पूछनेवाले ! पहले जन्मका अजाब है इससे सन्तानगोपालके बीजमन्त्रका सवालक्ष दक्षिणा समेत संकल्प दे पूरा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९३९ ॥ हुकमी शकल ⠿ नुस्रत दाखिल बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदी छूटनेका है सो तू पूछता है कि यह बन्दी कब छूटेगा" सो इसको ७२ दिन और नाकिश हैं बाद छूटेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९४० ॥ हुक्मी शकल ⠿ अतबे खारिज केतुग्रकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीका है तू यह पूछता है कि इस सवारीमें मुझको फायदा है या नहीं" सो हे "पूछनेवाले ! अब दिन सख्त हैं सो तु सवारी मत ले,लेना ही हो तो ६ मास बाद लेना इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९४१ ॥ हुक्मी शकल ⠿ नकी मुनकलीब मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके जीतनेका है तू यह पूछता है कि शत्रुसे भय लगता है शत्रु जीतेगा या मैं जीतूंगा" सो हे पूछनेवाले ! घबरावे मत श्रीदुर्गाके बीजमन्त्रका आराधन करवा तेरा शत्रु हारेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९४२ ॥ हुक्मी शकल ⠿ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह रोगी कब अच्छा होगा" सो हे पूछनेवाले ! इसको आराम हुआ चाहता है इसके हाथसे नवग्रहोंके जपका संकल्प करवा आराम बर- जरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥९४३॥ हुकमी शकल ⠿ इज्जतमा

सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो "हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्योदय होनेमें ३ वर्षकी देर है सो शिवार्चन करवा अच्छा भाग्योदय होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९४४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब सोम देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्श ! तेरा सवाल धर्म करनेका है तू यह पूछता है कि यह धर्म होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन बहुत अच्छे हैं सो धर्म कर तेरा यश और स्वर्ग फल होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९४५॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु पूर्ण है परन्तु मंगलकी तांबेकी मूर्ति बनवाकर पूजन करवा इसी सालमें तुझको कष्ट है सो दूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९४६ ॥ हुक्मीं शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है तू यह पूछता है कि इस विद्याके पढनेमें मुझको कैसा फायदा है" सो हे पूछनेवाले ! इस विद्यामें तुझको फायदा नहीं है और विद्या पढना फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९४७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि गर्भ पूरा होगा या नहीं।" सो हे पूछनेवाले ! गर्भ न होगा इसके पितृदोष है सो पितरोंके वास्ते सवालक्ष गायत्रीका जप करवा सन्तान सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिंड॥९४८॥ हुक्मी शकल ☰ जमात सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बंदीकी मोक्षका है तू यह पूछता है कि बंदी कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले! अब ३ मास और नाकिश है सो सूर्यका

आराधन करवा नाकिश दिनों वाद छूटेगा इति प्रश्न ॥ पिंड॥९४९॥ हुक्मी शकल ÷ फरहा मुनकलीव शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीका है तू यह पूछता है कि मुझको इस सवारीमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस सवारीमें तुझको बहुत लाभ है संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिंड ९५०॥ हुक्मी शकल ÷ उकला शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शत्रुके भयका है" सो हे पूछनेवाले ! शत्रुसे टलते रहना शत्रु तेरा नागा है और शत्रुनिवर्त्तक मन्त्रका जप करवा तेरा शत्रु दूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९५१ ॥ हुक्मी शकल ÷ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्यका है तू यह पूछता है कि मेरा राजकार्य्य कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! श्रीमहाभगवतीके बीजमन्त्रका जप सवा ५ लक्ष करवा तेरा राजकार्य्य होगा फिकर मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९५२ ॥ हुक्मी शकल ÷ हुमरा सावित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! भाग्योदय ३॥ वर्ष बाद होगा परन्तु दुर्गाका आराधन रख सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९५३ ॥ हुक्मी शकल ÷ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि मुझसे धर्म बनेगा या नहीं और बनेगा तो फल कैसा होगा" सो तेरे दिन अब बहुत अच्छे हैं सो धर्म कर यश दुरुस्त होगा फिकर मतकर इति प्रश्न॥पिंड॥९५४॥हुक्मी शकल ÷ नुस्नुदूखारिज सूर्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू पूछता है कि आयु कितनी है" हे पूछनेवाले ! आयु तो ज्यादा है परन्तु शरीरमें तकलीफ रहती है सो इससे बृह-

स्पतिका दान करवा शरीरमें सुख होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥९९५॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्त्रदूदाखिल वृहस्पति देवताकी है "हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है तू यह पूछता है कि मुझे विद्यामें लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको विद्या मुश्किलसे आवेगी और विद्यासे तुझको धन भी नहीं, सो उद्यम कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९९६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल गर्भका है" सो हे पूछनेवाले! तैंने जो गर्भका सवाल किया सो सूर्य्यकी आराधनासे गर्भ रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड ॥ ९९७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बन्दी मोक्षका है तू यह पूछता है कि बंदी कब छूटेगा" सो हे पूछनेवाले ! अब बंदीके दिन अच्छे आये हैं सो अब छूटेगा परन्तु श्रीभगवतीका आराधन करवा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९९८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल सवारीके लेनेका है तू यह पूछता है कि मुझको सवारीसे लाभ होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको सवारीसे लाभ नहीं है सो तू और जगह दिलको लगा सन्देह मत कर तेरी तकदीर ज्यादा है इति प्रश्न ॥ पिंड ॥९९९॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके बेचनेमें मुझको फायदा है या नहीं" हे पूछनेवाले ! इस वस्तुके बेचनेसे तुझको फायदा है सो बेच दे रखना नहीं इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९६० ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्यमें नौकरी करके कोई कार्य्य करनेका

है तू यह पूछता है कि राज्यमें मेरा कार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले तेरे दिन अब अच्छे आये हैं सो दुर्गापाठ करवा तेरा मनोरथ पूरा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९६१ ॥ हुक्मी शकल ⚏ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! १ वर्ष ९ मास अन्दर भाग्योदय होगा परन्तु रुद्राभिषेक श्रावणमें करा लाभ अच्छा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९६२ ॥ हुक्मी शकल ⚏ कबजुल दाखिल सूर्य-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि मेरा धर्म बनेगा या नहीं" सो हे पूछ-नेवाले ! अब तेरे दिन अच्छे हैं उद्यम कर तेरा धर्म बहुत अच्छा होगा देर मत कर यश बहुत अच्छा होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९६३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है सो तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले तेरी आयु तो बहुत ज्यादा है परन्तु तेरे शरीरमें बीमारी रहती है सो शरीरका सुख नहीं अभी दिन २१ वर्षतक नाकिश हैं शिवार्चना करनेसे सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥९६४॥ हुक्मी शकल ☷ जमात साबित बुध दे-वताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याके आनेका है तू यह पूछता है कि मुझको विद्या आवेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको विद्या खूब आवेगी और इस विद्या-से तुझको लाभ बहुत होगा परन्तु श्रीगंगाजीका आराधन कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९६५ ॥ हुक्मी शकल ⚏ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है सो तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस औरतके डेढ मासके समीपका गर्भ

है पूरा होना चाहिये सूर्य्यदेवताका पूजन करनेसे अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९६६ ॥ . हुक्मी शकल ⚍ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने- वाले शख्स ! तेरा सवाल बन्दी मोक्षका है तू यह पूछता है कि बन्दी मोक्ष होवेगा या नहीं और होगा तो कब" सो हे पूछनेवाले ! बन्दी मोक्ष २२ दिनमें होगा परन्तु शतदुर्गापाठका संकल्प दक्षिणा समेत किसी ब्राह्मणको दे बन्दी मोक्ष होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥पिंड ॥ ९६७ ॥ हुक्मी शकल ⚍ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि इस शख्ससे मिलाप होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तेरा मिलाप अब होनेवाला है और तुझको लाभ भीं होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९६८ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछने- वाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है इस वस्तुको बेचना सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९६९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्य (नौकरी) का है तू यह पूछता है कि मेरा यह कार्य्य होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! तेरा कार्य्य ४॥ मास बाद होगा श्रीदुर्गाका आराधन कर सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७० ॥ हुक्मी शकल ⚍ नुस्रत खारिज सूर्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! भाग्योदय होनेमें २ वर्ष ९ मास २१ दिनकी देर है पीछे होगा शिवार्चन करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥

९७१ ॥ हुक्मी शकल ⁚ नुक्रत् दाखिल बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी घरके कार्यका है तू यह पूछता है कि यह कार्य्य मेरा होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! नाकिश दिन गये अब अच्छे आये हैं सो तेरा कार्य्य होनेवाला है सूर्य्यदेवताका आराधन कर सन्देह मत कर इति ॥ प्रश्न पिंड ॥ ९७२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू यह पूछता है कि आयु कितनी है " सो हे पूछनेवाले ! आयु ज्यादा है परन्तु १।७।१४।२२॥ ये वर्ष नामाफ्किक हैं सो ग्रहोंकी शांति करवा आनन्द रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीब मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विवाहका है तू यह पूछता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं और होगा तो सफल होगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे९ मास७दिन और नाकिश रहे हैं बाद तेरा विवाह होगा और सुफल होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९७४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गर्भका है तू यह पूछता है कि इस औरतके गर्भ नहीं रहता सो गर्भ रहेगा या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! पहिले तो गर्भ रह जाता है परन्तु कोई दिन बाद फिर नहीं रहता सो हे पूछनेवाले ! इसके जन्मपत्रमें ग्रह बिगड रहे हैं ग्रहोंकी शांति करवा गर्भ रहेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७५ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि हमारे कुटुंबमें निहायत तकलीफ रहती है यह क्या दोष है " सो हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है तू श्रीमद्भागवतका श्रवण कर और पितरोंकी गया करवा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥

पिंड ॥ ९७६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि मेरा मिलाप होगा या नहीं और होगा तो फल कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले! तेरा मिलाप होनेका नहीं और जो होगा तो अंत दरजे खराब होगा तेरे ७ मास नाकिश हैं पीछे करना संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७७ ॥ हुक्मी शकल ☰ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल व्यापारका है तू यह पूछता है कि इस मालके बेचनेमें मुझे फायदा है या नहीं" सो पूछनेवाले ! यह माल अब २१ दिनमें कुछ तेज होगा तभी बेचना जल्दी मत कर अब बेचनेमें फायदा नहीं है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राजकाम अर्थात् नौकरीका है तू यह पूछता है कि मेरा यह काम होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरा स्थान बदला चाहता है तू सूर्यदेवताका आराधन कर लाभ अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९७९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदय होनेका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे भाग्योदय होनेमें १ वर्षकी देर है सो तू मंगल देवताका जप एक वर्षकी दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे अच्छा भाग्योदय होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८० ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि मेरा मनोरथ बहुत दिनोंसे धर्म करनेका है परन्तु होने नहीं पाता सो होगा या नहीं और होगा तो कैसा होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा धर्म अब २१ दिन बाद होगा और यश

बहुत अच्छा होवेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८१ ॥ हुक्मी शकल ⸫ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू पूछता है कि मेरी आयु कितनी है" सो हे पूछनेवाले तेरी आयु ज्यादा है परन्तु तुझको कष्ट रहता है सो मंगलकी मूर्त्ति तांबेकी चांदीके पात्रमें रखके नेक ब्राह्मणसे पूजन करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८२ ॥ हुक्मी शकल ⸫ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल विद्याका है तू यह पूछता है कि विद्या पढना चाहता हूं विद्यासे लाभ है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तू विद्या पढ तुझको बहुत लाभ होगा परन्तु तेरे जन्मपत्रमें बृहस्पति नामाफिक पडा है सो उसका जप और दान करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिड ॥ ९८३ ॥ हुक्मी शकल ⸫ दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू यह पूछता है कि खत कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे खतके आनेमें देर है परन्तु खत अवश्य करके आवेगा और कुशलपत्र पावेगा संदेद मत कर अब तेरे दिन नाकिश हैं नाकिश दिन करके तेरे दिलमें संदेह रहता है मंगलका जप करवा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८४ ॥ हुक्मी शकल ⸫ हुमरा सावित मंगल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि यह तकलीफ किस कारणसे है" सो हे पूछनेवाले ! यह तकलीफ देवदोषसे है सो तुम्हारे यह देवताका कोप है पहले तो देवताकी ध्यावना की और कुशलता हुई अब याद भी नहीं करते हो सो अब देवताकी यात्रा कर कुत्तोंको चपातियां गेर सन्देह मत कर बहाल होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९८५ ॥ हुक्मी शकल ⸫ बयाज सावित चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल

मिलापका है" हे पूछनेवाले ! तेरा मिलाप होगा परन्तु एक तेरे दिलमें भय गेरता है सो तेरी दोस्तीको नहीं सहता है अब दिन अच्छे आये तेरा मिलाप होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९८६ ॥हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है या नहीं" हे पूछनेवाले ! अब तो इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है परन्तु फिर ११ मास पीछे फायदा इसी वस्तुमें रहेगा बिचले दिनोंमें फायदा नहीं है सो सन्देह मत कर इसको बेच डाल इति प्रश्न ॥ पिंड ॥९८७॥ हुक्मी शकल ⁝ नुस्रत दाखिल बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्य्यका है तू यह पूछता है कि मेरा राजकार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा राजकार्य्य कई दफे होनेवाला हो जाता है परन्तु फिर उसका नाम कोई नहीं लेता सो तेरे दिन नेष्ट है सो सूर्य्य और शुक्रका जप करवा दान दे तेरा राजकार्य्य होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९८८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय होगया परन्तु तेरे जन्मपत्रमें सूर्य्य ग्रह सामान्य है सो उसका आराधन करवा आरामके साथ तुझको लाभ बहुत होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९८९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मङ्गल देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल गृहके कृत्यका है" तू यह पूछता है कि "यह कृत्य मुझसे होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे घरके कृत्यमें अब ही एक वर्ष २ मास ७ दिनकी देर है जो निहायत उद्यम करे और पीपलमें जल गेरे तो कुछ पहले भी होजावे सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ ९९० ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है

हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल आयुका है तू यह पूछता है कि मेरी आयु कितनी है " सो हे पूछनेवाले ! तेरी आयु मध्यम है ४२ वर्षकी है पहले दिन तेरे नाकिश गये अब अच्छे आये हैं सब आनन्द होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९९१ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाके आनेका है तू यह पूछता है कि नौका आई चाहती थी परन्तु आई नहीं सो क्या देर हुई है और कब आवेगी " सो हे पूछनेवाले ! तेरी नौका आई चाहती है उसके आनेमें कुछ देर नहीं है सन्देह मत कर तेरी नौका बहुत कुशलतासे आती है परन्तु तेरे दिन अब सामान्य हैं तू सूर्य्य देवताके बीजमन्त्रका जप करवा दिलका संदेह दूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९९२ ॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमा देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खतके आनेका है तू यह पूछता है कि खत कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा खत आया चाहता है ९ दिन अन्दर आवेगा और कुशलताके सब समाचार सहित आवेगा सन्देह मत कर अल्लाताला अच्छा करेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९९३ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कुटुम्बकी तकलीफका है तू यह पूछता है कि मेरे कुटुम्बको किस दोषसे तकलीफ रहती है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे दुर्गाका और पितरोंका दोष है सो दोनों दोष बराबर हैं सो दुर्गापाठका संकल्प दक्षिणा समेत नेक ब्राह्मणको दे और अमावसके दिन पितरोंके वास्ते गोदान दे वस्त्र दे यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन करवा सुख होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९९४ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा

सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि मेरा मिलाप होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मिलाप नहीं होगा क्योंकि मिलाप होनेमें तुझको फायदा नहीं सो न करना अब तेरे दिन नाकिश हैं सो नाकिश दिनोंमें गुजरान कर सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ९९५ ॥ हुक्मी शकल ⠶ कबजुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी मालके बेचनेका है तू यह पूछता है कि इस मालके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मालको अब बेच दे नहीं तो साफ गिर जायगा अब तेरे दिन नाकिश आये हैं सो २ वर्ष तक नाकिश हैं शनिके मन्त्रका जप करवा लाभ कुछ नाकिश दिनोंमें भी होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९९६॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित्त बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राजकार्यका है तू यह पूछता है कि मेरी राज्यमें रोजी होगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले शख्स ! तेरी राज्यमें रोजी होगी परन्तु अब ९ मास ११ दिन तेरे नाकिश हैं सो मंगलमूर्तिका आराधन करवा इन दिनों बाद तेरी रोजी लगेगी सन्देह मतकर इति प्रश्न॥पिण्ड॥९९७॥हुक्मी शकल ⠶ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय अबसे आगे २ वर्षमें होगा परन्तु सूर्य्यदेवताका जप करवा दो वर्ष भीतर आजीवन होगा सन्देह मतकर तेरी तकदीर अच्छी है इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ ॥९९८ ॥ हुक्मी शकल ⠶ उकला मुनकलीव शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल धर्मका है तू यह पूछता है कि यह धर्म होनेमें आवेगा या नहीं" और होनेमें आवेगा तो यश कैसा होगा, सो हे पूछनेवाले ! सन्देह मतकर अब यह धर्म होनेमें आवेगा और तेरा यश बहुत होगा अब तेरे

दिन बहुत श्रेष्ठ हैं सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥९९९॥ हुक्मी शकल ⚍ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्य औरतसे गमन करनेका है" सो हे पूछनेवाले ! अन्य औरतसे गमन न करना अब तेरे दिन नाकिश हैं सो गमन करेगा तो धर्म और जाति न रहेगी सो न करना सन्देह मत कर सब ईश्वर अच्छा करेंगे इति प्रश्न ॥ पिंड ॥१०००॥ हुक्मी शकल ⚍ हुमरा साबित मंगलदेवताकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नवकाका है तू यह पूछता है कि मेरी नवका कब आवेगी" सो हे पूछनेवाले तेरी नवका और माल और मनुष्य सब आनन्द हैं तेरी नवका आनेवाली है जलके अवरोधसे नवकाको देर लगी है सो सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥पिंड॥१००१॥ हुक्मी शकल ⚍ बयाज साबित चन्द्रमादेवताकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू यह पूछता है कि मेरा पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पत्रके आनेमें कुछ देर नहीं परन्तु अब तेरे दिन नाकिश है सो इस कारणसे दिल बिगडा रहता है सो तू मङ्गलदेवताका आराधन करवा सन्देह दूर होगा इति प्रश्न॥ पिण्ड॥१००२॥ हुक्मी शकल ⚍ उत्तुदूखारिज सूर्यदेवताकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि हमारे कौन दोष है" सो हे पूछनेवाले ! तू सब जानता है तेरे पितृदोष है सो तू अमावसके दिन ब्राह्मण जिमा और पितरोंका गया श्राद्ध या पिण्डारा करवा तुझे सब सुख होगा सन्देह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १००३ ॥ हुक्मी शकल ⚍ उत्तुदूदाखिल बृहस्पतिकी है हुकम फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि मुझको इसके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस मालको बरजरूर बेचना चाहिये क्योंकि तेरे वर्षफलमें ग्रह सामान्य हैं संदेह मतकर इति प्रश्न॥पिण्ड॥१००४॥

हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है तू यह पूछता है कि इस मनुष्यका और मेरा पहले बहुत मिलाप था परन्तु किसीने दिलमें शक डालकर मिलाप दूर किया अब मैं यह पूछता हूं कि मेरा मिलाप होगा या नहीं और होगा तो फायदा होवेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब २१ दिन और नाकिश रहे हैं पीछे मिलाप होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १००५ ॥ हुक्मी शकल ⁘ नकी मुनकलीव मङ्गलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल किसी वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि मुझे इस वस्तुके बेचनेमें फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब इस वस्तुके बेचनेमें फायदा नहीं है सो तू १॥ मास बाद बेच फायदा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥१००६॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल राज्य सम्बन्धी कार्य्यका है तू यह पूछता है कि राज्य सम्बन्धी कार्य्य मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे अब दिन नाकिश हैं सो तू सूर्य्य देवताकी २ पल की मूर्ति बनवा किसी नेक ब्राह्मणसे पूजा करवा तेरा कार्य्य फते होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १००७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल भाग्योदयका है तू यह पूछता है कि मेरा भाग्योदय कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा भाग्योदय होनेवाला है परन्तु मंगलदेवताका जप अब अपनी ताकत माफिक करवा संकल्प दक्षिणा समेत दे तेरा भाग्योदय बहुत अच्छा होगा ५ मास बाद । इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥१००८॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शीरमें कार्य्य करनेका है तू यह पूछता है कि

मेरा शौरमें कार्य्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन निहायत अच्छे आये हैं परन्तु इन दिनोंमें जो कार्य करेगा उसी कार्य्यमें फायदा रहेगा परन्तु श्रीकालीका आराधन रखना सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड १००९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतसे गमन करनेका है तू यह पूछता है कि मेरा औरतसे संग होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तेरे सप्तम भवनको पापग्रह देखता है सो तेरा औरतसे गमन तो होगा परन्तु पीछे निहायत पछतावेगा तुझको परलोककी भीति होगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०१० ॥ हुक्मी शकल ⁝ कब्जुल दाखिल सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल नौकाके आनेका है तू यह पूछता है कि हमारा जहाज कब आवेगा" हे पूछनेवाले ? तेरे जहाजमें कुछ बखेडा पड गया है सो अब १९ दिनके अंदर आवेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न॥पिंड ॥ १०११ ॥ हुक्मी शकल ⁝ कब्जुल खारिज राहुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि" पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू पूछता है कि मेरा पत्र कब आवेगा " सो हे पूछनेवाले! तेरे पत्र-के आनेमें देर है सो अगले पक्षमें आवेगा और तेरे दिन अब सामान्य हैं जिससे तेरा दिल बिगडा रहता है सो शुक्रदेवताका जप करवा तेरे दिलका फिक्र दूर होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड॥१०१२ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुध देवताकी है हुक्म फरमाती है कि" हे पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बालककी बीमारीका है तू यह पूछता है कि इस बालकको क्या बीमारी है बहुत इलाज किये परन्तु एक भी काम न आया अब यह पूछता है कि इस बालकको आराम कब होगा " सो हे पूछनेवाले ! यह कालके मुखमें आरहा है इसके ऊपर पीलियाकी बीमारी है सो चौराहे पर शहनक दे महामृत्यु-

अयका जप करवा आराम होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥१०१३॥ हुक्मी शकल ⁘ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल किसीसे मिलापका है तू यह पूछता है कि मेरा मिलाप कब होगा सो हे पूछनेवाले! अब ही तेरे ७ मास ९ दिन और नाकिश हैं सो नाकिश दिनों बाद तेरा मेल होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न पिण्ड ॥ १०१४ ॥ ⁘ उकला मुनकलीब शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल वस्तुके बेचनेका है तू यह पूछता है कि यह वस्तु बिकेगी या नहीं इसके बेचनेकी बहुत तजवीज करता हूं परन्तु बिकती नहीं" सो हे पूछनेवाले! तेरे ११ मास २ दिन नाकिश हैं इससे नहीं बिकती है और स्थिर लग्नमें तुझे प्राप्त हुई है सो नाकिश दिनों बाद बिकेगी संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०१५ ॥ हुकमी शकल ⁘ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल राजकार्य्यसे बदली करवानेका है तू यह पूछता है कि मेरा दिल इस जगह नहीं लगता सो बदली कब होगी" सन्देह मत कर सूर्य्यदेवताका जप और दान करवा तेरी बदली होगी और रोजी बढेगी फिकर मत कर इति प्रश्न पिंड ॥ १०१६ ॥ हुक्मी शकल ⁘ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब अच्छी होगी मैंने इस बीमारीके बहुत इलाज किये परन्तु फायदा नहीं हुआ सो अब कब होगा" हे पूछनेवाले! व्यतीपातके दिन छायापात्र और राधादामोदरकी मूर्ति बनवाकर योग्य ब्राह्मणको दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न पिंड ॥१०१७॥ हुक्मी शकल ⁘ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल शिकारका है तू यह पूछता है कि मुझे शिकार मिलेगी या नहीं" हे पूछनेवाले! तुझे शिकार नहीं

मिलेगा खेद बहुत पावेगा और देर बहुत हो जावेगी फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०१८ ॥ हुक्मी शकल ⠶ नुस्तुल खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल औरतसे गमन करनेका है पर तू कुछ दिलमें घबराता है" सो हे पूछनेवाले ! तुझको वह औरत भी चाहती है सो तू मेल कर तुझे बहुत फायदा होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०१९ ॥ हुक्मी शकल ⠶ नुस्तुदूदाखिल बृहस्पतिकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जहाजके आनेका है" सो पूछनेवाले ! जहाजके आनेमें देर है कुछ माल बीज गया है जिस करके देर लगी है सन्देह मत कर दुर्गाका आराधन करवा इति प्रश्न पिण्ड ॥ १०२० ॥ हुक्मी शकल ⠶ अतबेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्र और द्रव्यके आनेका है सो तू पूछता है कि पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा पत्र आया चाहता है तू संदेह मत कर द्रव्य भी आवेगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०२१ ॥ हुक्मी शकल ⠶ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारी का है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब जावेगी इलाज बहुत किया परन्तु कोई भी काम न आया सो अब यह पूछता है कि यह बीमारी कब जावेगी" सो हे पूछनेवाले ! तेरे यहां देवदोष है सो सर्वदेव मन्त्रका जप करवा और उडदोंकी बलि दे आराम बरजरूर होगा इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०२२ ॥ हुक्मी शकल ⠶ अतबे दाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मिलापका है सो तू यह पूछता है कि बहुत तजवीज कीं परन्तु इस शख्ससे मिलाप न हुवा'! सो हे पूछनेवाले शख्स ! अब तेरे दिन अच्छे आये हैं पहले तेरे दिन नाकिश थे सो अब मिलाप हुआ जान संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०२३ ॥ हुक्मी शकल

⚍ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि पूछने-वाले शख्स ! तेरा सवाल मकान इमारतके बेचनेका है तू यह पूछता है कि मकान इमारतें बेचा चाहता हूं सो बिकेंगी या नहीं और बिकेंगी तो मुझको फायदा है या बिगर बिक्रीमें फायदा है" सो हे पूछनेवाले ! प्रथम तो मकान इमारत मत बेच तेरे नाकिश दिन गये १ वर्ष ३ मास और नाकिश रहे हैं फिर सब आनंद होंगे परन्तु दुर्गाका आराधन रखना सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥१०२४॥ हुक्मी शकल....तरीख मुनकलीब चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फर-माती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल ऋणकी विमुक्तिका है तू यह पूछता है कि ऋण दूर कब होगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा करजा अब ही दूर होनेका नहीं क्योंकि तेरे ११ वर्षसे नाकिश दिन आये हैं और ३ वर्ष २मास ७दिन बाकी रहे हैं सो इन दिनोंबाद दूर होगा मंगलका पूजन करना इति प्रश्न॥पिण्ड॥१०२५॥ हुक्मी शकल ⚍ लहियान खारिज बृहस्पति देवताकी है हुक्म फर-माती है कि"पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल पुत्रके गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि मैं पुत्र गोद लूंगा इस पुत्रसे मुझको फायदा है या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यह जो तैंने पुत्र गोद लेनेकी विचारी है सो इस लडकेके ग्रह सामान्य हैं सो बृहस्पतिका पूर्ण आराधन करवा कर फिर लेना फलेदारी होगी संदेह मतकर इति प्रश्न ॥ पिण्ड॥१०२६॥ हुक्मी शकल ⚍ कबजुल दाखिल सूर्य्य देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी क्या है इसका भेद नहीं पाया जो इलाज किया सो कार न आया सो अब यह पूछता हूं कि इसको आराम होगा या नहीं और होगा तो कब होगा"सो हे पूछनेवाले ! इसके दिन नाकिश हैं कालके मुखमें आरहा है परन्तु महामृत्युंजयका अखंड जप करवा आराम होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०२७ ॥ हुक्मी

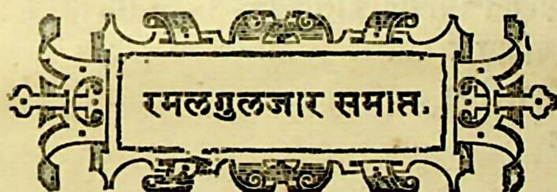
शकल ⚍ कब्जुल खारिज राहुकी है हुक्म फरमाती है कि 'पूछने वाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू यह पूछता है कि शिकार मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! अब तुझको शिकार नहीं मिलेगी और निहायत तकलीफ पावोगे सो इस वक्त न जाना एक मुहूर्त्त पीछे जाना शिकार मिलेगी सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०२८ ॥ हुक्मी शकल ☰ जमात साबित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्य औरतसे गमन करनेका है तू यह पूछता है कि इस वक्त मेरा मेल होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! इस वक्त तेरा मेल न होगा संदेह मत कर फिर होगा परन्तु संगमेश्वरीका आराधन करवाना इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०२९ ॥ हुक्मी शकल ⚍ फरहा मुनकलीब शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल खतके आनेका है तू यह पूछता है कि मेरे दिलमें खतकी बहुत लगरही है सो दिलमें रात्रि दिन तकलीफ रहती है और उस जगह मुकद्दमा लग रहा है उसकी खबर चाहता है" सो हे पूछनेवाले ! तेरा मुकद्दमा फते होगा और तेरे पास खत आया चाहता है तू सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥पिण्ड ॥१०३०॥ हुक्मी सकल ⚍ उकला मुनकलीब शनि-देवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल यह है कि हमारे कुटुंबमें प्रथम तो एकता नहीं है और दूसरे कोई किसी हालसे तंग है कोई किसी हालसे यह क्या है" सो हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष है सो पितरोंके वास्ते गयाश्राद्ध या पिण्डारा करवा अच्छा होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०३१ ॥ हुक्मी शकल ☰ अंकीश दाखिल शनिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल मुकद्दमाका है तू यह पूछता है कि यह मुकद्दमा मैं जीतूंगा या शत्रु जीतेगा वा दोनोंका मिलाप होजावेगा" सो हे पूछनेवाले ! तेरा झगडा जमीनका है तेरी जमीन जल आवाद शत्रुने

ाली है सो शत्रु बहुत बलवान हैं और राजके कारदार भी उसकी तरफ हैं और तेरा रुपैया खर्च हुआ हैं परन्तु तेरे दिन निहायत नाकिश हैं सो जान परन्तु श्रीसत्यनारायणका व्रत और कथा कबूल और नेक ब्राह्मणसे कालीके बीजमन्त्रका सवा लक्ष जप करवा फिर तू अदालत जीतेगा तेरा शत्रु नीचा पडेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०३२ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुमरा सावित मंगलदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल कर्जा दूर होनेका है तू यह पूछता है कि मुझे करजा ज्यादा है मेरे रोजगारमें टोटा रहा था सो यह मेरा करजा किसी तजबीजसे दूर होगा ! और फिर भी मेरा वैसा ही समय होगा " सो हे पूछनेवाले ! अब तेरे दिन सामान्य हैं सो पूंजी रख दिवाला मत कर लोगोंका धन दे जो तेरे पास बहुत है और फिर शनिदेवताके बीजमन्त्रका आराधन करवा और व्यापार कर फिर बहुत लाभ होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०३३ ॥ हुक्मी शकल ⚏ बयाज सावित चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स! तेरा सवाल पुत्र गोद लेनेका है तू यह पूछता है कि इस पुत्रके गोद लेनेमें मुझे फायदा है या नहीं " सो हे पूछनेवाले ! इस पुत्रके गोद लेनेमें फायदा नहीं है क्योंकि इसके जन्मपत्रमें ग्रह मन्द पडे हैं सो और लडका ले ३ मास बाद वह लडका फल दायक होगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०३४ ॥ हुक्मी शकल ⚏ हुल्हुल्खारिज सूर्य्यदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि " पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल बीमारीका है तू यह पूछता है कि यह बीमारी कब दूर होगी" सो हे पूछनेवाले! यह कुछ बीमारी नहीं है यह कालकी निशानी है तैंने बहुत इलाज किये परन्तु फायदा न हुआ सो हे पूछनेवाले ! महामृत्युञ्जयका जप करवा सन्देह मत कर पुण्य कर आनन्द होगा इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०३५ ॥ हुक्मी शकल ⚏

नुस्तुद्दाखिल बृहस्पतिदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल शिकारका है तू यह पूछता हैं कि मैं शिकारको जाता हूं मुझको शिकार मिलेगी या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! तुझको शिकार नहीं मिलेगी और वर्षा आवेगी वर्षामें बहुत क्लेश पावेगा सन्देह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०३६ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेखारिज केतुग्रहकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल अन्य औरतसे गमन करने है तू यह पूछता है कि उस औरतसे संग होगा या नहीं" सो पूछनेवाले ! अब तेरे दिन नाकिश हैं सो संग न होगा और जो करेगा.तो तेरे ऊपर कलंक लगेगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिंड ॥ १०३७ ॥ हुक्मी शकल ⁝ नकी मुनकलीव मंगलदेवताकी हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल जहाजका है सो तू यह पूछता है कि मेरा जहाज कहाँ अटका है" सो हे पूछनेवाले तेरा जहाज आया चाहता है परन्तु तेरे दिन निहायत खराब हैं इससे दिल बिगड़ा रहता है सो शक्त्यनुसार मंगलकी पूजा करवा सब आनन्द होगा संदेह मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०३८ ॥ हुक्मी शकल ⁝ अतवेदाखिल शुक्रदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल पत्रके आनेका है तू यह पूछता है कि मेरा पत्र कब आवेगा" सो हे पूछनेवाले !अब तेरे दिन बहुत दुरुस्त हैं सो तेरा पत्र भी आवेगा और लाभ होगा फिकर मत कर इति प्रश्न ॥ पिण्ड ॥ १०३९ ॥ हुक्मी शकल ⁝ इज्जतमा सावित बुधदेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स!तेरा सवाल यह है कि मैं निहायत तकलीफ पाता हूं सो क्या कारण है" हे पूछनेवाले ! तेरे पितृदोष हैं सो पितरोंकी मूर्ति बनवा सब आनन्द होगा फिकर मत कर इति प्रश्न॥ पिण्ड॥१०४०॥ हुक्मी शकल ⁝ तरीख मुनकलीव चन्द्रमादेवताकी है हुक्म फरमाती है कि "पूछ

वाले शख्स ! तेरा सवाल चक्रवर्ती होनेका है तू यह पूछता है कि मेरा संपूर्ण पृथ्वीमें राज्य होगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! राज्य जप तप दानसे होता है सो अपने कर्म देख और ये कर्म कर तब होगा इति प्रश्न॥पिण्ड॥१०४१ ॥ हुक्मी शकल ⚍ हुक्म फरमाती है कि "पूछनेवाले शख्स ! तेरा सवाल स्वर्गके राज्यका है तू यह पूछता है कि स्वर्गका राज्य मुझको मिलेगा या नहीं" सो हे पूछनेवाले ! यज्ञ दान जप तप कर मिलेगा इन कर्मोंसे क्या है शुभकर इति प्रश्न ॥ इति रमलगुलजारस्योत्तरार्द्धे संकीर्णप्रश्नाः समाप्ताः ।

इति यवनाचार्य्यविरचितः पण्डितवीरबलेन नागरीभाषयाऽनुवादितो रमलगुलजारः समाप्तः ।



क्रय्यपुस्तकें–(ज्योतिषग्रन्थ)



नाम पुस्तक.	की. रु.आ.
रमलनवरत्न–भाषाटीकासमेत (रमलप्रश्नका उत्तम ग्रंथ)....	१–४
पत्रीमार्ग प्रदीपिका और वर्षदीपक(वर्षजन्मपत्र बनानेका)मूल...	०–४
जातकसंग्रह (फलादेश परमोपयोगी)	०–१४
प्रश्नचंडेश्वर भाषाटीका	०–१२
पंचपक्षी सटीक सपरिहार भाषाटीकासमेत	०–८
मुहूर्त्तगणपति	१–०
भुवनदीपक सटीक	०–८
तथा भाषाटीका सहित	०–८
केशवीजातक सोदाहरण भाषाटीका चक्रांसमेत अतीव उपयोगी	२–०
सर्वार्थचिन्तामणि मूल	१–०
लघुजातक सटीक	०–८
लघुजातक भाषाटीका सहित	२–०
रमलचिन्तामणि भाषाटीकासहित	१–०
हायनरत्न	३–०
वसंतराज शाकुन–भाषाटीकासहित–इसमें नानाप्रकारके शकुन वर्णित हैं	५–०
रत्नद्योत भाषाटीका	०–६
बृहज्जातक	२–४

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण–बम्बई.

कथा भारती

दूसरा भाग

भारती पुस्तक मन्दिर